1 ## २० ०७ १९८२ द्यौगामी चित्र

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता चला जा रहा था उस पवित्र वेदवाणी में उस महामना जो यज्ञोमयी स्वरूप है मानो जिसका वह याग ही आयतन माना गया है गृह और सदन ये यज्ञोमयी आभा में रत्त रहने वाला चैतन्य देव है, जिसकी महिमा का, जो गुणगान गाते हुए हमारे आचार्यों ने, भिन्न भिन्न प्रकार की, उसके ऊपर टिप्पणियां की हैं अथवा

उसके ऊपर अन्वेषण भी किया है, और विचारते हुए यह कहा कि यह तो यज्ञोमयी स्वरूप है, वे परमपिता परमात्मा महान है, मानो याग उसका आयतन, गृह माना गया है। जिस गृह का मानो निर्माण करता रहता है, अथवा वह निर्माण नवीन स्वरूप कहा जाता है तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को अपना पुरोहित स्वीकार करते हैं, पुरोहित जन बेटा! पुरोहित उसे कहते है। जो पराविद्या को धारण कराने वाला है। जो मानव परा के लिए विचारता रहता है, और मानो पराविद्या को जानता हुआ उस परमपिता परमात्मा मानो पुरोहित को प्राप्त हो जाता है।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा याग के सम्बन्ध में, कोई विशलेषण देने के लिए नही, केवल हमारा आज का वेदमन्त्र क्या कह रहा है वेद मन्त्रों में बेटा! भिन्न प्रकार के शब्दार्थ और भिन्न भिन्न प्रकार की मानो शिक्षाप्रद हैं। प्रत्येक वेद मन्त्रों में बेटा! प्रतिभाषित होती रहती है। हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में तीन प्रकार के भाव होते हैं। सबसे प्रथम वेद मन्त्रों में मानो लौकिकवाद होता है, लोक का मानव को ज्ञान होना चाहिए, व्यवहार में परणित होना चाहिए। द्वितीय जो कर्म है वह वेद मन्त्रों में विज्ञान है मानो विज्ञान किस प्रकार का हो, विज्ञान में, मानव को कौन सी दशा को अपनाना है। मानो विज्ञान किस प्रकार को हो? विज्ञान में मानव को कौन सी दशा को अपनाना है और वह विज्ञान में एक दूसरे से समन्वय करने वाला है मेरे पुत्रों! देखो, तृतीय हो कर्म आता रहता है उसका नाम हमारे यहाँ आध्यात्मिक विज्ञान कहा जाता है एक हमारे यहाँ लौकिकता एक विज्ञान और मुनिवरों! देखो, तीसरा आध्यात्मिकवाद कहलाता है। आध्यात्मिकवाद किसे कहते हैं?

आध्यात्मिकवाद

मेरे पुत्रों! आध्यात्मिकवाद उसे कहा जाता है जो लोक, परलोक और जितना भी भौतिक विज्ञान है, उसको जब वह अपने अन्तःकरण में दृष्टिपात कर लेता है। अथवा उसी में

जब वह समाहित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! उसका हमारे यहाँ नामोकरण आध्यात्मिकवाद माना है प्रत्येक मानव आध्यात्मिकवाद की भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता हैं परन्तु हमारे यहाँ यह आध्यात्मिक विज्ञान की विचित्र उड़ाने मानी गई हैं प्रत्येक मानव के हृदय में यह विचार रहता है, कि मैं संसार का याज्ञिक बनूं, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चलन आया, जैसे हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, अश्वमेध याग है, नरमेध याग है, देवी याग है, और मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जैसे अश्वकृतिका और देखो, जहाँ वसुन्धरं ब्रह्मा जिसको हम गो मेध कहते हैं, गो मेध कहते हैं, अजामेध याग है और भी भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन जैसे पुत्रेष्टि याग और भी नाना प्रकार के यागों का चलन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। आज तुम्हें मैं उन वाक्यों को न ले करके आज मैं यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ हमारे यहाँ वृष्टि याग का भी वर्णन होता रहता है।

आओ, मेरे पुत्रों! आज के हमारे वेद के पठन पाठन में, यागों का चलन अथवा उनके क्रियाकलाप की प्रतिभा का वर्णन हो रहा था, तो मेरे पुत्रों! देखो, यह तो याग का प्रकरण है, यह बड़ा विशाल है मैं इस वन में तो जाना नही चाहूँगा। परन्तु विचार केवल यह कि यज्ञमानं ब्रह्मा मेरे पुत्रों! आओ, आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों को हमने पूर्व काल में भी प्रगट किया है, आज भी वह मन्त्र आ रहे हैं, क्योंकि हमारे यहाँ, भिन्न भिन्न प्रकार के मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महती, अथवा अनुपमता और वेद मन्त्रों में क्या है? तो उनका प्रतिपादन होता रहता है। बेटा! एक समय महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज महाराजा, अश्वपति के याग में से, उनको याग को वृष्टि याग को सम्पन्न कराते हुए, बेटा! वह अपने आसन पर आ पंहुचे, परन्तु जब आसन पर आ गएं तो वह शान्त मुद्रा में, बेटा! कुछ

वेद मन्त्रों का अध्ययन करते हुए, निन्द्रा की गोद में चले गएं जब मध्य रात्रि हुई, तो मध्य रात्रि में बेटा! वह वेदमन्त्र स्मरण आने लगे, यज्ञमानं ब्रह्मा वृतप्प द्यौ लोकं वाचप्रह्वी चित्रा ब्रह्म व्रताः बेटा! यह वेद का मन्त्र उन्हें स्मरण आ गया और यह वेदमन्त्र यह कहा रहा है, क्या यज्ञमान का रथ बन करके अथवा वह चित्रों में चित्रित होता हुआ, द्यौ लोक को प्राप्त होता है यह वेद का मन्त्र कह रहा था, परन्तु ऋषि ये विचारने लगा, महर्षि वैशम्पायन क्या यह वेदमन्त्र तो अशुद्ध हो नही सकता, वेद मन्त्रों में जो ज्ञान और विज्ञान है अथवा जो प्रतिभा है, वह यथार्थ है अब यह अशुद्ध तो हो नही सकता परन्तु इसके ऊपर चिन्तन किया जाएं। तो बेटा! ऋषि मध्य रात्रि से चिन्तन करने लगा, क्या वेद मानो देखो, शब्द अन्तरिक्ष में जाता है, शब्द मानो वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होता है और यज्ञमान जब स्वाहाः कहता है, स्वाहाः के साथ में उसका चित्र बन करके, अन्तरिक्ष में, क्या द्यौ लोक में प्रवेश हो जाता है। और वह वायुमण्डल में क्या, मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में वह अशुद्ध परमाणुओं को निगलता रहता है। उसका शुद्धिकरण करता रहता है। तो ऐसा वेद का मन्त्र कह रहा था, परन्तु उसी चिन्तन में बेटा! प्रातःकालीन हो गया। जब प्रातःकालीन हो गया, तो प्रातःकाल सूर्य तो उदय हो गया, तो ऋषि ने अपने आसन को नही त्यागा, तो बेटा! देखो, कुछ ही दूरी पर महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का आश्रम था, तो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि के आसन पर आए ऋषि मानो आसन को नही त्याग रहे थे, वेद के आचार्यों ने कहा, हे भगवन! हे वैशम्पायन! आप अपने इस आसन को क्यों नही त्याग रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु! यह वेद का मन्त्र यह कहता है, क्या यज्ञमान का रथ बन करके जाता है मैं उसी निर्णायतमक अपने विचारों को बनाना चाहता हूँ मेरी मनोनीत ऐसी इच्छा है क्या मानो देखो, मैं उस वाक को जान जाऊं, उस मानव को अपने में चित्रण करना चाहता

हूँ, तो ऐसा मानो मेरा भाव है। मुनिवरों! देखो, इसके ऊपर महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज भी अन्वेषण करने लगे। मेरे पुत्रों! देखो, आसन शून्यं ब्रहे, शून्य बिन्दु पर है। बेटा! कहीं से देखो, भ्रमण करते हुए, शौनक ऋषि महाराज, अपने कुछ ब्रह्मचारियों के सहित, यह आभाकृत करते हुए, क्या ऋषि से मुझे समन्वय करना है, ऋषि से मिलान करना है क्योंकि वह महाराजा अश्वपति के याग में से उनका पदार्पण हो गया होगा।

तो मेरे प्यारे! देखो, शौनक ऋषि देखो, ऋषि के आसन पर आए ऋषि ने अपने आसन को नही त्यागा था उन्होंने कहा प्रभु! अपने आसन को क्यों नही त्याग रहे हो? उन्होंने कहा एक वेदमन्त्र मुझे स्मरण आ रहा है और वेदमन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है मैं उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ मेरे पुत्रों! देखो, जब शौनक जी ने यह वाक श्रवण किया उन्होंने भी दर्शनों से उस वाक को सिद्ध किया अग्नि की धाराओं का उन्होंने वर्णन किया परन्तु कोई निमटारा नही हो सका कही से भ्रमण करते हुए, महर्षि महात्मा भृगु और श्र्वेतकेतु मुनि महाराज का दोनो का आगमन हुआ वह भी उसी अनुसन्धान में लग गएं कहीं से बेटा! भ्रमण करते हुए महर्षि मृची ब्रह्मचारियों के सहित मानो देखो, आश्रम में प्रवेश कर गएं मानो देखो, वह भी इसी आभा में परणित हो गएं।

विचार विनिमय करते बेटा! देखो, मध्य दिवस हो गया मध्य दिवस जब हो गया तो अपने में कोई निमटारा नही का सके मेरे पुत्रों! चित्रों मे दर्शन होना, द्यौ लोक में प्रवेश होना, यह तो जान गएं थे। परन्तु देखो, उसको साक्षात्कार कैसे दृष्टिपात करेंगें यह नही जान पाए। तो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मे वर्तमस्वहा वेद के आचार्य ने, अपने में अनुसन्धान और मध्य दिवस में मुनिवरों! देखो, जब कोई निमटारा नही हुआ तो यह विचारा तो कहीं से श्र्वेतकेतु कागभुषुण्ड जी वहाँ आ पंहुचे, महर्षि लोमश और वह दोनों मुनिवरों! देखो, उनके द्वार पर

पंहुचे, उन्होंने कहा कहो, ऋषिवर! आज आसन को नही त्याग रहे हो? हम तो इसीलिए आ पधारें कि महाराजा! अश्वपति के यहाँ से आपका आगमन हो गया होगा, परन्तु देखो, आप कुछ और ही चिन्तन में लगे हुए हैं इसके मूल में क्या है यह वर्णन किया कि प्रभु! वेदमन्त्र ऐसा कहता है, क्या यज्ञमान का रथ बन करके, द्यौ लोक को जाता है मैं उस रथ को साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड और महर्षि लोमश मुनि ने यह कहा कि भई! यहाँ से अब गमन करते हैं, और भगवान राम के यहाँ, नित्य प्रति याग होता है उनकी उपदेश मंजरी भी होती है, उनके द्वारा याग का आयोजन होगा और उसके पश्चात मानो उसके ऊपर निर्णय हो सकेगा। यह वाक बेटा! सब ऋषियों के हृदयों में, समाहित हो गई परन्तु वहाँ मुनिवरों! देखो, वह महर्षि शौनक इत्यादि ने वैशम्पायन बेटा! सब अपनी अपनी कृतियों में रत्त होने लगे और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज की अध्यक्षता का वह समाज ऋषि मुनियों का उनमें कुछ ब्रह्मनिष्ठ थे, कुछ ब्रह्मवेत्ता थे, मानो कुछ ब्रह्मवर्चोसि कहलाते थे, वह भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, वह मार्ग में, जब रात्रि छा गई तो महर्षि तत्त्वेतर ऋषि महाराज का आसन उन्हें प्राप्त हुआ तत्त्वेतर ऋषि महाराज ने उनका स्वागत किया नाना प्रकार के कन्दमूल इत्यादियों के द्वारा देखो, उनको आहार कराया, रात्रि समय उन्होंने वहीं विश्राम किया। परन्तु प्रातःकालीन होते ही वहाँ से उन्होंने गमन किया, और भ्रमण करते ही बेटा! अयोध्या में, उनका प्रवेश हो गया।

बेटा! प्रातःकाल का समय था मुनिवरों! देखो, भगवान राम के यहाँ जो नित्यप्रति याग होता था, और याग के पश्चात, जब उनकी उपदेश मञ्जरी प्रारम्भ होती, मानो उपदेश मञ्जरी प्रारम्भ होने वाली थी, परन्तु इतने में ऋषि मुनियों का मानो एक समाज जा पंहुचा उनके आसन लगे हुए थे, उनकी यज्ञशाला में, बेटा! ब्रह्मवेत्ताओं के बेटा! आसन भिन्न हैं,

ब्रह्मचारियों के आसन भिन्न हैं, ब्रह्मवर्चोसि के आसन भिन्न हैं, मेरे पुत्रों! देखो, अपने अपने उचित्त आसनों पर ऋषि मनि विद्यमान हो गएं, विद्यमान हो जाने के पश्चात, भगवान राम का उपदेश प्रारम्भ हो रहा था, उन्होंने कहा हे श्रोता! हे व्रतम देवा! हे राष्ट्रवेत्ताओं! आज मानो देखो, यह याग किया है, उसमें जो वेदमन्त्र आए हैं वह क्या कहते हैं? कि उनके आश्रय पर तुम्हें ले जाना चाहता हूँ तो भगवान राम का उपदेश मञ्जरी प्रारम्भ हो रही थी, उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा यह है अब जो हमने जो प्रातःकालीन याग किया है अग्न्याध्यान किया है, अग्नि को प्रचण्ड किया है, मानो अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है, वह जो देवताओं का मुख है, हमें उस मुख के द्वार पर पंहुचना है, क्योंकि जो देवताओं का मुख कहलाया जाता है, तो वही तो देवताओं को पवित्रतम की जानकारी मानो देखो, संसार में प्रायः होती रहती है। तो इसी प्रकार देखो, वह भगवान राम का उपदेश प्रारम्भ होता है उन्होंने कहा वेदमन्त्र यह कहता है कि प्रत्येक राष्ट्र में देखो, देव पूजा होनी चाहिए, देव याग होने चाहिएं, जिससे राजा का राष्ट्र देवतव को प्राप्त हो जाएं।

तो मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने अपने राष्ट्रवेत्ताओं से कहा कि मेरी इच्छा यह है, कि हमारे प्रत्येक गृह में, मानो देखो, ऋणों से अवऋण होने वाला समाज होना चाहिए, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में, तीन प्रकार के ऋण कहलाते हैं। वेद के मन्त्रों के द्वारा मानो देखो, तीन प्रकार के ऋणों का मानो देखो, वर्णन आता है, सबसे प्रथम ऋण हमारे यहाँ देखो, वह ब्रह्म ऋण कहलाता है, द्वितीय ऋण देखो, ऋषि ऋण है, और तृतीय मुनिवरों! देखो, देव ऋण कहलाता है। हमें ऋणों से अवऋण होने के लिए, सदैव प्रयास करते रहे हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम ने, राष्ट्रवेत्ताओं से कहा कि मेरी इच्छा यह है कि हमारा जो अयोध्या राष्ट्र है, इसमें

कोई भी मानो एक दूसरे का ऋणी नही रहना चाहिए, मानो देखो, द्वितीय ऋणों में, एक मानो देखो, पितर ऋण होता है, एक राष्ट्रीय ऋण होता है, यह भी भिन्न भिन्न प्रकार के ऋणों में मानो देखो, ऋणीत होते रहते हैं। माता पिता का जो ऋण है वह यह है कि माता पिता मानो देखो, पुत्र पुत्रियाँ, जब उनकी आज्ञा का पालन, प्रातःकालीन याग इत्यादियों में रत्त होते हुए, मानो देखो, पितरों की सेवा, पितरों में परणित हो जाते हैं, हमारें यहाँ पितरों में जहाँ माता पिता आते हैं वहाँ पितरों में ऋषियों की विचारधारा भी आती है, ऋषि भी आते हैं आचार्य जन भी आते हैं मानो सूर्य चन्द्रमा भी आते रहते हैं, और भी नाना जितने पञ्च महाभूत है, यह सब मानो देवताओं में परणित माने गएं हैं इनमें कुछ देवता मानो जड़वत हैं, कुछ चैतन्यवत कहलाते हैं। दोनो प्रकार के देवताओं के ऋणो से अवऋण होना है, उन ऋणों से अवऋण होना, यह हमारे यहाँ प्रातःकालीन मानो देव पूजा होनी चाहिए। देवताओं के ऋणों से, हमें अवऋण होना है। तो मुनिवरों! देखो, यह विचारधारा, भगवान राम प्रगट कर रहे थे, उन यज्ञशालाओं में जहाँ राष्ट्रवेत्ता राष्ट्र कर्मचारी भी विद्यमान थे मेरे पुत्रों! भगवान राम ने यह घोषणा कराई, हे देव! ब्रहे मानो देखो, प्रत्येक गृह में यह देव याग होने चाहिएं। प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए, राजा को अपना राष्ट्र यदि ऊँचा बनाना है, तो प्रत्येक गृह में मानो सुगन्धि आनी चाहिए, जिस सुगन्धि के द्वारा मुनिवरों! देखो, गृह पवित्र, राष्ट्र पवित्र, वायु मण्डल पवित्र यज्ञोमयी कहलाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम ने यह कहा क्या मेरे राष्ट्र में कोई गृह ऐसा न हो, जिस गृह में देवपूजा न होती हो, अथवा याग न होता हो, तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम का याग शिरोमणी था। उसके पश्चात देव पूजा जिसको हम देवतं को धारण करना ही मानो याग इत्यादियों में देव पूजा कहलाती है। उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ ब्रह्मयाग क्या

देखो, ब्रह्मयाग कहलाता है। ब्रह्मयाग का अभिप्राय यह कि ब्रह्म का चिन्तन करना है, जिस ब्रह्म परमपिता परमात्मा ने इस मानव शरीर की रचना की है इस रचना में क्या क्या इस शरीर में विद्यमान है, उसको न वह माता जानती है न पितर जानता है न आचार्य जानता है मानो देखो, न आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता न आचार्य स्वीकार करता है। मेरे पुत्रों! ऐसा गोपनीय विषय है, वह ऐसी गोपनीय रचना है, प्रभु की जिससे बेटा! देखो, प्रभु का यशोगान गाना ही बहुत अनिवार्य है। क्योंकि जिस गृह में हमारा अन्तरात्मा वास करता है, हम वास करते हैं इस गृह को अरे, मानव! उस गृह को ही नही जानते, कि उस गृह में क्या है? उस गृह में कितनी नस नाड़ियाँ हैं, कितना मानो देखो, उसमें क्रियाकलाप हो रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, इससे यह सिद्ध हुआ है, क्या सृष्टि के प्रारम्भ में, मेरे प्यारे! प्रभु ने यह संसार सागर, क्या संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है, यह यज्ञशाला निर्माणित होती हुई ही मानो देखो, उसमें परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, और आत्मा मुनिवरों! इस संसार रूपी यज्ञशाला की यज्ञमान है, और पञ्च महाभूत मेरे प्यारे! देखो, इसमें आहुति दे रहे हैं, वह होता बन करके, मेरे पुत्रों! कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु बन करके उद्घोष हो रहा है वायु जब प्राण से प्राण जब अग्नि से मिलान करता है, तो एक ध्वनि उत्पन्न होती है, उस ध्वनि का नाम, मेरे प्यारे! देखो, उद्घोष कहलाता है। वह उद्गाता है, उद्गाता जब अपने में उद्घोष करने लगता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, उद्गाता की आयु में दीर्घता आ जाती है, मनस्तव आ जाता है, पवित्रतव आ जाता है, अभ्योदय होता रहता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम का यह उपदेश क्या अपने राष्ट्र में यह निर्णय दिया है कि जिस राजा के राष्ट्र में, बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं, बुद्धिजीवी प्राणियों का अभिप्राय क्या है? बुद्धिजीवी उसे कहते हैं जो बुद्धि को चेताते रहते हैं, तो बुद्धि को चेता करके मानो बुद्धि, मेधा से क्रियाकलाप करते हैं

और मुनिवरों! देखो, बुद्धि मेधा ऋतम्भरा से मौन हो करके प्रज्ञा में प्रभु का दर्शन करते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ऐसे बुद्धिजीवी प्राणी राजा के राष्ट्र में होने चाहिएं, जिससे राजा का राष्ट्र पवित्र हो जाएं, देखो, बुद्धिजीवी प्राणी उसको नही कहते हैं, जो अपने उदर की पूर्ति करता रहता है, अपने उदर में लगा रहता है मानो देखो, उसको बुद्धिजीवी प्राणी नही कहते हैं, बुद्धिजीवी उसे कहते हैं, जो अपने में ज्ञान कर्म उपासना में लगा हुआ है। मेरे पुत्रों! वेदों का उद्घोष गाता है, गान गाने लगता है, वेदों का कही जटा पाठ में, कहीं घन पाठ, माला पाठ में उदात्त और अनुदात्त में बेटा! वेद मन्त्रों को ध्वनित करता रहता है। वह मेरे पुत्रों! देखो, बुद्धिजीवी प्राणी कहलाता है। विचार विनिमय क्या राम ने कहा है, क्या मेरे राष्ट्र में ऐसे अयोध्या राष्ट्र में ऐसे बुद्धिजीवी प्राणी होने चाहिएं, जो पृथ्वी से ले करके लोकों की उड़ाने उड़ने वाले हों, विज्ञान में सार्थक हों मानो देखो, ऐसे बुद्धिजीवी प्राणी, जो योग में परणित होते चले जाएं योगाभ्यास करते बेटा! देखो, मन और प्राण का दोनों का समन्वय करते हुए प्राण और मन को दोनों का समन्वय करके मन को प्राण के आश्रित बना लें और प्राण को, मेरे पुत्रों! देखो, आत्मा में आश्रय दे आत्मा को प्रभु में जो आश्रय देने वाला है, वही बेटा! देखो, बुद्धिजीवी, योगी कहलाता है।

अयोध्या निर्माण

आओ, मेरे पुत्रों! देखो, मैं कोई विशेष विवेचना तो तुम्हें देने आया हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, भगवान राम का यह उपदेश चल रहा था, भगवान राम ने अन्त में यह घोषणा की क्या मेरे राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी होना चाहिए, क्योंकि जिस समय इस अयोध्या का निर्माण हुआ था, तो अयोध्या का निर्माण स्वायंभु मनु महाराज ने मानो देखो, उस अयोध्या का निर्माण किया था। अयोध्या का निर्माण इस प्रकार किया जैसे प्रभु ने इस मानव शरीर की रचना की है इस मानो शरीर रूपी अयोध्या का निर्माण किया है, क्या मानो

देखो, इसमें अष्ट चक्र है, नौ द्वार कहलाते हैं। इसी प्रकार अयोध्या पुरी का निर्माण किया गया था। जो मुनिवरों! देखो, अक्ष्वा मनु ने, अयोध्या का निर्माण किया, और नाना राजा हुए हैं इसमें बेटा! देखो, रघुवंश भी रहा है, रघुवंश से पूर्व इनमें देखो, जहाँ राजा सगर का भी वंशलज रहा है, जो भागीरथ इत्यादि बेटा! देखो, इसी वंश में माने गएं हैं भगवान राम ने कहा क्या इसमें प्रायः देखो, ऋषि मुनियों की पतिका मानो अपने में प्रतिभाषित होती रही है।

तो जब मुनिवरों! भगवान राम यह उपदेश दे रहे थें उनका उपदेश विरामता को प्राप्त होने वाला था। उन्होंने कहा क्या प्रत्येक यहाँ माता पिता का ऋणी कोई नही रहना चाहिए देवताओं का ऋणी कोई नही रहना चाहिए, और मानो देखो, ब्रह्म ऋण को मानो देखो, अवऋण करने वाले हों, जिससे हमारे यहाँ, एक दूसरे का ऋण न हो, ऋषियों का ऋण, हमारे समीप रहता है। हम ऋषियों की आज्ञा का पालन करें, उन्होंने बेटा! देखो, अपने में यह कहा ऋषि मुनियों ने क्या ब्रह्मणे वाचप्रव्हा लोकां वसु असुतं मानो देखो, ऋषि मुनियों का यह मन्तव्य रहा है। क्या जिस भूमि में जिस स्थली पर हम रहते हैं, वह पवित्र बने, वह महान बनती चली जाएं। तो बेटा! भगवान राम ने यह वाक कह करके अपने वाक्यों को विराम दिया, और यह उच्चारण करते हुए राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी हों, एक दूसरे का समाज में ऋणी न हो ऋणों से अवऋण होना हमारा कर्तव्य है। मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम मौन हो गएं, और अपने राष्ट्र में यह घोषणा करा दी क्या प्रत्येक गृह में याग होने चाहिएं। पुरोहितां ब्रह्मे पुरोहितों के द्वारा अपने क्रियाकलापों के द्वारा होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, जैसे राम अपने में शान्त हो गएं दृष्टिपात किए क्या वहाँ नाना ऋषि मुनि जो ब्रह्मवेत्ता विद्यमान है बेटा! राम ने उनके चरणों की वन्दना की। और चरणों को स्पर्श करके बोले कि प्रभु! यह मेरा कैसा दुर्भाग्य है। मानो जो तुम बिना सूचना के मेरे आसन

पर आए हो, मुझे आज्ञा दे देते मैं अपने वाहन में तुम्हें राष्ट्र में लाता, मानो आपका स्वागत मैं न कर सका। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन बोले क्या नही, प्रभु! हम तो यहाँ मानो का किया तो कागा कृतियां मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने यह वाक उच्चारण किया तो राम ने कहा, क्या तुम बुद्धिमान हो मुझे आज्ञा दो, चारों विधाता नतमस्तिष्क हो करके, एक स्वर में बोले कहते हैं प्रभु! आज्ञा दीजीए, हमारे सुयोग्य कोई कार्य हो, जब मुनिवरों! देखो, भगवान राम को उन्होंने आज्ञा दी क्या तुम्हारे यहाँ एक याग होना चाहिए। हम याग के लिए प्रार्थी हैं। और हम यह चाहते हैं कि याग होना चाहिए। भगवान राम ने बेटा! बड़े प्रसन्नचित्त हो करके कहा क्या प्रभु! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। क्या ऋषि मुनियों की हम आज्ञा का पालन करें, देखो, अयोध्या मे तो याग होते ही रहते हैं। हे प्रभु! आपकी आज्ञा कहाँ कहाँ हमें प्राप्त होती है, यह तो हमें मानो देखो, हमारा सौभाग्य है। भगवान राम ने बेटा! वाक स्वीकार कर लिया ऋषि मुनियों को अपने अपने कक्षों में मानो उनका पदार्पण हुआ, वह अपने अपने कक्षों में विद्यमान हो गएं उनके मानो बेटा! देखो, उचित्त जैसे आसन बेटा! भगवान राम ने यह अप्रतियां थी वैसी वह भगवान राम ने बेटा! उसी प्रकार के आसन प्रदान किए उनका आहार मानो वृत्तियों में रत्त रहने वाला मानो उन्हें प्रदान किया गया। भगवान राम ने बेटा! देखो, शिल्पकारों को आज्ञा दी, क्या तुम एक यज्ञशाला का निर्माण करो, मेरे पुत्रों! देखो, साकल्य एकत्रित होने लगा। तो मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है ऐसा मानो देखो, ऐसा स्मरण जागरूक हो रहा है, क्या भगवान राम ने बेटा! नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित किया, और एकत्रित करने के पश्चात कुछ समय में यज्ञशाला का निर्माण हो गया। यज्ञशाला के निर्माण होने के पश्चात और नाना साकल्य एकत्रित जब हो गया तो भगवान राम ऋषि मुनियों के मध्य में पंहुचे, और ऋषि मुनियों के मध्य में जा

करके, उन्होंने कहा हे प्रभु! आप की यज्ञशाला में नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित हो गया है। मानो यज्ञशाला का निर्माण आईए भगवन! मानो आपका याग प्रारम्भ हो जाएं।

तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ऋषि मुनियो के सहित मेरे प्यारे! देखो, याग में मानो यज्ञशाला में उनका पदार्पण हुआ और नाना ऋषि मुनि बेटा! देखो, उनमें महर्षि वैशम्पायन उस याग के ब्रह्मा बने और मुनिवरों! देखो, महर्षि विभाण्डक उस याग के उद्गाता बने और मुनिवरों! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज उस याग के पुरोहित बने, और पुरोहित बन करके मेरे पुत्रों! और महर्षि शौनक इत्यादियों ने मुनिवरों! देखो, उस याग के अध्वर्यु बन करके बेटा! याग प्रारम्भ हो गया। होता जन जब एकत्रित हो गएं तो याग जैसे ही प्रारम्भ हुआ, बेटा! महर्षि बाल्मीकि इत्यादि का आगमन हुआ, महर्षियों का आगमन होने लगा, याग को दृष्टिपात करने के लिए, उन्होनें निमन्त्रित किया था। तो मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने जैसे ही याग प्रारम्भ किया तो प्रारम्भ के वेद मन्त्रों में आया चित्रं रथं ब्रह्मा वर्णों सम्भवा यज्ञमान सुतं ब्रह्मे द्यौ लोकां वाचन्नं ब्रहे कृतं ब्रह्मा ब्रव्हा सत्यं ब्रहे वाचन्नं ब्रहे अग्न ब्रीहि वाचन्न द्यौ लोका बेटा! यह वेद मन्त्रों को जब उद्घोष होने लगा वेदमन्त्र जब उद्गाता उच्चारण करने लगें, बेटा! उद्घोष में मेरे प्यारे! उनको सबको चुनौती प्रदान करने के पश्चात, भगवान राम ने जैसे अग्नि होत्र किया, उस अग्नि होत्र में जब वेदमन्त्र आया अग्नं रथं ब्रह्मा अग्नं ब्रीहि व्रत्यं ब्रहे वाचन द्यौ लोकाम् ऐसा जब उन्होंने जब वेद के मन्त्रों का उद्घोष होने लगा, भगवान राम ने याग मुनिवरों! वह शान्त कर दिया भगवान राम ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! मैं इस यज्ञ का मानो यज्ञमान मानो देखो, मुझे चुनौती प्रदान की है। मैं यह जानना चाहता हूँ क्या वेद का मन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके, द्यौ लोक में जाता है, मैं द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मैं उसे साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता

हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वैशम्पायन इत्यादियों ने विभाण्डक मुनि ने बेटा! देखो, अपना व्यक्तव्य देना प्रारम्भ किया उन्होंने कहा यह मानो देखो, यह जो अग्नि है अग्नि जिस यज्ञशाला में प्रदीप्त हो रही है, अग्नि में मानो सूक्ष्म तरंगें होती हैं, इन तरंगों में परमाणुवाद होता है, वह मानो देखो, उनके आकार का देखो, भ्रमण करके मानो देखो, द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है बेटा! वेद मन्त्रों के वांगमय में, ऋषि प्रवेश करता है, वेद मन्त्रों से निर्णय करा रहा है परन्तु राम अपने में स्वीकार नही कर रहे हैं, नाना ऋषि मुनि बेटा! अपने में आश्चर्य में परणित हो रहे हैं। मुनिवरों! देखो, जब यह वार्ता ही प्रारम्भ हो रही थीं, इतने में कहीं से बेटा! महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारिणी शबरी मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि पणपेतु, अपने वाहन में विद्यमान हो करके यज्ञशाला में उनका पदार्पण हो गया, जब यज्ञशाला में आ गएं तो मुनिवरों! देखो, राम ने उनके चरणों को स्पर्श किया, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि क्या श्वेत्ताश्वेतर क्या हे प्रभु! याग कैसे शान्त हो रहा है, अग्न्याध्यान हो करके भी याग शान्त हो गया है।

भगवान राम ने कहा प्रभु! यह वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र यह कह रहे हैं कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है मैं द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ, मेरी अभिलाषा है, भगवन! तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, क्या हे राम! तुम ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नही कर रहे हों क्योंकि देखो, अपमानित होना यह कोई प्रियता नही है। राम ने कहा प्रभु! मैं तो इन ऋषि मुनियों के चरणों की धूलि हूँ भगवन! मेरे में इतना सार्मथ्य कहा हैं जो मैं मानो देखो, इनका अपमान कर सकूं प्रभु! यह तो मेरे मानो देखो, श्रो वृत्तियां हैं, मेरे हृदय को प्रकाश में लाने वाले हैं प्रभु! मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होनें यह वाक श्रवण किया, तो महर्षि भारद्वाज श्वेत्ताश्वेतर ने अपने ब्रह्मचारी कवन्धि, और ब्रह्मचारिणी शबरी से कहा जाओं अपना वाहन ले जाओ, और देखो,

कजली वनों से अपनी विज्ञानशाला से मानो देखो, नाना प्रकार की चित्रावलियों को लाया जाएं, मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आ रहा है मुनिवरों! देखो, वह अपने वाहन को ले करके, मानो ऋषि की आज्ञा पा करके बेटा! कजली वनों में पंहुचे। कजली वनों से नाना प्रकार की चित्रावलियों को लाया गया, और वह चित्रावली जब आ गई तो उन्होंने देखो, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! देखो, यन्त्र स्थित कर दिए, और यन्त्रों में जब चित्रावली जब स्थित हो गई, तो उन्होंने कहा राम! अपना याग प्रारम्भ कीजिए। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि मुनियों के हर्ष की कोई सीमा न रही मानो हर्ष ध्वनि होने लगी जैसे राम ने मानो देखो, याग का प्रारम्भ किया याग का उद्घोष होने लगा। तो मुनिवरों! देखो, जैसे ही स्वाहा उच्चरण किया गया, वैसे ही मुनिवरों! देखो, यन्त्रों में देखो, स्वाहा के साथ में जो शब्द हैं, शब्दों के साथ चित्र है चित्रों के साथ में बेटा! क्रियाकलाप है, बेटा! वह यन्त्रों में साक्षात्कार दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने कहा राम! यह तुम दृष्टिपात करते जाओ, मानो देखो, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर क्रियात्मकता में विज्ञान के माध्यम से मानो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर तुम्हें प्राप्त हो रहा है। राम बड़े प्रसन्न हुए और ऋषि के चरणों की वन्दना की। उन्होंने कहा राम! मेरे यहाँ एक एक रक्त के बिन्दु वाले, यन्त्र भी विद्यमान हैं जहाँ एक रक्त का बिन्दु, वही उनका चित्र तुम्हें दृष्टिपात आयेगा। उन्होंने कहा नहीं प्रभु! मुझे विश्वास है, मैं विश्वसनीय हूँ, मैं आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ, प्रभु! आपने मेरे विचारों को मानो साकार रूप दिया है।

मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज बोले कि हे राम! तुम इसे जानते हो यह वही ब्रह्मचारिणी शबरी है, महर्षि पणपेतु मुनि महाराज की कन्या जब तुमने रावण से मानो संग्राम के लिए मानो संग्राम के लिए गमन किया था तो उस समय मानो देखो, मानो देखो, तुमने विजय याग किया, समुद्र तट पर, उस समय देखो, इसी शबरी ने तुम्हें देखो, सर्वत्र वैज्ञानिक

यन्त्रों को तुम्हें प्रदान किए थे और अस्त्रों शस्त्रो का निर्माण हमारे विद्यालय में हुआ और वह तुम्हें प्रदान किए थे शबरी के द्वारा यह तुम्हें प्रतीत होगा। मेरे पुत्रों! देखो, दर्शन करके, राम बड़े प्रसन्न हुए उन्होनें कहा प्रभु! मैं जानता हूँ मातेश्वरी को। मेरे पुत्रों! देखो, याग प्रारम्भ होने लगा, याग का प्रारम्भ हो रहा था मेरे पुत्रों! देखो, नाना ऋषि प्रश्नों उत्तरों में अपने जीवन की अपनी आभाओं की झड़ियों में परणित हो रहे थे मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है वह याग बेटा! देखो, छह माह तक प्रारम्भ रहा। छह माह तक याग प्रारम्भ रहा। परन्तु राम अपने चित्रों का दर्शन करते रहे द्यौ लोक में जाते हुए, शब्दों का दर्शन करते रहें क्योंकि द्यौ में जितना शब्द पवित्र होता है, दर्शनों से वेद मन्त्रों से गुथा हुआ होता है, शुद्धिकरण से उतना ही बेटा! वह द्यौ लोक को जाता रहता है, और यज्ञमान का जितना रथ वह मानो देखो, जितनी यज्ञशाला, जितने आकार में होता गण, विद्यमान है मानो देखो, उनका रथ बना बनाया देखो, यज्ञशाला के सहित देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आ रहा था। द्यौ लोक में उसकी स्थिति हो रही थी।

तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहां विचार आता रहता है मुनिवरों! देखो, मैं इस वाक को उच्चारण करना चाहता हूँ हमारे यहाँ ऋषि मुनि एक एक वाक पर बेटा! अपना अनुसन्धान करते रहे हैं, एक एक वाक को ले करके, वेद मन्त्रों में इस प्रकार का भाव, जब भी उपलब्ध हुआ है, उसी काल में बेटा! ऋषि मुनियों ने अनुसन्धान किया अन्वेषण किया है, अपने में मानो उसको लाने का प्रयास किया है तो मुनिवरों! देखो, छह माह तक, याग प्रारम्भ रहा और छह माह तक मानो देखो, अपने में दर्शन करते रहें चित्रों का दर्शन होता रहा। मेरे पुत्रों! देखो, छह माह के पश्चात राम का वह याग सम्पन्न हुआ, और सम्पन्न हो जाने के पश्चात मुनिवरों! ब्राह्मण इत्यादियों को उन्होने देखो, दक्षिणा प्रदान की। हमारे यहाँ दक्षिणा के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार का प्रसंग आता रहता है हमारे

यहाँ दक्षिणा का अभिप्राय यह है क्या जो यज्ञमान यज्ञशाला में विद्यमान है मानो उसके हृदय में जो त्रुटियां होती हैं जो उसके क्रियाकलापों में त्रुटियां होती हैं, उनको वह दक्षिणा में अर्पित कर देता है, वह दक्षिणा में जब वह अर्पित करता है, उसके हृदय का शुद्धिकरण हो जाता है। तेजोमयी प्रजापति बन जाता है, मेरे पुत्रों! देखो, ऐसा वेद का वाक कहता है, परन्तु देखो, ब्राह्मण को दक्षिणा देना, तो द्रव्य देना, तो उसके उदर के लिए कहलाता है। वह तो उदर पूर्ति के लिए, परन्तु जो वास्तविक दक्षिणा है, वह भी मानो देखो, त्रुटियां और जो आहार और व्यवहार में अशुद्धि आ गई हैं मानो देखो, उसको वह समर्पित कर रहा है। वह पुरोहित से कहता है हे पुरोहित जन! यह दक्षिणा आप स्वीकार कीजिए। मेरे पुत्रों! देखो, वह स्वीकार करता है और मेरे पुत्रों! देखो, वह दक्षिणा का वास्तविक जो स्वरूप है, वह त्रुटियों को त्यागना है, अपनी मानो देखो, मौलिकता को लाना है जो हमारे इस संसार में मानो देखो, आने का उद्देश्य है, कि दर्शनों की परिभाषा में मानो देखो, उद्देश्य को जानना मानो देखो, इसमें रत्त रहने का नाम यज्ञमान की प्रतिभा कहलाती है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ विचार केवल यह कि हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। वैदिक साहित्यों में बेटा! उनकी बड़ी विवेचनाएं, बड़ा विस्तार से वर्णन है समय आता रहेगा, तो बेटा! मैं वर्णन कर सकूंगा। आज का विचार हमारा क्या है? महर्षि वैशम्पायन बड़े प्रसन्न हुए, क्या मेरा जो वेद का मन्त्र जिसके ऊपर मैंने चिन्तन किया, उसका मैंने साकार रूप दृष्टिपात किया ऋषि मुनियों के आशीर्वाद से उनके क्रियाकलापों से, मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वैशम्पायन याग को सम्पन्न करके और राम से कहा कि धन्य है भगवन! हे राम! हे राजन! तुम्हारा राष्ट्र मानो बड़ा प्रियतम में बुद्धिजीवीयों की तुम्हारे यहाँ रक्षा होती रहती हैं, इसके साथ ही बेटा! देखो,

उन्होने गऊं इत्यादि नाना मुद्राएं प्रदान की और मुनिवरों! सब ऋषि मुनियों ने वहाँ से गमन किया। वह मेरे पुत्रों! अपने अपने आसनों पर, उनका गमन हो गया, प्रसन्न चित्त हो करके वह विचार विनिमय क्या हमारे इन वाक्यों का कि हमारे यहाँ परम्परगतो से ही, याग अपने में एक अनूठा क्रियाकलाप है, जो देवताओं का मानो देखो, सबसे प्रथम नृत्त कहलाया जाता है। जिससे देवता, अपनी अपनी आभा में गति करता रहता है, नियुक्त होता रहता है, यह मुनिवरों! देखो, यज्ञमान उसके साथ में नियुक्त करता रहता है। विचारता है मुनिवरों! देखो, यागाम् ब्रह्मणे व्रत्यं देवाः शुद्धम ब्रीहि व्रत्याम् मेरे प्यारे! देखो, उससे शुद्धिकरण हो जाता है, राष्ट्र में एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है, क्योंकि जो राजा, जिन क्रियाकलापों को करता है प्रजा उसी के अनुसार अपने जीवन को बरतने लगती है तो बेटा! राष्ट्र पवित्र बन जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, बेटा! हम अपने क्रियाकलापों में पवित्र होते रहें, ससार सागर से हम पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि हम मानो देखो, द्यौ में महानता में अपने को धारण करते चले जाएं, यज्ञमानं ब्रव्हे राजा के राष्ट्र में एक दूसरे का ऋणी नही रहना चाहिए, देव ऋण, ऋषि ऋण, पितर अब्रे मेरे प्यारे! देखो, पितर ऋण यह नाना प्रकार के ऋण है देवत्वं ब्रह्मणे वाचा यह सब मानो देखो, इसका पालन करते हुए हम, इस संसार सागर से पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा, इसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी।

2 ०३ ०१ १९८३ वसुन्धरा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व

की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि एक एक वेदमन्त्र में, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा निहित है। प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर, जब मानव चिन्तन करने लगता है अथवा मनन करने लगता है तो उसी एक वेदमन्त्र में बेटा! प्रभु की प्रतिभा और संसार का जितना भी ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी के रूप में हमें दृष्टिपात होने लगती है। आज का हमारा वेद मन्त्र, माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहा था जहां नाना मन्त्रों की प्रतिभा, वहां एक वेदमन्त्र था वसुंधरं ब्रह्मा प्रव्हे देवत्यां लोकाः वेदमन्त्र कहता है हे माता! तू वसुधंरा है, कल्याण करने वाली है, मानो वसुन्धरा के ऊपर, वैदिक साहित्य के ऊपर, जब चिन्तन करने लगते है तो उस वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची शब्द, हमारे समीप आने प्रारम्भ हो जाते है, वसुन्धरा का अभिप्राय है, जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते है।

वसुन्धरा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब हम ब्रह्मा सूत्रगं ब्रहे वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची शब्द है जैसे वसुन्धरा नाम माता का है, वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है, और वसुन्धरा नाम उस परमपिता परमात्मा जो चैतन्य स्वरूप है। मानो जिसके गर्भस्थल में यह संसार वशीभूत हो रहा है। तो वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची शब्द है। परन्तु माता को इसलिए वसुन्धरा कहते है क्योंकि माता के गर्भस्थल में, यह मानव वशीभूत होता है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में बसता रहता है, क्योंकि वह बसता है, इसीलिए उसका नाम वसुन्धरा है। मेरे प्यारे! नाना प्रकार के व्यंजनों

को, जन्म देने वाली, नाना प्रकार की आभामयी मानो यह ब्रह्माण्ड अपने में आभायित होता रहता है, उस मेरे देव में, परमपिता परमात्मा के गर्भस्थल अब्रह्मे अस्तो यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड जैसे परमात्मा के गर्भस्थल में व्याप्त है, इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में यह मानवीयतव मेरे प्यारे! देखो, उसमें अपनी आभा को प्राप्त करता है। परन्तु जहां माता के गर्भस्थल से, पृथक होता है उसके पश्चात यह पृथ्वी के गर्भ में ओत प्रोत हो जाता है। जिस माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ इस मानव को प्राप्त हो जाता है। जिससे मानव देखो, राष्ट्रीयता का निर्माण कर लेता है, उसी से नाना प्रकार की धातुओं को जानता हुआ वैज्ञानिक बन जाता है, नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों को जान करके बेटा! देखो, अपने में प्रतिभाषित हो जाता है, अपने मानव जीवन को पनपाने लगता है, इसी प्रकार नाना प्रकार के खाद्यम् मानो देखो, खनिज माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान है। जब मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिक जन इस माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश करते है तो नाना प्रकार के रत्नों का निर्माण उन्हें दृष्टिपात होता है। कहीं बेटा! रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो स्वर्ण का निर्माण हो रहा है, मुनिवरों! देखो, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। हे प्यारी मां! हे वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में क्या नहीं है मानो जब तेरे गर्भस्थल में जब योगेश्वर मानो समाधिष्ट हो करके तेरे गर्भ में प्रवेश करता है तो मानो उसी में तेरी आभा प्रतिभाषित होने लगती है।

अण्डाकार ब्रह्माण्ड

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आने लगता है, जब माता वसुन्धरा के गर्भ के ऊपर, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने किसी काल में बेटा! चिन्तन और मनन किया। मेरे पुत्रों! देखो, जब उनकी विज्ञानशाला में नाना प्रकार के वैज्ञानिक जन विद्यमान हुए तो मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश

करने लगे, जब पृथ्वी के गर्भ में उन्होंने प्रवेश किया तो इस माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! कही उन्हें नाना प्रकार के खनिज प्राप्त होने लगे। मानो देखो, नाना धातु उन्हें प्राप्त होने लगी, उसी को ले करके बेटा! उन्होंने अपनी विज्ञानशाला मानो देखो, विज्ञानशाला का निर्माण किया। उस विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण करने वाले बेटा! देखो, उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया, जिससे वह नाना प्रकार के खनिजों को मानो वह दृष्टिपात कर सके। तो मेरे पुत्रों! देखो, जहां जननी माता को वसुन्धरा कहते है, वहां वसुन्धरा नाम मानो उस पृथ्वी को भी कहा जाता है। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! पृथ्वी को केवल वसुन्धरा ही नहीं कहते है ओर भी नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द है जिसको बेटा! कामधेनु भी कहते है, इसको धेनु भी कहा जाता है। परन्तु इसी का नाम हमारे यहां पृथा है, इसी का नाम जब हम देखो, इस वैदिक साहित्य में, वेदमन्त्र का चिन्तन करने लगते है तो बेटा! कहीं अजा के रूप में दृष्टिपात आने लगती है। परन्तु यही पृथ्वी है जो मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिकों के मध्य में जा करके, वैज्ञानिक इसके ऊपर अनुसंधान जब करते है तो मानो देखो, ऐसा विशाल भण्डार इसके गर्भ में मानव को प्राप्त होने लगता है कि मुनिवरों! देखो, मानव अपने में यह स्वीकार करता है कि यह भण्डार कहां से आ गया, कौन दे रहा है, कौन निर्माण कर रहा है, इसी पृथ्वी का सम्बन्ध बेटा! आदित्य से रहता है। आदित्य का सम्बन्ध द्यौ से रहता है, द्यौ का सम्बन्ध मेरे प्यारे! देखो, वहां प्रतिभा अश्वेत्ता से रहता है। जिससे मुनिवरों! देखो, मानव अपने में यह विचारने लगता है कि यह तो प्रायः अण्डमयी एक ब्रह्माण्ड मानव के समीप आने के लिए तत्पर हो जाता है।

चित्त में संस्कार

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, मुझे वह काल भी स्मरण आता रहता है, जिस काल में मुनिवरों! देखो, याज्ञिक

कर्म करने वाला, याग कर रहा है। मेरी प्यारी माता याग कर रही है परन्तु ऋषि मुनि जब अपनी आभा में विद्यमान हो करके, याज्ञिक बन करके मानो देखो, नाना प्रकार की तरंगों को, तरंगों में अपने को दृष्टिपात करते रहे। बेटा! मुझे वह काल भली भान्ति स्मरण आता रहता है, जब मेरे पुत्रों! देखो, सोमकेतु ऋषि महाराज, सोमकेतु दद्दड़ गोत्रीय महर्षि बेटा! देखो, अपने आसन पर विद्यमान हो करके, वह उड़ान उड़ने लगा कि यह पृथ्वी तो चित्त का एक मण्डल बना हुआ है। मानो यह जो मेरी प्यारी मा वसुन्धरा बन करके हमारे में मानो देखो, वसुव्रत बना रही है मुनिवरों! देखो, उसके ऊपर चिन्तन करता हुआ, विचारता है ऋषि कि वेद का मन्त्र तो यह कहता है कि चित्रो रथं ब्रह्मा व्रतो व्रती देवाः क्या मानो देखो, यह जो चित्त नाम की भूमि है ऐसे ही मानव के शरीर में थी एक चित्त नाम का स्थान विद्यमान होता है। वह जो चित्त है उसमें मानो नाना संस्कार विद्यमान होते है। नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान होते है, उन संस्कारों को जानना चाहिए, जब तक संस्कार इस मानव के शरीर में रहते है, चित्त नाम की स्थली बनी रहती है, तब तक इस मानो देखो, ब्राह्माण्डं ब्रूहो कृते तब तक मानो देखो, वह मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसा मुनिवरों! देखो, उनके हृदय में समाहित हो गया क्या मुझे वास्तव में उस चित्त के मण्डल को जानना है।

आवागमन का मूल

तो मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु दद्दड़ मुनि अपने में बेटा! देखो, चिन्तन करने लगे, मनन करने लगे कि मानो देखो, चित्त का सम्बन्ध मानव के हृदय से होता है उस चित्त का सम्बन्ध मानो उसके दो रूप बन जाते है। एक बाह्य जगत बनता, एक आन्तरिक जगत बनता है। मेरे पुत्रों! ये दोनों प्रकार का जब जगत बन जाता है, तो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों चित्तों का जैसे समन्वय करता है मानो मिलान करता है तो मुनिवरों! देखो, उसमें से संस्कार ऐसे उद्बुद्ध होने लगते है

ऐसी छठा उनको दृष्टिपात आने लगती है मानो देखो, वह आश्चर्य में चकित हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, इन संस्कारों का जो एक अनुपम जगत बन गया है, जो एक आवागमन के मूल में विद्यमान रहता है।

चित्त का स्वरूप

तो मुनिवरों! देखो, उस मूल को जानता है। जब बुद्धिमान मूल को जानने लगता है प्रत्येक नाना प्रकार के जो उसके चित्त के संस्कार है वह चित्त के संस्कार को नहीं बनने देता मानो देखो, उस काल में वह बेटा! देखो, बाह्म और आन्तरिक दोनों चित्तों का मिलान करता है। जैसे माता पृथ्वी के चित्त बना हुआ है नाना प्रकार के इसमें खाद्य और खनिज विद्यमान है मानो बेटा! वैज्ञानिक जन, भौतिक वेत्ता इस विज्ञान के युग में प्रवेश करता है, तो मानो एक तरंग को जानता है, द्वितीय तरंगे उपस्थित हो जाती है तृतीय को जानता है तो चतुर्थ उपस्थित हो जाती है अन्त में बेटा! वह मौन हो जाता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, योगेश्वर जब प्राणों के संघात का, मन और प्राण दोनों का समन्वय करता हुआ मानो देखो, प्राण की अभ्यस्थ गति को जानने लगता है। मेरे पुत्रों! उस काल में देखो, यह जो मन देखो, मन के द्वारा जो नाना के संस्कार चित्त में विद्यमान है, मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार ये मानो तीनों मन की दशा कहलाती है, यह एक मन की ही प्रतिभा कहलाती है, जिसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से विचार विनिमय करता रहता है। इसी चित्त के ऊपर चिन्तन करने वाले वैज्ञानिकों ने बेटा! बहुत गम्भीर अध्ययन किया है। परन्तु उसी चित्त को ले करके, ऋषि मुनियों ने बेटा! ऐसे ऐसे पुरातन काल में बेटा! ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया है जो मानो देखो, शब्द, मानव के मुखारबिन्द से उत्पन्न हुआ, वही शब्द बाह्य चित्त में स्थिर हो जाता है मानो देखो, चित्त को जानने के लिए ऋषि मुनियों ने बेटा! यन्त्रों का निर्माण किया और उन

चित्रों को दृष्टिपात किया है।

ऋषि सोमकेतु का चित्त अनुसंधान

तो आओ, बेटा! मैं आज तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ विचार विनिमय क्या कि यह माता वसुन्धरा है जिसमें बेटा! नाना जन्म जन्मातंरों के संस्कार मानव के विद्यमान रहते है, जैसे खाद्य और खनिज इसके गर्भ में विद्यमान है, नाना प्रकार के खनिज विद्यमान है बेटा! कहीं मानो रत्नों की धातु है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, कहीं ओजस बन रहा है, परन्तु देखो, उसमें यह सर्वत्र विद्यमान रहता है। परन्तु देखो, जब हम और भी गम्भीरता से इसके क्षेत्रों में प्रवेश करते है, क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि सोमकेतु महाराज ने अपनी विज्ञानशाला में, सूक्ष्म सा उनका आश्रम था, उस आश्रम में नाना ब्रह्मचारी आते रहते थे, अध्ययन करते रहते थे, उनका अध्ययन करने का जो विषय था वह केवल यही था कि मैं चित्त को जानूँ, चित्त के ऊपर बेटा! वह मौन रहते। परन्तु देखो, अपने आहार और व्यवहार को शुद्ध बनाते हुए मानो देखो, मन और प्राण दोनों का समन्वय करते रहते थे।

तो मुनिवरों! देखो, हम चित्त के मण्डल को जानने लगे, तो उन्होंने पुत्रों! देखो, सुवंधना समीप आते थे सोमभान केतु ऋषि महाराज, मेरे प्यारे! वह अङ्गिरस कहलाते थे, उन्होंने कहा आओ, अगिंरस! तुम इस सम्बन्ध में जानते हो? तो ऋषि महाराज ने, अङ्गिरस ने कहा हे प्रभु! मैं जानता तो हूँ, परन्तु मेरा इतना गम्भीर अध्ययन नहीं, सूक्ष्म सा अध्ययन है। परन्तु उन्होंने कहा महाराज! जितना आप जानते है, उतना आप वर्णन कीजिए। मानो उसका क्रियात्मक हमें वर्णन कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, अङ्गिरस गोत्रीय ऋषि ने कहा हे दद्दड़ गोत्रीय! तुम उच्चारण करो कि तुमने अब तक क्या जाना है? उन्होंने कहा प्रभु! मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ, कि चित्त के मण्डल में, मानो जन्म जन्मातत्रों के संस्कार विद्यमान होते है। जैसे पृथ्वी के गर्भ में, वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार का

खाद्य और खनिज विद्यमान है मानो उन कणों में एक आभा निहित हो रही है इसी प्रकार मानव के मानवीय शरीर में भी चित्त के नाना संस्कार विद्यमान है।

अन्तरिक्ष में शब्द

मेरे प्यारे! देखो, उस समय प्रति मानो देखो, अङ्गिरस गोत्र ऋषि ने कहा कि तुम यह नहीं जानते कि मानव के जो शब्द है, शब्दों की जो उत्पत्ति होती है वह केवल रसना से और तालु से होती है परन्तु देखो, रसना और तालु के गम्भीरा ध्वनम् मानो एक अध्ययन से प्रतीत हुआ वहाँ एक यत्र विद्यमान है जिस मानो देखो, शब्द, शब्दं ब्रह्मा उसी की आभा अन्तरिक्ष में विद्यमान रहती है। तो तुमने यह श्रवण किया होगा कि हमारे यहां उद्दालक गोत्रीय जो स्वानकेतु ऋषि महाराज है, उनके यहां मानो याग होता था और यागों के द्वारा चित्रों का निर्माण होता रहा है, यत्रों का निर्माण होता रहा है, वह अपने पिता महापिताओं के अन्तरिक्ष में मानो देखो, पिता महापिताओ के चित्रो का दर्शन करते रहे है, इससे यह प्रतीत हुआ है कि हमारा अन्तः करण मानो देखो, जैसा चित्त का समूह बना हुआ है वैसे बाह्य जगत मे यह जो अन्तरिक्ष है, इसमें शब्दों का चित्र बना हुआ है मानो देखो, शब्द के साथ में जो चित्रवलियो का चित्रण हो रहा है वह भी उसमें विद्यमान है। उन्होंने कहा कि महाराज! यह तो मैंने मानो स्वीकार किया है, सोमकेतु ऋषि ने कहा कि महाराज! यह तो मैंने जाना है परन्तु इसके आगे का कुछ ओर आप जानते हो तो मुझे निर्णय कराईए।

हृदय से ज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि ने कहा कि मेरे एक महापिता है, वे पिच्चासी वर्षों तक मौन रह करके मानो वह चित्त के ऊपर अध्ययन कर रहे थे, उन्होंनें चित्त में यह दृष्टिपात किया कि मानव के हृदय में, इस संसार की सर्वत्र मानो बुद्धि विद्यमान है, यह जो मानव का हृदय है हृदय में मानो देखो,

सर्वत्र चित्रावली विधमान रहती है, अङ्कुर विद्यमान रहते है और यह जो अङ्कुरं ब्रह्मे स्वस्ता यह जो चित्त का मण्डल है इसका सम्बन्ध मानो देखो, बाह्म जगत उसकी उन मानकृतियों से रहता है। तो इसलिए हृदय को जाना जाए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि हृदय के ऊपर अनुसन्धान करने वालों ने यह कहा है कि संसार की जितनी भी वस्तु है, जितना भी विज्ञान है, जितना भी आध्यात्मिकवाद है, जितना भी योगवाद है वह मानव ने अपने हृदय से ही जाना है इसलिए प्रत्येक मानव को, अपने हृदय में, हट्यन्त अन्तर्गुफा में प्रवेश कर देना चाहिए, वह जो हृदय में एक मानो देखो, आत्मीय, जिसको ब्रह्माग्नि कहते है वह जो आत्मशक्ति है, जिसको ब्रह्मचेतना कहते है मानो देखो, उसकी तरंगें उद्धबुद्ध होती रहती है, उन उद्वबुद्ध होने वाली तरंगों का जो समन्वय होता है वह हृदय में होता है इसलिए देखो, हृदय अगम्य कहा जाता है। मानो देखो, हृदय ही संसार की एक विचित्र गुत्थी कहलाती है, एक विचित्र आभा कहलाती है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अनुसंधान कर रहा है।

सप्त जिह्वा वाली अग्नि

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है। वह काल, जिस काल में मुनिवरों! देखो, मानव विज्ञान के ऊपर उड़ान उड़ने के लिए तत्पर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के काल में भी मानो देखो, विज्ञान पराकाष्ठा पर रहा है। राजा रावण के यहां, उनके जो विधाता मानो देखो, कुम्भकरण थे, जिनका बाल्यकाल का नाम कुछ और उच्चारण किया जाता था। परन्तु एक समय वह मानो देखो, अपनी यज्ञशाला में विद्यमान थे, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, अपनी पत्नी से बोले कुम्भकेतु कि है देवी! मानो देखो, हम यह जो याग कर रहे है हम जो याग कर है, इसमें शब्द आता है, उद्बुद्ध स्वाहा, मानो देखो, उद्बुद्धता आती है यह अग्नि हमें उद्बुद्ध करनी है, जिस अग्नि में नाना प्रकार की मानो देखो, वृत्तियाँ कहलाती है, यह अग्नि

सप्त जिह्वा वाली बन करके यही अग्नि मानो देखो, काली बन करके, कहीं यही अग्नि काली मां के रूप में प्रगट हो जाती है, कहीं यही अग्नि मानो देखो, काल रात्रि के रूप में प्रगट हो करके मानो देखो, सप्तजिह्वा वाली अग्नि बन करके, यह मानव को चेताती रहती है। परन्तु देखो, इसी अग्नि के ऊपर हमें अनुसंधान करना है। तो मेरे पुत्रों! जब यह वाक उनके समीप आया तो उन्होंने कहा प्रभु इसके ऊपर और मनन किया जाए।

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा कुम्भकेतु मानो देखो, अनुसंधान करने लगे, क्योंकि उनकी एक विज्ञानशाला भी थी, यज्ञशाला भी थी और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उन तरंगों को गणना में लाते थे, जो तरंगे उत्पन्न हो गई है। वेदमन्त्र आ रहा है, एक वेदमन्त्र है परन्तु उसका देवता है, उस देवता के आधार पर वही अग्नि मानो देखो, उद्बुद्ध हो करके, वही देवतव को धारण करके मेरे प्यारे! देवता को हवि प्रदान की जा रही है। वही देवता मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि को अपना मुख स्वीकार करता हुआ, वह अग्नि देवताओं का मुख बन करके मानो देखो, ब्रह्माग्नि बन करके, यह मानव के हृदयों में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, इसके ऊपर महाराजा कुम्भकेतु मानो चिन्तन करने लगे और मनन करने लगे, परन्तु देखो, मनन करते करते, उनका हृदय एक आभायित हो गया। मुनिवरों! देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र अश्वत कहलाता है, वह त्रुटि कहलाता है परन्तु देखो, उससे जो ब्रह्म वह शान्त हुए तो मुनिवरों! देखो, चिन्तन करते करते रात्रि आ गई रातं ब्रव्हे मानो देखो, रात्रि की गोद में चले गये।

तो मुनिवरों! देखो, मध्य रात्रि में, जब उन्हें निंद्रा जागरूक हुई तो वही स्मरण आ गया अग्नं ब्रह्मा अग्नं रुद्रो भवो सम्भवा अग्नि दिव्यं गतप्प्रव्हा अम्ब्रहे व्रतुत्यं ब्रह्मे अग्नि मेरे प्यारे! देखो, वही मन्त्र, वेदं ब्रह्मा स्मरण आ गया और उन्होंने उसके ऊपर चिन्तन करना प्रारम्भ किया मौन हो गया और मौन हो करके उसकी अन्तरात्मा में से बेटा! देखो, वह जो द्रव्य मे से,

उन तरंगों से वह तरंगें उद्बुद्ध होने लगी, जो तरंगें वह वेदमन्त्र घोषित कर रहा था। क्या मानो यह अग्नं ब्रह्म स्वस्ते देवाः मानो देखो, जिसे हम ब्रह्माग्नि कहते है वेद का शब्द कहता है कि यह ब्रह्माग्नि है। बेटा! ब्रह्माग्नि क्या है ब्रह्माग्नि आत्म ज्योति है, उसका समन्वय हृदय से होता है और हृदय में से जो तरंगे उद्बुद्ध होती है मानव की रसना के समीप आ करके बेटा! उसका आकार बन करके, ज्ञान के रूप में वही ब्रह्माग्नि का भाव मेरे पुत्रों! देखो, मानव प्रगट करने लगता है, वह गान गाने लगता है। जैसे बेटा! वेद मन्त्र, ब्रह्म की गाथा गा रहा है वैसे ही ब्रह्म की गाथा गा रही है, जिसके गाने के पश्चात मानव अपने में आश्चर्य युक्त हो जाता है।

अग्नि का सूत्र

तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक जब उनके समीप आया और चिन्तन करने लगा, कि यह अग्नि का ब्रह्मा रूप कैसे बन सकता है? मेरे प्यारे! देखो, अग्नि में से नाना प्रकार की तरंगे जैसे यही अग्नि बेटा! देखो, वेदमन्त्र की आभा में युक्त होती हुई, यही अग्नि मानो शब्द के रूप में परणित हो गई, यही अग्नि मानो वेद का भाष्य मेरे पुत्रों! देखो, उस महान अग्नि में प्रदीप्त हो गया, जो काष्ठ में रहने वाली है, वही अग्नि मानो देखो, तरंगों के रूप में, अन्तरिक्ष में रमण कर रही है। यही अग्नि है, जो मानव के समीप में जाती हुई, शब्द के रूप में जाती हुई बेटा! जिसमें राष्ट्र अग्नि के मुख में प्रवेश कर जाते है। मानो इस अग्नि ने कितने प्रकार के स्वरूपों को धारण कर लिया है। मेरे पुत्रों! देखो, यही अग्नि है, जो वायु के रूप में मानो देखो, वायु की तरंगों में तरंगित होती हुई बेटा! अग्नि अतंरिक्ष में प्रवेश हो जाती है। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है, कि अन्तरिक्ष में नाना प्रकार का संघर्ष भी मानो अन्तरिक्ष के परमाणुओं का होता रहता है, उस संघर्ष का परिणाम यह होता है कि लोक लोकान्तरों की जो एक माला बनी हुई है बेटा! वही अग्नि का सूत्र बन करके, मुनिवरों! देखो,

लोक लोकान्तरों को स्थिर कर रही है।

गृह का शोधन

तो बेटा! मैं कहां चला गया हूँ, वाक उच्चारण करता हुआ परन्तु वेदमन्त्र क्या कह रहा है, कि मानो देखो, यह अग्नि कितनी दिव्य है, इस अग्नि के ऊपर मानव को चिन्तन करना है, यही अग्नि बेटा! कहीं मानो देखो, गार्हपथ्य रूप में परणित होती हुई, ब्रह्मचारी को तपा रही है, यही अग्नि है जो मेरे पुत्रों! देखो, गृहपथ्य बन करके, माता पिता को तपा रही है। माता पिता अपने गृह में स्वर्ग बनाना चाहते हैं परन्तु अग्नि को प्रदीप्त करके, बेटा! गृह को स्वर्ग बना सकते है। मानो देखो, यह अग्नि है जो गृहपथ्य मानो मानव अपना गृहपथ्य को धारण करती हुई मेरे पुत्रों! देखो, माता पिता उसमें तपते रहते हैं और देखो, बाल्यां भूषणं ब्रव्हे मुनिवरों! देखो, कोई भी माता पिता यदि गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है, तो मुनिवरों! देखो, माता पिता उस अग्नि को प्रदीप्त करते है, जिसे गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते है। गृह को शोधन करने के लिए, मेरे पुत्रों! देखो, माता पिता जिस शब्द का उच्चारण करते है ज्ञान रूपी अग्नि से मानो देखो, उत्पन्न होने वाला शब्द बालक को महान बना देते है, गृह का शोधन कर देते है। मेरे पुत्रों! वही शब्द के रूप में, गृहपथ्य नाम की अग्नि मानो देखो, बाल्य बालिका ब्रह्मवर्चोसि बन करके मेरे पुत्रों! देखो, गृहस्वर्ग बन जाता है। देखो, विद्यालयों में यही अग्नि है, ब्रह्मवर्चोसि बन करके मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी को गार्हपथ्य नाम की अग्नि बन करके ब्रह्मचारी को तपा करके बेटा! उद्बुद्ध कर देती है। तो उदबुद्धं ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, कौन ब्रह्मा वस्तु देवाः याज्ञिक पुरुष कहता है कि उद्बुद्ध स्वाहा कह करके, अग्नि को उद्बुद्ध करना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, कुम्भकेतु महाराज के हृदय में यह वाक समाहित हो गया मानो देखो, अग्नि को उद्बुद्ध करना है और अग्नि को उद्बुद्ध करने से ही मानव के जीवन में एक महानता

आती है। परन्तु मानो यही अग्नि है जो बाह्य जगत में, इस रूप से रहती है, यही अग्नि है जो मानव के हृदय में मानो पनपती रहती है, तरंगों के रूप में परणित होती हुई, हृदय रूपी यज्ञशाला में अग्नि बेटा! उद्बुद्ध होती रहती है ज्ञानाग्नि उद्बुद्ध होती रहती है तो बेटा! मानव देखो, महान बनता रहता है।

माता वसुन्धरा

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ, गम्भीरता में ले गया हूँ वाक्यों को, विचार विनिमय क्या कर रहा है मुनिवरों! विचार देते हुए कहाँ चले गये, हे माता वसुन्धरा! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाली है, यह पृथ्वी मानो वसुन्धरा बन करके रहती है, इसी के रूप में बेटा! देखो, चित्त का मण्डल बनता है जैसे नाना प्रकार के चित्र इस वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान रहते है, इसी प्रकार मानव के शरीर में चित्त रूपी स्थान रहता है, इसी प्रकार ब्रह्माग्नि प्रदीप्त होने वाला हृदय रहता है, उस हृदय से वह हृदय मानो चेतना से सहायता ले करके बेटा! देखो, उद्बुद्ध हो रही है। इसी प्रकार जैसे हम पृथ्वी माता को वसुन्धरा कहते है, इसी प्रकार बेटा! देखो, यह देव है जिसकी चेतना से यह जगत चेतनित हो रहा है मुनिवरों! देखो, उस महान देव को भी हमारे यहां वसुन्धरा कहा जाता है हे वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हे ममत्तव को धारण करने वाली! तू मानो हमें उज्ज्वल प्रेरणा प्रदान कर, जिससे हम प्रेरक हो करके इस संसार सागर से पार हो जाए। यह जो संसार है यह मानो अद्भुत हमें दृष्टिपात आ रहा है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तर है, जो आज इनके गर्भस्थल में विद्यमान है। मानो हम सब सर्वत्र ब्रह्माण्ड तेरे गर्भस्थल में विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में, जब हम अपने को स्वीकार करते है, हम अपने अमृतम्, गृह में रहने वाले प्रभु को अपने समीप जब हम दृष्टिपात करते है तो बेटा! वह माता वसुन्धरा बन जाती है, हम उसको बेटा!

वसुन्धरा स्वीकार करने लगते, मुनिवरों! देखो, हम उस सागर से पार होने के लिए तत्पर हो जाते है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तर इसी के गर्भ में दृष्टिपात करते है, मानो सूर्य प्रकाश दे रहा है, आदित्य बन करके प्रकाश दे रहा है, प्रातःकाल में उदय होता है सांयकाल को अस्त हो जाता है, मानो अस्ताचल को चला जाता है, वही प्रातःकाल उदय होता है, चन्द्रमा, अदिति से आभा को ले करके अपना प्रकाश देता है मानो वह सुन्दर कान्ति देता है, उद्बुद्ध होने वाला मानो देखो, ज्ञान उससे उत्पन्न हो जाता है।

सूर्य अनुसंधान

तो मेरे पुत्रों! विचार क्या, मानो वह जो सूर्य है जो हमें प्रकाश दे रहा है मुनिवरों! देखो, सूर्य के ऊपर वैज्ञानिकों ने मानो जन समूह ने बेटा! एकाग्र हो करके अनुसंधान किया। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब सूर्य विज्ञान को, सूर्य विज्ञान को जानने के लिए ही बेटा! महाराजा हनुमान जी ने और देखो, स्वाति ऋषि महाराज ने, इन दोनों ने बहुत अनुसन्धान किया था। वह काल मुझे स्मरण है, बेटा! सूर्य की सर्वत्र विद्या को जानने वाले मानो सूर्य से सहायता ले करके, महर्षि नारद मुनि महाराज भी सूर्य विद्या के मर्म को जानते थे। मुझे वह काल स्मरण है जब मुनिवरों! देखो, यहां श्वन्धनम् दे करके सूर्य की नाना किरणों के साथ में बेटा! योगी अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ता था, मानो अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ने वाला, किरणों के साथ नाना प्रकार की किरणें एक कराली नाम की किरण है जिसको बेटा! देवर्षि नारद मुनि जानते थे। जिस किरण के आश्रय हो करके वह लोक लोकान्तरों की यात्रा भी करते थे। परन्तु देखो, एक बेटा! माला बनी हुई है आज जब उनके ऊपर विचार होने लगता है कि यह तो सूर्य है, यह कैसी विचित्र एक माला को अपने में धारण कर रहा है। बेटा! इसके ऊपर आचार्यों ने बहुत अनुसंधान किया है यह जो सूर्य है यह नाना पृथ्वियों की एक माला बनाए हुए है बेटा! नाना प्रकार

के मनके है उन मनको का सूत्र मानो यह सूर्य दृष्टिपात आ रहा है। नाना चन्द्रमा है परन्तु उनका भी सूत्र यह मानो सूर्य ही दृष्टिपात आ रहा।

ब्रह्माण्ड की विशालता

तो मेरे प्यारे! वेद का विचारक जो यह कहता है कि तीस लाख पृथ्वियाँ है जो मानो देखो, सूर्य अपने कण्ठ में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! वेद का ऋषि यह कहता है, वेद का मन्त्र यह कहता है चन्द्रं भवा सम्भवा आदित्यां भवो सम्भवता अम्भुतं देवत्यां मानव व्रेस्तो वेद का मन्त्र यह कहता है मानो देखो, जैसे तीस लाख पृथ्वियाँ, मुनिवरों! देखो, सूर्य अपने कण्ठ में धारण कर रहा है इसी प्रकार मानो देखो, लगभग तीस लाख मानो देखो, चन्द्रमा मण्डलों की माला बना करके बेटा! सूर्य अपने में गति कर रहा है गतिशील हो रहा है। वाह रे मेरे देव, तू कैसा विचित्र है, तू कैसी मेरी प्यारी मां वसुन्धरा है, तू मानो इस संसार को अपने गर्भस्थल में धारण कर रही है। हे मां! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है मानो तेरे में ही बस रहा है यह ब्रह्माण्ड, सर्वत्र जगत तेरे में क्रीड़ा कर रहा है। तू उस ब्रह्माण्ड को गति दे रही है। मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर वैज्ञानिक ऋषि मुनियों ने बहुत अनुसंधान किया। मेरे प्यारे! देखो, अनुसंधान क्या सम्भवितां कृते स्वस्तां लोकाम् वेद का ऋषि कहता है नाना चन्द्रमा मानो देखो, उनकी परिक्रमा कर रहे है, नाना पृथ्वियाँ बेटा! परिक्रमा कर रही है, एक माला के सदृश्य बना हुआ है, सूर्य माला, मुनिवरों! देखो, पृथ्वी का वैज्ञानिक देखो, सूर्य की किरणों के साथ में उड़ान उड़ रहे है। मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा को जान रहा है चन्द्रमा को सोम कहते है, समुद्रों से देखो, बेटा! उसका जलाशयों से समन्वय रहता है। मानो देखो, उसका समन्वय केवल ब्रहा आदो चन्द्रमा को आपो भी कहते है, आपो ज्योति भी कहते है।

परन्तु विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, जो सूर्य आदित्य बन करके प्रातः काल ऊषा काल को ले करके मानो

देखो, उदय होता है, कान्ति बन करके आता है, उषा बन करके आता है, मेरे प्यारे! देखो, उस कान्ति को वह अप्रतम् देवाः सदैव उस कान्ति को, मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा को प्रदान कर देता है, और पृथ्वी को अपने में धारण करता हुआ, मुनिवरों! देखो, यह नाना प्रकार की आभाओं को, मालाओं में धारण करने वाला मानो एक आदित्य कहलाता है। यह अपने में जलों को ले करके बेटा! पृथ्वी की आभा में गति प्रदान कर देता है। परन्तु देखो, वेद का उच्चारण, मैं बेटा! कल इसका वर्णन करूंगा, विचार विनिमय केवल यह है कि यह माता वसुन्धरा बन करके इस सूर्य को अपने को धारण कर रही है, मानो अपने में ही यह आदित्य के साथ आदित्यां देवाः यह द्यौ से सहायता ले करके आदित्य मानो देखो, द्यौ से सहायता लेता है, यह माता वसुन्धरा मानो देखो, द्यौ को भी धारण कर रही है, धारण करती हुई मानो द्यौ से सहायता लेता है, चन्द्रमा मम ब्रहे सूर्या अस्तं लोके मानो यह सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वियों को अपने में धारण करता हुआ, द्यौ से सहायता लेता हुआ मानो देखो, यह संसार को प्रकाशमान करता रहता है, इसकी भव्य ज्योति को अपने में धारण करता हुआ मुनिवरों! देखो, माता वसुन्धरा के गर्भ में यह विद्यमान है।

माता का हृदय

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या, मानो देखो, यह जो माता वसुन्धरा है, आज बेटा! देखो, जननी माता है, एक पृथ्वी माता है एक मानो जो चैतन्य संसार को धारण करने वाली माता वसुन्धरा है जो सर्वत्रता को अपने में धारण कर रही है, नाना लोक लोकान्तरों की माला बनी हुई है, उस माला की चर्चाएं, बेटा! मैं कल के विचार में प्रगट करूंगा आज का विचार हमारा क्या कह रहा है। आज का वाक हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करे और पार उसी काल में होंगे, जब माता

वसुन्धरा की गोद में जाने का प्रयास करेंगे। बेटा! वह माता वसुन्धरा, जो इस संसार को धारण कर रही है, एक एक, कण कण में जो विद्यमान है मानो उस माता को हम अपने में धारण करने वाले बने हम उसमें है वह हमारे में विद्यमान है। वह चित्त और हृदयों को क्योंकि मानव का हृदय, परमपिता परमात्मा, जो माता का हृदय है वह हृदय, मानो देखो, द्वितीय नहीं हो सकती, वह एक ही सूत्र में पिरोई हुई है। बेटा! जब अपने में स्वीकार करेंगे, तो हमारा जीवन महान और पवित्र बन करके इस संसार सागर से पार हो जाएंगे।

आओ, मेरे प्यारे! विचार हम क्या दे रहे है हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम माता वसुन्धरा की याचना करें, यह वसु है, इसी में बेटा! हम सब बस रहे है, प्रत्येक लोक लोकान्तर क्या, बेटा! देखो, ऐसे ऐसे सूर्य है मानो देखो, ऐसे ऐसे मण्डल है, जिन मण्डलों में नाना सूर्य भी समा जाते है, वह सब इस माता के गर्भ स्थल में विद्यमान है। परन्तु उनको वेद वसुन्धरा कहता है, यह वसुन्धरा बन करके हमारा वास्तव में कल्याण करने वाली है, इसके ऊपर हमारा जीवन निर्धारित रहता है।

पूजन का अभिप्राय

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या, आज का वाक हमारा यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस माता को हम वसुन्धरा के रूप में स्वीकार करते हुए, हम उसका पूजन करें, वास्तव में पूजन का अर्थ यह है कि हम उसका सदुपयोग करें, जैसे माता जननी है हम उसका सदुपयोग करना चाहते है अभिप्राय क्या है कि हम उस माता को अपना ममतव धारण कराते हुए, मानो माता का हम पूजन करें। मुनिवरों! देखो, पृथ्वी माता को हम मानो उसके खाद्य खनिज पदार्थों के द्वारा मानो उसका पूजन करें, उसको मानो देखो, खनिजों को जानने वाला वैज्ञानिक बनें, खाद्यों को जानने वाला कृषक बन करके, इस माता पृथ्वी के रूप को जानने

वाला हो। परन्तु देखो, तीनों माताओं को जान करके और द्वितीय माताओं को जान करके माता की गोद में जाने का प्रयास करें, कि अपने में यह स्वीकार करें कि हम तो सब कहीं नहीं जा सकते, यह तो सर्वत्र माता ही विद्यमान है। शेष अनुपलब्ध..... दिनांक ३ १ १९८३ अमृतसर

3 ## ०५ ०१ १९८३ आत्मा का प्रकाश

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्पराओं से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि हमारे यहां, परम्पराओं से ही, भिन्न भिन्न प्रकार के पठन पाठन की प्रतिभा मानी जाती है। क्योंकि स्वरों में गान गाना, प्रत्येक वेदमन्त्र की स्वर ध्वनियों से ध्वनित होता रहता है। तो मानो वायु मण्डल और वाक वाणी में एक पवित्र महानता की प्रतिभा आ जाती है। मुझे बेटा! वह काल भली भान्ति स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! वेदों का गान गाया जाता है और उसके भिन्न भिन्न प्रकार के जो स्वरूप है जैसे हमारे यहां जटा पाठ है, धन पाठ है, माला पाठ, विसर्ग उदात्त और अनुदात्त जिसमें वेदों की ध्वनियाँ होती रही है। जिस समय वेदों का गान गाया जाता है तो मानव की अन्तरात्मा मानो हृदय ग्राही बन जाती है और मार्ग में रहने वाला पक्षीगण और सिंहराज भी मानो अपने में ध्वनित हो जाता है।

वेदरूपी ज्ञान में इन्द्रियाँ

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! यह वाक उच्चारण करने का, कि हमारे यहां वेदों का गान यह परम्परागतों से ही, गाया जाता है। मेरी प्यारी माता जब अपने बालक को, शिशु को, वह अपने आंगन में, लोरियों का पान कराती रहती है

और वेदों की ध्वनियों का पठन पाठन होता रहता। मेरे प्यारे! उनसे संस्कार, उसकी प्रतिभा मानो वेद रूपी जो ज्ञान है, अथवा प्रकाश है उस प्रकाश में मुनिवरों! देखो, माता की यह प्रेरणा रहती कि मेरा बाल्य, उस प्रकाश में रत्त होने वाला हो, जब मुनिवरों! देखो, आचार्य के समीप ब्रह्मचारी ओत प्रोत होता है, तो वह कहता है कि चक्षु में शुन्धामि, प्राणं में शुन्धामि, मानो प्रत्येक इन्द्रियों को, हे ब्रह्मचारी! तू मुझे प्रदान कर, मानो मैं तेरी इन्द्रियों का शोधन किए देता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, आचार्य, ब्रह्मचारी को कहता है कि तेरी प्रत्येक इन्द्रियों का, जितना विषय है उस वेद रूपी प्रकाश में तेरी इन्द्रियाँ रत्त होनी चाहिए।

वेद ज्ञान की उड़ान

तो मेरे पुत्रों! इस प्रकार के पठन पाठन का कर्म, हमारे यहां परम्परागतों से ही, माना गया है। आज का हमारा वेदमन्त्र जहाँ बेटा! गान के रूप में तुम्हें ध्वनित कर रहा है, वहां एक एक वेदमन्त्र बेटा! प्रभु का गान गा रहा है मानो जैसे माता का पुत्र, माता का गान गा रहा है। जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गा रहा है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का मानो वर्णन कर रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर चिन्तन और मनन करना, मानव जब प्रारम्भ करता है तो मानव के हृदय में एक उल्लास की आभाएँ उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि वह परमात्मा का अनुपम ज्ञान है, वह निष्पक्ष ज्ञान है, प्रकाश है। बेटा! कौन संसार में ऐसा अभागा प्राणी है, जो प्रकाश में जाना नहीं चाहता। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, प्रकाश के लिए मानो देखो, याचना करता रहा है। आत्मतत्त्व को जानने के लिए बेटा! ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ता होता हुआ, यह समाज यह मानवतव मानो देखा, ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ता हुआ, यह मेरे पुत्रों!

उस ब्रह्म आभा में रमण करता रहा है।

उपासना

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि, एक स्थली पर विद्यमान हो करके, ब्रह्म की चर्चा करते रहते थे, आज के हमारे वैदिक पाठ में शिव के सूक्तों का पठन पाठन हो रहा था, कुछ मानो विष्णु सूक्तों का पठन पाठन हो रहा था। वह जो विष्णु हमारा कल्याण करने वाला मानो जो पालन करने वाला है सतमयी रत्त रहने वाला, मानो देखो, उस ब्रह्म की हम उपासना सदैव करते रहते है और करनी चाहिए। उपासना का अभिप्राय है कि प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को बेटा! उस ब्रह्म में तल्लीन कर देना और उसकी महिमा को निहारना उसके ज्ञान और विज्ञान का चिन्तन करना, मनन करना यह बेटा! देखो, ब्रह्म की एक विवेचना मानी गई है।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें, कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया। आज मैं तुम्हें बेटा! मानो एक यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ, जिस यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ऋषि मुनि बेटा! देखो, ब्रह्म की चर्चा करते रहते थे, मानो जहां ब्रह्म की चर्चाएं, जहां ब्रह्मयाग वहां बेटा! देखो, देव याग की विवेचना भी होती रहती है, जहां देव याग की विवेचना है वहां मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहां ऋषि मुनियों का जो उद्गम किया हुआ ज्ञान और विज्ञान है, उसके ऊपर बेटा! परम्परागतों से ही, नाना प्रकार की टिप्पणियाँ और नाना प्रकार की मानो धाराओं को पान करने वाले याग हो रहे है।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसे काल में ले जाना चाहता हूँ ऐसे ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहां बेटा! देखो, भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिकवाद दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया। आओ, मेरे प्यारे! त्रेता के काल में, मैं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहां बेटा! देखो, नाना प्रकार की विवेचना होती रहती थी। ऋषि मुनियों का समाज एकत्रित हो करके, एक एक वेदमन्त्र

के ऊपर अध्ययन करता रहा है। यह वाक मैंने पुरातन काल में भी तुम्हें प्रगट किए है। आज भी मैं इन वाक्यों की मानो मैं पुनरूक्तियाँ करने के लिए मानो अपनी ध्वनियों में आभाषित होना चाहता हूँ।

गार्हपथ्य अग्नि

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में, जहां मुनिवरों! देखो, पति पत्नी दोनों एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके, और गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते रहे है। गार्हपथ्य नाम की अग्नि उसे कहते है जहां मेरे प्यारे! देखो, गृह को स्वर्ग बनाया जाता है। प्रत्येक मानव की यह कल्पना रहती है, कि हमारा गृह स्वर्ग होना चाहिए। प्रत्येक मानव गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है। परन्तु गृह कैसे स्वर्ग बनता है? जब माता पिता बेटा! गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते है। गार्हपथ्य नाम की अग्नि क्या है? विचार, जहां माता पिता एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, दर्शनों की उड़ान उड़ते है मानो जहां आत्मा परमात्मा की उड़ान उड़ने लगते है। जहां मेरे प्यारे! देखो, प्रभु के विज्ञान की विवेचना करते रहते है।

वेदमन्त्र चर्चा

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, मुझे भली भान्ति स्मरण है। राजा जनक के यहां मेरे पुत्रों! देखो, एक समय श्वेद्यं ब्रव्हे अप्रतम् मुनिवरों! देखो, अर्धभाग आसन पर विद्यमान थे। महर्षि अर्धभाग ने कुछ चर्चाएं की। परन्तु देखो, उनमें सांयकाल का समय था और वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ हो रही थी। वेद मन्त्रों की जब ध्वनि के द्वारा वह अपने को द्रुत रहे थे और उनकी पत्नी जो रम्भा थी, मानो उनके समीप, वेदों का गान हो रहा था मानो उसी गान के स्वरूप में, वह निद्रा में तल्लीन हो गये, परन्तु देखो, ऋषि अपने आसन को चले गये। मेरे प्यारे! देखो, वह मध्यरात्रि का जब काल हुआ, तो देवी जागरूक हुई, तो उसे एक वेदमन्त्र स्मरण आ गया। वही, जो ऋषि सांयकाल को उच्चारण कर रहे थे, वेदमन्त्र यह कह

रहा था प्रकाशां भवः सम्भवा देवां नवं ब्रह्मा सुत्तं देवत्यं लोकाः वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि समय सम्भो अस्ति कि हमारे जो नेत्र है यह किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है? कौन प्रकाश को देने वाला है, कौन प्रकाशित कर रहा है।

नेत्रों का प्रकाशक

तो मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार में वह रत्त हो गये, परन्तु अपने स्वामी के समीप पहुँची, उन्होंने जागरूक किया और यह कहा कि प्रभु! यह वेदमन्त्र क्या कह रहा है, वेदमन्त्र यह कह रहा है कि हमारे जो नेत्र है, यह किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है, कौन प्रकाश को देने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा समय व्रताम् उसी वेदमन्त्र के ऊपर बेटा! विचार विनिमय करने लगे। राजा जनक ने आगे के वेदमन्त्र को स्मरण कराया और उन्होंने कहा प्रकाशां देवत्यां दूरयां गच्छतप्पव्हे स्ताः वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि हमारे जो नेत्र है, वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते है सूर्य नेत्रों का देवता है, प्रकाशक है, वह आदित्य है मानो वही देखो, प्रकाश को देने वाला उदयन है।

तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार जब विवेचना होने लगी, अपने में कोई निमटारा नहीं कर सके, इसी चिन्तन में, इसी विचार में मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने प्रातः काल हो गया, प्रातःकाल होते ही प्रातः कालीन सम्भवा वस्सतो देवाः वह अपने आसन को त्याग करके, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हुए और निवृत्त होने के पश्चात क्योंकि जहां राजा जनक के यहां ब्रह्म चिन्तन होता रहता था, वहीं मेरे प्यारे! देखो, यागां जम्ब्रव्हे सुताः वहीं देव याग भी होता रहता। तो मेरे प्यारे! ब्रह्म चिन्तन से जब वह उपराम हुए, परन्तु अपनी यज्ञशाला में पहुंच गये, उनके यहां यज्ञशालाओं में, भिन्न भिन्न प्रकार के आसन लगे हुए थे, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, अर्धभाग मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी ब्रह्मचारी गार्गेयपथ्य, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, नाना ब्रह्मचारी और ऋषि मुनि और

ब्रह्मवेत्ता उस यज्ञशाला में विद्यमान थे।

राजा जनक ने मेरे पुत्रों! देखो, अपनी पत्नी के सहित यज्ञशाला में, मानो देखो, अग्नि प्रदीप्त की अग्नि प्रदीप्त करने के पश्चात अग्निहोत्र किया। अग्निहोत्र करने के पश्चात मानो देखो, उस अग्नि का चयन करने के पश्चात, प्रार्थना करने लगे हे अग्नि! तू प्रकाश देने वाली है, हे अग्नि! तू काष्ठ में रहने वाली है, हे अग्नि! तू आदित्य में प्रकाश देने वाली है हे अग्नि! तू मेरे हृदय में प्रदीप्त होने वाली है। हे अग्नि! तू माता के गर्भस्थल में शिशु को पनपाने वाली है। तू मानो मेरे साकल्य को ले करके देवताओं को हवि प्रदान कर।

इस प्रकार की उपासना करने के पश्चात्, मेरे पुत्रो! देखो, जैसे ही याग समाप्त हुआ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मवेत्ता विद्यमान थे, परन्तु राजा ने यह प्रश्न किया कि मैं कोई सङ्कल्प नहीं, करूंगा। परन्तु देखो, राजं ब्रह्मे दोनों मौन हो गये। मौन होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य ने कहा हे राजन! यज्ञमान मेरे से कोई प्रश्न कर सकते है, परन्तु उसी समय दोनों पति पत्नी उपस्थित हो करके नतमस्तिष्क हुए और चरणों को स्पर्श करके बोले क्या, हे प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि हमारे यह जो नेत्र है यह किसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहे है, कौन प्रकाश को देने वाला है।

सूर्य का प्रकाश

उस समय मेरे पुत्रों! याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे राजन! इसको प्रत्येक मानव, प्रत्येक बाल्य, बालिका सर्वत्र जानते है कि हमारे जो नेत्र है, उन नेत्रों का देवता सूर्य है। सूर्य प्रकाश को देने वाला है, सूर्य को उदयन कहते है, आदित्य कहते है, वह सूर्य ही मानो देखो, प्रकाश को देने वाला है। प्रातः काल में उदय होता है, इसलिए उसे उदयन कहते हैं, उदमन मानो देखो, प्रकाश ले करके आता है, नेत्र प्रकाश को ले करके प्रकाशित हो जाते है मानो देखो, यह नेत्रों का ही प्रकाशक नहीं है नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों का भी यही

मानो निर्माणवेत्ता है। देखो, पृथ्वी के गर्भ में, जब इसकी नाना प्रकार की किरणें ओत प्रोत हो जाती है मानो प्रकाश की द्यौतक बन जाती है, प्रकाश देने लगती है तो मानो देखो, कहीं जल को तपाया जा रहा है, कहीं यही किरणें स्वर्ण का निर्माण कर रही है, कहीं ओर भी नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण हो रहा है बेटा! यही खनिज और खाद्यों में रमण करती हुई मानो देखो, समाज इसको दुहने लगता है। यह कामधेनु के रूप में, पृथ्वी दृष्टिपात होने लगती है।

परन्तु वह आदित्य तपाता रहता है कहीं नाना प्रकार की वनस्पतियों में, रसों का मानो तपाना और कहीं मुनिवरों! देखो, वैद्यराज के यहां एक औषध बन करके बेटा! देखो, आयु के देने वाली। विचार विनिमय क्या, वाह रे मेरे प्यारे! प्रभु तू कितना वैज्ञानिक है, तू कितना महान है। मानो तेरे विज्ञान की छटा इस मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में दृष्टिपात आती है उससे महान माता के गर्भस्थल में, जब शिशु होता है, यह आदित्य मानो उसको तपाता है, वह तप रहा है, जलाशयों में तप रहा है। परन्तु देखो, तपनं सम्भव ब्रव्हे माता प्रसन्न हो रही है। माता को कोई प्रतीत नहीं है, कौन तपा रहा है। तो बेटा! यह कैसा अनुभव मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान है, ज्ञान है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से मानव अनुसन्धान कर रहा है। विचार विनिमय कर रहा है, विज्ञान की धाराओं में रमण कर रहा है। परन्तु देखो, यह सूर्य हमारा प्रकाशक है, सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशित होने वाला मानो देखो, अमूल्यतव कहलाता है। यही प्रकाश, मेरे पुत्रों! देखो, यही सूर्य, गो नाम का जो पशु है गो नाम के पशु में जो रीढ है, उस रीढ विभाग में मुनिवरों! देखो, यह सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है, उस नाड़ी का मानो सूर्य उदय होते ही उसका ऊर्ध्वा मुख हो जाता है। परन्तु वह किरणों को अपने में धारण करने लगती है, जो किरणें पृथ्वी माता के गर्भ में बेटा! स्वर्ण की धातु, स्वर्ण की मात्रा को उत्पन्न कर रही हैं, स्वर्ण की धातु का निर्माण हो रहा

है। परन्तु देखो, वही स्वर्ण के कण बेटा! देखो, गो नाम के, उस रीढ़ में सूर्यकेतु नाम की नाड़ी के द्वारा जाते है, वही परमाणु देखो, उसके यन्त्रालय में प्रवेश करते है। बेटा! देखो, गो का जो घृत्त है, दुग्ध है परन्तु उसमें पीत वर्ण है। पीत वर्ण क्यों है? क्योंकि उसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष कहलाई जाती है।

तो विचार विनिमय क्या, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! बहुत प्रंशसा की, परन्तु देखो, ऋषि मुनि इसी कामधेनु को ले करके, इसके दुग्ध का आहार करके बेटा! योगाभ्यास में तल्लीन रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! ऋषि कहता है हे राजन! यह सूर्य जहां विज्ञान का द्योतंक है वहां यह प्रकाश देने वाला है, यह समाज उसके प्रकाश में रत्त हो जाता है और कार्यों में संलग्न करता, अपनी धाराओं में परणित हो जाता है। परन्तु राजा ने कहा ऋषि से हे भगवन! मैं जानना चाहता हूँ, जब यह सूर्य नहीं होता तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है, जब यह सूर्य अस्त हो जाता है, अस्ताचल को चला जाता है।

चन्द्रमा से सोम

मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा हे राजन! जब यह सूर्य नहीं होता, तो हम चन्द्रमा के प्रकाश में प्रकाशित, चन्द्रमा को बना करके, अपने कार्यों में रत्त हो जाते हैं। मानो यह चन्द्रमा कान्ति के देने वाला है, अमृत को बहाने वाला है, यह चन्द्रमा ही पूर्णिमा के दिवस मानो देखो, इसका समन्वय मानो समुद्रों से होता है, यह सोम बन करके, सोम को अपने में धारण कर लेता है मानो देखो, यही अन्तरिक्ष में, परमाणु रूप में परणित होता है, यही सोम की वृष्टि करता है। मेरे प्यारे! यह सोम कहलाता है। वेद ने चन्द्रमा को सोम कहा है, अमृत कहा है। जब मुनिवरों! देखो, कृषक इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना कर देते है, उस समय बेटा! यह चन्द्रमा अपनी महान कान्ति के द्वारा उसमें सोम की वृष्टि कर देता है। सोम का

भरण कर देता है, वह सौम्य बन करके कृषक प्रसन्न हो रहा है। मेरी कृषि कितनी सुन्दर उपज रही है, वह प्रसन्नीय बन रहा है, माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है, उस नाड़ी का सम्बंध चन्द्रमा से और कान्तियों से होता है। परन्तु उस नाड़ी का सम्बन्ध, आन्तरिक जगत में माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। पुरातत नाम को नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है लोरियों से पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है। बेटा! जो बालक माता के गर्भस्थल में, हम जैसे शिशु रहते है बेटा! वह अमृत को पान कर रहे है, उन नाड़ियों के द्वारा बेटा! वह चन्द्रमा का अमृत मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में, नस नाड़ियों के द्वारा मानो देखो, अमृत पान कर रहा है।

तो विचार विनिमय क्या बेटा! इतना विज्ञान मेरे देव का है, वहां अमृत प्रदान किया जा रहा है, उसी का समन्वय द्यौ लोक से रहता है, उसी का समन्वय बेटा! देखो, नाना लोक लोकान्तरों की प्रतिभा से रहता है। तो विचार विनिमय क्या याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा हे राजन! मानो देखो, जब यह सूर्य नहीं होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश में प्रकाशित हो जाते है। प्रकाश देने लगते है। नेत्रों का देवता, वह चन्द्रमा मानो देखो, हमें अमृत सब में भरण कर देता है।

ब्रह्माण्ड की विशालता

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि से कहा यज्ञमान ने, हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ जब यह सूर्य नहीं होता और चन्द्रमा भी नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है? उन्होंने कहा हे राजन! जब यह सूर्य, चन्द्रमा नहीं होते तो हम तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशित होते है। इन तारामण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है मानो देखो, मानव अन्धकार में जा रहा है अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। वह धीमा धीमा प्रकाश हमारे मानो पगडण्डियों का पथप्रदर्शक कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह तारामण्डल एक ऐसा

मण्डल क्या, तुम्हें प्रतीत होगा विज्ञान के युग में, जब दार्शनिकता में प्रवेश करते है, मैंने तुम्हें पुरातन काल में भी निर्णय कराया था मेरी विज्ञानशाला में, विद्यालय में भी प्रायः इस प्रकार का अनुसंधान होता रहता है। याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा हे राजन! मानो देखो, यह तारा मण्डल, कितना विशाल मण्डल है यह कितनी विचित्रता में रमण करने वाला है मानो देखो, जैसा हमारा यह पृथ्वी मण्डल है, जिस पृथ्वी पर हम वास करते है जैसा अभी हमारा यह पृथ्वी मण्डल है ऐसे ऐसे तीस लाख पृथ्वियाँ ही मानो देखो, सूर्य मण्डल में समाहित हो जाती है और जैसा यह सूर्य मण्डल है जिसमें तीस लाख पृथ्वियाँ इसकी परिक्रमा कर रही है ऐसे ऐसे एक सहस्र सूर्य है जो बेटा! देखो, बृहस्पति की परिक्रमा कर रहे है, एक सहस्र बृहस्पति है जो मेरे प्यारे! देखो, आरूणि मण्डल की परिक्रमा कर रहे है, एक सहस्र आरूणि मण्डल है जो मेरे प्यारे! देखो, ध्रुव मण्डल की परिक्रमा कर रहे है, एक सहस्र ध्रुव मण्डल है, जो मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्र ध्रुव मण्डल मुनिवरों! देखो, स्वाति नक्षत्रों की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र स्वाति नक्षत्र है, जो मुनिवरों! देखो, मूल नक्षत्र की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र मूल नक्षत्र है, जो मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु मण्डल की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र सोमकेतु मण्डल है जो मेरे प्यारे! अचंग मण्डलों की परिक्रमा कर रहे है। एक सहस्र अचंग मण्डल है, जो मेरे प्यारे! देखो, अचंग कृतियों की परिक्रमा कर रहे है, बेटा! यह प्रभु का कितना विशाल मण्डल है। कितनी विशालता है इसमें, परन्तु देखो, इतना अनन्तमयी ब्रह्माण्ड माना गया है। याज्ञवल्क्य मुनि कहते है हे राजन! यह प्रभु का विज्ञान इतना विशाल है क्या मानो देखो, मानव उड़ान उड़ता रहता है, अन्त में वह मौन हो जाता है। मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड का कोई सूत्र है, लोक लोकान्तर बेटा! इसी सूत्र में पिरोएं हुए है, वह सूत्र मानो देखो, विचित्र दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! ऋषि कहता है कि नाना प्रकार के लोक

लोकान्तर मानो देखो, आभा में गति, वह तारामण्डल बन करके मानव के नेत्रों का प्रकाश, मानव के नेत्रों का नेतृतव कर रहे हैं।

अग्नि का प्रकाश

विचार क्या मुनिवरों! ऋषि कहता है हे राजन! यह नाना तारा मण्डल हमारे नेत्रों को प्रकाश देते है, धीमा धीमा प्रकाश आ रहा है, पगडण्डी को ग्रहण कर रहे है। परन्तु देखो, अपने पथ को प्राप्त कर रहा है प्राणी, वह तारामण्डलों का प्रकाश परन्तु देखो, इस वाक को पान करने वाले राजा, उनकी पत्नी रम्भा ने कहा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब यह तारा मण्डल भी नहीं होते तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है। उन्होंने कहा हे राजन! जब यह तारामण्डल नहीं होते मानो देखो, उस समय, हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते है। देखो, अन्धकार छाया हुआ है मेरे प्यारे! मेरी प्यारी माता अपने गृह में मानो प्रकाश कर लेती है, अग्नि के प्रकाश से गृह को प्रकाशित कर लेती है। यह अग्नि मुनिवरों! देखो, एक विचित्र आभा मानी गई है। इसी अग्नि में मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव, अग्नि के प्रकाश से आभायित हो रहा है यही अग्नि बेटा! जब यज्ञमान के समीप पहुंची तो मानो देखो, यह देवताओं का मुख बन गया, यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त की जा रही है, यज्ञमान आहुति दे रहा है, अग्नि का मुख बना करके मानो देखो, वह देवताओं को हवि प्रदान कर रहे है। वही अग्नि बेटा! जब यज्ञमान के द्वार से होती हुई, जब आयुर्वेदाचार्यों के समीप पहुंची तो बेटा! देखो, पिच्चासी प्रकार की अग्नि का चयन आयुर्वेदाचार्यों ने किया। परन्तु जब यही अग्नि वैज्ञानिकों के मध्य में पहुंची तो बेटा! देखो, उन्होंने पिच्चासी प्रकार की धारा, जो अग्नि की थी परन्तु जब उसका विभाजन किया वैज्ञानिकों ने जब विभाजन किया तो बेटा! देखो, उसमें से मानो अरबो, खरबों तरंगों का जन्म हो गया, अरबवीं खरबवी तरंग का जब विभाजन किया, तो उसमें से बेटा! अरबों खरबों

तरंगों का ओर निकास हुआ। विचार विनिमय क्या बेटा! यहां हर तरंग के परमाणु बेटा! वायुमण्डल में धाराओं के रूप में गति कर रहे है अन्तरिक्ष में मानो देखो, ये परमाणु रहते हैं, वायु उनको गति देने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, वह धारा मानो अमृत हो रही है।

विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता है हे राजन्! मानो देखो, उस अग्नि का चयन करना है, जो अग्नि देखो, गृह को प्रकाशित करती है जो अग्नि मानव के शरीर को प्रकाशित कर रही है, जो नेत्रों की द्यौतक बन करके मानो प्रकाशमान, यह लोक लोकान्तर क्या, यह संसार उसी में तप रहा है, कुछ अग्नि काष्ठों में रहती है परन्तु देखो, यह अग्नि नाना रूपों में रमण करती, वैज्ञानिकों के रूपों में, वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में, वैज्ञानिक धाराओं में बेटा! अणु और परमाणु के रूप में रहती है।

शब्द का प्रकाश

विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता है हे राजन! उस अग्नि के ऊपर हमें चयन करना चाहिए। परन्तु ऋषि ने जब ऐसा कहा तो राजा और उनकी पत्नी नतमस्तिष्क हो करके, दोनों ने यह कहा कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते है जब यह अग्नि भी नहीं होती, तो तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है? उन्होंने कहा हे राजन! जब यह अग्नि नहीं होती मानो देखो, यह सर्वत्र सूर्य, चन्द्रमा, तारा मण्डल भी नहीं होते, उसके पश्चात हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशित होते है। यह शब्द हमारा प्रकाशक है, एक मानव मानो अन्धकार में चला जा रहा है और अन्धकार में जा करके मानो कुमार्ग में, भयंकर वन में विद्यमान है, वह अपनी वाणी से कह रहा है, शब्द से कह रहा है अरे, है कोई, हमें मार्ग चेताने वाला उस समय मानो देखो, एक मानव, जो मार्ग में स्थिर है वह

कह रहा है आ जाओ, मैं मार्ग में स्थिर हूँ। वह उसी शब्द के प्रकाश से, मेरे प्यारे! देखो, अपने पथ का पथिक बन जाता है, वह पथिक बन करके उस पथ को ग्रहण कर लेता है।

मेरे प्यारे! देखो, यह शब्द है जो अन्तरिक्ष में ओत प्रोत रहने वाला है। इन शब्दों के ऊपर ऋषि मुनियों ने बेटा! बहुत अनुसंधान किया है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि सम्भवा मानो देखो, उद्दालक गोत्रीय ऋषियों ने तो शब्दों के ऊपर बेटा! बहुत अनुसंधान किया। जो अन्तरिक्ष में रत्त रहने वाला शब्द है, शब्द के साथ में जो चित्र विद्यमान है, वह भी अन्तरिक्ष में गति कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, यही शब्द है जो मानो देखो, स्वर्ण को बहाने वाला है, यही शब्द पाण्डितव बन करके रहता है यही शब्द माला बन करके रहता है, यही शब्द है बेटा! जो मानो देखो, प्रकाश का द्यौतक है, यही मानो शब्द है, जो राष्ट्र में मानो अग्नि प्रदीप्त कर देता है। यही शब्द है जो राष्ट्रों को ऊँचा बना देता है, मधुवता बना देता है।

सत्य की प्रभा

तो विचार विनिमय क्या बेटा! विद्यामयी मानो देखो, ब्रह्मविद्यामयी जो शब्द है, वे मानव को पाण्डितव बनाते है और जो मुनिवरों! देखो, अशुभ प्रवृत्ति वाले शब्द, जो मानो एक दूसरे को स्वार्थपरता में आ करके रहते है वह दैत्य प्रवृत्ति वाले बन जाते है। परन्तु देखो, जो राष्ट्रों को देखो, अग्नि के मुख में परणित कर देते है जैसे बेटा! तुम्हें दृष्टिपात होगा मानो देखो, नाना राजा अग्नि के मुख में परणित हो गये, नाना राजा इस प्रकार के हुए है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, शब्द का जो प्रकाश है, यह महान है, विचित्र है इसलिए आचार्यों ने कहा, ऋषि मुनियों ने कहा हे मानव! तू सत्यवादी बन। तू सत्य का उच्चारण करने वाला बन, सत्य ही पाण्डितव

कहलाता है सत्य ही एक महानता में परणित करा देता है।

आत्मा का प्रकाश

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, सत्य ही सत्य में, मानव को रत्त रहना चाहिए। यह शब्द का प्रकाश है जो सत्य में रहता है, वह प्रकाशित है। जो असत्य में रहता है वह अन्धकार में रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह विवेचना की तो मुनिवरों! राजा ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते है जब यह मानो देखो, शब्द भी नहीं होता, उसके पश्चात हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते है? मेरे प्यारे! देखो, राजा ने जब ऐसा कहा तो ऋषि ने कहा हे राजन! जब सूर्य, चन्द्रमा, तारामण्डल, अग्नि, और शब्द भी नहीं होते तो उसके पश्चात हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित होते है। यहां आत्मा हमारा प्रकाशक है, चेतना बन करके शरीर में वास कर रहा है। मानो देखो, जिस समय पर आत्मा इस शरीर में विद्यमान है, तो यह मानव शरीर चेतनित कहलाता है, यह चेतना में रत्त रहने वाला है। परन्तु जब आत्मा इस शरीर से निकल जाता है उस समय मानव का शव ज्यों का त्यों हैं, नेत्रों के गोलक ज्यों के त्यों बने हुए है, अरे, सूर्य प्रकाश दे रहा है मानव क्यों नहीं प्रकाशित हो जाता। हे मानव! चन्द्रमा प्रकाश दे रहा है, सामग्री दे रहा है अमृत की वृष्टि कर रहा है, परन्तु शरीर में आत्मा नहीं है तो क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते, तारामण्डल अपनी मानो देखो, ध्वनि से ध्वनित हो रहे है गतियाँ कर रहे है मानो धीमा प्रकाश आ रहा है और मानव शरीर में आत्मा नहीं है क्यों नहीं तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशित हो जाते।

मेरे प्यारे! देखो, जब अग्नि अपना प्रकाश दे रही है कहीं अणु के रूप में अग्नि विद्यमान है, कहीं यज्ञशाला में प्रदीप्त हो रही है कही काष्ठों में रहने वाली है, कहीं वाणी के स्वरूप में अग्नि प्रकाश दे रही है, कहीं यही अग्नि बेटा! मानो द्यौ के रूप में है नाना रूपों में रमण करने वाली अग्नि, अरे, मानव, तेरे

शरीर में आत्मा नहीं है तो मानो देखो, तू प्रकाश में नहीं ले सकता। मुनिवरों! देखो, प्रकाश के देने वाला कौन है, शब्द आ रहा है, ध्वनियाँ हो रही है प्राण ध्वनि कर रहा है, ध्वनित हो रहा है। परन्तु उस शरीर में आत्मा नहीं है तो वह ध्वनि नही रहेगी। मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है हे राजन्! हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित होते है आत्मा इस शरीर में वास कर रहा है आत्म वह चेतना है, और चेतना इस शरीर में जब तक रहता है तो यह मानव कहलाता है और चेतना जब चली जाती है। तो यह शव रह जाता है।

विचार विनियम क्या मानो देखो, इस आत्मा को जानने का प्रयास करो, जो संसार में इस आत्मा को जान लेता है, जो शरीर में वास कर रहा है, जो अव्यक्त है मानो देखो, जो अप्राण है, जिसका वरण करने में बेटा! मानव असमर्थ रहता है वह इन्द्रियों से परे है, इन्द्रियों का विषय नहीं है। मानो देखो, उस आत्मा को जानने का प्रयास करो, वह चेतना बन करके, मानव को प्रकाशित कर रही थी। प्रकाश शरीर में नहीं रहा तो बेटा! देखो, निष्क्रिय बन गया। निष्क्रिय जब मानव बन जाता है तो उसे बेटा! मानव शव कहता है। यह आत्मा मानो शरीर से निकल गया है चित्त के मण्डल को ले करके चला गया यह मानो देखो, उदान प्राण को ले करके चला गया, परन्तु देखो, आत्मा भो सम्भवा देवाः मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि कहता है आत्मा भो सम्भवा ब्रव्हे कृत्यं देवत्यां यज्ञमाना हे यज्ञमान! तू उस आत्मा को जानने का प्रयास कर, जिस आत्मा के कारण तुझे याज्ञिक पुरूष मानो देखो, यज्ञमान कहते है होताजन तेरी वाणी को पवित्र बनाते है, मानो देखो, तू उस आत्मा को जानने का प्रयास कर, जो आत्मा तेरे शरीर में वास कर रहा है, प्रकाश दे रहा है आनन्दवत बना रहा है, प्रकाश का एक द्यौतक बना हुआ है।

भौतिकवाद से अध्यात्मकवाद

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा मौन हो गएं और राजा ने

मानो ऋषि के चरणों को नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! धन्य है आप ने हमारे अन्धकार को दूरी किया। यह मानो अन्धकार है। परन्तु विचारना यह है क्या मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान के मार्ग से होता हुआ, आध्यात्मिकवेत्ता बेटा! आत्मा में प्रवेश करता है आध्यात्मिकतावाद को जानने के लिए रत्त रहता है जब तक बेटा! देखो, भौतिकवाद के मार्ग से हो करके नहीं जाते, तब तक हम आध्यात्मिकवाद को नही जान पाते। तो बेटा! देखो, जहां सूर्य विज्ञान से ले करके शब्द के विज्ञान तक इन्द्रियों का जहां तक विषय है वह सारा भौतिक विज्ञान कहलाता है। परन्तु जहां आत्म चेतना का प्रसंग आता है उसे हम आध्यात्मिकवाद करते है। आध्यात्मिकवादी बनना ही बेटा! मानव का कर्तव्य है। जब प्रत्येक मानव बेटा! आध्यात्मिकवाद में रत्त रहता है यह विचारता है कि यही तो आत्मा है, चेतना है, तू चैतन्य है, चेतना को जानना ही मानव कर्तव्य है। चेतना में अपने स्वरूप में ही प्रवेश होना मानो देखो, भौतिकवाद के मार्ग से हो करके, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो जाता है, मौन हो जाता है अथा ब्रहे कृताम् मानो देखो, कृतो सम्भविता देवाः मानो देखो, उस ब्रह्म की उपासना करना अपनी अन्तरात्मा को जानना यह मानव का सबसे महान कर्तव्य है। इसी के लिए संसार में आता है यदि मानव उस अन्तरात्मा को नहीं जानता तो बेटा! देखो, वह सर्वत्र मानो देखो, अभागा है।

संसार में आने का उद्देश्य

इस मानव के संसार में आने का उद्देश्य केवल अन्तरात्मा को जानना है। भौतिकवाद के मार्ग से हो करके जाना है, जिससे बेटा! देखो, किसी प्रकार की हमने अपृति न हो, अज्ञान न रहे, ज्ञान और विज्ञान का मार्ग ही बेटा! एक मानव को मानव बनाता है यह है बेटा! आज का वाक वेद का विचार, वेद का ऋषि क्या कहता हे राजन! तू आत्मा को जान। मेरे प्यारे! देखो, उनका याग समाप्त हो गया। उन्हें निर्णय हो गया

कि हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित होते है, इसीलिए उसके प्रकाश में जाना हमारा कर्तव्य है। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि मुनिवरों! देखो, हम अपनी अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करे, क्योंकि आत्मा को जानने वाला प्राणी, संसार सागर से पार हो जाता है। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं दधि आभ्यां गताः माणं भद्रा श्वेजनाः गा ता रथं आप्यां रथौ ०५ ०१ १९८३, अमृतसर

4 १० ०१ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज पूर्व से हमने जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा प्रतिभाशाली हैं जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, यह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, जैसे बेटा! यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जैसे आज के हमारे वेद के पठन पाठन में, माता वसुन्धरा का वर्णन आ रहा था, वसुन्धरा का अभिप्राय है मानो जहाँ मानव वास कर सकता है, उस माता का नाम वसुन्धरा है। हमारे वैदिक साहित्य में, नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द आते रहते हैं। पर्यायवाची शब्द हैं, वसुन्धरा नाम माता का है, और वसुन्धरा नाम पृथ्वी को माना है। परन्तु

वसुन्धरा नाम, मेरे प्यारे! प्रभु का है। वास्तव में वसुन्धरा के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, क्योंकि वसुन्धरा नाम धेनु को भी कहा जाता है, परन्तु मौलिक रूपों से, हमारे यहाँ तीन प्रकार की जो माताएं, मानो वसुन्धरा के रूप में परणित होती रही हैं। जैसे माता के गर्भस्थल में, जब यह मानव याग करता है, परन्तु माता के गर्भस्थल में, मानव पनप रहा है, अथवा वास कर रहा है। मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं होता, कौन निर्माणवेत्ता है? कौन निर्माण कर रहा है। परन्तु कहाँ यह मानव पनप रहा है मेरे प्यारे! हमारे आचार्यों ने इसके ऊपर बहुत गम्भीरता से अनुसन्धान, किया और यह कहा कि मानव जब माता के गर्भस्थल में रहता है, तो मानो उसका जल ही आसन होता है, और जल ही उसका ओढ़न होता है, परन्तु जल ही उसके पांशे होते हैं, मेरे प्यारे! बालक, बिन्दु पनप रहा है, बिन्दु में से निर्माण की आभा का जन्म हो रहा है, परन्तु वह बालक एक मङ्गलम् वृत्ति दिव्यं लोकाः मेरे प्यारे! हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में मानो देखो, नाना प्रकार के जो अग्नि ब्रह्मा वस्तु रूप बन करके बेटा! वे जल को तपा रहें है बालक को तपा रही है, तो बेटा! हम जैसे शिशु माता वसुन्धरा के गर्भ में ओत प्रोत हैं। निर्माणवेत्ता, निर्माण कर रहा है, परन्तु मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं होता। कहाँ बेटा! मन नाना प्रकार की अवस्थाएं बन जाती हैं, बुद्धि के नाना प्रकार बन जाते हैं, परन्तु मानव पनप रहा है, माता के गर्भस्थल में वास कर रहा है, मुनिवरों! देखो, माता उससे वंचित्त रहती है। परन्तु उस रूप में उस काल में माता को बेटा! वसुन्धरा कहा जाता है। हे माता वसुन्धरा! हम तेरी गोद में आए हैं, तू हमारा वास्तव में कल्याण करने वाली है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस माता का नाम वसुन्धरा है, परन्तु जब माता के गर्भस्थल से ये मानव पृथक होता है तो पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है, पृथ्वी माता के आङ्गन में आ जाता है। मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा बन करके यह नाना

प्रकार का खाद्य और खनिज प्रदान कर रही है। नाना प्रकार के वैज्ञानिक बेटा! जब इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं, तो मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण हो रहा है, नाना प्रकार की वनस्पतियों का निर्माण हो रहा है, आयुर्वेदाचार्य बेटा! उन वनस्पतियों को जान करके, आश्चर्य चकित हो जाते हैं। नाना प्रकार की औषधियों को जानने वाले, नाना प्रकार के बेटा! ऋषि मुनि हुए हैं, जिन्होंने हमारे यहाँ, नाना प्रकार की आभाओं में, ज्ञान और विज्ञान में बेटा! महान सहकारिता में परणित होते रहें हैं।

मुझे स्मरण है देखो, अश्विनी कुमारों का जीवन स्मरण आता रहता है, जिन अश्विनी कुमारों ने बेटा! आयुर्वेद के ऊपर बेटा! बहुत अनुसन्धान किया। इस माता वसुन्धरा के गर्भ में, प्रवेश करता हुआ, वैज्ञानिक बेटा! अपने विज्ञान की ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ रहा है। नाना प्रकार के धातु पिपाद को जान करके, मेरे प्यारे! नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण कर रहा है। नाना प्रकार की औषध विज्ञान को जान करके, वह आयुर्वेद के मानो आयु के मर्म हो जान रहा है।

मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, अश्विनी कुमारों के हृदय में एक समय यह भावना उत्पन्न हुई अन्तर्हृदय से ऐसी मानो भावना तरंगो का जन्म हुआ। कि जहाँ हमने आयुर्वेद का अध्ययन किया है, वहाँ हम मानो देखो, अप्रहे असुतो ब्रह्म जनः स्वति हमे ब्रह्मवेत्ता भी बनना चाहिए। बेटा! ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए, अश्विनी कुमारों ने, अपना एक कर्म बनाया, परन्तु भ्रमण करते हुए, एक समय वह महात्मा दधीचि के आश्रम में पंहुचे, महात्मा दधीचि ने उन्हें आसन दिया विराजो, वह विराजामन हो गएं, अश्विनी कुमारों से कहा कहो, तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा हे प्रभु! हम इसीलिए आयें हैं कि सम्भवा ब्रह्मणे लोकं आत्मा सम्भविता रूदो भागा। हे प्रभु! हे ऋषिवर! हमने यह श्रवण किया है, क्या आप ब्रह्मवेत्ता है। आप ब्रह्म जिज्ञासु हैं। ब्रह्म विद्या को जानने वाले

हैं। हम आपसे ब्रह्म का उपदेश चाहते हैं। हमने एक सौ एक वर्ष तक आयुर्वेद के ऊपर हमने अध्ययन किया है, आयुर्वेद के ऊपर हम मानो अध्ययन करते रहे हैं, हमारे अन्तर्हृदय से ऐसी भावनाएं तरंगों का जन्म हुआ है, कि हम ब्रह्मवेत्ता बनना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, कि ब्रह्मवेत्ता तो तुम बनना चाहते हो, परन्तु महाराज इन्द्र के यहाँ से यह घोषणा हो गई है कि अश्विनी कुमारों को जो भी ब्रह्म का उपदेश देगा, मानो उसके कण्ठ के भाग को दूरी कर दिया जाएगा। आपतं ब्रह्मे मैं तो तुम्हें ब्रह्म विद्या को दे सकता हूँ परन्तु मेरे कण्ठ का जो भाग है, वह दूरी हो जाएगा मानो देखो, हिरण्य अस्तो संसार में शान्त हो जाऊंगा। परन्तु जब उन्होंने यह कहा तो अश्विनी कुमारों ने यह कहा कि भगवन! ब्रह्मवेत्ता जो महापुरूष होते हैं, उनकी मृत्यु कदापि नहीं होती, क्योंकि मृत्यु तो अज्ञान में होती है, और जब अज्ञान में मृत्यु होती है, तो मृत्यु से मानो इतना अपने को अपने में प्रतिभा अस्ति क्यों उत्पन्न हो रही है ऐसा हम स्वीकार नहीं कर रहे हैं। हमारा अन्तरात्मा तो यह कह रहा है कि आप हमें ब्रह्म का उपदेश दीजिए, यदि यह शरीर ब्रह्मविद्या देते देते आपका मानो शान्त हो जाएगा, तो प्रभु! आपको मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह कहा कि यदि मोक्ष भी नहीं मिलेगा, तो आपको स्वर्ग अवश्य मिलेगा, स्वर्ग भी नहीं मिलेगा, तो ब्रह्मवेत्ता गृहों में आपका जन्म अवश्य हो जाएगा, उसके पश्चात आप मुक्ति के मार्ग पर चल सकोगे।

मेरे पुत्रों! जब अश्विनी कुमारों ने इस प्रकार उन्होंने अपने वाक प्रगट किए तो मुनिवरों! देखो, महात्मा दधीचि ने यह कहा क्या ब्रह्मविद्या मैं देने के लिए तत्पर हूँ। परन्तु मेरे लिए तुम आयुर्वेद के अनुसार क्या, मेरी सहायता कर सकते हो? महात्मा दधीचि ने जब ऐसा कहा, तो अश्विनी कुमारों ने कहा कि जो आप चाहते हैं, जो आप की आज्ञा हो, मैं वही करने के लिए तत्पर हूँ। उन्होंने कहा जो तुम्हारी इच्छा हो हम तुम्हारे

कण्ठ को औषधियों में नियुक्त किए देते हैं, हम ऐसी ऐसी औषधियां को आयुर्वेद को हमने माता वसुन्धरा के गर्भ में से जाना है, क्या मानो देखो, मानव के कण्ठ के ऊपर लेपन करने से ज्यों का त्यों मानो कण्ठ बन जाता है। मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा हमने, ऐसी ऐसी औषधियों को भी पान किया है मानो देखो, जिसकी प्राणी की, हम भाषा को जानना चाहते हैं, कि यह क्या उच्चारण कर रहा है, उनका पान करने से हमें मानो देखो, उनकी भाषाओं को ज्ञान हो जाएगा। मेरे प्यारे! जब उन्होंने ऐसा कहा, तो महात्मा दधीचि शान्त हो गएं और शान्त हो करके उन्होंने कहा, जैसी तुम्हारी इच्छा हो। तो मुनिवरों! ऐसा मुझे स्मरण है कि अश्विनी कुमारों ने, क्योंकि एक सौ एक वर्ष तक उन्होंने आयुर्वेद के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया था। उनके आचार्य मानो आयुर्वेदाचार्य, महर्षि व्रेतकेतु थे और व्रेतकेतु ऋषि महाराज बेटा! आयुर्वेद के मर्म को जानते थे, औषध विज्ञान को जानते थे, परन्तु देखो, उस समय उन्होंने महात्मा दधीचि के कण्ठ के ऊपर ले भाग को, मुनिवरों! देखो, औषधियों में नियुक्त कर दिया। और उनके कण्ठ के ऊपरले भाग में, मुनिवरों! देखो, अश्व के मस्तिष्क को, ज्यों का त्यों स्थिर करके लेपन करके, वह ज्यों का त्यों हो गया। परन्तु देखो, उन्होंने गुड़ोसंस नामक एक औषध का पान किया और औषध का पान करके बेटा! देखो, ब्रह्म का उपदेश मानो अश्व के मुखारबिन्द से ब्रह्म का उपदेश जब प्रारम्भ होने लगा, तो बेटा! देखो, महात्मा अश्विनी कुमार दोनो, उस ब्रह्म के उपदेश को पान करने लगे, आत्मा की चर्चाएं करने लगे, कि आत्मा चैतन्य है, आत्मा मानो देखो, एक रस रहने वाली है, जब इस प्रकार का उपदेश हो रहा था, तो इन्द्र को यह प्रतीत हो गया था, क्या महात्मा दधीचि के यहाँ, अश्विनी कुमार ब्रह्म की विद्या को पान कर रहे हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महाराज इन्द्र ने आ करके अपने शस्त्रों से मानो देखो, उसके कण्ठ के भाग को दूरी कर दिया, महात्मा

अश्विनी कुमारों ने, उसी समय उनका वास्तविक जो कण्ठ का जो भाग, औषधियों में नियुक्त था मुनिवरों! देखो, उसको लो करके, उनके कण्ठ के ऊपरले भाग में स्थिर करके, मानो देखो, संतति, अन्वेषणी नाना प्रकार की औषधियों को एकत्रित करके बेटा! उसको अग्नि में तपा करके, खरल बनाने के पश्चात, मानो देखो, उनके ऊपर लेपन करने लगे। मानो लेपन करते रहे महात्मा दधीचि मानो दस दिवस के पश्चात, ज्यों के त्यों बेटा! देखो, उन्होंने मानो उपदेश देना पुनः प्रारम्भ किया। महाराज इन्द्र मुनिवरों! देखो, द्वितीय उनके कण्ठ को दूरी नहीं कर सकते थे। परन्तु देखो, वह ब्रह्म का उपदेश चलने लगा ब्रह्म की आभा को प्राप्त करने लगे। तो मुनिवरों! देखो, विचार क्या है? कि मुनिवरों! देखो, इस माता वसुन्धरा के गर्भ में, ऐसी ऐसी औषध है, मानो ऐसा ऐसा विज्ञान इसके गर्भ में विद्यमान है, जो माता वसुन्धरा को जान लेता है, बेटा! वह संसार में ज्ञान और विज्ञान का मानो देखो, आभा में रमण करने वाला बन जाता है।

ऐसा मुझे स्मरण है अश्विनी कुमारों ने ब्रह्म का उपदेश दे करके, बेटा! उन्होंने औषध विज्ञान, कुछ महात्मा दधीचि को भी प्रदान किया महात्मा दधीचि भी ब्रह्म विद्या को जहाँ जानते थे वहाँ मुनिवरों! देखो, वह औषध विज्ञान को भी जानते थे तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या हम उच्चारण कर रहे थे क्या यह माता वसुन्धरा इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का औषध विज्ञान है नाना प्रकार का खाद्य और खनिज विद्यमान है, मेरे प्यारे! देखो, आचार्यों ने इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो करके, नाना प्रकार के खनिज पदार्थों को जाना है। मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिको ने इसके गर्भ में जो जो धातु पिपाद उन्हें प्राप्त हुआ, मुनिवरों! देखो, उसके ऊपर यन्त्रों का निर्माण भी किया, मुझे वह ऋषि का आश्रम स्मरण आने लगता है, जहां बेटा! महात्मा दधीचि और आयुर्वेद की चर्चाएं वैदिक साहित्य में आती रहती है वहाँ मुनिवरों! देखो, विज्ञान की

विवेचना भी होती रहती हैं।

अहिल्या कृतिभा यत्र

मुझे वह आश्रम स्मरण है महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, नाना वैज्ञानिक, नाना ब्रह्मचारी बेटा! देखो, अध्ययन करते रहते थे उनके अध्ययन की शैली, बड़ी विचित्र रहती थी। कि हम वह माता वसुन्धरा के गर्भ को जानने के लिए, जहां, इस पृथ्वी को वसुन्धरा कहते हैं, वहाँ इस पृथ्वी का नाम अहिल्या भी कहा जाता है। मेरे प्यारे! अहिल्या के गर्भ को जानने के लिए, हमारे यहाँ महात्मा भारद्वाज मुनि के यहाँ मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु ब्रह्मचारी कवन्धि इन दोनों ने मानो मिलन करते हुए परमाणुओं को एकत्रित करके, बेटा! एक यत्र का निर्माण किया था। जिसका नाम अहिल्या कृतिभा यत्र कहा जाता था। उस अहिल्या कृतिभा यत्र में, यह विशेषता थी, क्या पृथ्वी के मुनिवरों! दस दस योजन के आन्तरिक गर्भ को बेटा! देखो, उससे उस यत्र में मुनिवरों! वह दृष्टिपात आता था। क्योंकि दस दस योजन की दूरी तब कौन सा खनिज कहाँ कहाँ विद्यमान हैं, बेटा! उनके चित्र यन्त्रों में दृष्टिपात आते थे।

तो मेरे पुत्रों! विचार क्या है मानो यह माता वसुन्धरा है जिसके गर्भ को जानने से कहीं बेटा! देखो, जल को तपाया जा रहा है किसी के गर्भ में कहीं स्वर्ण का निर्माण हो रहा है कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, नाना प्रकार के खनिजों का निर्माण कहीं, स्वर्ण का निर्माण हो रहा है। सूर्य की नाना प्रकार की किरणें आती हैं, माता वसुन्धरा को तपाती रहती हैं। माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! कैसा खनिज विद्यमान है मेरे प्यारे! वह महान, माता वसुन्धरा है जो नाना प्रकार के खाद्यों को प्रदान करके, मानव का जीवन संचालित हो रहा है। मानव का जीवन मानो उसमें पनप रहा है, जैसे माता के गर्भस्थल में मानो देखो, सूर्य की किरणों से, चन्द्रमा की कान्ति से, मानव को अमृत प्रदान किया जा रहा था वही ओज प्रदान इस

माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में विद्यमान होने से नाना प्रकार का खाद्य, बेटा! प्रदान करती रहती है। यह कौन है बेटा! जो प्रदान कर रहा है? यह कौन मेरी प्यारी माता है, जो वसुन्धरा बन करके अपने में बसा रही है? और बसा करके नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती हुई, बेटा! देखो, मानव उससे पनप रहा है, क्रियाकलाप करता हुआ, इस माता के गर्भस्थल में, मानो क्रीड़ा करता हुआ, नाना प्रकार के खाद्यों को जानने के लिए तत्पर हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं दूरी न चला जाऊँ, विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, यह माता वसुन्धरा है, जहाँ माता वसुन्धरा, हम जननी माता को कहते हैं, जहाँ माता वसुन्धरा, हम पृथ्वी माता को कहते हैं, वहाँ वसुन्धरा नाम बेटा! वह चैतन्य देव है। जो इस संसार का नियन्ता है, जो ममतव को धारण करने वाला है, जो मानो देखो, विष्णु के रूप में परणित हो रहा है। संसार का पालन कर रहा है, इस संसार को नियन्त्रण में कर रहा है, मेरे पुत्रों! जब वह काल, वह आभाएं मानो उसकी प्रतिभा स्मरण आती रहती हैं, तो हृदय गद् गद् हो जाता है। हे माता वसुन्धरा! तू अपने में इस संसार को बसा रही है यह नाना पृथ्वियाँ नाना जननी माताएं मानो देखो, तेरे ही गर्भस्थल में वशीभूत हो रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, उस माता के गर्भस्थल में यह संसार का प्राणी मात्र वशीभूत हो रहा है। यह नाना लोक लोकान्तर मानो देखो, इसी में वशीभूत हो रहें हैं। जब विचार विनिमय करने वाला, जब विचार विनिमय करता है, तो बेटा! एक वेदमन्त्र को ले करके, बहुत ऊँची उड़ान उड़ने लगता है। वेदमन्त्र कहता है पृथ्वियां देवं ब्रह्मा स्वस्ततं ब्रह्मे सूर्याणि गच्छताम् देवत्याम् लोकाम हिरण्यं ब्रह्मे वाचन्नम् प्रव्हे स्वस्ति देवाः, वेद का आचार्य कहता है, चिन्तन करता हुआ, क्या हे प्रभु! तू माता बन करके मानो इस संसार को धारण कर रही है, कैसे धारण कर रही है? जैसे मानव को, शिशु को माता अपने गर्भ में धारण कर रही है इसी प्रकार यह

नाना प्रकार का जो लोक लोकान्तर हमें दृष्टिपात आ रहा है, मानो इस संसार को तू धारण कर रही है, जैसे यह पृथ्वी नाना प्रकार के खनिजों की, उत्पति कर रही है, खनिजों को धारण कर रही है, इसी प्रकार मानो देखो, इस पृथ्वी को आप धारण कर रहीं हैं। हे माता! यह नाना पृथ्वियाँ तेरे ही गर्भस्थल में ओत प्रोत हो रहीं है। जब विचारा जाता है, क्या मानो तुझे वेद सु के रूप में परणित कर रहा है, कहीं प्रभु मानो तुझे माता वसुन्धरा के रूप में परणित करता हुआ वेद कहता है, कि तू वसुन्धरा है, तू सबको धारण करने वाली है, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को धारण करने वाली है, जब यह वैज्ञानिक, यह आभा में तेरे ही में गर्भ में परणित हो जाते हैं, तो विचारने लगते हैं, जब तेरे से उद्बुद्ध होने वाली, तरंगो को मानो तरंगित होने वाले, आचार्य जन मानो उन तरंगों के ऊपर अनुसन्धान करते हैं, तो उन तरंगों में से, एक एक तरंगे बेटा! देखो, किस किस लोक से, कैसे उनका समन्वय होता है? उसके ऊपर अनुसन्धान करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों ने एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके, उस माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में बेटा! जब विचार करने लगे, तो विचार आया कि यह कैसा अनुपम जगत है, कैसा अनुपम ब्रह्माण्ड है, कैसी अनुपम धारा है, कैसी अनुपम तरंगे एक दूसरी तरंगों को मानो प्रकाशित कर रही हैं। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है, हमारे यहाँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जैसी ऋषि मुनियों की विज्ञानशाला में, भारद्वाज मुनि की विज्ञानशालाओं में, जाने का जब सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो बेटा! वहाँ ब्रह्माण्ड सर्वत्र मानो दृष्टिपात आने लगता है। कैसा अनुपम ब्रह्माण्ड, मेरे पुत्रों! देखो, जैसा यह पृथ्वी है, जिसको माता वसुन्धरा के रूप में परणित कर रहे थे, मानो ऐसी ऐसी नाना मानो वसुन्धरा बन करके यह पृथ्वी के रूप में परणित होती हुई बेटा! यह सूर्य की परिक्रमा करती रहती हैं। विचार आया कितनी पृथ्वियाँ हैं, जो सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं, तो वेद का ऋषि कहता है, कि तीस

लाख पृथ्वियाँ हैं, जो एक ही सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं। मेरे प्यारे! कैसा प्रिय नृत्त हो रहा है, यह ब्रह्माण्ड कैसे एक दूसरे में ओत प्रोत होता हुआ, बेटा! दृष्टिपात आ रहा है। वैज्ञानिकों ने, वैज्ञानिक दृष्टि से मानो देखो, आत्मिक दृष्टि से उन्होंने गम्भीर मुद्रा में परणित हो करके, हृदय अगम्य ज्योति को ले करके, मेरे पुत्रों! देखो, आगे चिन्तन किया, क्या यह जो सूर्य है। एक सहस्र सूर्य हैं, जो मानो देखो, बृहस्पति की परिक्रमा कर रहें हैं, मेरे प्यारे! देखो, यह नाना पृथ्वियाँ तीस लाख पृथ्वी तो सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं, और एक सहस्र सूर्य हैं, जो बृहस्पति की परिक्रमा कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद के आचार्य, चिन्तन करने लगे, विचार विनिमय करने लगे, तो बेटा! आगे उन्हें दृष्टिपात आने लगा, क्या सम्भवा देवत्यां अरूण ब्रहे वेद की आख्यिका कहती है क्या मानो एक सहस्र बृहस्पति हैं, जो आरुणि मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं आरुणि मण्डल एक विशाल मण्डल है, उसमें जो बेटा! देखो, आभा में मानो नाना बृहस्पति, उसकी परिक्रमा करते हुए मग्न हो रहे हैं, अपनी अपनी आभा में गतिशील हो रहा है, मेरे प्यारे! आगे चिन्तन करने वालों ने, ऋषियों ने चिन्तन किया, क्या मानं ब्रव्हे एक सहस्र आरुणि हैं, जो मुनिवरों! देखो, एक ध्रुव मण्डल की मानो एक सहस्र आरुणि मण्डल ध्रुव मण्डल की परिक्रमा कर रहें हैं। वाह रे मेरी प्यारी माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में कितने लोक लोकान्तरों का यह नृत्त हो रहा है, यह कैसा आभा में, तेरा जगत दृष्टिपात आ रहा है, तू सबको अपने में धारण कर रही है, और माता बन करके इस संसार को धारण कर रही है, परन्तु आचार्य यहीं आ करके शान्त और मौन नहीं हो गएं हैं, आगे उन्होंने विचार किया कि एक सहस्र ध्रुव हैं, जो मानो देखो, पुष्प नक्षत्र की परिक्रमा कर रहे हैं। और एक सहस्र पुष्प नक्षत्र हैं, जो मेरे पुत्रों! देखो, स्वाति की परिक्रमा कर रहें हैं, एक सहस्र स्वाति नक्षत्र हैं, जो मुनिवरों! देखो, अचंग मण्डलों की परिक्रमा कर रहे हैं, एक सहस्र अचंग

मण्डल हैं, जो सोमकेतु मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं एक सहस्र सोमकेतु मण्डल हैं जो बेटा! देखो, त्रीणि मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं, एक सहस्र त्रीणि मण्डल हैं, जो बेटा! देखो, सोमभामकेतु सुचित्त ऋषि मण्डल की बेटा! वह परिक्रमा कर रहे हैं। बेटा! विचार विनिमय यह क्या में आज बेटा! प्रभु की प्रथा असुतम मानो उसकी प्रतिभा, उसका जो विशाल विज्ञान हैं, बेटा! वह इतना नितान्तर है, इतना विशाल है क्या मुनिवरों! देखो, कोई मानव, उसके विज्ञान को सीमा बद्ध नहीं कर सका अथवा उसके विज्ञान को कोई भी मानव अब तक सीमा बद्ध नहीं कर सका है। इतना विशाल विज्ञान है, मेरे देव का, उस मेरी प्यारी माता वसुन्धरा का, जो इस संसार को धारण कर रही है एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला जगत है। एक दूसरे में बेटा! ओत प्रोत होता हुआ, एक दूसरे को प्रकाशित कर रहा है। वाह रे देव! तू कैसा अनुपम है तेरी कितनी महानता है, इस महानता के ऊपर बेटा! देखो, ऋषि मुनि अब तक आश्चर्य चकित होते रहें हैं। परन्तु देखो, तेरा विशाल यह जो विज्ञान हैं, इसको जानने के लिए ऋषि मुनियों ने बेटा! समाधियों में परणित हो गएं हैं। परन्तु तेरा अनुपम इतना विज्ञान है, क्या जब वो तेरे विज्ञान को जानने लगे हैं, उसी काल में मुनिवरों! देखो, वह मौन हो जाते हैं।

तो विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है, वेद का मन्त्र कह रहा है, हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हे माता! तू संसार को धारण कर रही है, यह नाना सूर्य है मानो देखो, यह एक दूसरे को प्रकाशित कर रहें हैं, सूर्य की नाना प्रकार की किरणें आ रही हैं, पृथ्वियों को तपा रही हैं, खनिजों को तपाया जा रहा है, वाह मेरे देव! तू कैसा अनुपम मानो द्यौ से प्रकाश ले करके, यह प्रकाशित हो रहा है, उसमें से तरंगे उद्बुद्ध हो रही हैं। वैज्ञानिक जन मानो देखो, परमाणुवाद को जान करके, परमाणु विद्या को जान करके, नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं को अपने में

धारण करते हुए, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करने लगते हैं। तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है क्या मानो देखो, वह प्रभु कितना अनुपम है, वह कैसी मेरी प्यारी माता है, जो इस संसार को, धारण कर रही हैं, इस ब्रह्माण्ड को धारण कर रही हैं, और धारण करके मानो देखो, यह गतिशील हो रहा है केवल सन्निधान मात्र से ही मुनिवरों! यह गतिशील हो रहा है, एक सन्निधान मात्र हुआ, चेतना का, उस चेतना का नाम ही बेटा! ममतव कहा जाता है। पञ्च महाभूतों का, अपना स्वभाव जागरूक हो रहा है, हे ममतव को धारण करने वाली! हे माता! हे वसुन्धरा! तू वास्तव में इस संसार को धारण कर रही है। जब विचार आता है, क्या यह लोक कैसे पनप रहा है? यह सूर्य मानो द्यौ से कैसे सहायता ले रहा है? प्रकाश दे रहा है। पृथ्वी के गर्भ में कहीं मानो देखो, जल शक्तिशाली बन रहा है, कहीं स्वर्ण की मात्राओं का निर्माण हो रहा है, उन्हीं स्वर्ण की किरणों का सम्बन्ध बेटा! गो नाम के पशु से होता है, उन्हीं किरणों का सम्बन्ध माता के गर्भाशय से होता है, उन्हीं किरणों का सम्बन्ध, मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा से होता है, कैसा अनुपम जगत है, मानो देखो, इसके ऊपर चिन्तन करने से, यह प्रतीत होता है क्या एक एक लोक मानो किस प्रकार अपनी आभा प्रगट कर रहा है। परन्तु वह केवल परमात्मा के सन्निधान, उस माता वसुन्धरा के सन्निधान मात्र से ही मुनिवरों! वह गतियां चल रही हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विज्ञान के युग में ले जाने के लिए नहीं आया हूँ, विचार यह प्रगट हो रहा था, वेदमन्त्र यह कहा रहा था, क्या मुनिवरों! देखो, वही किरणें मानो देखो, माता के गर्भ में, बालक को पनपा रही है, वही सूर्य की किरण है, जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को मानो देखो, तेजोमयी बना रही हैं, वही वनस्पतियां बेटा! देखो, विचाराधीन जब आचार्यजन होते हैं उनको तपा करके मानो खरल बना करके

मानो वही मानव का जीवन बन जाती हैं। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रभु की कैसी अनुपमता है, तो वेद का मन्त्र कह रहा है कि हे माता! हे वसुन्धरा! हम तेरे ही गर्भस्थल में वशीभूत हो रहे हैं, तू हमें धारण कर रही हैं, अपने में धारण करती हुई, तू महानता को प्रदान करती हुई, मानो तू हमें नाना प्रकार के तेजोमय बना रही है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वेदमन्त्र क्या कह रहा है हे माता! तू ममतव में हैं, मानो देखो, माता सूर्य की आभा में मानो पञ्च महाभूतों की आभा में सन्निधान मात्र से मानो पनप रही है, पनपने के पश्चात तपोमयी बन रही है तपने के पश्चात तू ममतव को धारण करने वाली है। तू ही माता बन रही है, मेरे प्यारे! देखो, आचार्यकुल में ब्रह्मचारी तप रहा है, ब्रह्मचर्य से तप रहा है, गार्हपथ्य नाम की अग्नि से तप रहा है वैश्वानर नाम की अग्नि में तप रहा है वह उसके पश्चात गृहपथ्य नाम की अग्नि में प्रवेश कर जाता है। परन्तु देखो, वह गृह को तपा रहा है, स्वयं तप रहा है, मानो देखो, वही विद्यालय में आचार्य बन करके, ब्रह्मचारी को तपा रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या यह कैसा तपोमयी संसार है? यह माता के गर्भस्थल में बेटा! विराज मान हो करके बेटा! नृत्त कर रहा है कैसा मानो एक दूसरे को जीवन प्रदान कर रहा है। आओ, मेरे प्यारे! ऋषिवर! इसके ऊपर, प्रत्येक मानव को बेटा! चिन्तन करना चाहिए। मानो देखो, विद्यालयों मे गृहपथ्य नाम की अग्नि को बेटा! देखो, गृह आश्रम में प्रदीप्त हो करके, मुनिवरों! देखो, इस अग्नि को प्रदीप्त करना चाहिए, और इस अग्नि के ऊपर चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि मानव का विचार भी अग्नि है, काष्ठ में रहने वाली भी अग्नि है, सूर्य में तपने वाला मानो जो द्यौ तप रहा है, वह भी अग्नि है, चन्द्रमा की कान्ति में जो तपायमान हो करके बेटा! रेणुका बन करके वह भी अग्नि हैं। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के गर्भ में, स्वर्ण को तपा रही हैं, वह भी अग्नि है, मानो जल को

शक्तिशाली बना रही है वह भी अग्नि है। मानो देखो, अग्नि अग्नि प्रदीप्त हो रही है। विचार आता है जब प्रभु के प्रभु की रचना का, मेरे प्यारे! देखो, जल ही बिन्दु हैं, जल में ही पनप रहा है, बेटा! जल ही मानो देखो, तेजोमयी को शीतल बनाने वाला है।

तो विचार विनिमय क्या बेटा! कि आज का हमारा वेद का वाक कहता है कि हे माता वसुन्धरा! तू सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कुञ्जी हैं। तू सर्वत्र विज्ञान की भी एक आभा कहलाती है। मानो देखो, वैज्ञानिक जन इस विज्ञान से तेरे से ओझल नहीं हो सकते। मेरे प्यारे! देखो, कोई भी, मेरे प्यारे! देखो, कोई भी वैज्ञानिक, सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ है जो बेटा! प्रभु के विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, वह इतना नितान्तर विज्ञान है, क्या उसके ऊपर बेटा! ऋषि मुनि चिन्तन करते करते, बेटा! मौन हो गएं हैं। तो मेरे प्यारे! तो आज का हमारा विचार, यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम बेटा! देखो, प्रभु के विज्ञान के ऊपर, चिन्तन और मनन करते रहें, एक एक वेदमन्त्र बेटा! प्रभु की गाथा गा रहा है। जैसे माता का पुत्र, माता का वर्णन कर रहा है, यह किस माता का पुत्र है। परन्तु देखो, इसी प्रकार, जैसे यह पृथ्वी है यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। ब्रह्माण्ड को सिद्ध कर रही है कि ब्रह्माण्ड है, परन्तु इसी प्रकार, प्रत्येक वेदमन्त्र, ब्रह्म का वर्णन कर रहा है, माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहा है मेरे प्यारे! देखो, वेदमन्त्र कहता है क्या प्रभु का विज्ञान इतना नितान्तर इतना महान इतनी विचित्रता में गति करता रहता है कि मानव मेरे प्यारे! मौन हो जाता है।

यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, माता वसुन्धरा की महिमा का गुणगान

गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं, जो बेटा! यह संसार सागर हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह कैसा अनुपम सागर है, बेटा! इसमें कहीं मान और अपमान की नाना प्रकार की तरंगे मानव को तरंगित करती रहती हैं, मानो इन नाना प्रकार की तरंगो में तरंगति हो करके, बेटा! अपने को कोई मृत्यु को प्रदान कर रहा है, कोई जीवन पा रहा है, मानो देखो, इन तरंगो से हमें पार होना है। यह संसार रूपी जो सागर है, इससे पार होने का प्रयास करना है। तो प्रभु की महिमा का प्रभु के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करना है यह है बेटा! आज का वाक्, हमारे आचार्यों ने बेटा! आध्यात्मिकवाद को, भौतिक विज्ञान से दोनों को एक दूसरे में कटिबद्ध करते हुए, मानो देखो, ऊँची ऊँची उड़ान उड़ी हैं। मानो देखो, अब शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करेंगे, आज का वाक हमारा क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, माता वसुन्धरा का वर्णन करते हुए उसकी अपने में बेटा! आस्था और विश्वास विश्वसनीय बन करके हम इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे। ओ३म् देवं माः यशा रथं ब्रह्माः आभ्यां गतप्राः वसु यम् रथाहाम्। ओ३म् देवं मां हिरण न रथं आ पा रेधि विशा यं सर्वां ओ३म् मां गृहि विशश्चाहं आ पा रथं ब्रह्मा वायु आ भा मां वसु यम सर्वाम्। ओ३म् गाता मां वरू यञ्चमा रथाश्वजा गायन्त्वा माणा भद्राहं आ पाहाम्।

5 १६ ०१ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनाहेर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा

का गुणगान गाया जाता है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा उसका वर्णन कर रहा है, क्योंकि उसका जो विज्ञानमयी स्वरूप है, वह प्रत्येक वेद मन्त्र के चिन्तन करने प्रतीत होता रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र उस महान देव को वसुन्धरा के रूप में परणित कर रहा था क्योंकि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में वसुन्धरा के बहुत से पर्यायवाची शब्द आते रहते हैं। परन्तु वसुन्धरा का अभिप्राय केवल इतना ही है, जिसके गर्भस्थल में यह संसार वशीभूत हो रहा है अथवा उसी के गर्भस्थल में क्रीड़ा कर रहा है, क्योंकि यह जो वसुन्धरा पृथ्वी है यह उस परमपिता परमात्मा की क्रीड़ा स्थली मानी गई है। प्रत्येक मानव जब यह चिन्तन करता है कि यह तो वसुन्धरा के गर्भ में यह नाना पृथ्वियाँ गति कर रही हैं, एक नहीं हैं नाना पृथ्वियाँ हैं, एक सूर्य नहीं है। नाना सूर्य हैं परन्तु यह सब उस परमपिता परमात्मा के गर्भ में, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में हम सब विद्यमान हैं। परन्तु वसुन्धरा का जब व्यापक स्वरूप, हमारे समीप आता है, तो मानो एक दूसरे में एक दूसरी माता, मानो हमें एक दूसरे में परणित होती दृष्टिपात आती है। जैसे जननी माता है, बिन्दु से निर्माण हो रहा है, बिन्दु में ही प्रवेश कर रहा है, परन्तु वह मानो क्रीड़ा स्थली है। उसे हम निर्माण स्थली भी उच्चारण कर सकते हैं। एक बिन्दु की ही रचना है, परन्तु जब हम यह विचारते हैं, कि उसका जब, स्वरूप समाप्त होता है, तो वह पृथ्वी के रूप में, मानो वही वसुन्धरा बेटा! परिवर्तित हो करके आ जाती है। पृथ्वी के आङ्गन में बेटा! हम बस रहे हैं, खाद्य खनिज पदार्थ हमें प्राप्त हो रहे हैं। मानो रत्नों जैसी धातु हमें और स्वर्ण हमें प्राप्त हो रहा है। परन्तु उस माता के गर्भस्थल में, हम अपने जीवन को पनपाते रहते हैं, कहीं गो रूप में पृथ्वी परणित हो जाती है, कहीं मानो देखो, गो नाम के पशु के रूप में परणित हो जाती है वह नाना प्रकार के दुग्धाहार हमें प्रदान करती रहती है। मानो यह पृथ्वी माता

नाना प्रकार का खाद्यान्न प्रदान करती रहती है, मानव का जीवन पनपता रहता है। मानो देखो, यह कैसी सुन्दर क्रीड़ा स्थली है, जिसके गर्भ में विद्यमान हो करके नाना प्रकार की धातुओं का हम पान कर रहे हैं नाना प्रकार के खाद्यान्न पदार्थों का पान करते हुए अपने जीवन को सौभाग्यशाली स्वीकार करते हैं, परन्तु यह माता कैसी विचित्र माता है वैज्ञानिकों ने बेटा! इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ अनुसन्धान किया है।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, मेरे प्यारे! जब महर्षि लोमश और महर्षि कागभुषुण्ड जी, दोनों अपने में विवेचना करते रहते थे, एक समय बेटा! महर्षि लोमश ने, कागभुषुण्ड जी से यह कहा कि यह जो हमारी क्रीड़ा स्थली है, जो नाना प्रकार की हमें धातु पिपाद दे रही है, हम इसके गर्भ में प्रवेश होने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! ऋषि मुनि परम्परागतों से अनुसन्धान करते रहे हैं। इस पृथ्वी के गर्भस्थल में मानो जब इस पृथ्वी के गर्भ में जब प्रवेश किया तो मानो देखो, इसके गर्भ में कितना अग्नि का भण्डार है, मानो देखो, अग्नि और वायु अपने रूप में मानो देखो, प्रणतव हो करके और अग्नि की जिह्वा के साथ में बेटा! खनिजों को तपा रही है। कैसा प्रिय विज्ञान है, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में, बेटा! सब वैज्ञानिक अपनी अपनी क्रीड़ा करते रहते हैं। मानो देखो, जब उनके आङ्गन में जब यह विचार, अधूरेपन में रहा। तो मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड और लोमश, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पंहुचे। महर्षि भारद्वाज मुनि ने दोनो महापुरूषों को स्थान ग्रहण किया, आईए भगवन! पधारिए वह विराजमान हो गएं मन्त्र कुछ, वेद के मन्त्र वेद की आख्यिका उनके समीप थी। उन्होंने बेटा! वह न्यौदा में वर्णन कराया, उन्होंने कहा कि हे भगवन! यह वेदमन्त्र यह कहता है कि वैज्ञानिक इसके गर्भ में प्रवेश कर जाते हैं और इसके गर्भ में जो भी जितना विज्ञान राष्ट्रीयतव और मानवीयतव के रूप में हमें परणित होता रहता है परन्तु उसको हम साकार रूप में लाना चाहते हैं, तो मेरे

प्यारे! जब यह वाक उन्होंने प्रगट किया तो भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि हमारे यहाँ इसके सम्बन्ध में तो पूर्व बहुत से यन्त्रों का निर्माण हुआ है, और निर्माणवेत्ता परम्परागतों से ही, निर्माण करते रहे हैं। परन्तु पृथ्वी के गर्भ में, जितना भी खनिज विद्यमान है उसको यन्त्रों से हम स्वतः ही दृष्टिपात करते रहें, और हम स्वतः अपने को यह अनुभव करते रहते हैं, कि हम माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में हम क्रीड़ा कर रहे हैं। परन्तु देखो, वह भी अपने में जहाँ वह ब्रह्म चर्चाएं करते रहते थे, ब्रह्म की विवेचना करते रहते थे, आत्म तत्त्व को जानने वाले, मानो महर्षि कागभुषुण्ड और महर्षि लोमश जिनके आयु में सदैव वृद्धि होती रहती थी, परन्तु वह भी महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! विज्ञान और कुछ जानने के लिए तत्पर हो गएं क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा रहती है, क्या मैं संसार की बहुत सी वस्तुओं को जानने वाला बनूं, प्रायः तो यही इच्छा बनी रहती है। क्या जितना भी यह प्रभु के गर्भस्थल में ज्ञान और विज्ञान मुझे दृष्टिपात आ रहा है, मैं उस ज्ञान और विज्ञान का द्यौतक बनूं परन्तु वह उसे दूहने के लिए लग जाता है। हम मानो लेखनियों के द्वारा, कहीं क्रियात्मक के द्वारा कहीं मुनिवरों! देखो, समाधिष्ट हो करके, अनुभव के द्वारा प्रत्येक मानव परम्परागतों से अनुभव भी करता रहा है, और मुनिवरों! देखो, क्रियात्मक अपने जीवन को बनाने का प्रयास और जब मुनिवरों! देखो, इससे भी विचारों में भिन्नता आ जाती है। तो वह सामधिष्ट हो जाते हैं और अपने अन्तर्हृदय से मानो देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कुञ्जी को जानने का प्रयास करते हैं। क्योंकि संसार का यह सिद्धान्त रहा है, क्या जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, अथवा चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो चाहे वह भौतिक विज्ञान हो चाहे मानो देखो, क्रियात्मक यन्त्रवाद हो चाहे मुनिवरों! पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो चाहे वह सूर्य मण्डल में जाने वाला यात्री हो वह सब

अपने अन्तर्हृदय से बाह्य जगत का समन्वय करते रहें है।

परन्तु कोई बेटा! ऐसा प्राणी नहीं हुआ जो अपने बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में न ले गएं हों, और आन्तरिक जगत से परन्तु देखो, इसकी जानकारी नहीं की हो यह सदैव यह सार्वभौम एक सिद्धान्त माना गया है। परन्तु देखो, महर्षि लोमश और मानो देखो, कागभुषुण्ड जी दोनों अपने में अनुसन्धान करने लगे परन्तु देखो, कुछ जानकारी महर्षि भारद्वाज के चरणों में ओत प्रोत हो करके बेटा! उन्होंने पान की परन्तु जब पान करने लगे, अनुभव भी करने लगे अपने अन्तर्हृदयों की जो विडम्बना थी परन्तु देखो, इसका भी साक्षात रूप धारण करते रहते थे। तो ऐसा बेटा! ऐसा मुझे स्मरण आता रहा है क्या मानो उन्होंने अनुसन्घान स्थली पर विद्यमान हो करके, माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश होने का प्रयास किया, और इसके गर्भ में प्रवेश करने के पश्चात मेरे प्यारे! इसमें जो अग्नि के भण्डार, मानो देखो, सूर्य की किरणों से, उस अग्नि का समन्वय रहता है। परन्तु देखो, जहाँ जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, सूर्य की नाना प्रकार की किरणें मानो उन्हें उद्बुद्ध कर रही हैं। मेरे प्यारे! ऐसा प्रतीत होता रहा है, ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में कि एक एक वस्तु मानो देखो, आभा में तपाने का कार्य कर रही है। जैसे स्वर्ण का निर्माण हो रहा है मानो रत्नो का निर्माण हो रहा है, और भी नाना प्रकार की धातु पिपाद बन रहा है बेटा! वह केवल माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! देखो, उसको अनुभव करने का ऋषियों ने प्रयास किया, वह क्यों होता रहता है? क्योंकि पृथ्वी माता वसुन्धरा मानो देखो, भिन्न है, मानव का शरीर भिन्नता में दृष्टिपात आता है। परन्तु इससे यह प्रतीत होता है, कि हम सब माता वसुन्धरा के गर्भ में ही, ओत प्रोत हैं। क्योंकि वह उसकी क्रीड़ा स्थली है, मानो देखो, पृथ्वी से उसका समन्वय रहता है, यदि पार्थिव तत्त्व, इस मानव के शरीर में नहीं होगा, तो बेटा! देखो, पृथ्वी के विज्ञान को भी नहीं जान सकते। यदि

मानो देखो, सूर्य का विज्ञान मानव के समीप आना चाहता है परन्तु तब तक सूर्यतव, अग्नितव, द्यौतव नहीं रहेगा जब तक मेरे प्यारे! मानव ऊँची उड़ान नहीं उड़ सकता।

तो विचार विनिमय यह है बेटा! क्या मानो देखो, इसमें सर्वत्र, लोक लोकान्तरों की तरंगे, उनका महत्व जो तत्त्व रूप में रहने वाला, वह मानव के शरीर में विद्यमान रहता है। बेटा! मुझे ऐसा कुछ स्मरण है, कागभुषुण्ड जी ने अपने अनुभव में परन्तु देखो, सूर्य की किरणों के साथ, वह अपने मानो देखो, अपनी प्रतिभा को ले जाते थे, और प्रतिभा को ले जा करके सूर्य की किरणों के साथ उनकी प्रतिभा रमण कर रही है, जैसे एक मानव, अग्नि परमाणु से निर्माण किया हुआ, विज्ञान मानो देखो, सूर्य की किरणों के साथ गमन कर रहा है और सूर्य की किरणों में रमण करता हुआ, बेटा! वह सूर्यगत में प्राप्त हो जाता है सूर्य विज्ञान में, वह वैज्ञानिक बन करके मानो देखो, सूर्य की प्रतिभा, उसके समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु देखो, कागभुषुण्ड जी ने यह निर्णय किया है, अपने में, क्या मानो देखो, यह मेरी प्रतिभा सूर्य के जो परमाणु हैं, सूर्य का जो अग्न्याधान, इस शरीर में हो रहा है। मानो देखो, वही गति कराने वाला सूर्य विज्ञान में ले जाने वाला है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, इस माता वसुन्धरा के गर्भ में ज हम प्रवेश होते हैं तो बेटा! इसमें सूर्य और आदित्य हमें दृष्टिपात होते हैं। हमें चन्द्रमा सोम की वृष्टि करता हुआ, दृष्टिपात आता है। जैसे मानो देखो, समुद्रो के सर्वत्र जलों को, वह अपने में धारण कर रहा है, और सोम की वृष्टि कर रहा है, वह मानो देखो, सोम में ही वृष्टि हो करके, यह मानव उससे तृप्त होता है। नाना प्रकार की वनस्पतियों में प्रवेश होने पर, मेरे प्यारे! देखो, आयुर्वेद के जानने वाला बनता है। मैंने तुम्हे बहुत पुरातन काल में कहा है कि हमारे यहाँ, कागभुषुण्ड जी आयुर्वेद के बहुत से मर्म को जानते थे, महर्षि लोमश मुनि भी मानो देखो, आयुर्वेद के मर्म को जानते थे,

क्योंकि आयुर्वेद एक ऐसा वेद है, ऐसी मानो देखो, प्रतिभा है, जो मानव को ऊँचा बना देती है। मानव को गम्भीर रहस्यतम में ले जाती है। नाना प्रकार की वनस्पतियों के गर्भ में, वह प्रवेश हो करके, अपने हृदय को मानो देखो, उसमें परणित करके उसके गुणों का गुणवादन करता हुआ मानो देखो, एक दूसरे से मिलान करता रहता है।

तो मेरे पुत्रों! विचार क्या है इस माता वसुन्धरा के गर्भ में, ऐसी कौन सी वस्तु हैं जो नहीं हैं। परन्तु इसीलिए माता का गर्भाशय अवर्णित कहते हैं, सम्भूति कहते हैं। मानव इसी में रमण करता रहता है। मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है कि राजा राजन नमाम प्रव्हे अस्तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के राष्ट्र में जो सुधन्वा नामक वैद्यराज थे वह जहाँ मुनिवरों! आयुर्वेद में पारायण थे वहाँ मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि के यहाँ भौतिक विज्ञान में रत्त होने के लिए तत्पर आए। तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा कुछ स्मरण हैं तो मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है जब वह विज्ञान में रत्त हो गएं परन्तु देखो, आयुर्वेद की आभा उसमें प्रतिभाषित होने लगी क्योंकि आयुर्वेद और विज्ञान दोनों का मुनिवरों! परस्पर समन्वय रहता है, क्योंकि आयुर्वेद भी मानो देखो, परमाणुवाद को सिद्ध करता है, और मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद विज्ञान भी मुनिवरों! देखो, परमाणुवाद को सिद्ध कर रहा है, परमाणुवाद को विज्ञान कहता है, क्या यह आदान प्रदान जो हो रहा है, परमाणुवाद जो गति कर रहा है, यही मानो देखो, विज्ञान में सार्थक होता और मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद का विद्धान कहता है, आयुर्वेदाचार्य कहता है क्या यह जो अग्नि मानो परमाणुओं को ले करके और यह जो वायु में परणित कर देती है, यह मानो देखो, प्राण स्वरूप बन करके यह शक्ति मूलक बन करके मानो देखो, प्राण शक्ति के देने वाले वह परमाणु मानो देखो, आदान प्रदान हो करके यह एक दूसरी औषध में परणित होते रहते हैं। एक वृक्ष दूसरें में दूसरे को प्रकाशित करता रहता है। मानो

इसी प्रकार मानव जब उन औषधियों का पिपाद बना करके आयुर्वेदाचार्य जब परमाणु शक्ति उसमें भरण कर देते हैं, अग्नि में तपाने के द्वारा वायु में उन्हें क्रीत करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, उसे अपने भुजों की शक्तियों से, खरल करने के पश्चात, जब मुनिवरों! देखो, उसमें प्राण शक्ति मानो देखो, परमाणु शक्ति प्रदान कर देते हैं, वह जो परमाणु स्वतः हैं, उनका मानो विभाजन कर देते हैं, उनके नाना प्रकार के, जब उनका विभाजन होता है, तो उसमें से नाना प्राण शक्ति, नाना रूप को धारण करके उत्पन्न हो जाती है। जब उस परमाणुवाद मानो देखो, औषधियों में उत्पन्न हो जाता है, उसका मानो देखो, एक पिण्ड बनाते हैं, पिण्ड बना करके जब रूग्ण को प्रदान कर देते हैं, तो मेरे प्यारे! वह स्वस्थ हो जाता है।

तो परिणाम क्या है मेरे पुत्रों! विचार विनिमय हमारा यह है कि मानो परम्परागतों से ही, विज्ञान अपनी स्थलियों पर, मानो देखो, अपने में मान्य वरुण अस्वस्त रहा है परन्तु जब यह विचारते हैं कि परमाणुवाद ही दोनों में सार्थक होता है, तो उस परमाणुवाद को मानो देखो, परम्पागतों से बेटा! मानव इसके ऊपर अनुसन्धान करता हुआ माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश करता हुआ इसमें जो परमाणु शक्ति कार्य कर रही है मानो उस परमाणु शक्ति को एकत्रित करने का परम्परागतों से बेटा! वैज्ञानिक प्रयास करता रहा है मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है क्या औषधियों के पिपाद को ले करके परमाणु शक्ति को ले करके उसी से मुनिवरों! देखो, धातु पिपाद का निर्माण भी मानो देखो, आचार्यों जनों ने किया है जब धातु पिपाद का निर्माण किया है उसको मानो देखो, यन्त्रों में यन्त्रित करते रहें हैं मेरे पुत्रों! देखो, यन्त्रों में स्थिर करते हुए वही मानव देखो, प्राणवर्धक जितनी भी मानो देखो, वायु अस्वात कहलाती है उसको वैज्ञानिक अपने में पिरो करके बेटा! देखो, अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ते रहते हैं और इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद का विज्ञान मानो देखो, जब अपने में

परमाणुवाद का विभाजन करता हुआ, वह पृथ्वी के गर्भ में पीपल जैसे वृक्ष में मानो वह प्राण शक्ति को अपने में ग्रहण करता हुआ, मुनिवरों! देखो, विष नाशक औषध को एकत्रित करता हुआ, प्राण वर्धक प्राण वायु को ले करके प्राण औषध को ले करके वह भी मेरे पुत्रों! देखो, उस पृथ्वी के गर्भ को जानता हुआ, औषध पिपाद को बनाता हुआ मेरे प्यारे! देखो, जीवन को प्रदान करता रहता है।

विचार विनिमय क्या है आज बेटा! मैं दूरी चला गया हूँ विचार यह देने जा रहे थे क्या यह जो माता वसुन्धरा पृथ्वी है, इसके गर्भ में मानो देखो, पिपाद बन रहा है यह पिपाद वस्तु को प्रदान कर रही है पृथ्वी माता के गर्भ में बेटा! नाना वैज्ञानिक इसके गर्भ में प्रवेश इसके गर्भ में उन्होंने प्रवेश किया है और नाना प्रकार के विज्ञान और तरंगवाद को जाना है परन्तु बहुत से वैज्ञानिक इस प्रकार के हुए हैं जिन्होने माता के गर्भस्थल में जननी के गर्भस्थल में मानो देखो, प्रवेश करके यह अपने में अनुभव किया है कि माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु का प्रवेश हुआ है, उस बिन्दु में कौन सी विशेषता है, जो उस बिन्दु में मानो देखो, यह सर्वत्र तरंग और मानव के उपांग बन जाते हैं, माता के गर्भस्थल में शिशु मानो पनपता रहता है, और देखो, माता को प्रतीत नहीं है, कैसे पनप रहा है, परन्तु देखो, बहुत से ऋषि मुनियों ने अपने में अनुभव किया है, अनुभव करके एक एक बिन्दु को मानो देखो, यन्त्रों में स्थिर करने के पश्चात उन परमाणुओं को जो परमाणुवाद उसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म तरंगे विद्यमान हैं, वही तरंगे माता के गर्भ में प्रवेश करती हैं, वही परमाणु अणु बन करके मेरे पुत्रों! माता के गर्भ में प्रवेश करता है, और प्रवेश करके मानो देखो, वह जब बिन्दु के रूप में प्रवेश होता है, जल बिन्दु के रूप में प्रवेश हो करके, मेरे प्यारे! उसका पिपाद बनता है, और जब पिपाद बनता है, तो पिपाद बनने के पश्चात मानो देखो, एक नवीन ब्रह्माण्ड की रचना होती है। कैसी ब्रह्माण्ड की रचना

होती है? उसमें बेटा! सूर्य का कण विद्यमान है, नाना लोक लोकान्तरों की प्रतिभा जैसे जैसे आती है, परन्तु माता के गर्भस्थल में जो वह बिन्दु है, उसे उसके परमाणु उसकी प्रतिभा मानो देखो, विद्यमान रहती है, बेटा! मैं विज्ञान के युग में मूल रहस्य में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु आज का वेदमन्त्र जब हमें बाध्य कर रहा है, तो विचार दे रहा है, वेद का मन्त्र कह रहा है कि यह वही बिन्दु हैं, जो सृष्टि के प्रारम्भ में, सृष्टि के पिता ने महतत्व के रूप में और महतत्व को अन्तरिक्ष के रूप में और अन्तरिक्ष को वायु के रूप में और वायु को मानो अग्नि के रूप में और अग्नि को मेरे प्यारे! देखो, जल के रूप में, जल में वह बिन्दु स्थिर हो गया। वह जब जल में ही मानो स्थिर हो गया वही माता का गर्भाशय बेटा! जलाश्य के रूप में रहता है। परन्तु वह भी जलाश्य के रूप में हैं वह बिन्दु जल में स्थिर हो गया, और जल ही मेरे पुत्रों! जल अश्वत कहलाया गया, उसकों आचार्यों ने बेटा! अश्व कहा है। आचार्यों ने उस बिन्दु को अश्व कहा है। कैसी ब्रह्माण्ड की रचना है? मेरा प्यारा प्रभु, कितना महान वैज्ञानिक है बेटा! मानो एक बिन्दु है, उस बिन्दु को, पञ्च महाभौतिक तत्त्वों से समन्वय करते हुए, जल बिन्दु में प्रवेश करते हुए, उसको अश्व के रूप में परणित किया है। वह अश्व कहलाता है, इस अश्व की व्याख्या बहुत रूपों में बेटा! हम कर गए हैं। परन्तु आज का वेदमन्त्र भी, हमें इसके लिए बाध्य कर रहा है, क्या वही बिन्दु मानो देखो, ब्रह्माण्ड के रूप में परणित होता है, वहीं बिन्दु है जो मानव का शरीर बेटा! एक सूक्ष्म ब्रह्माण्ड के रूप में हैं, मानो सूर्य को वह जानता है, चन्द्रमा को जानता है, नक्षत्रों को जानता है, मेरे प्यारे! देखो, लोक लोकान्तरों को जानता है, कैसे जानता है महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, कागभुषुण्ड जी जब मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी सुकेता से जब इनका मिलान हुआ, तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारिणी और ब्रह्मचारी सुकेता दोनो मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में तारा

मण्डलों की गणना कर रहे थे, मानो देखो, वह, उनकी विज्ञानशाला में, भारद्वाज की वह तारामण्डलों की गणना कर रहे थे, तो जब कागभुसुण्ड जी पंहुचे, तो कागभुषण्ड जी ने भी मानो वहां लोक लोकान्तरों की वह भी गणना करने लगे, जब गणना करने लगे गणना में लग गएं, तो मुनिवरों! देखो, एक आकाश गंगा कहलाती है, जिसको हमारे आचार्यों ने निहारिका के रूप में परणित किया है मानो जब उसकी गणना करने लगे एक नहीं मानो देखो, नाना लोक लोकान्तरों की गणना करने लगे तो ऐसा वेद का आचार्य कहता है वेद के मन्त्र को ले करके और वेदमन्त्र कह रहा था, सम्भवा ब्रहे कृतां देवाः लोकान्तं बण्ग्र ब्रह्मे अस्तो सुप्रजां देवत्यां मेरे प्यारे! देखो, उस देवता के, जो ब्रह्माण्ड में मानो स्थिर रहने वाला वह ब्रह्म हैं। मेरे पुत्रों! देखो, लोकों की जब गणना करने लगे, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने बहत्तर लाख सूर्य गणना में लाए तो मुनिवरों! बहत्तर लाख शनि गणना में लाने लगे, जब मुनिवरों! देखो, बहत्तर बहत्तर लाखों की गणना करने लगे, तो उन्होंने मानो लगभग वह देखो, जब वह ध्रुव के सम्मुख पंहुचे, तो मुनिवरों! देखो, वह भी निहारिका में, बहत्तर लाख ही प्रतीत होने लगे तो मेरे प्यारे! जब वह बहत्तर लाख प्रतीत हुए तो सूर्य अरबों खरबों दृष्टिपात होने लगे परन्तु जब सूर्य अरबों खरबों दृष्टिपात हुए तो मुनिवरों! देखो, शनि शनि भी ऐसे ही दृष्टिपात होने लगे, तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह गणना करते रहे, तो अन्त में वह मौन हो करके जब असंख्य और गणना का गणना के रूप ही समाप्त हो गएं। तो वहाँ उस बिन्दु पर जा करके वह ऋषि एकत्रित हो गया और मुनिवरों! देखो, जब वह अपने में सहन करने लगे, और यह कहा कि आगे तो गणना ही समाप्त है तो प्रभु! का ब्रह्माण्ड यह कितना महान है, परन्तु इससे हमें यह सिद्ध हुआ है, कि मानव के शरीर में, इन प्रत्येक लोक लोकान्तरों की प्रतिभा विद्यमान हैं, उनका परमाणु रूप में, उनका अणु रूप में, माता के गर्भस्थल में,

जब निर्माण होता है, तो मानो देखो, जहाँ मौन होने की अवस्थिति आ जाती है, नेति नेति कह करके मानव मौन हो जाता है तो मानो देखो, वह अवस्थिति भी मानो देखो, उसके गर्भ में उसकी रचना होती है।

तो विचार विनिमय क्या है मेरे प्यारे! कैसे ब्रह्माण्ड की रचना, माता के गर्भस्थल में मानो देखो, निर्माणित होती है, जिसके ऊपर अनुसन्धान करने वाले, अनुसन्धान में बेटा! मौन हो जाते हैं। गणना करते करते बेटा! गणना का बिन्दु ही समाप्त हो जाता है। तो विचार विनिमय क्या है मेरे पुत्रों! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ विचार यह चल रहा है, कि महर्षि कागभुषुण्ड जी ने, मानो देखो, भारद्वाज के यहाँ, इतने विशाल यन्त्रों का दृष्टिपात किया, तो आश्चर्य चकित भी हो गएं तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, क्या हम अपने में यह स्वीकार करें, क्या यह जो प्रभु का ब्रह्माण्ड है, अथवा विज्ञानमयी जगत है, यह बड़ा विशाल है, बड़ी विशालता को लेता हुआ, मानो देखो, मानव पिण्ड की रचना होती है, उस रचना माता के गर्भस्थल में जिसको वह वसुन्धरा कहता है, परन्तु वही माता के गर्भ से पिण्ड बन करके बेटा! परमाणूओं उनका पिण्ड बन करके बेटा! नाना लोक लोकान्तरों की तरंगो का बेटा! पिण्ड बन जाता है और पिण्ड बन करके मुनिवरों! देखो, वह बाह्य जगत में, इस माता पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। माता पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करके, बेटा! अनुसन्धानशाला का निर्माण करता है, कही विज्ञानशाला का निर्माण करता है, कहीं याग कर्म करने लगता है। मानो देखो, पाण्डितव यागों की व्याख्या करने लगता है और व्याख्या करता हुआ मुनिवरों! देखो, दूरी चला जाता है। विचारता रहता हैं, मैं उपनिवेशों में प्रवेश करता हुआ मेरे प्यारे! रहता है माता के गर्भस्थल में ही वही क्रीड़ा स्थली है बेटा! वह कैसी पवित्र क्रीड़ा स्थली है उसके गर्भ में मानो देखो, रज आते रहते हैं, रजों से पनपता रहता है, वसुन्धरा के गर्भ से अन्नाद खाद्य

उत्पन्न होता है, परन्तु उसी को पान करता हुआ, ऊर्ध्वा में अपने को युवास्थित हो जाता है, युवास्थित हो करके बेटा! अभिमान की मात्रा जागरूक हो जाती है, परन्तु प्रभु को नहीं जानता, क्या प्रभु ने तेरी प्रतिभा, किस रूप से वर्णित की है परन्तु उसे बुद्धि के ऊपर वह अपने में अभिमानित हो जाता है विचार नहीं पाता तू माता के गर्भस्थल में क्रीड़ा कर रहा है उस क्रीड़ा स्थली को तू जानने का प्रयास कर। मेरे प्यारे! जब मानव इस क्रीड़ा स्थली को जानने लगता है, युवा हो जाता है, युवा हो करके मेरे पुत्रों! इसी में रत्त हो जाता है वृद्धपन आ जाता है, इसी में रत्त हो जाता है, वही ब्रह्माण्ड की रचना जो माता के गर्भ में हुई पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर गया, परन्तु इसी में युवा बन गया, युवा बन करके परन्तु इसी में वृद्धपन वही ब्रह्माण्ड जो रचना करने वाला ब्रह्मण्डतव कहलाता है। वही वृद्धपन वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया, परन्तु यदि उसमें ज्ञान हो गया है, तो वृद्धपन नहीं आता, वह सदैव युवा रहता है। परन्तु सदैव युवा कौन रहता है? बेटा! ज्ञानी सदैव रहता है अनुसन्धान करने वाला सदैव युवा रहता है मानो देखो, नवीन कर्म करने वाला सदैव नवीन रहता है, जो मानो अनुसन्धान करता रहता है, अपने पर अनुसन्धान, अपने में अनुसन्धान करता हुआ अपने को स्वीकार करता है कि मैं माता के गर्भस्थल में विद्यमान हूँ। माता का गर्भाशय मेरी क्रीड़ा स्थली है, मैं क्रीड़ा करने के लिए आया हूँ, परन्तु देखो, इसमें मैं अनुसन्धान करूंगा तो तब भी क्रीड़ा है। मैं इसमें मानो अभिमानित हो करके वह क्रीड़ा नहीं कहलाती, क्रीड़ा का केवल एक ही स्वरूप बनता है। क्या वह क्रिया करता रहता है, क्रीड़ा का द्वितीय रूप है क्रिया और वह क्रिया मानो देखो, अग्रणीय कहलाती है। जैसे अग्नि हमें प्रकाश के देने वाली है, अग्नि प्रकाश ही प्रकाश दे रही है, और जब वह अग्नि प्रकाश देती है, तो मानो उस अग्नि को अग्रणीय कहते हैं इसीलिए उसे गति कहते हैं तो मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार यह मानव

का शरीर भी मानो देखो, क्रिया के रूप में परणित होता है, यह क्रियाशील होता हुआ, जब अपने में कर्मठ बनता है, विचारशील बनता है, तो मेरे प्यारे! देखो, अपने में महान बन करके, इस संसार मे एक महान महत्तत्त्व को प्राप्त करता हुआ सागर से पार होता है।

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या यह जो माता वसुन्धरा है जिस वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! प्रवेश होने के पश्चात बेटा! मानव देखो, इसको अपने में अपने को इसमें दृष्टिपात करता है वह महानता की ज्योति को प्राप्त कर लेता है आओ, मेरे प्यारे! मैं विचार देता हुआ कहीं दूरी न चला जाऊं विचार यह प्रारम्भ हो रहा था विचार यह चल रहा था कि हम सदैव अपनी महान देखो, उस क्रिया को जानने का प्रयास करें, अपनी क्रीड़ा स्थली को विचित्र बनाने का प्रयास करें, जैसे महर्षि कागभुषुण्ड जी ने, मानो देखो, अपनेपन को जानने का प्रयास किया, यदि मानव देखो, ज्ञान से, अध्ययन से मानो देखो, वेद के मन्त्रों से उच्चारण करने से नहीं जानते, तो मानो देखो, उसका जो क्रिया रूप है, उसको जानने का प्रयास करो क्रियात्मकता में भी, तुम मौन हो जाते हो, तो तुम मानो देखो, समाधिष्ट हो करके, हृदय स्थली में अपनी प्रवृत्तियों को ले जाओं, प्रवृत्तियों को ले जा करके, अपने अन्तःकरण में मानो देखो, जो संस्कारों का समूह विद्यमान है, उन संस्कारों के समूहों को, उन संस्कारों को, तुम जागरूक करने लगो। जब वह संस्कार तुम्हारे जागरूक हो जायेंगे, संस्कार जब उद्बुध हो जाएंगे तो नाना प्रकार के जन्म जन्मान्तरों का संस्कार संस्कारित रूप बन करके तुम्हारे समीप विद्यमान हो जाएगा।

आओ, मेरे प्यारे! मैं कहा चला गया हूँ विचार यह देता हुआ कि मानव को अपने अन्तःकरण को उद्बुद्ध करना चाहिए अपने अन्तःकरण की बलि को ऊँचा अग्रणीय बना करके मुनिवरों! देखो, इस ब्रह्माण्डमयी जगत को जानना चाहिए, आओ, मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या कि यह जो माता

वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान हो करके, मानो एक अनुसन्धानशाला का निर्माण कर रहा है, अनुसन्धानशाला का निर्माण करता हुआ, मानो अपने जीवन को उज्ज्वल बनाने का प्रयास करता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी और नाना ऋषि मुनि विद्यमान हो करके महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त रहते थे विज्ञानशाला में रत्त रहना ही मानवीयतव कहलाता है, आओ, मेरे प्यारे! विचार यह है कि हम अपने को मेरे प्यारे! अनुसन्धानशाला के रूप में इस मानव शरीर को हम सदैव दृष्टिपात करते रहें, जिससे बेटा! हमारा मानवीय जीवन पवित्र बन जाएं, हम मानवीय जीवन को एक मानो देखो, आभा में लाना चाहते हैं। उसका निर्माण उसका अनुष्ठान मेरे प्यारे! समाधिष्ट होना और प्रभु के ब्रह्माण्ड को प्रभु के विज्ञान को बेटा! अपनी समाधिष्ट में दृष्टिपात करते हुए और मुनिवरों! देखो, अपने को ब्रह्म में ब्रह्म को अपने में मानो देखो, हम माता वसुन्धरा को जानने का प्रयास करें। माता वसुन्धरा क्या है? यह बेटा! मैंने तुम्हे वर्णन कराया है, जिसमें हम बस रहें हैं, माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! देखो, ऐसे ही परमपिता परमात्मा कैसा महान है, मानो देखो, वह सब को धारण कर रहा है वही अपना अपने में ही सबको वशीभूत कर रहा है माता भी वसुन्धरा के रूप में वह प्रभु विद्यमान रहता है और विद्यमान हो करके वह उन पृथ्वियों को भी धारण कर रहा है मानो वह सूर्य इत्यादि सबको धारण कर रहा है। तो आज बेटा! मैं विचार देता हुआ दूरी न चला जाऊं, विचार विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और उस माता को वसुन्धरा के रूप में बेटा! अपने को दृष्टिपात करते हुए मुनिवरों! देखो, इस संसार सागर से पार होना हमारा कर्तव्य है। हम विज्ञान में रत्त हो जाएं, परन्तु देखो, माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश हो जाएं, इसके सर्वत्र मूल रूप को हमें जान लेना चाहिए। यह है बेटा! आज का

वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभ्रिपायः क्या कि माता हे वसुन्धरा! हम सब तेरे गर्भस्थल में विद्यमान हैं, तू हमारा कल्याण करने वाली है, तू चेतना बन करके सबको चेतनित बना रही है, परन्तु वह चेतना ही इस ब्रह्माण्ड को चेतनित बनाती हुई मानो देखो, ब्रह्मण्डवत कहलाती है। हे माता! तू मानो सबको धारण कर रही है, तुझे वेद धरणी कहता है, वेद तुझे वसुन्धरा कहता है, कहीं गोमेध कह रहा है, कहीं अश्वमेध कह रहा है, कहीं मानो देखो, तू ही को अपना ब्रह्मा देवाः हे माता! तुझे कहीं मानो देखो, वैष्णो के रूपों में दृष्टिपात करते हैं। तू दुर्गुणों को नष्ट करने वाली है, कहीं दुर्गुणों को नष्ट करने वाली तू दुर्गा के रूप में रमण करती हमें धारण कर रही हैं। मानो देखो, तू ही वसुन्धरा मानो अपने में बसा रही है। हे माता! तू हमारा कल्याण कर तेरी ही आभा मानो तेरी ही चेतना से यह जगत चेतनित हो रहा है, तू निर्माण कर रही है, निर्माणवेत्ता बन करके परन्तु तू कहीं तू पुल्लिंग कहलाती है, कहीं देवतं मानो देखो, स्त्रीलिंग कहलाती है, तू एक महान बन करके संसार को धारण कर रही है। आज का बेटा! वेद का मन्त्र हमें यही कह रहा है। हे माता! वसुन्धरा तू वसुन्धरं ब्रह्मे कृतां देवाः तू मानो वसुन्धरा बन करके ही ब्रह्माण्ड की रचना कर रही है, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! मैं कुछ साहित्यिक चर्चाओं को मैं तुम्हारे समीप प्रस्तुत करूंगा। आज का वाक केवल कुछ वेद मन्त्रों का आख्यिकाओं का वर्णन किया है, समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः यम शना ऋषि व्यापा मां धेनु रुद्रा ग्राहा रथौ सरवात वाचन्नमा ओ३म् देवाः गायन्त्वा माणं भद्रा यजूंषि रथप्राः गायाहम् ओ३म् हृदच्वां रथाः मां धेनु माता गो शन्ना रथप्रा वायु गताहम् ओ३म् ब्रह्मणाः देवं मया रथो ईशं

भौ शन्न रथाः। स्थान सुहाहेडी बिजनौर।

6 १७ ०१ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, महिमावादी है, जिस भी स्थली में मानव, दृष्टिपात करता है, वहीं उसकी महिमा दृष्टिपात आती है, परन्तु चाहे वह मानवीय, आन्तरिक जगत में प्रवेश कर जाएं, चाहे वह बाह्य जगत में प्रवेश हो जाओ, परन्तु जिस भी स्थली पर, उसका दृष्टिपात होता है, वहीं उस परमपिता परमात्मा की महिमा ही दृष्टिपात आती है। चाहे वह माता के गर्भस्थल में हो, चाहे वह सूर्य की नाना प्रकार की किरणों में उड़ान उड़ने वाला हो चाहे वह चन्द्रमा की ऊर्ध्वा क्रान्ति में मानो कान्तिदायक बनना चाहता हो परन्तु उस महान देव की महिमा ही दृष्टिपात आती है।

चित्त

हमारे ऋषि मुनियों ने, बहुत गम्भीर अध्ययन किया है। मानो जो अपने चित्त को जानने का उन्होंने प्रयास किया, मानव की अन्तःकरण की स्थली में एक चित्त स्थान होता है। परन्तु बाह्य चित्त और आन्तरिक चित्त से उसका समन्वय होता है मानव के शरीर में नाना नस नाड़ियाँ हैं, परन्तु कोई नस नाड़ी ऐसी प्रतीत नहीं होती है, जहाँ मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान हो परन्तु जब ऋषि मुनि अपने को बाह्य जगत से आन्तरिक जगत में ले जाते हैं। तो बेटा! वहाँ सुन्दर सुन्दर चित्र दृष्टिपात होने लगते हैं। मेरे प्यारे! उसमें बाल्यकाल के चित्र, वृद्धकाल में बेटा! खिलवाड़ होते हुए, दृष्टिपात आते हैं। परन्तु एक जन्म नहीं, द्वितीय जन्म नहीं नाना जन्मों के

संस्कार उस मानवीय चित्त में विद्यमान हैं।

मुझे मुनिवरों! वह काल स्मरण आता रहा है, जिस काल में ऋषि मुनियों ने मौन हो करके भयंकर वनों में एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके बेटा! प्राणों के समूह को जाना। परन्तु प्राणों के समूह को जान करके मन की प्रतिभा को जाना, मेरे पुत्रों! मन का ही जो स्वरूप है, जिसे चित्त के रूपों में वर्णित किया जाता है, उसमें जो नाना जन्म जन्मान्तरों के संस्कार, बेटा! क्रीड़ा करते रहते हैं, उन संस्कारों को चित्त रूप में बेटा! ऋषि मुनियों ने दृष्टिपात किया, परन्तु जब वह उस स्थली से पृथक हुए, तो उन्होंने बेटा! अन्तःकरण में आगे चित्त को जानने के लिए, उन्होंने प्रयास किया। क्या जिससे हम प्रभु को जान सके। क्योंकि जब तक मानव के चित्त में, नाना संस्कार विद्यमान होते हैं। चित्त का एक मण्डल बना रहता है। तब तक मेरे पुत्रों! देखो, वह मानव मोक्ष और परमात्मा को प्राप्त नहीं कर पाता। तो इसीलिए आचार्यों ने बेटा! पुरूषार्थ किया, और अनुसन्धान किया कि हम बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों को जानने का हम प्रयास करें दोनों के ऊपर बेटा! उनका अधिपथ्य रहा।

एक समय मुझे स्मरण है महर्षि सोमकेतु अङ्गिरस मुनि, अङ्गिरस गोत्र में जन्म लेने वाले, सोमकेतु बेटा! एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके उन्होंने एक समय पिचासी वर्ष का मौन धारण किया, और मौन धारण करके, नाना प्रकार के, वनस्पतियों के और वृक्षों के पंचांगों को उन्होंने पान किया। अन्नाद को त्यागने का प्रयास किया, परन्तु वह वृक्षों की स्वस्तु रूद्रों आभा को प्राप्त करते रहे। मेरे पुत्रों! जब उनको प्राप्त करते रहें हैं, तो जन्म जन्मान्तरों के, जो संस्कार मानव के अन्तःकरण में विद्यमान थे, चित्त मण्डल में विद्यमान थे, मेरे पुत्रों! देखो, वह संस्कार उनके समीप आने प्रारम्भ हो गएं। जो योगाभ्यास के द्वारा, प्राण को निरोध करने के पश्चात, आन्तरिक हृदय स्थली में बेटा! विद्यमान हो करके, उन्होंने

प्रयास किया कि यह संस्कार मेरे द्वार पर नहीं आने चाहिए। तो मेरे पुत्रों! हमारे ऋषि मुनियों ने बहुत प्रयास किया है, साधना के सम्बन्ध में, उन्होंने साधना के स्वरूपों में एक ही वाक कहा है कि हमारे आचार्यों ने कहीं कहीं इस प्राण का आत्मा की छाया के रूप में स्वीकार किया है। परन्तु किन्हीं आचार्यों ने, यह मनस्तव और प्राणतव दोनों को मानो देखो, आत्मा की छाया, स्वरूप और प्रकृति के रूपों में वर्णित किया है। परन्तु जब इन दोनों के ऊपर अनुसन्धान किया जाता है, तो बेटा! चित्त के कारण भी दोनों ही प्रतीत होते हैं। **परन्तु देखो, मन बिना, मन प्राण के बिना क्रिया नही कर सकता, क्रिया तो प्राण की है गति तो प्राण ही दे रहा है। परन्तु मन तो इस प्राण की क्रिया को ले करके, यह तो संसार की वस्तुओं को ला करके इनमें इन्द्रियों में परणित कर देता है। इन्द्रियाँ उनको हृदय में स्थिर कर देती हैं, हृदयस्थली में बेटा! वह संस्कारित हो करके मानो वह चित्रों के रूप में स्थिर हो जाते** हैं। जैसे बेटा! तुम्हे प्रतीत होगा बाह्य जगत में मानो देखो, जैसे एक याज्ञिक याग कर रहा है और याज्ञिक जब याग करता है, तो वह स्वाहाः कह रहा है परन्तु वह स्वाहाः, मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञशाला का रथ बन करके, स्वाहा के रूप में परणित हो करके वह द्यौ लोक को जाता है। वह रथ बन करके जाता है, परन्तु वह जो रथ में विद्यमान, वह जो यज्ञमान है, बेटा! वह रथब्रहे सत्वा जितने भी शुभकामना से, पवित्र हृदयों से, शुद्ध पवित्र आभाओं से, बेटा! मन्त्रार्थ से, याग किया जाता है। उतना ही वह द्यौ लोक को जाता है। परन्तु वह आभा में रमण करने लगता है तो वह कहाँ स्थिर होता है? बेटा! अन्तरिक्ष में मानो देखो, अग्नि की जिह्वा ले जाती हैं, वह वायु में अर्पित कर देती हैं, वायु बेटा! उन्हें अन्तरिक्ष में स्थिर कर देता है, गति दे करके स्थिर कर रहा है। अन्तरिक्ष में, मेरे पुत्रों! देखो, वह शब्द चित्रों के साथ में, विद्यमान हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वह जो चित्र विद्यमान हुए हैं, उनको ऐसे हमारे

यहाँ, ऐसे ऋषि मुनि हुए हैं, अनुसन्धानवेत्ता हुए हैं, जिन्होंने बेटा! उन चित्रों को भी दृष्टिपात किया। मैंने तुम्हे कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, क्या उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं, जिन ऋषि मुनियों ने बेटा! अपने अन्तःकरण को जानने का प्रयास किया है। अपने जहाँ चित्त के संस्कार विद्यमान रहते हैं, वह अस्तुत होते रहे हैं।

परन्तु उद्दालक गोत्र में ऐसे ऋषि हुए हैं जिन ऋषियों की महानता बेटा! आभा में परणित रही हैं। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, बेटा! देखो, वह वाक मुझे पुनः से स्मरण आ रहा है, हमारे यहाँ एक ऋषि वैशम्पायन हुए हैं वैशम्पायन ऋषि एक समय महाराज अश्वपति के यहाँ पंहुचे, महाराज अश्वपति के यहाँ बेटा! वृष्टि नहीं हो रही थी। वह वृष्टि याग के लिए, महाराज अश्वपति के यहाँ पंहुचे। निमत्रण के अनुसार, परन्तु देखो, उन्होंने याग का क्रियाकलाप किया, परन्तु देखो, कर्म काण्ड की पद्धति के आधार पर, उन्होंने बेटा! देखो, अग्नि काष्टाम् ब्रव्हे वसुतो देवाः उन्होंने एक याग किया, और वह वृष्टि याग करने के पश्चात, मेरे प्यारे! देखो, वह वृष्टि भी हो गई, परन्तु महर्षि को वेदमन्त्र कुछ स्मरण आए और वह वेदमन्त्र यही कह रहे थे रथं चित्रं ब्रव्हा सम्भवा अन्तरिक्षाम् दिव्यम् देवाः रथं सुतम्ब्रह्मे द्यौ लोकाः यह वेद का मन्त्र उसे बारम्बार स्मरण आता रहता है, परन्तु देखो, जब उसी वेदमन्त्र को ले करके, वह परन्तु देखो, जब याग सम्पन्न हो गया, पूर्णता को प्राप्त हो गया, वृष्टि भी हो गई, परन्तु देखो, अपने आश्रम को उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए, जब वह अपने आश्रम में आयें तो मुनिवरों! देखो, आश्रम में उनके स्वप्न में, वेद के मन्त्र स्मरण आने लगे हमारे यहाँ एक **सिद्धान्त है मौलिक रूपों की जो मानव जिस प्रतिभा में रहता है जिन विचारों में रहता है यदि उसको स्वप्न भी आते हैं तो उन्ही विचारों के आते हैं।** परन्तु देखो, वेद का ऋषि वेद के मन्त्रों के ऊपर अनुसन्धान करता रहता है, और जब वह

अनुसन्धान करता रहेगा तो बेटा! वही वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आते रहेंगे परन्तु देखो, उन्हें एक स्वप्न में मन्त्र आया और वह उच्चारण कर रहे हैं उस मन्त्र को स्वप्न में उच्चारण कर रहे हैं रथं दिव्यां यज्ञं रथं प्रव्हा वसो सुस्ता यज्ञमानं ब्रह्मे रथाः द्यौ लोकाः वेद की आख्यिका और वेद के कुछ मन्त्र इस प्रकार के उन्हें जब स्मरण आएं तो वेदमन्त्र वह जागरूक हुए तो उसके पश्चात भी स्मरण रहें, परन्तु देखो, जब स्मरण रहे, तो उस वेदमन्त्र के ऊपर, वह अनुसन्धान करने लगे, परन्तु जब अनुसन्धान करने लगे, तो मुनिवरों! देखो, अपने में निमटारा नहीं कर पा रहे थे। वेदमन्त्र यही कह रहा था, कि यज्ञमान का रथ बन करके मानो देखो, यज्ञशाला एक रथा ब्रहे वह रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। तो वह कैसे जाता है? इसके ऊपर वह विचार विनिमय करने लगे परन्तु अपने में कोई निमटारा नहीं कर सके। जब वह निमटारा नहीं कर सके। तो बेटा! प्रातःकाल हो गया सूर्य उदय हो गया, परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का एक आश्रम उनके निकटतम था, महर्षि विभाण्डक मुनि ने विचारा ऋषिवर आज जागरूक नहीं हैं, इसके मूल में क्या है?

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज भ्रमण करते हुए, वह उनके आश्रम में आए ऋषि को दृष्टिपात किया, वह शान्त मुद्रा में हैं, और चिन्तन कर रहें हैं। उन्होंने नमस्कार करके कहा कहो, भगवन! वैशम्पायन जी आज आप अपने आसन को नहीं त्याग रहें हैं, इसका का कारण क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! देखो, यह वेदमन्त्र क्या कह रहा है? वेदमन्त्र यह कह रहा है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। परन्तु मैं उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने वह भी उसी चिन्तन में लग गएं विचारने लगे कि दर्शनों से घटित हो रहा है, क्या यह जो शब्द है, यह जब स्वाहाः कहते हैं, तो मानो यह अग्नि की जिह्वाओं पर विद्यमान हो जाता है, और अग्नि मानो उसको अग्नि जिह्वा में से वितरण

करके वायु को प्रदान कर देती है, प्राण ब्रीहि रूपों में मानो वही अन्तरिक्ष में लय हो जाता है, वह शब्द और तरंगे बन करके, मानो देखो, मानो कहीं विज्ञान में, उन तरंगों को जान लेता है, यौगिक वादी अपने समाधिष्ट के द्वारा जानने लगता है। परन्तु देखो, वह जो आभा में रमण करने वाला, स्वस्त ब्रव्हे व्रताः मेरे प्यारे! देखो, अपने में वह निमटारा नहीं कर सके, मेरे पुत्रों! यह श्रवण करके, यह कि दो दिवस हो गएं हैं चिन्तन करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, आस पास के जो ऋषि मुनि थे, जहाँ महर्षि विभाण्डक मुनि वहाँ आ गए। देखो, महर्षि एक वर्णित केतु ऋषि थे, ब्रह्मचारी कवन्धि भी बेटा! वन में तपस्या कर रहे थे, वह भी आ पंहुचे, परन्तु देखो, वहाँ कुछ ऋषियों का समूह हो गया। मेरे प्यारे! दर्शनों से, वह वाक धटित हो रहा है, परन्तु उस वाक को क्रिया में कैसे लाया जाएं, तो मुनिवरों! देखो, उस समय, सौमभूक ऋषि महाराज, मेरे पुत्रों! सौमभूक ऋषि महाराज उस समय महान पाण्डितव की दृष्टि से, वह सर्वत्र याज्ञिकों के यहाँ, उन्होंने भ्रमण किया। उन्होंने कहा कि महाराज! मेरे विचार में यह आता है वैशम्पायन जी, क्या हम भ्रमण करते हुए चलें, और देखो, यह महर्षि सोमपानक कृतिक ऋषि महाराज देखो, जिनको वांग गति कृतक कहते हैं। मानो वह उद्दालक गोत्रीय वह सामकेतु महर्षि महाराज उनके द्वार पर चलते हैं, वह दोनों पति पत्नी अनुसन्धान कर रहें हैं, वह दोनों पति पत्नी अपने महापितरों का दर्शन कर रहे हैं, चलो उनके द्वार पर हम गमन करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, वैशम्पायन जी प्रसन्न हो गएं उन्होंने कहा चलो भगवन! तो मेरे प्यारे! देखो, कुछ ऋषि मुनि मानो उनमें ब्रह्मवेत्ता, उनमे याज्ञिक ऋषि, मेरे पुत्रों! देखो, कई प्रकार के याज्ञिक ऋषि, हमारे यहाँ पुरातन काल में माने जाते, परन्तु देखो, कुछ श्रोत्रीय ब्रह्मचारी होते, कुछ मानो देखो, इन्द्रियों जयकेतु ऋषि होते थे कुछ मानो हमारे यहाँ अनुसन्धानवेत्ता, अनुसन्धान करने वाले याज्ञिक ऋषि कहलाते

थे, मानो कुछ ब्रह्मवेत्ता, कुछ ब्रह्म जिज्ञासु यह नाना प्रकार की धाराओं वाले ऋषियों ने वहाँ से गमन किया, और भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, वह उद्दालक गोत्र आश्रम में पंहुचे। जहां क्योंकि हमारे यहाँ, उद्दालक गोत्र ऋषियों का आश्रम बड़ा विचित्र रहा है। उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि वैज्ञानिक हुए हैं, नाना ऋषि ऐसे हुए हैं, जो ब्रह्मवेत्ता रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ कुछ ऐसा माना हैं, क्या उद्दालक गोत्र यह बड़ा विचित्र गोत्र रहा है। इसकी लगभग मानो देखो, सात हजार पांच सौ प्रणाली बेटा! देखो, ऋषितव में व्यतीत हुई हैं, उनकी परन्तु देखो, ऐसा मुझे स्मरण है, क्या उद्दालक गोत्रीय जो सात हजार इसकी प्रणालियां, इसकी समाप्त हुई हैं, उस वंशलज का जो निकास हुआ, उद्दालक गोत्र का, वह हरितकेतु नामक, एक गोत्र था उससे उसका निकास हुआ था। हरितकेतु जो गोत्र था, उसका जो निकास हुआ था वह मानो देखो, अङ्गिरस ऋषि से हुआ था, और अङ्गिरस ऋषि का जो गोत्र है, वह मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मा के पुत्र थे जिसको हम ऋदान्तकेतु कहते थे, ऋदान्तकेतु देखो, ब्रह्मा के पुत्र कहते थे। ये गोत्र का निकास यहाँ से प्रारम्भ हुआ। मेरे प्यारे! देखो, निकास हुआ, और यह उद्दालक गोत्र बड़ा विचित्र गोत्र रहा है, इनमें बहुत ब्रह्मवेत्ता, सात्विक और महापुरूष रहे हैं परन्तु देखो, शिकामकेतु जो ऋषि थे वह उद्दालक गोत्रीय थे उनकी पत्नी का नाम मानो ऋचा कहलाता था वह ऋचेतकेतु मेरे प्यारे! देखो, सदैव उनके अङ्ग संग रह करके अनुसन्धान करती रहती थी, तो मुनिवरों! देखो, जब वह नाना प्रकार के याग, प्रायः दोनों करते रहते थे, तो मुनिवरों! देखो, उनके हृदय में, एक यह आशङ्का जागरूक हुई क्या प्रभु! हमने कहीं ऐसा वेद मन्त्रों मे श्रवण किया है, कि यागाम् ब्रह्मे विज्ञानाम् तम्प्रह्वि अस्ता हमनें कहीं ऐसा श्रवण किया है, ऐसा कहीं जाना है क्या इन वेद मन्त्रों में मानो जहाँ ये भौतिक यन्त्र का भी निर्माण हो सकता है। जैसे हम याग करते हैं, यागों में तरंगे उत्पन्न होती

हैं नाना प्रकार के परमाणुवाद को एकत्रित करने से मानो देखो, हमें कुछ यन्त्रों का अनुभव होना चाहिए। तो बेटा! देखो, जब उन्होंने यह वाक प्रगट किया तो ऋषि के स्मरण मानो कुछ वेदमन्त्र इस प्रकार के आए तो मुनिवरों! वह कजली वनों में चले गएं और कजली वनों में जा करके भयंकर पर्वतों से वह नाना प्रकार की औषधियों से एकत्रित करते रहते थे। कामधेनु उनके द्वारा थी, कामधेनु के दुग्ध और घृत के द्वारा मुनिवरों! देखो, वह याग करते थे, उसमें यह जो परमाणुवाद उत्पन्न होता था उस परमाणुवाद को भी मानो वह जानते रहते थे, यदि वैसे जानकारी नहीं होती, तो समाधिष्ट हो जाते थे एक समय बेटा! मुझे ऐसा स्मरण है क्या वह जब शिकामकेतु ऋषि महाराज बेटा! देखो, वेदमन्त्रों के आधार पर जब वह याग कर रहे थे, याग के पश्चात जब वह उद्बुद्ध स्वाहा अग्ने कहा पठन पाठन किया परन्तु जब उन्होंने वेदमन्त्र की ध्वनि के द्वारा मानो देखो, अग्नि की तरंगों पर वह स्थिर कर दिया, तो उस अग्नि को वह बाह्य जगत वाली अग्नि को, जान करके, वह आन्तरिक जगत में बेटा! अपने हृदयस्थली में ले गएं जब वह हृदय स्थली में ले गएं तो बेटा! वहाँ अग्नि प्रचण्ड हो रही है, अग्नि का अग्न्याधान कर रहे हैं, आन्तरिक जगत में बेटा! याग जैसे स्वरूप को ले गएं उसमें परमाणुवाद की उत्पति हो रही है, परन्तु वह एक एक पंक्ति वाले ध्वनियों और शब्दों को जान करके, मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, क्या उन्होंने नाना कुछ परमाणुओं को एकत्रित किया, और परमाणुओं को बाह्य जगत में लाए तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कुछ यन्त्रों का निर्माण किया। कुछ चित्रावलियों का निर्माण किया। कुछ धातु पिपाद को ले करके, मेरे प्यारे! जब वह याग कर रहे थे, याज्ञिक पुरूषों का, चित्र मेरे प्यारे! चित्रावलियों में दृष्टिपात आने लगे, जब चित्रावलियों में दृष्टिपात आने लगा, तो ऐसा बेटा! ऋषि ने अपने में जाना, उनकी पत्नी भी अनुसन्धान करती रहती थी, ब्रह्मचर्यवत मानो ब्रह्मवर्चोसि बन करके, श्रोत्रीय और

देखो, चक्षुमयी और ध्राणमयी और वाणीमयी मानो देखो, श्रोत्रीय बन करके, उन्होंने बेटा! एक चित्त हो करके, अनुसन्धान किया।

मुनिवरों! ऐसा स्मरण है क्या मुनिवरों! देखो, जैसे वह याग करते उनके चित्र आने लगे, यन्त्रों में चित्र आने लगे, मेरे पुत्रों! देखो, कुछ समय के पश्चात उनके पूर्वजों के चित्र आने लगे, कुछ समय के पश्चात और पूर्वजों के चित्र आने लगे। तो मुनिवरों! देखो, यहाँ तो यह अनुसन्धान करते थे। परन्तु देखो, वैश्म्पायन ऋषि महाराज, अपने उस ऋषि मुनियों के मण्डल को ले करके, मानो देखो, उन्होंने अपने आश्रम से गमन किया, और भ्रमण करते हुए, वह बेटा! देखो, कजली वनों में क्या, वह श्रोतकेतु मानो देखो, एक वन कहलाता था, वह श्रोतकेतु वन था, जिसमें पति पत्नी दोनों अनुसन्धान करते थे। दोनों विचारते रहते थे, तो मेरे प्यारे! जब वह उस आश्रम में मानो देखो, श्रुति अस्ता उस भयंकर वन में पंहुचे, तो बेटा! देखो, वहाँ ऋषि और पत्नी ऋषि और उनकी पत्नी वह दोनो तपस्या कर रहे हैं, अनुसन्धान कर रहे हैं, याग कर रहें हैं, अग्नि प्रदीप्त हो रही है। मानो देखो, द्वितीय आसन पर नाना चित्रावलीं विद्यमान है, जहाँ हम याग करने वालों का चित्र आता रहता था। जैसे शब्द उच्चारण किया शब्द में जो जो भाव थे, परन्तु वह भाव, उस यन्त्र में आते रहते थे। तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या मानो देखो, ऋषि मुनियों ने जा करके दोनों के चरणों को स्पर्श किया वह चरणों वन्दना करते हुए, ऋषि मुनि जागरूक हो करके, बोले कि आईए भगवन! मेरे प्यारे! भिन्न भिन्न प्रकार के आसन जग लग गएं तो ऋषि ने कहा कहो भगवन! आज मेरे आसन को तुमने पवित्र किया है? यह तो मेरा अहोभाग्य है, क्या ऋषि मुनियों का गमन, मेरे आश्रम में हुआ है। नाना प्रकार का बेटा! उन्होंने अतिथि किया, नाना प्रकार के कन्दमूल जो वन में थे, वह उनके यहाँ एकत्रित थे, उन्हें पान कराया बेटा! वह तृप्त हो गएं तृप्त होने के पश्चात,

उन्होंने वैशम्पायन ऋषि और उनका नामोकरण बहुत ही उच्चारण श्रवण किया हुआ था। विभाण्डक मुनि महाराज भी, ब्रह्मवेत्ता थे, ब्रह्मचारी कवन्धी श्रोत्रीय ब्रह्मचारी थे। मेरे पुत्रों! देखो, जहाँ ब्रह्मा अस्ते और भी नाना ऋषि मुनि थे बेटा! जो ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मजिज्ञासु, ब्रह्मश्रोत्रीय, नाना प्रकार के बेटा! ऋषि अब्रोह उनके आश्रम में बेटा! जब पधारे, तो ऋषि ने कन्दमूल इत्यादियों से स्वागत करने के पश्चात, दोनो पति पत्नी नतमस्तिष्क हो गएं और नतमस्तिष्क हो करके यह कहा कहो ऋषिवर! हे भगवन! आज हमारा कैसा, अहोभाग्य जागरूक हुआ है? इसके मूल में कोई रहस्य हो, तो उच्चारण कीजिए।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने कहा कि महाराज! हमारे यह जो ऋषि हैं, मानो देखो, ऋषम्भवा सम्भवेत्ता वैशम्पायन जी मानो देखो, जो दद्दड़ीय आसवानम् गोत्रीय कहलाते हैं, परन्तु देखो, ये सदैव अनुसन्धान करते रहते, विचारते रहते है यह कही महाराज अश्वपति के याग मे से, वृष्टि याग में से उनका आगमन हुआ, परन्तु जब याग में आ पंहुचे, याग प्रीणि ब्रह्मे याग कराने के पश्चात, वह अपने आश्रम में आए तो वेद मन्त्रों का समूह, वेद मन्त्रों की ध्वनि मानो देखो, यह इतने पारायण हैं, वेदमन्त्र भी स्वप्नवत में दृष्टिपात आते हैं जब यह मन मानो देखो, स्वप्न की दशा में जाता है, तो वहाँ भी वेद मन्त्रों का मानो देखो, स्वप्न में प्राप्त होता है। वहाँ भी वेदमन्त्र हैं, जैसे यह मन मानो देखो, जिस आभा में रहता है, उसी आभा से मानो देखो, चित्र इसके समीप आते रहते हैं, तो यह स्वप्नवत में वेदमन्त्र, वही वेदमन्त्र जागरूक ब्रहे, परन्तु उनका अनुसरण किया अनुसरण में जब उनका अनुभव प्रव्हे स्वस्तु ब्रह्मा, अब यह इसमें लगे हुए हैं, कि वेदमन्त्र चित्राणि ब्रह्मा, ब्रहे असुतो वे चित्र मानो यज्ञमान का चित्र, अन्तरिक्ष में जाता है, द्यौ लोक में जाता है, मैं उन चित्रों को दिग्दर्शन करना चाहता हूँ। तो हे ऋषिवर! आप इन्हें अपने उन चित्रों का दिग्दर्शन कराईए। मेरे पुत्रों! ऐसा स्मरण

है मानो देखो, ऋषि पत्नी और ऋषि दोनो प्रसन्न हो गएं उन्होंने कहा प्रभु! हमारी चित्रावलियां हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन चित्रावलियों में जब वह याग करते थे, परन्तु उनके यागों के चित्र आते थे, उन्होंने कहा हे ऋषिवर! हमने बहुत अनुसन्धान किया, और अनुसन्धान में यही वाक आया, कि हमने अपने पचासवें जो महापिता हैं, उनके हम दर्शन करते रहेंगे, मानो देखो, जैसे हमारे पिता, महापिता उनके शब्द, उन शब्दों के साथ में जो चित्र गति करते रहें है, वह मानो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो रहे हैं, और अन्तरिक्ष में मानो देखो, वह शब्द विद्यमान हैं, वह पिता महापिता, पड़पिता, पचासवें महापिता के भी दिग्दर्शन हमारी इस विज्ञानशाला में आते रहते हैं, मानो उनका हम दर्शन करते रहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह यन्त्रों का उन्हे दिग्दर्शन कराया उन चित्रावलियों को दृष्टिपात कराया, क्या उनके पिता, महापिता उन्होंने एक यन्त्र उन्हें दृष्टिपात कराया, कि आओ, भगवन! उनके समीप जब पंहुचे, तो यन्त्रों में बेटा! देखो, उनके पचासवें महापिता मानो देखो, जैसे यह प्रातःकालीन याग करते थे, जो क्रियाकलाप करते थे, कि जीवन में, परन्तु देखो, वह ज्यों के त्यों अन्तरिक्ष में बेटा! विद्यमान थे। और मुनिवरों! देखो, उनके चित्र उनके यन्त्र में दृष्टिपात आए उन्होंने कहा हे ऋषिवर! आओ, तुम दृष्टिपात करो। तो वैशम्पायन ऋषि ने, बेटा! वह चित्रावलियों में वह दिग्दर्शन करने लगे, तो मुनिवरों! देखो, वहाँ शान्ति युक्त हो करके बोले, धन्य है प्रभु! उन्होंने कहा हे ऋषिवर! हम कहीं वेद मन्त्रों में यह स्मरण करते रहे हैं, यह वेद मन्त्रों में अध्ययन करते रहें हैं, कि मानव का यह जो शब्द है, यह नित्य रहता है यह कदापि नष्ट नहीं होता। और शब्दों के साथ में, जो चित्र परमाणु है, वह भी गति करता रहता है, परन्तु यह हम केवल वेदों में अध्ययन करते रहे हैं, आज हमारा बड़ा अहोभाग्य है, हम बड़े भाग्यशाली हैं, प्रभु! मानो देखो, जो हम उन्हें चित्रों

में दृष्टिपात कर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि देखो, उद्दालक गोत्र के शिकामकेतु ऋषि महाराज, बेटा! देखो, अप्रम ब्रह्मे उन्हें चित्रावलियों में वह दृष्टिपात करा रहे हैं। उन्होंने उन्हे कहा हे प्रभु! एक हमारे मानो देखो, सातवें महापिता थे, वह केवल यह जानते थे मौन हो करके, कि मैं चित्त के संस्कारों को नहीं रहने दूंगा। मैं मोक्ष को प्राप्त करना चाहता हूँ मानो देखो, हमारे सातवें महापिता थे, जिनका नाम सेङ्गणी ब्रह्मचारी था मानो उनको सेंगणी ब्रह्मचारी कहते थे, आगे चल करके वह बटुककेतु ऋषि हुए परन्तु सेवली ब्रह्मचारी मानो देखो, वह अपने में शीतली प्राणायाम करते करते मानो देखो, वह चाहते थे कि मेरे अन्तःकरण में कोई भी संस्कार न रहे जिससे मैं मोक्ष को प्राप्त हो जाऊं तो अन्तरिक्ष में हमारे जो सातवें महापिता है सेतली ब्रह्मचारी उनके चित्र देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आते रहते थें अब उनके द्वारा उन यौगिक क्रियाओं को मानो यन्त्रों में दृष्टिपात करते हैं और जो साधक जन यहाँ आते हैं उन साधकों को हम वही मानो देखो, शीतली प्राणायाम की, प्रतिभा उनका आहार, उनका व्यवहार मानो देखो, ब्रह्मचारियों को उद्बुद्ध करते रहते थे। मानो देखो, ऋषि मुनियों का वह चित्रावली, विज्ञानमयी आभा को दृष्टिपात करके, मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनि आश्चर्य चकित हो गएं और उन्होंने कहा धन्य है ऋषिवर! यह हम क्या दृष्टिपात कर रहे हैं? इस विज्ञान को तो हम केवल देखो, शब्दों में ही उच्चारण करते रहें हैं, परन्तु आज हमारा कैसा सौभाग्य है आज हम कैसे भाग्यशाली है, जो आज हम मानो देखो, उन चित्रवलियों को दिग्दर्शन कर रहें हैं, उनका दिग्दर्शन करते हुए, हमारा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या उन्होंने कहा कि हमारे बहुत से महापिता इस प्रकार के हुए हैं हम सबका चित्रण करते रहते हैं मेरे प्यारे! देखो, ऋषि की विज्ञानशाला में उनके विद्यालय में उनके यहाँ यज्ञशाला में मेरे प्यारे! देखो,

सौवें महापिता तक के दर्शन वह करते रहते थे तो मेरे प्यारे! यह विज्ञान यह वेद की आभा में यह विज्ञान सदैव निहित रहा है प्रत्येक मानव जब अपनी क्रियाओं में रमण करने लगता है तो मुनिवरों! देखो, यह चित्र उनके समीप आते रहते हैं हमारे यहाँ साधकों ने प्राण और मन की दोनों की प्रतिभा को जान करके मानो देखो, प्रकृति परमाणुओं को ले करके यन्त्रों का निर्माण किया है और यन्त्रों को ले करके बेटा! देखो, उन्होंने अपने पिता महापिता माता इत्यादियों के दर्शन किए तो मुनिवरों! देखो, विचार विमनय क्या आज मैं कोई विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ केवल कुछ वेदमन्त्रों के विचारों को तुम्हें परिचय देने चला आता हूँ और वह परिचय क्या है जो मैंने तुम्हे उच्चारण किया है मेरे प्यारे! देखो, वैशम्पायन मौन हो गएं और महर्षि विभाण्डक ने कहा कहो भगवन! आपको और कुछ पाना है आपके वेदमन्त्र का मानो जो शब्दार्थ यथार्थ रूप में दृष्टिपात आ गया है और क्रियात्मक तुम उसे दृष्टिपात कर रहे हो उन्होंने कहा हाँ प्रभु! वास्तव में वेदमन्त्र जैसा कहता है वैसी ही देखो, ऋषि ने क्रिया में जाना परन्तु देखो, उनका याज्ञिक क्रिया का जीवन है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, जब मानो अपने अन्तर्हृदय से अन्तर्हृदय की याज्ञिक भावना को ला करके और वह तरंगो में ले जाता है अपने जीवन को तो मेरे पुत्रों! वह नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त हो जाता है विज्ञान की उड़ान उड़ने लगता है विज्ञान में रत्त हो करके नाना प्रकार की चित्रावलियों में रत्त हो करके वह बेटा! चित्रो का दिग्दर्शन करता रहता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है मुनिवरों! देखो, हम यह उच्चारण कर रहे थे कि हमारे यहाँ नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं जिन्होंने मौन रह रह करके अपने चित्त को जानने का प्रयास किया यह जो चित्त है चित्त में नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान रहते हैं उन

संस्कारों को जो मानव समापन कर देता है वह मुनिवरों! देखो, मोक्ष की प्रतिभा में परणित हो जाता है मानो मोक्ष की आभा में गमन करने लगता है परन्तु जब तक यह संस्कार बने रहते हैं कहीं क्रोधाग्नि के संस्कार हैं, तो कहीं काम की अग्नि के संस्कार हैं, मेरे प्यारे! देखो, उनके अवान्तर नाना प्रकार के भेदन हैं कहीं मेरे प्यारे! नाना प्रकार की कामना हैं और नाना प्रकार की कामना के नाना प्रकार के भेदन हैं मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार संसार का जितना भी क्रोधाग्नि है कामाग्नि है, मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार मोहाग्नि है, यह नाना प्रकार की जो विशाल अग्नि बन करके यह प्राण नाशक अग्नि बन करके मुनिवरों! देखो, मानव के अन्तःकरण में अशुद्व संस्कारों का जन्म प्रदान कर देती है। वही मेरे प्यारे! देखो, भोगने के लिए तत्पर हो जाते हैं। तो परिणाम क्या है मुनिवरों! देखो, उस अग्नि को हमें शान्त करना है, कहीं मानो देखो, क्रोधाग्नि को शान्त करना हैं, कहीं मेरे प्यारे! मोहाग्नि को समाप्त करना है, कहीं मुनिवरों! देखो, हम को अप्रणा मेरे प्यारे! देखो, कामाग्नि है। क्रोधा भवाः सम्भवे प्रता स्वाहाः मुनिवरों! देखो, कहीं मानो देखो, मोह अति आ जाता है। इनके बिना कार्य नहीं चलता है, परन्तु इनमें जहाँ भी अति आ जाती है, वहीं प्राणी का विनाश हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, अति क्रोधाग्नि बलवती हो गई है तो विनाश का कारण है यदि मुनिवरों! देखो, मोह की अग्नि सीमा से बाह्य चली गई है तो मानो मानव का विनाश हो जाता है मोह की अग्नि................ शेष अनुपलबध।

7 १५ ०८ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ परम्पागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा

का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो वह माता वसुन्धरा के रूप में, इस ब्रह्माण्ड में पिरोया हुआ है, जैसे में माला में सूत्र पिरोया हुआ रहता है, इसी प्रकार वह जो चैतन्य देव है, वह मानो इस आभा में पिरोया हुआ है, जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, मानव देखो, अनुसन्धान करता चला आया है, क्योंकि वह माता वसुन्धरा इसीलिए कहलाती है। क्योंकि वह ब्रह्माण्ड उसी में पिरोया गया है, वह मानो सूत्रित होता है, और वह सूत्र कहलाता जाता है।

ब्रह्म की छाया

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा था, नाना प्रकार की आभाएं प्रगट कर रहा था, जिसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा था, मनत्वां देवं भवितां विप्रो विष्णु मानो वह माता के रूप में परणित रहता है, माता के आनन्द के ब्रीहि आसो अस्सुतम क्योंकि माता ही हमारा लालन पालन करने वाली है, तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा हमारे, जिन परमाणुओं से शशीर की रचना होती है, उन परमाणुओं के आङ्गन में अथवा वह परमाणु उसमें पिरोया हुआ है। क्योंकि परम्परागतों से मानव, बेटा! अपनी आभा में रमण करता रहा है। मानवीयता में मनस्तव की आभा में, रमण कर रहा है। बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया था, क्या यह ब्रह्माण्ड मानो एक प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है, और वह प्राण सूत्र मानो ब्रह्म की छाया है, जिस छाया के ऊपर प्रत्येक मानव अपने में मानो रत्त रहता है, और चिन्तन और मनन करता रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! क्योंकि मानव संसार में, वह प्रेरणा का सूत्र है, प्रेरणा पाता रहता है, मानव प्रेरणा में रत्त रहने वाला, बेटा! यह विज्ञान में रत्त हो जाता है। जैसे मानो एक

मानव प्रेरणा ले रहा है अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ने वाला पक्षीगण है, मानो देखो, अन्तरिक्ष के पक्षी से मानो प्रेरित हो करके ही विज्ञान के आङ्गन में प्रवेश हो जाता है। मानो समुद्रों में विचरण करने वाला, जो प्राणी है, अथवा योनियां हैं, वह उनसे प्रेरणा ले करके नाना प्रकार के जल वाहनों का निर्माण कर लेता है। तो मेरे प्यारे! यह नाना प्रकार की आभा में, रमण करता रहता है। तो इससे यह सिद्ध होता है, क्या यह संसार, यह जो परमात्मा का अमूल्य जगत है, यह बेटा! हमें एक कल्पवृक्ष की भान्ति हमें दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! संसार के, ऋषि मुनियों ने दार्शनिकों ने बेटा! इसका भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं में अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया। मानो किन्हीं आचार्यों ने इस संसार को कल्पवृक्ष की भान्ति नियुक्त किया है, और यह कहा है कि यह संसार तो कल्पवृक्ष है। प्रत्येक मानव ने यहाँ कल्पना की वह उसको प्राप्त हो जाती है तो प्रत्येक मानव बेटा! कल्पवृक्ष का क्षेत्र माना गया है, कल्पना की जाती है, बेटा! उस कल्पना के क्षेत्र में मुनिवरों! देखो, जब मानव रमण करना प्रारम्भ कर देता है, तो कल्पना करता रहता है, यहाँ कोई स्वर्ग की कल्पना कर रहा है, स्वर्ग उसे प्राप्त हो जाता है। वह स्वर्ग के ऊपर विचारने लगता है क्या मुझे कैसे स्वर्ग प्राप्त होगा, मैं कैसे उस आभा को अपने में धारण करूं? तो मुनिवरों! देखो, कहीं वह स्वर्ग के लिए पत्नी से कहता है हे देवी! हमें मानवीय चिन्तन करना चाहिए, परन्तु देखो, बाल्य बालिका, हमारे उसी काल में, पवित्र बनेंगें, जब तक मानो हमारा चिन्तन मानो सुन्दर नही होगा, मानवीय चिन्तन में, एक महानता नही होगी, उसमें ईश्वरीयतव नही होगा, तब तक मुनिवरों! देखो, वह अपने में महान नही बन सकते बेटा!

स्वर्ग का क्षेत्र

मुझे स्मरण आता रहता है, वह काल मुझे स्मरण है, भारद्वाज का गोत्र, जहाँ मुनिवरों! देखो, भारद्वाज गोत्र में, नाना ऋषि हुए है, तो बेटा! उस गोत्र में एक ऋषि का नाम मानो

रेंगणी भारद्वाज था। मैने रेंगणी भारद्वाज की कई कालों में चर्चाएं की हैं, अथवा चिन्तन करते हुए, रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज बेटा! वह बाल्यकाल में, अपने में एक महान और वेद का अध्ययन करते रहते थे। मानो वह विचार और चिन्तन में लगे रहते थे, कि हमारा ब्रह्मवर्चोसि बनना चाहिए, हमारे जीवन में, एक ब्रह्मवर्चोसि बन करके, हम मानो देखो, यागां भविते देवं ब्रह्मा क्योंकि हमारा जीवन मानो स्वर्ग उसी काल में बनेगा, जबकि हमारा याग सुन्दर होगा। तो याग के सम्बन्ध में, ऋषि मुनियों ने बेटा! बहुत ऊँची उड़ान उड़ी है हमारे यहाँ, रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज, प्रातःकालीन बेटा! जब पति पत्नी विद्यमान होते थे, उनकी पत्नी मानो देखो, दद्दड़ीय गोत्रीय मानो ब्रह्मवेत्ता थी, ब्रह्मनिष्ठ थी, बाल्यकाल में उसका नामोकरण शकुन्तका कहलाता था। बेटा! जब शकुन्तका गुरु आश्रम में अध्ययन करती थी आचार्या के कुल में प्रवेश करती थी, तो उस समय बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मानो जब वह साम गान गाती थी, साम गान गाने वाला ही ऊर्ध्वा में जाता है, जब वह गान गाता है हृदय से, तो उसका हृदय पवित्र बन जाता है, जब वह हृदय से अग्नि को प्रदीप्त करता है, तो हृदय मानो महान बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह गान गाती थी, तो मानो सिंहराज, मृगराज नाना मानो प्राणी, एक पंक्ति में विद्यमान हो करके, मुनिवरों! देखो, उसके गान को श्रवण करते रहते थे, क्योंकि वेदों का जो गान है, वह गान मानो देखो, ईश्वरीय माना गया है, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाता है, परमात्मा का मानो गुणवादन होता रहता है, जो कि माता का पुत्र विद्यमान है, माता की प्रशंसा हो रही है, मानो बालक प्रसन्न हो रहा है, अपने को धन्य कर रहा है, तो वह माता की प्रशंसा पान करता हुआ मग्न हो रहा है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! जितने भी प्राणी मात्र है, ब्रह्माण्ड में मुनिवरों! वे परमपिता परमात्मा की प्रशंसा परमपिता परमात्मा का गुणवादन उसका ज्ञान और विज्ञान उसकी प्रतिभा,

मुनिवरों! देखो, कौन पुत्र ऐसा अभागा है, जो श्रवण नही कर पाता, मानो देखो, प्रत्येक प्राणी बेटा! उसको श्रवण करता रहता है, तो विचार विनिमय क्या विचारता रहता है, मुनिवरों! मैं कल्पना के ऊपर विचार दे रहा था, मुनिवरों! देखो, शकुंतका, रेंगणी भारद्वाज मानो प्रातःकालीन विचार विनिमय देने लगे, एक समय कि हम अपने गृह को मानो स्वर्ग का क्षेत्र बनाना चाहते हैं। दर्शनों की प्रतिभा वाला, यह गृह का निर्माण करना चाहते हैं, यदि हे प्रभु! हमारी पुत्र की इच्छा प्रगट हो, तो मानो हम अपने में ब्रह्मवेत्ता को, सन्तान को जन्म देना चाहते हैं। ऐसी कल्पना, बेटा! ऋषि पत्नी के हृदय में, प्रातःकालीन बेटा! उत्पन्न होती रहती। ब्रह्म का चिन्तन होता रहता, यह ब्रह्म क्या है? मानो ब्रह्म सूत्र में यह लोक लोकान्तर पिरोएं हुए हैं, मानो लोकों की जो प्रतिभा है वह ब्रह्म से सम्बिन्धित रहती है। जितना भी संसार का ज्ञान है, अथवा विज्ञान है, उस विज्ञान के गर्भ में, वे परमपिता परमात्मा बेटा! उद्बुद्ध हो रहे हैं, अथवा प्रकाशित करा रहे हैं, प्रत्येक परमाणु को उसी परमाणुवाद को ले करके मानव विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, दोनों, पति पत्नी विचार कर रहे थे, हे प्रभु! हे देव! तू सृष्टि का नियन्ता है, सृष्टि का निर्माण करने वाला है, तो मानो देखो, सृष्टि को महान बनाता हुआ हमें अपने को ऊँचा बनाने के लिए, तेरे गर्भ में आना चाहते हैं।

सर्वोपरि सुगन्धि विचारों की

मेरे पुत्रों! पति पत्नी प्रातःकालीन ब्रह्म याग में परणित हो जाते याग का अभिप्राय यहाँ मुनिवरों! देखो, चिन्तन करने का है, मनन करने का है, क्योंकि हमारे यहाँ कई प्रकार की सुगन्धियां उत्पन्न होती रही हैं, एक सुगन्धि **जो सर्वोपरि सुगन्धि है वह विचारों की सुगन्धि है** जब मानव अपने गृह में विचार देता है, और जब विचार दे करके, गृह को दार्शनिक क्षेत्र बना देता है, विचारों को दे करके, मानो देखो, कहीं वह वायुमण्डल

में शुद्ध परमाणुओं का भरण कर देता है, पुत्रों! देखो, मुझे बहुत सी वार्त्ताएं स्मरण आती रहती हैं, परन्तु आज का विचार, केवल हमारा यह क्या दोनो पति पत्नी बेटा! महान चिन्तन करते रहते थें, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मयाग के पश्चात, प्रातःकालीन बेटा! वह देव याग में परणित हो गएं, देव पूजा का अभिप्राय यह है, क्या देवताओं का पूजन करना है, मानो देखो, देवताओं का पूजन करते हुए, पति पत्नी कहते है। आओ, हे सहपाठी! आओ, अब हम याग करने के लिए तत्पर हैं, यागाम् रुद्रो भवा देवाः मानो हम देव याग कर रहे हैं। देव याग करने के लिए, बेटा! जब तत्पर होते हैं, तो मुनिवरों! देखो, अग्नि को प्रदीप्त करते हैं, वह अग्नि से कहते हैं, हे अग्नि! तू कहीं मानो ब्रह्माग्नि बन करके रहती है, हे अग्नि! कहीं तू देवताओं की हवि देवताओं का मुख बन करके रहती है। हे अग्नि! कहीं तू वैज्ञानिकों के मध्य में रमण करती रहती है हे अग्नि! कहीं तू काष्ठो में रहने वाली है हे अग्नि! तू हमारे मानवीय हृदयों में मानो प्रदीप्त हो करके उद्बुद्ध बन जाती है, प्रकाश देने वाली बन जाती है, बेटा! यह कैसी पवित्र अग्नि है, कैसी महान अग्नि है, जो मानो देखो, एक अग्नि को माता भोजनालय में तपा रही है, एक अग्नि से तप रही है बेटा! देखो, ज्ञान में ऋषि तप रहा है, एक अग्नि में तपोमयी विचारों से तप रहा है, वह त्याग की अग्नि बन करके रहती है तो बेटा! यह अग्नि नाना प्रकार की अग्नि है, कहीं ब्रह्माग्नि बन करके मानो कहीं ब्रह्म की आभा में रमण करा देती है। मेरे पुत्रों! यही अग्नि है जो शब्द को अपने ऊपर धारण करके मानो देखो, लोकप्रिय बन जाती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! वेद का ऋषि हमें क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र क्या कह रहा है, वेद का ऋषि कहता है, कि प्रातःकालीन जब पति पत्नी मानो याग में परणित होते हैं यागानां ब्रह्मे वाचा मानो देखो, याग में परणित हो करके, याग में उद्बुद्ध करते हैं हे अग्नि! स्वाहा कह करके कहती है हे अग्नि!

तू आ हम तुझे अपने में धारण कर रहे हैं। हे अग्नि! तू हमें मानो अपने में धारण कर, तू तेजोमयी बन करके, संसार को तपा रही है। ऐसी हे अग्नि! तू तेजोमयी बन करके, मानो संसार को तपाने वाले बने। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि, ब्रह्माग्नि क्या, वह अग्नि यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह अग्नि मानो देखो, उद्बुद्ध हो करके देवताओं का मुख बन जाता है, अग्नि में जो हम पदार्थ उत्पन्न करते हैं, मानो अर्पित कर देते हैं, वह अग्नि देवताओं को प्रसारण कर देती है, जिससे बेटा! मेधो की उत्पति होती है। वत्रासुर जागरूक हो जाते हैं, मानो देखो, धीमी धीमी वृष्टि हो करके, देवता इसमें मुनिवरों! देखो, छायामान हो जाते हैं। विचार विनिमय क्या, मानो वह अग्नि उसमें उद्बुद्ध हो करके, तरंगों में रमण करती हुई यही अग्नि बेटा! वत्रासुर में रमण करती रहती है। मुझे एक समय मेरे पुत्र महानन्द जी ने मानो यह प्रगट कराया था कि वत्रासुर मानो दैत्य को कहा जाता है, जिस दैत्य के द्वारा, सम्भवामि मानो यज्ञं सदैव उद्बुद्धता लगी रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो वत्रासुर है मानो देखो, मेघ मण्डलों को वत्रासुर कहते हैं, यह वत्रासुर है, जो जलों का उत्थान करता हुआ, धीमी धीमी वृष्टि करके, इन्द्र से मानो इसका संग्राम होता है, इन्द्र मानो यहाँ वायु को कहते हैं, और इनके मध्य में मानो देखो, उद्बुद्ध होने वाली अग्नि है, तेजोमयी बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, वायुमण्डल में छायामान हो जाती है। तो विचार विनिमय क्या है, मेरे प्यारे! मैं विचार घनिष्टता में नही देना चाहता हूँ, एक अग्नि बेटा! देखो, वह है, जो माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशुओं को पनपाती रहती है, गर्भस्थल में बेटा! एक बिन्दु मानो प्रवेश हो गया है, माता के गर्भस्थल में, वह आपो बन करके रहता है, आपो ही मानो देखो, उसमें विद्यमान रहता है, उस आपों में मेरे पुत्रों! देखो, मानव का चित्र विद्यमान होता है, उसी में चित्र की प्रतिभा निहित रहती है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि उसे तपा रही है, अग्नि तपा करके, उस शिशु को बलवती बना रही

है, माता के गर्भस्थल में, बेटा! जब शिशु रहता है, तो उसका जो ओढ़न है, वह भी आपो कहलाता है, आसन भी मानो अहा! आपो ही कहलाता है, पांशे भी आपो ही कहलाते हैं। परन्तु देखो, अग्नि उसको तपायमान करती है, अग्नि तपा रही है, सूर्य प्रकाश दे रहा है, वह भी द्यौ का प्रकाश है बेटा! परन्तु देखो, माता भी प्रसन्न हो रही है।

विचार विनिमय क्या हे मेरे प्यारे! देखो, देव याग उसे कहते है। देव पूजा मानो देव पूजा का अभिप्राय है हम मुनिवरों! देखो, वह यागं ब्रह्मे जो याग प्रभु ने रचाया है, सृष्टि के प्रारम्भ में, उस याग को, हम सूक्ष्म रूप से बेटा! इस महान जगत में तपाना चाहते हैं, उसको जगत में लाना चाहते हैं। जिससे जगत में एक महानता की प्रतिष्ठा हो जाएं। तो विचार विनिमय क्या वेद का मन्त्र कहता है, हे मानव! तू देवयागी बन, मानो तेरे याग करने से भी जब देवताओं का, जब अग्नि को मुख बना लेता है, उस अग्नि में जब प्रवेश कर दिया जाता है, वह अग्नि ही प्रदान करने वाली है, अग्नि ही शब्दों को अन्तरिक्ष में ले जाती है, अग्नि ही बेटा! देखो, मानो वैज्ञानिक जन जब इस अग्नि को जान लेते हैं, तो यह पृथ्वी के गर्भ में, जब वैज्ञानिक प्रवेश करते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, तो वहां प्रव्हा कैसी अग्नि है? मानो अग्नि ही बेटा! नाना प्रकार के खाद्य और खनिजों को तपाने वाली है, वही अग्नि, मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में, शिशु को तपाती रहती है, महान बनाती रहती है, मानो देखो, काष्ठ में रहनी वाली अग्नि, मानो उद्बुद्ध होती है, तो लोक की अग्नि बन जाती है। मानो वही अग्नि मानो बेटा! तरंगों में प्रवेश कर जाती है तो उससे वायुमण्डल का निर्माण होता है वही अग्नि मेरे पुत्रों! देखो, मानो विचार रूपी अग्नि बन करके तरंगों में तरंगित होती रहती है, तरंग मानो उसमें आभा में रमण करते हुए बेटा! अपने में महान बनते रहते हैं।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले

जाना नही चाहता हूँ केवल विचार विनिमय क्या देखो, उद्बुद्ध अग्नि से मैं जागरूक करने के लिए आया हूँ, जो अग्नि बेटा! यज्ञशाला में प्रदीप्त हो करके, यज्ञमान के हृदय को ऊँचा बनाती है, बेटा! होता जनों की वाणी को पवित्र बनाती है मानो वही अन्तरिक्ष में, प्रवेश हो करके, द्यौ लोक में जा करके वही मेरे पुत्रों! देखो, वायुमण्डल का निर्माण कर देती है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि हमारे यहाँ मानो ब्रह्मवेत्ता मानो याज्ञिक पुरूषों ने उस याग के ऊपर, ऊँची से ऊँची विचारधारा को ले करके, वर्णन किया है, कि मानो देखो, यागाम् ब्रह्म लोकाः मेरे प्यारे! देखो, यह ब्रह्म लोक में रहने वाली अग्नि मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला के रूप में प्रवेश करती है। आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल तुम्हें उन्हीं क्षेत्रों में ले जाना चाहता हूँ, जिन क्षेत्रों में जाने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, मानव ज्ञान और विज्ञान के रूप में परणित हो जाता है।

मुनिवरों! देखो, वेद के आचार्यों ने, मैं उच्चारण कर रह था, रेंगणी भारद्वाज की चर्चा रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज उनकी पत्नी शकुंतका दोनों विद्यमान हो करके, ऊँची ऊँची उड़ान उड़ रहे थे, ऊँची से ऊँची उड़ान उड़ते हुए, विचारो की उड़ान उड़ते हुए मेरे प्यारे! देखो, वह देव पूजा कर रहे थें देव पूजा में मानो ब्रह्मवेत्ता का आदान करना ब्रह्मवेत्ता को अपने में लाना मानो देखो, ब्रह्माग्नि को प्रदीप्त करना, अपने में ब्रह्म का चिन्तन, अपने में ब्रह्म की आभा, मानो देखो, उसको उद्बुद्ध करने वाली, अग्नि जब प्रगट होती है, तो मानव का हृदय पवित्र हो जाता है, मानव के हृदय रूपी जो अग्नि है, जो मुनिवरों! देखो, पञ्च अग्नियों में प्रदीप्त रहने वाली है, और पंचाग्नि जब हृदय में प्रवेश होती है, तो हृदय प्रकाशित हो जाता है बेटा!।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि रेंगणी भारद्वाज और

मुनिवरों! देखो, उनकी पत्नी विचार विनिमय कर रहे थें, विचार विनिमय करते अग्नि होत्र करते हुए मानो वह मौन हो गए, एक समय मौन हो करके उन्होंने पत्नी ने अपने देव को यह कहा रेंगणी भारद्वाज कि महाराज! इस अग्नि का मानव के अन्तरात्मा, से क्या सम्बन्ध हैं? उन्होंने कहा यह जो आत्म चेतना है, यह मानो देखो, ब्रह्माग्नि प्राण सूत्र को ले करके गमन करता है, यह प्राण सूत्र को ले करके, जब गमन करता है, मानो यह अग्नि का स्वरूप एक सूक्ष्म अग्नि के स्वरूप को धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, इससे याग का क्या सम्बन्ध हैं? क्योंकि एक समय जो देवताजन ये कहते है। कि यागाम् सुगन्धि को याग कहते हैं, एक समय कहते हैं कि देखो, ब्रह्मयाग को याग कहते हैं। तो याग का देखो, यह क्या समन्वय होता है? ऋषि कहते हैं, देवी मानो देखो, एक समय एक तो बाह्य याग हो रहा है एक आन्तरिक याग हो रहा है, बाह्य याग वह कहलाता है, मानो जो बाह्य जगत में मानो संसार का क्रियाकलाप कर रहा है, सत्य उच्चारण कर रहा है, वाणी का शोधन कर रहा है, पितर याग कर रहा है अपनी माता बाल्य को ऊँची शिक्षा दे रही है दर्शनों की प्रतिभा का वर्णन कराती चली जाती है, मानो देखो, इस प्रकार की प्रतिष्ठा, मानव के हृदय में प्रवेश कराती है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है, क्या हे आत्म ब्रह्मे मानो यह सब आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनो का मानो यह दोनो याग हो रहे हैं, बाह्यजगत में मानो देखो, देव पूजा कहलाती हैं, आन्तरिक जगत में यह ब्रह्मयाग कहलाता है, वह ब्रह्म चिन्तन कहलाता है, परन्तु जब बालक को माता शिक्षित बनाती है, उस समय माता कहती है, कि हे बालक! तुझे उद्बुद्ध बनना है, जैसे माता मल्दालसा मानो अपने बालक को तीन वाक्यों का उच्चारण करती रहती है, हे बालक! मानो देखो, लोरियों का पान करा रही है, माता कह रही है, कि तू शुद्ध है, तू बुद्ध है, तू निरञ्जन है मानो देखो, तीन शब्दों का प्रतिपादन करना ही मेरे प्यारे!

देखो, संसार में आत्म तत्त्व को जानना है मानो देखो, आत्मा शुद्ध है, आत्मा निरञ्जन है, अखण्ड रहने वाली है। मानो देखो, शुद्ध और बुद्ध है, क्योंकि जितना भी ब्रह्माण्ड का ज्ञान है, तेरे मस्तिष्क में तेरी बुद्धि में ओत प्रोत रहता है, क्योंकि यह जो मन है, यह प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु माना गया है। माता कहती है ये मनो भाव सम्भव हे ब्रह्मचारी! हे लोरियों का पान करने वाले बालक! मानो तेरे से मैं उच्चारण कर रही है, कि तू मानो अशुद्ध नही हैं, तू शुद्ध हैं, एक प्रकार का पठन पाठन कराती हुई माता बेटा! कितना प्रिय याग कर रही है, हे माता तू प्रिय याग कर रही है संसार को ऊँचा बनाने के लिए, गृह को पवित्र बनाने के लिए, मानो देखो, मैं तुझे असुतो क्या कहूँ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है हे देवी! संसार में बाह्य जगत आन्तरिक जगत दोनो एक प्रकार का याग हो रहा है। यागाम् ब्रह्म लोकाम् सूर्य प्रातः काल में उदय होता है, प्रकाश देता रहता है अपनी किरणों से मानो विषैले परमाणुओं को अपने में धारण करता है मानो शुद्ध प्राण वर्धक परमाणुओं को वह देता रहता है, तो वह एक याग हो रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, चन्द्रमा, प्रातः ब्रह्मा रात्रि में, अपना रात्रि अन्धकार को अपने में धारण करता है, वह सोम की वृष्टि कर रहा है, सोम दे रहा है, मानो देखो, वह एक याग हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि अपने में प्रकाश दे रही है तेजोमयी बना रही है, ओजस्वी देवतव बना रही है देवताओं का दूत बन करके बेटा! याग हो रहा है। यह कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का याग ब्रह्माण्ड के रूप में बेटा! मुझे दृष्टिपात आ रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना विशेष देना नही चाहता हूँ, विचार विनिमय क्या है, क्या मानव, एक दूसरे से जब स्नेह से रहता है, एक दूसरे से जब प्रीति से रहता है, तो बेटा! वह सत्यवादी बन करके मानो एक याग कर रहा है, राष्ट्र में जब राजा अपनी प्रजा के समीप विद्यमान हो करके मानो देखो, प्रजा को ऊर्ध्वा में उपदेश दे रहा है, और वही उपदेश देता हुआ कहता है, मेरा राष्ट्र सुगन्धित होना चाहिए,

मेरे परमाणु मेरा राष्ट्र सुगन्धित हो जाएं, क्योंकि सुगन्धि में जब परणित हो जाएगा तो मेरा राष्ट्र पवित्र बनेगा। राजा कहता है कि राष्ट्र में सुगन्धि विचारों की, चरित्र की सुगन्धि होनी चाहिए, जब मुनिवरों! देखो, चरित्र की सुगन्धि हो जाती है, तो यह मानव मुनिवरों! देखो, महान बन जाता है, राष्ट्र भी पवित्र बन जाता है, और तब मुनिवरों! देखो, चरित्र की आभा समाप्त हो जाती है, तो राष्ट्र में मानो देखो, विकृतता आ जाती है अशुद्धियां आ जाती हैं, जो अपने में मानवीय होता है, तो इसीलिए मुनिवरों! देखो, राजा को चाहिए, कि याग का पालन करता रहे।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, पितर कह रहा है, आचार्य रेंगणी भारद्वाज मुनि कहता है, हे देवी! संसार में मानो यह सब याग हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी शकुन्तका ने कहा प्रभु! यह याग का सम्बन्ध, पृथ्वी से क्या है? उन्होंने कहा यह पृथ्वी तो वसुन्धरा बन करके, सबसे महान याग कर रही है, इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ उत्पन्न हो रहा है, मेरे प्यारे! देखो, नाना वनस्पतियों का जन्म हो रहा है, वह वनस्पतियां जीवन दे रही हैं, नाना वस्पतियां मानो आयुर्वेदाचार्य उसके ऊपर अनुसन्धान करते रहते हैं। मानो देखो, खनिज वाले, खनिज पदार्थों को जानने के लिए वैज्ञानिक बन जाते हैं, प्रेरणा पा करके मुनिवरों! वह पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते हैं, पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का बेटा! अग्नि का जो तरंगवाद चल रहा है, अग्नि का जो अनुसन्धान है, अग्नि की जो प्रतिभा है मानो उसमें जो परमाणुओं का जो आदान प्रदान हो रहा है, कहीं बेटा! स्वर्ण की धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो रत्नों का निर्माण हो रहा है, नाना प्रकार का विज्ञान बेटा! इसमें निहित रहता है। वैज्ञानिक जनों को यह प्रतीत होता है क्या इस विज्ञान में इस पृथ्वी के गर्भ में, कौन सा खनिज कितनी दूरी पर है, बेटा! यह विज्ञान मानो देखो, ऋषि मुनियों के मस्तिष्क में नियुक्त

करता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी तो मानो देखो, महान याग कर रही है, मानो देखो, कहीं खाद्य पदार्थों की उत्पति हो रही है नाना प्रकार का खाद्यान्न इसी के गर्भ से उत्पन्न होता है। यह माता कैसी प्रिय वसुन्धरा है? हे माँ वसुन्धरा! तू नाना प्रकार का खाद्य पदार्थों को खनिज पदार्थों को, उत्पन्न करने वाली है। मानो तेरे गर्भ में, अग्नि के परमाणु, अग्नि की तरंगें गतियां कर रही हैं। मानो सूर्य की तरंगें जल में किरणे ले करके जल की सहायता ले करके, उसको तपायमान किया जा रहा है। चन्द्रमा सोम की किरण दे रहा है अपने में मानो देखो, सोम दे करके की प्रायः हम देखो, माला बन करके वह मानो दे देते हैं मेरे प्यारे! देखो, उसमें तपने लगता है आज भी उसी आधार पर तपा रहता है तपता ही रहता है मेरे पुत्रों! देखो, हे मां वसुन्धरा! तू कैसी वसुन्धरा है तू कैसी मानो देखो, तेरे गर्भस्थल में क्या क्या वस्तुएं हैं इसमें मानो रत्नों का निर्माण होता है कहीं स्वर्ण का निर्माण है और भी नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण है जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है उससे वाहन गतियां करते हैं जल वही मानो देखो, तेरे गर्भस्थल में एक परमाणु शक्ति उत्पन्न करने वाला है वह परमाणु तू कैसी वसुन्धरा है मानो तू कैसी महान वसुन्धरा बन करके तू हमारा कल्याण कर रही है बेटा! मानो नाना प्रकार का खाद्य विराजमान हो रहा है, एक ही पौधा है एक ही पौधा तेरे से उत्पन्न हो रहा है उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है, एक को मानव पान करता है। तो एक को पशु पान करता है हे माता! मानो देखो, मानव पान करता है तो ओज और तेज की उत्पति कर रहा है, और पशु पान कर रहा है तो दुग्ध दे रहा है पय दे रहा है मानो देखो, उससे खाद्य बन करके मानो औषध विज्ञान की उत्पति हो जाती है। तो मेरे प्यारे! यह वनस्पति विज्ञान कितना विशाल है, क्या यह खाद्य खनिज पदार्थों में मानो देखो, प्रतिभाषित हो रहा है, हे माता वसुन्धरा! तू चार प्रकार की वृत्तियों का आदान प्रदान

कर रही है, मानो तेरे से उत्पन्न होने वाला है, कहीं मानो उदभिज सृष्टि का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो देखो, अण्डज सृष्टि बन रही है, कहीं उद्भिज सृष्टि का निर्माण है तो कहीं जंगम सृष्टि का निर्माण हो रहा है। ये सब माता वसुन्धरा के गर्भ स्थल में बेटा! निर्माण हो रहा है। हे माता! हे वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, तू महानता में गति देने वाली है, मानो तेरे गर्भ में मानो अग्नि का भण्डार विद्यमान है, तू अग्नि पुंज बना हुआ है, जिससे मानो देखो, यह सब रात्रि का निर्माण हो रहा है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! ऋषि ने कहा अपनी पत्नी से हे देवी! यह कैसा प्रिय माता वसुन्धरा याग कर रही है मानो देखो, इसी क्षेत्र में जाओगे इसमें तुम्हें अनन्तता दृष्टिपात होती चली जाएगी यह अनन्त ब्रह्माण्ड है प्रभु का, अनन्त विज्ञान में रमण करने वाला, यह जगत है। आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार यह क्या कह रहा है, मैं कोई व्याख्यता नही हूँ मैं मानो कोई बुद्धिमान नहीं परन्तु परिचय देने के लिए चला आता हूँ यह परिचय देना है और वह परिचय क्या है? माता वसुन्धरा के गर्भ की मैं चर्चा कर रहा था मानो यही चर्चा हो रही थी तो ऋषि कहता है देवी! यह मानो देखो, देव याग हो रहा था मेरे प्यारे! देखो, माता ने उस समय शकुन्तका ने यह कहा हे प्रभु! हे भगवन! मैं जानना चाहती हूँ क्या अन्तरिक्ष से पृथ्वी का क्या सम्बन्ध है? उन्होंने कहा हे देवी! मानो देखो, अन्तरिक्ष में सूर्य गमन करता है, अन्तरिक्ष में रहने वाला परमाणु है। यह अवकाश कहलाता है जहाँ भ्रमण करता है परमाणु, मानो तीन प्रकार के परमाणु होते हैं जो पृथ्वी और अग्नि के परमाणु हैं और मुनिवरों! देखो, वायु गति कराती है परमाणुओं को और अन्तरिक्ष में बेटा! वह अवकाश पाते हैं गमन करते हैं तो यह चर्चाएं तो बेटा! मैं कल ही करूंगा आज का विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए परमपिता परमात्मा

का यह जो जगत है वह बेटा! एक प्रकार का कल्प वृक्ष है इस कल्प वृक्ष के नीचे हम सब विद्यमान हैं और यहाँ मुनिवरों! देखो, ऊँची ऊँची कल्पना होनी चाहिएं। क्योंकि कल्पना करते ही वस्तुओं की उत्पति हो जाती है, कल्पना करते ही मेरे प्यारे! आदान प्रदान होने लगता है, कल्पना करते ही मेरे प्यारे! देव पूजा मे रत्त हो जाते हैं तो मुनिवरों! देखो, श्रद्धाम् ब्रह्म वाचा हम दार्शनिक जगत में आए हैं यह कल्पना वाला मानो परमात्मा का भव्य जगत है इसके ऊपर हमें अनुसन्धान करना है विचार विनिमय करना है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती को सदैव चिन्तन में लाते रहें अपने को ऊँचा बनाते रहें यहाँ प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है क्या प्रभु की सृष्टि को निहारते रहना ऊँचे ऊँचे विचार देना, वायुमण्डल को पवित्र बनाना गृह को ऊँचा बनाना, राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाना चरित्र के द्वारा तो बेटा! आज का यह विचार हमारा यह कहता चला जा रहा है आज का विचार हमारा क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती को सदैव अपने में धारण करते चले जाएं, मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है, क्या हम कर्तव्यवादी बन करके ज्ञान और विज्ञान और परमपिता परमात्मा की जानते हुए सागर से पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि परमपिता परमात्मा की महानता के ऊपर चिन्तन करते चले जाएं और महती उस देव यागों में रमण करते चले जाएं यह है बेटा! आज का वाक समय मिलेगा शेष चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगें, आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवां हिरणं गतौ सर्वां भद्रा माणं आ पाः ओ३म् यौ सर्वश्चाहं रेवं भविताः ब्रह्म मणो वासु रथ सर्वा मां गताः। ओ३म् श्वञ्जनाः रथप्राहा वा गायन्त्वां मानं भद्रा ओ३म् देवं मया सर्वं

भद्राः।

४ २३ ०८ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गएं है। जो मानव उसका वरण कर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि वह मेरा देव, अनन्तता में रमण करने वाला है, जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो उसी की प्रतिभा से यह संसार प्रतिभाषित हो रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, क्योंकि वास्तव में सर्वत्रता में रमण करने वाला पूरक, वे परमपिता परमात्मा ही माना गया है। क्योंकि वह प्रेरणा देता रहता है, मानव के जीवन का उत्थान होता रहता है, मानव अपनी आभा में रमण करता रहता है।

तो मुनिवरों! जितना भी यह मानवीयतव हमें दृष्टिपात आ रहा है, वह उस महान मेरे देव की महानता में रमण कर रहा है, जिस भी माता के गर्भ स्थल में, मानो शिशु की प्रत्येक भावना में विद्यमान होते है, मानो उसी में वह रत्त रहने वाला है, तो इसलिए परमपिता परमात्मा मानो उसी के गर्भ में, यह संसार, यह लोक लोकान्तरवाद, उसी के गर्भस्थल में ओत प्रोत है। जैसे मानव देखो, अग्नि हमें नाना प्रकार की धाराओं का वर्णन कराती है, मानो यह अग्नि यज्ञं ब्रह्म वाचा यह यज्ञमयी अग्नि है, संसार जितना भी हवि दे रहा है। यह जगत जितना भी दृष्टिपात आ रहा है यह सब हवि दे रहा है, कोई न कोई किन्हीं रूपों में हवि देने वाला है, हवि दे रहा है अपने

क्रियाकलाप के द्वारा, तो इसीलिए परमपिता परमात्मा मानो हवियों का समूह माना गया है। यह हवि प्रदान करने वाला है, तो जब हम उस परमपिता परमात्मा की महती, अथवा उसकी महानता के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते है, तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात आता है, कि मानव तो गान गाता ही रहता है, वह तो उद्गीत गाता ही रहता है, परमात्मा का यह अमूल्य जगत, एक उद्गीत की भान्ति है। क्रिया क्लाप होता रहता है, मानव अपनी धाराओं में रमण करता रहता है। आज मेरे प्यारे! महानन्द जी! मुझे भिन्न भिन्न प्रकार की मानो प्रेरणा दे रहे है, यज्ञं भविते देवाः आज का हमारा वेद का मन्त्र, यह कह रहा है, कि हे मानव! तू याज्ञिक बन, मानो देखो, याग करने वाला बन, याग किसे कहते है? दार्शनिक जनों ने, तो जितने भी सुकर्म है, महान कर्म है, उन सब क्रियाकलापों का नाम याग के रूप में, उन्होंने मानो प्रगट किया। जब हम आगे और गम्भीरता से इस विषय में, चिन्तन करना प्रारम्भ करते है, तो यागां ब्रह्म वाचप्रव्हे प्रव्हे लोकां मेरे प्यारे! देखो, यह जो देव पूजा है, अग्न्याधान हो रहा है, अग्नि प्रदीप्त हो रही है, मानो देवताओं बना दूत बन रही है दूत बन करके देवताओं की हवि प्रदान कर रही है उससे नाना प्रकार की वनस्पतियां, क्या चारों प्रकार की सृष्टि का निर्माण होता रहता है। हमारे यहां चार प्रकार की सृष्टि का वर्णन, परम्परागतों से ही, माना गया है सबसे प्रथम सृष्टि का नाम बेटा! स्थावर कहलाता है, द्वितीय सृष्टि का नाम अण्डज कहलाता है, तृतीय सृष्टि का नाम जंगम कहलाता है, और चतुर्थ का नाम उदभिज कहलाता है। ये चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है। मेरे प्यारे! चार प्रकार का यहां प्राणी मात्र गति कर रहा है, एक मानो देखो, स्थावर रहने वाला, स्थूल सम्भवे देवाः यह सृष्टि कहलाती है। मानवीयतव नहीं सृष्टि कहलाती है। परन्तु देखो, वही अण्डज के रूप में नाना प्रकार के प्राणियों में गति हो रही है, इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, यह जो उद्भिज है यह महाकृत कहलाता

है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम सृष्टि का नाम मुनिवरों! स्थावर कहलाता है, स्थावर का अभिप्राय यह है, क्या जो स्थिर रहने वाला है, उन स्थिर रहने वालों में, मेरे पुत्रों! देखो, पर्वतो से ले करके, वृक्षों तक वनस्पतियों तक मानो देखो, स्थावर सृष्टि कहलाती है। स्थावरतव कहलाता है। जहां स्थिर रहने वाला मानो मौन रहने वाला मुनिवरों! देखो, वह स्थावर सृष्टि में आता है। स्थावर सृष्टि के ऊपर और गम्भीरता से, मनन किया जाता है। अनुसंधान किया जाता है। तो विचारने में आता है, क्या मानं ब्रह्मे वाचप्रहे लोकां देवाः यह जो नाना प्रकार का वनस्पति विज्ञान है, यह भी स्थिरता में रमण करता है, और जितना भी खनिज पदार्थ है, वह भी स्थिरता में रहने वाला है, मानो जितना भी पृथ्वी के गर्भ में, मुनिवरों! देखो, जल इत्यादियों सबकी ऊर्ज्वा से मानो ऊर्ज्वा प्राप्त कर रहा है। ऊर्ज्वा उसे प्राप्त कर रही है, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, ऊर्ज्वा के द्वारा जो तप रहा है, वह चाहे पृथ्वी के गर्भ में खनिजों के रूप में हो, चाहे वह भूमि में मानो कृषक के उगाए वच्युतम कहने वाला अश्वत क्यों न हो क्योंकि वह जंगमां ब्रह्मे वाह असुतम लोकाः वह मानो देखो, सृष्टि कहलाती है। वह सृष्टि का नाम स्थावर कहलाता है। नाना प्रकार की धातु पिपाद, धातु पिपाद बन रहा है परन्तु देखो, धातु पिपाद तो बन ही रहा है, परन्तु जब यह विचार किया जाता है कि यह सृष्टि का चक्र है, यह स्थावर के आश्रित रहने वाला है। क्योंकि प्रत्येक प्राणी ओजस चाहता है, प्रत्येक प्राणी अन्नाद को चाहता है, उस अन्नाद की जो उत्पत्ति है, वह मानो देखो, पृथ्वी माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान है, और वह स्थावर सृष्टि के रूप में विद्यमान है, स्थावर जो सृष्टि है, यही मानो देखो, समुद्रों को स्थिर करने वाली है, यही वनस्पतियों की द्यौतक है मानव का जन जीवन

इसी के द्वार से आता है, यह स्थावर सृष्टि कहलाती है।

परन्तु द्वितीय सृष्टि का नाम अण्डज है, अण्डज में नाना प्राणी कहलाते है कोई प्राणी मानो देखो, अपनी सन्तता को किसी प्रकार निर्माण कर रहा है कोई किसी प्रकार निर्माण कर रहा है, मानो कच्छ नाम का मुनिवरों! देखो, एक जल अण्डज कृति कहलाता है, अण्डज सृष्टि कहलाती है। उनमें एक मानो देखो, कच्छ नामक एक नामोकरण है जो अपनी मानो देखो, वह दाई असुतो नेत्रो से मुनिवरों! देखो, समुद्रों को क्या नदियों को क्या वह मानो देखो, उस मानो रज में रहने मानो अण्डज सृष्टि को अपने दाएं नेत्र में उसका मानो सिंचन कर रहना है उसकी कृतियों में रमण कर रहा है, मानो देखो, एक सर्प योनि है मानो जैसे अण्डे आते है उनमें से कुछ अण्डे अपने आप ही वह भक्षण कर जाते है। मेंरे प्यारे! देखो, कितने प्रकार की यह सृष्टि है, इस अण्डज सृष्टि में भिन्न प्रकार के भेदन है, कोई हिसङ्क प्राणी है, तो कोई अहिंसा परमोधर्म का भी मानो देखो, उसी अण्डज सृष्टि से उत्पन्न होने वाला है। तो एक नहीं, भिन्न भिन्न प्रकार का मानो यह परमात्मा का जगत चल रहा है, यह कैसी सृष्टि है पुत्रों! क्या मानो देखो, यह अण्डजे व्रतम एक जंगम सृष्टि कहलाती है, मैं तुम्हें परिचय दे रहा हूँ, व्याख्या नहीं देने आया हूँ केवल देखो, तृतीय सृष्टि का नाम, हमारे यहां जंगम कहा जाता है। जो जंगो वासो ब्रह्मे वाचसुत उत्पन्ना जो उत्पत्ति होने वाली जंगम के राही असुतो से श्रोत्रों से, कहलाई जाती है, परन्तु देखो, उसमें कितने प्रकार के प्राणी है, मानव बेटा! गणना करता करता थकित हो जाता है। और अन्तिम में वह मौन हो जाता है। मेंरे प्यारे! देखो, इसी अण्डज सृष्टि से मानव है, इसी से पशु है, पशुओं में भी भिन्न प्रकार के भेदन माने गएं है परन्तु देखो, इसी में सिंह राज है, इसी में मृगराज है, और भी नाना प्राणी मुनिवरों! देखो, कोई अहिंसा परमोधर्म की घोषणा कर रहा है कोई हिंसक की घोषणा कर रहा है, भिन्न भिन्न प्रकार का मुनिवरों! देखो, यह

प्राणी, अपनी आभा में मुनिवरों! देखो, नृत्त कर रहा है, आभायित हो रहा है, जिनके ऊपर मानव मुनिवरों! देखो, परम्परागतों से ही, अनुसंधान करता रहा है, जंगम सृष्टि में, मानव भी आता है, एक मानव देखो, जंगम सृष्टि में, गो नाम का पशु भी आता है, सिंहराज इत्यादि नाना प्राणी, इस प्रकार के है, जिसकी गणना करने में भी बेटा! हम असमर्थ हो जाते है, परन्तु ये कैसा उसमें मेरे प्यारे! प्रभु का विधान, मेरे प्यारे! प्रभु की कैसी विचित्रता है? मानो देखो, वह उसमें रत्त रहने वाला है, उसमें गति कर रहा है उसे प्रेरित कर रहा है नाना प्राणी अपने अपने भोगों की आभा में गतियां कर रहे है मानव उसी में रत्त रह करके अपने को अपने को ऊँचा बनाना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जहां यह जंगम सृष्टि है, इस जंगम सृष्टि में, बहुत प्रकार के प्राणी है मुनिवरों! देखो, जिनको गणना करने में, असर्मथता प्राप्त हो जाए।

चतुर्थ सृष्टि का नामोकरण हमारे यहां उद्भिज माना गया है, जो जलों के संयोग मात्र से ही, मानो देखो, उसकी उत्पत्ति मानी जाती है, मेघो का उत्थान मानो जब सूर्य की किरणें, अपने रूपान्तर होती है, ग्रीष्म देखो, वर्षा काल में, तो उनका समन्वय मानो समुद्रों से हुआ और जैसे ही वायु अग्नि अमृतो देवाः वह उर्ध्वा में जैसे ही गति हुई, तो मुनिवरों! देखो, यह मानो चन्द्रमा सोम बन करके और तेजोमयी सूर्य बन करके, जलों का उत्थान होता है। जब वत्रासुर का और इन्द्र का दोनों का भयंकर संग्राम होता है, तो मुनिवरों! देखो, उसमें से उदभिज सृष्टि का प्रादुर्भाव हो जाता है। मेरे प्यारे! जब उदभिज सृष्टि का जब प्रादुर्भाव होता है उद्भिज सृष्टि अपने में अपनेपन को लिए निर्णीत करा रही है, तो इससे यह प्रतीत हुआ, कि हमारे जीवन की जो धाराएं है, वह उद्भिज से भी मुनिवरों! देखो, सम्बन्धित होती है। मानो देखो, उदभिज एक प्राणी का मानो भोजन बन रहा है, वह भोजन बन करके, उसे पान करके प्राणी अपने में प्रसन्न हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो,

विचार क्या उदभिज सृष्टि का जो विकास है, वह जलो से और आपो से माना गया है। जलं आपो हिरण्यं ब्रह्मे प्रति असतो, यह पृथ्वी के कणो को ले करके, आभा में रमण कराती मानो देखो, उसके प्रादुर्भाव में, मानव संलग्न हो जाता है, अपने को अपनेपन से ही मानो देखो, मापना चाहता है।

तो विचार विनिमय क्या मैं बेटा! तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ, कि प्रभु का जो मानो यह ब्रह्माण्ड है, यह कितना विचित्र है, चार प्रकार की सृष्टि का निर्माण जहां होता है, वहां तीन प्रकार के परमाणु है, तीन प्रकार के परमाणु है, वायु उन परमाणुओं को गति देने वाला है, और मुनिवरों! देखो, अग्नि ब्रह्मे अग्नि सदाव्रती, अग्नि ही मानो देखो, परमाणु रूप बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, अन्तरिक्ष में उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है, वह प्रतिष्ठित होता हुआ, मानो देखो, चारों प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपने में लाना चाहता है अपने में विचित्रता को धारण करना चाहता है, तो मेरे प्यारे! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूं विचार विनिमय क्या मुनिवरों! यह चारों प्रकार की सृष्टि का निर्माण मानो मेरे प्यारे! प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में किया था सृष्टि के पिता ने इसका निर्माण किया जब सृष्टि के पिता ने इसका निर्माण किया तो मानो देखो, सृष्टि अप्रहा कृतियों में रमण करती रहती है। विचार विनिमय क्या मानो देखो, वही एक मानवीय धारा कहलाती है, जिसको हम अपने में धारण करना चाहते है यह चारों प्रकार की सृष्टि एक दूसरे की पूरक कहलाई जाती है एक दूसरा प्राणी एक दूसरे प्राणी का सहयोगी बना हुआ है मानो वह अपने में ही सहयोगी नहीं है वह विचित्रता में सहकारिता कि स्थितियों में प्राप्त होता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ मैं यह विचार देना चाहता हूँ क्या प्रत्येक मानव की अपने जीवन की महान बनाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। यह जितनी चारों प्रकार की सृष्टि है यह एक प्रकार की मानो देखो, यज्ञोमयी सृष्टि कहलाती है यह यागा ब्रह्मणे लोका यह यागों में परणित

रहने वाली है क्योंकि देखो, वायु सुगन्ध देता है, तो याग कर रहा है माता पुत्र का पालन करती है, याग कर रही है मानो यह ब्राह्मण्ड एक याज्ञिक रूप में एक यज्ञशाला के रूप में परणित किया गया है जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान विद्यमान हो करके यागों में परणित हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, अपने में महान पवित्रता की धारण करता है अब मैं विशेष विवेचना न देता हुआ अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! दो शब्दों का विवेचना दे सकेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाः हिरण्यं प्रहा दिव्यां रथं सर्व भद्राणि मन्था। मेरे पूज्यपाद गुरूदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अमृतभरी अपनी वाणी का प्रसारण कर रहे थे, मानो यह ज्ञान और विज्ञान की चर्चा, तो नित्यप्रति करते ही हैं, आज इन्होंने अपना प्रकरण, केवल सृष्टि की आभा का, चारों प्रकार की सृष्टि का निर्माणवेत्ता कौन है? इसका वर्णन कर रहे थे। चारों प्रकार की सृष्टि का वर्णन, मेरे प्यारे! प्रभु ने किया है, पूज्यपाद गुरूदेव यह निर्णय करा रहे थे। परन्तु जब यह विचारा जाता है कि मेरे पूज्यपाद गुरूदेव जिन शब्दों का प्रतिपादन कर रहे हैं, इन शब्दों में कोई रहस्यतम तो भी होना चाहिए परन्तु मैं यह कहा करता हूँ कि प्रत्येक वस्तु ही, प्रत्येक शब्द ही संसार का रहस्यमय माना गया है जब मैं यह विचारता हूँ कि मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अपनी विचार धारा को प्रवाह से मानो प्रभावित कर रहे थे, आज जिस आकाश हमारी यह जो आकाशवाणी है, यह मानो मृत्यु लोकाम् ब्रह्मवाचाः वह यहां देखो, जहां हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहां यागां ब्रह्म वाचप्पव्हे लोका वहां एक याग की रचना हो रही है, मानो मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो रहा था यह उच्चारण कर रहा था, हे यज्ञमान! तू यज्ञोमयी है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि तेरे जीवन की धाराएं परम्परागतों से ही, विचित्र मानी गई है। परन्तु जहां मैं यज्ञमान के लिए यह वाक उच्चारण कर रहा हूँ,

वहां सदैव मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ, कि संसार में मानव को अपनी मानवीयता को लाने के लिए मानो देखो, एक याग करना चाहिए। प्रत्येक यू तो मानो प्रत्येक मानव याग करता रहता है, मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अभी अभी उच्चारण कर रहे थे, क्या यूं तो संसार याग करता रहता है परन्तु याग उसे कहते है, जिसको मानव अपने में निहारता रहता है, और सुगन्धि देता रहता है। यह सुगन्ध वाला ब्रह्माण्ड, जब बन जाता है तो यह मानो यह याज्ञिक बन जाता है। प्रत्येक मानव की याज्ञिकता उसके मानवीय, मौलिक गुणों में निहित रहती है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव के समीप, अथवा उनके समीप आने का प्रयास करता हूँ, तो नाना प्रकार की मुझे प्रेरणा देते रहते है, उन प्रेरणाओं का जो स्रोत है मानो वह मेरे हृदय अगम्यता में परणित रहने वाला है। जब मेरे पूज्यपाद गुरूदेव ने, मुझे और भी नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट कराते हुए, इन्होंने नाना प्रकार की युक्तियां इन्होंने मुझे प्रगट कराई, तो मैं आज उनमें न जाता हुआ, मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव की आज्ञा पा करके, मैं यज्ञमान को केवल, अपनी मानो हार्दिक वेदना प्रगट करने आया हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि जिसका द्रव्य मानो देखो, सदुपयोग में जाता है। वह मानव बड़ा सौभाग्यशाली है, प्रत्येक मानव हे यज्ञमान! तेरा जो द्रव्यां ब्रह्म वाचा मानो देखो, इसका सदुपयोग हो रहा है, और वह तेरे में समाहित हो रहा है, परन्तु देखो, इस धारा को ले करके, मेरे पूज्यपाद गुरूदेव ने भी अपने वाक प्रगट किए, मुझे भी वह वाक प्रेरित कर रहे है, परन्तु देखो, मैं इस संसार को दृष्टिपात कराना चाहता हूँ, मैं पूज्यपाद गुरूदेव को कुछ अपने वाक प्रगट कराना चाहता हूँ, कुछ परिचय देना चाहता हूँ, और वह परिचय क्या है? कि यह जो संसार है, आधुनिक काल का जो जगत है, यह विज्ञान का काल माना गया है, परन्तु यह वैज्ञानिक युगों में, इन मानो देखो, इन धाराओं की क्रियाकलापों की बडी निष्ठा और

महानता रही है। परन्तु देखो, जब मैं यह विचारता हूँ, क्या सम्भोसभा देव ब्रव्हे वाचन्नमा मैं यह कहता हूँ अपने पूज्यपाद गुरूदेव को निर्णय कराता हुआ, क्या हे प्रभु! सम्भो देवं ब्रह्मवाचा आधुनिक, यह जो वर्तमान का काल है, यह बड़ा विचित्र काल चल रहा है, इस काल की चर्चा परिचय मैंने कई काल में भी मानो परिचय कराए है, परन्तु परिचय कराना क्या है? एक रात्रि आई, वह परिचय मानो निष्फल हो गया दूसरी रात्रि आई वह भी असफल हो गया, परन्तु चिन्तन करने से यह प्रतीत होता है, क्या प्रत्येक मानव को गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करनी चाहिए, गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करने वाला, प्राणी इस संसार में सौभाग्यशाली कहलाता है। परन्तु देखो, यह अग्नि गार्हपथ्य और गर्हपथ्य दोनों प्रकार की अग्नियो का तू चयन करने वाला बन।

तो मेरे प्यारे! विचार विनियम क्या, प्रत्येक मानव अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाना चाहता है, विचित्र बनना चाहता है, ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता है, जहां मानो देखो, अकृतो ब्रह्म वाचा मानो एक आदर्श हमारे जीवन का होना चाहिए। मैं आज देखो, यागं ब्रह्मणा हे यज्ञमान! तू याग कर रहा है, इस याग के सम्बन्ध में परम्परागतों से ही, नाना प्रकार की धाराएं रही है नाना प्रकार का इनका मन्तव्य रहा है परन्तु देखो, ऐसा समाज कृतियों में रमण करता रहा है। तो आज देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय कराना चाहता हूँ, कि आधुनिक काल और पूर्व काल का विज्ञान और आध्यात्मिकवाद कितने मानो देखो, आंगन में नृत्त करता रहा है कितने आंगन में नृत्त करता रहा है, कि दृष्टिपात अपने में धारण करने वाली है, अपने में उज्ज्वल बनाने वाली है, परन्तु देखो, उनकी महानता उनके चरित्र होने चाहिए। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव को यह निर्णय कराना चाहता हूँ, यह वाक प्रगट कराना चाहता हूँ कि आधुनिक काल, विज्ञान के युग में, अपनी महानता चाहता है, विज्ञान का युग आ रहा है

मैं यह कहता हूँ पूज्यपाद गुरूदेव को तो प्रतीत है कि आधुनिक काल का चाहे वरुणास्त्रो का निर्माण हो जाए वास्तव में वरुणस्त्रों का निर्माण अब तक नहीं हुआ, परन्तु किसी भी प्रकार का निर्माण क्यों न हो जाए, परन्तु वह जो निर्माण है, वह मानो देखो, विज्ञान का आधुनिक काल का एक ईकाई में गति कर रहा है। एक ईकाई वाला विज्ञान है। परन्तु देखो, जब विज्ञान एक ईकाई में चला गया, विज्ञान में प्रति असुतो रह गई, इसमें एक महानता का प्रदर्शन नहीं हो रहा है। तो मेरे प्यारे! विचारं ब्रह्म वाचा देवो पूज्यपाद गुरूदेव को मैं यह निर्णय देना चाहता हूँ, जो मैंने दृष्टिपात किया है, जो मेरा अनुभव है, मैं कुछ चर्चा प्रगट करना चाहता हूँ मेरे अक्रूतो पूज्यपाद गुरूदेव मानो देखो, अग्र्याधानं ब्रह्म वाचा आधुनिक काल का मानव विज्ञान ईकाई में रमण कर रहा है, जब यह पूर्ण रूपेण बन जाता है तो मानो देखो, एक दूसरा मानव मानव यह प्रीति का एक दूसरे का सहायक बन जाता है, और एक दूसरे का सहायक बन करके, वह जीवन को ऊँचा बनाता ही रहता है।

तो ऐसा मुझे स्मरण है मानो मैं पूज्यपाद गुरूदेव से यह निर्णय कराना चाहता हूँ, कि आधुनिक जो काल है, यह बड़ा विचित्र काल है, इस काल के द्वारा हमें अपने को विजय करना चाहिए क्योंकि विजेता नहीं बनेंगे, तो हमारा जीवन मानो देखो, निष्क्रिया बन जाएगा। तो विचार विनिमय क्या जहां मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव से यह वाक प्रगट करा रहा हूँ, वहां मुझे ऐसा प्रतीत भी होता है, क्या आगाम् ब्रह्म वाचो असुतो दिव्यां गतं ब्रह्म वाचा ऐसा पूज्यपाद गुरूदेव मैं आपको निर्णय कर रहा हूँ तो ऐसा मुझे स्मरण है क्या वह विज्ञान के युग में मानो देखो, विद्यालय में अनुसन्धान करते रहते थे विचार विनिमय करते रहते थे जिन विचार धाराओं को अपनाने के पश्चात मानव का जीवन पवित्रतम बन जाता है। पवित्र आभा में रमण करने लगता है परन्तु देखो, आज मैं यह उच्चारण कर

रहा था कि जहां हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहां एक यागों सामा गसम ब्रह्म वाया वहां साम गान की रचना हो रही है हे ब्राह्मण! हे उद्गीत गाने वालो! हे उद्गाता! तुम्हारी वाणी पवित्र होनी चाहिए, तुम्हारी वाणी में मानो देखो, प्रभु की प्रेरणा होनी चाहिए जिससे तुम्हारी वाणी महान बनी रहे। तो ऐसा मुनिवरों! देखो, ऐसा वेद के आश्रय में आता रहता है, जिसके ऊपर मानव विचार विनियम करता रहता है। अनुसंधान करता रहता है। तो आज मैं अनुसंधान में कोई जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु तुम्हें यह विचार अवश्य देने के लिए आया हूँ, हे मानव! तू अपने जीवन को महान बनाने का प्रयास कर, जितना जीवन तेरा महान होगा, उतनी तेरी प्रवृत्ति ऊँची होगी, उतना तेरा आहार शुद्ध पवित्र होगा उतना ही मानो तू नाना प्रकार के प्रपञ्चाम ब्रह्मे इससे दूरी हो सकता है।

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, विज्ञान आधुनिक काल का विज्ञान बड़ा विशाल बन गया है, श्वासाय गतो प्रव्हे परन्तु देखो, मैं विज्ञान को ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में परम्परागतों से ही नृत्त कर रहा है। वह नृत्त करता हुआ ज्ञान और विज्ञान अपने में पूर्णता को प्राप्त हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने ऐसा वत्त उच्चारण किया, तो आनन्दं ब्रह्मे वाचो वृत्ति देवाः मेरे प्यारे! आनन्द नहीं आ पाया, समय सम्भवी देवो ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे वाचो दिव्यां गता प्रव्हा पूज्यपाद गुरूदेव को मैंने आपको कई काल में वर्णन कराया था, यह जो वर्तमान का काल चल रहा है, यह विज्ञान का युग कहलाता है। परन्तु कैसा, दोषारोपण आ गया अन्तरिक्ष में, यह जो अन्तरिक्ष है यह दूषित बन गया है मैंने आपको वर्णन कराया परन्तु देखो, आधुनिक काल का विज्ञान कहता है, वैज्ञानिक कहते है कि हमें ऐसी कोई वस्तु को जानना होगा, जिस वस्तु से वायु मण्डल का शोधन हो जाएं, परन्तु कोई वैज्ञानिक कहता है, क्या वृक्षों का आरोहरण होना चाहिए, वृक्ष होने चाहिए, परन्तु कोई नदियों को कह रहा है क्या का मानो देखो, वायु असुतो

दूषित हो गया है, आपोमयी देखो, जल दूषित हो गया है, भिन्न भिन्न प्रकार की मानव टिप्पणियां कर रहा है। विचार रहा है, परन्तु मैं यह कहता हूँ कि टिप्पणियां होनी चाहिए परन्तु टिप्पणियों के साथ, अपने जीवन की एक मौलिकता होनी चाहिए, जिसको मानो देखो, याग याज्ञागां हम यौगिक बन सकते है हम यागों ब्रह्मे मानो देखो, वही इस वायु मण्डल के शोधन का एक ही मार्ग है, यदि शोधन करना है तो घृत के द्वारा, साकल्य के द्वारा, याग किए जाएं। हे यज्ञमान! तेरा जीवन मानो देखो, एक महान बन करके रहता है, आज जब तू यज्ञ में विद्यमान हो करके, वेदों की ध्वनियां गाता है, मानो वेद गाता ही रहता है, वेद का प्रकाश है, प्रकाश गाया ही जाता है, मानो देखो, वह प्रकाश जब गाया जाता है उस प्रकाश में से अमृत की धाराओं का जन्म होता है।

तो विचार मानो देखो, गाने वाला गाता रहता है गान गा रहा है परन्तु देखो, अपने में गति प्राप्त हो रही है विचार क्या है, मेरे पूज्यपाद गुरूदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया, आज मैं उन्हीं वाक्यों की पुनरूक्ति तो नहीं देने आया हूँ, परन्तु पुनरूक्ति हो भी जाती है विचार असुतो जो विचारों में निहित रहने वाला है तो मानो देखो, पूज्यपाद गुरूदेव! मैंने कई काल में वर्णन कराया है कि आप अपने जीवन को सदैव महान और पवित्र बनाने के लिए सदैव तत्पर रहो परन्तु देखो, प्रत्येक मानव को अपने जीवन को महान बना लेना चाहिए मानो देखो, कुछ ही काल हुआ, वैज्ञानिकों का एक समूह विद्यमान हुआ, उन वैज्ञानिकों के समूह में यह हुआ क्या वायुमण्डल दूषित हो गया है, इसके लिए क्या करना चाहिए? तो विश्व के वैज्ञानिकों ने यह अपने में घोषणा की है, कि गो घृत के यहां ऐसा परमाणुवाद उत्पन्न हो सकता है, अग्नि में तपाने से, जिस देखो, शुद्ध परमाणु का जन्म हो जाए, और अशुद्ध परमाणुओं का ह्रास होता चला जाए। परन्तु ऐसा निर्णय दिया है। वह ह्रासता को प्राप्त हुआ होगा, सम्भवा देखो, ब्रह्मवाचा अपने में

दिव्यता को प्राप्त हुआ होगा। परन्तु वेद का आचार्य वेद का मन्त्र यह कहता है कि मानव! तू अज्ञानता के मार्ग पर मत चल, तू मानो देखो, रूढ़ियों में प्रवेश न कर, तू वास्तव में वेद की धारा को अपनाने का प्रयास कर, जब तू वेद की धारा को अपनाएंगा, हे राष्ट्रपिता! हे राजन! तू मानो विचार धारा को महान बनाता हुआ चल, विचार धारा के दूषित होने पर, मानव की सर्व सम्पदा दूषित हो जाती है, मानवीयतव दूषित हो जाता है इसलिए दूषित नहीं होना चाहिए, जैसा यज्ञमान मानो देखो, याज्ञिक पुरूषों का चलन, हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। मैं वैदिक साहित्य की चर्चा कर रहा हूँ, मैं तो विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं न कोई व्याख्याता हूँ, कोई व्याख्यता भी नहीं हूँ केवल परिचय देना हमारा कर्तव्य है, परिचय दिया जा रहा है, देना चाहिए, परिचय में महानता की प्रतिष्ठा होती है। तो ऐसा मेरे पूज्यपाद गुरूदेव मैं सदैव इसमें प्रजा रहे अस्सुतम ब्रहे वाचन्नम ब्रह्मे हे प्रभु! मैं आपका सखा हूँ आप मुझे देखो, आसानादि दिए ऐसा देखो, मैंने अपने में धारण कराते हुए, यहां मानो देखो, यहां वैज्ञानिक जन यह घोषणा कर रहे हैं, कि याग हो, वायुमण्डल शुद्ध और पवित्र बन करके, मानव का जन जीवन बन करके रहे, परन्तु मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है, पूज्यपाद! क्या वह समय दूरी चला गया वह समय निकट नहीं रहा है, आधुनिक काल का मानव मानो देखो, एक अपने में ऐसी वस्तुओं को लाना चाहता है जिन धाराओं को देखो, विनाश हो सकता है, जिन धाराओं में विनाशता की उपलब्धि हो सकती है, परन्तु देखो, ऐसा स्वीकार नहीं किया गया। विचारां ब्रह्मे वाया असुतम देवाः मानो देखो, पूज्यपाद गुरूदेव को मैंने कई काल में, यह वर्णन कराया है, कि विज्ञान मानव को जहां उल्लास देता है, जहां प्रसन्नता देता है, वहां मानो को देखो, अप्रसन्नता में क्या अपनी धाराओं में इतना उर्ध्वा को प्राप्त नहीं हो पाता। जितना वह होना चाहिए था परन्तु विचार विनिमय क्या है हे मेरे पूज्यपाद

गुरूदेव आपने मुझे आज्ञा दी है, मैं यज्ञमान को अपना एक कंठ से अपने हृदय से आशीर्वाद क्या अपनी शुभकामना प्रगट करता रहता हूँ हे यज्ञमान! तू अपने द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है, मानो तू साकल्य को आहुति में प्रदान करता हुआ, हवि का तो प्रादुर्भाव हो ही रहा है हवि आपको भी देनी ही चाहिए परन्तु देखो, हवियों का जन्म होने लगा विचार विनिमय मुनिवरों! देखो, हवियाम मतं ब्रह्म वाया देवा वह हवि क्या है? मुनिवरों! जो अग्न्याधान के द्वारा प्रत्यक्ष होती है।

तो आओ, मेरे पूज्यपाद गुरूदेव मैंने आपको कई काल में यह वाक प्रगट कराते हुए कहा था, आज भी मैं उन वाक्यों की पुनरूक्ति करता ही रहता हूँ परन्तु देखो, मेरा विचार केवल यही है कि मानव संसार में ऊँचा बने, पवित्र बने, मेरी प्यारी पुत्रियाँ ऊँची बने, महान बने, महान बन करके अपने जीवन को सात्विक बना करके चले। तो विचार विनिमय क्या है क्या आधुनिक काल का जो मानव है वह गुरूड़म्बावाद में परणित हो गया है। मैं वास्तव में आधुनिक काल में, कोई वाक यथार्थ उच्चारण करने लगूंगा, तो आश्चर्य चकित हो जाओगे। हे प्रभु! यह मानव समाज, गुड़म्बावादी बन गया है, गुड़म्बावादी क्या है? मानो देखो, अशुद्ध प्रेरणा उत्पन्न होते ही, एक नई नवीनता का क्रूत उत्पन्न हो जाता है, एक नाना सम्प्रदायो के जन्म हो जाते है, इन्हीं जन्मो के कारण, यह मानव अपने में दूखित होता हुआ, अपने को अनुभव करता है। तो हे भगवन! मैं आपको यह निर्णय कराना चाहता हूँ, क्या यह संसार तो इसी प्रकार गति करता रहेगा, परन्तु मानव का कर्तव्य है, कि हम अपने जीवन को, एक महान धारा पर ले जाए, क्योंकि यह संसार तो देखो, यह संसार तो श्मशान भूमि भी बनती रहती है, यह संसार मानो कहीं पुष्पाञ्जलियां यागों का केन्द्र भी बन सकता है यह तो प्रभु की अनुपमता है मानो देखो, जो आज मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ मेरा हृदय प्रसन्न हो रहा है, मैं अपने में अपनेपन को प्रसन्न कर रहा हूँ मानो जलं ब्रह्मे वाया देवा मानो

देखो, मैं अपने में धारण कर रहा हूँ, सम्प्रदाम उनको ब्रह्मे तुम सम्प्रदायों के द्वार पर न पहुंचो सम्प्रदाय किसे कहते है? रूढ़ियों को कहते है। रूढ़ि किसे कहते है? जो ज्ञान के आने पर मानो समाप्त हो जाती है। उनका नाम रूढ़ि कहलाता है। रूढ़ि की विवेचना, मेरे पूज्यपाद गुरूदेव ने भी कई काल में दी, आज तो केवल मैं इतना उच्चारण का रहा हूँ, केवल मुझे इतना उच्चारण करना है, कि मानव समाज को अपने जीवन की धाराओं को एक महानता में परिवर्तित कर देना चाहिए। विज्ञान यहां जब सार्थक बनता है, आधुनिक काल का मानव यह कहता है विज्ञान वैज्ञानिक भी कुछ कुछ कहता है, क्या यह तो मानो वेद कहते हैं यह तो पामरों को मानो देखो, एक क्रियाक्लाप है। जब मैं यह कहता हूँ क्या ऐसा नहीं, यह मूर्खों का क्रियाकलाप नहीं है, यह मानो देखो, परमपिता परमात्मा की महती है, आनन्दित है, उज्ज्वलता है, पवित्रतता है, मानो जिसको धारण करके मानव परमपिता परमात्मा की अनुपम धाराओं में गतियां कर सकता है।

तो विचार क्या मानो देखो, विचार के विपरीत है दूरी न चला जाऊं कि हम अपने जीवन में, एक विचित्रता को लाना चाहते हैं, और वह दूरी क्या है? मुनिवरों! देखो, वह दूरी यज्ञक कहलाती है। आओ, मैं आज तुम्हें इसकी विवेचना प्रगट करूंगा। परन्तु देखो, मैं विशालता मैं नहीं जाना चाहता हूँ, मैं अपनी धाराओं को उतनी ही सीमित बनाना चाहता हूँ जिससे मेरे जीवन की धाराएं आनन्दित हो सके, तो इसीलिए आज का विचार विनिमय क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, यह गुरूदेव द्रुदम् अक्रतो देवो असुतो क्रति श्वन्धन्म मानो देखो, मैं उच्चारण कर रहा था, अपने पूज्यपाद गुरूदेव के समीप, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, द्रव्य का सदुपयोग करता रहे, क्योंकि जिस यज्ञमान के गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है, वह गृह दम्पति महान और पवित्र कहलाते है मानो इसी प्रकार, मानव को

अपने जीवन की धाराओं में रत्त रहते हुए, और भी नाना प्रकार के मानो देखो, रुद्रयागां सम्भवति प्राप्त हो रही है, वह निष्क्रिया बन जाती है।

मानव में अनिवार्य गुण

तो विचार विनिमय क्या मैं पूज्यपाद गुरूदेव से उच्चारण कर रहा था, आधुनिक काल का विज्ञान, यह स्वीकार करने लगा है, क्या भवो सम्भवा गो घृत में ऐसी विशेषता है जो मानो विष को निगल जाता है और अपने में अमृत को सिंचन करता है, ऐसा मानो देखो, धारा में स्वीकार करना चाहिए। जब मैं यह विचारने लगता हूँ, कि मेरे पूज्यपाद गुरूदेव, मुझे नवीन नवीन वाक्यों की प्रतिभा प्रगट कराते है। तो मेरा हृदय गद गद हो जाता है। मैं अपने में यह स्वीकार करता हूँ, क्या यह मानो देखो, प्रभु की अनुपम कृपा है आनन्दित है, जीवन में धाराओं का जन्म होता रहता है। तो इसलिए आज का वाक अब मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव अपना वाक मेरे प्रगट कराए दिए दिए अप्रताम मानो देखो, वह क्या है कि मानव से मानव में स्नेह, प्रीति, आभा ज्ञान रहना चाहिए। क्योंकि यह ज्ञान ही मानव को उर्ध्वा लोक में ले जाने वाला है। इस ऊर्ध्वा की आभा में रमण करना है जीवन को जानना है जीवन की धाराओं में रत्त रहते अपने जीवन की प्रतिभा को ऊँचा बनाए। तो आज मेरे पूज्यपाद गुरूदेव मुझे सृष्टि का वर्णन कर रहे थे, और मैं अपनी वही वार्ता कि समाज में मानव को गुड़म्बावादी नहीं बनना चाहिए, मानव को अपने में महान बन करके याज्ञिक बन करके याग को पूर्ण करना है परन्तु देखो, मैं यह इतना वाक उच्चारण कर रहा हूँ, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव से आज्ञा पाऊंगा हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मानो तू सौभाग्यशाली है इसी प्रकार इसी के सन्दर्भ में वाक सन्धन्म ब्रह्मे श्रुरति असुतो यह वाक्यों की सन्धि हो गई है इसी प्रकार जब हम और भी ऊर्ध्वा में गति करते है तो मानो यही परमात्मा से मिलान करा देती है यही शक्ति है जो

परमात्मा से मिला देती है तो आज का वाक यह क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरूदेव : मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने अपने कुछ विचार नियुक्त किए और इन्होंने अपने विचारों में कहा हे क्या संसार महान बनना चाहिए। परन्तु इस संसार की महानता इसी में है, कि प्रत्येक प्राणी देव पूजा याग करता रहे सुगन्धि को देता रहे सुगन्धि को देने वाला वह परमपिता परमात्मा है मानो वह संसार को सुगन्धित कर रहा है मानव को भी सुगन्धित करना है मानो वह पक्षी जनों को भी नाना सुगन्ध देता है तो वे सुगन्धित है तो इसी प्रकार मानव को अपने जीवन को सुगन्धित बनाना चाहिए। याज्ञां यज्ञ करने चाहिए जैसा मेरे पुत्र ने वर्णन किया है परन्तु आज मैं भी अपनी शुभकामना कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो हे यज्ञमान! तेरी धाराएं विचित्र बनी रहें परन्तु तेरी धाराओं में जन्म होना चाहिए, इसी प्रकार जब यह वाक मैंने तुम्हें प्रगट कराए है, तो जीवन एक धारा में रहना चाहिए मानो देखो, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का अखण्ड ज्योति बनी रहे और वह अखण्ड ज्योति बन करके, तेरे जीवन की सहायक बन करके तेरे जीवन को अमृत बनाया जा रहा है। तो इसीलिए यह आज का हमारा वाक देखो, जैसा महानन्द जी ने प्रगट किया है, वैसा ही मानो प्रगट करते हुए इसमें हीनता का प्रादुर्भाव हो जाता है। तो विचार विनिमय क्या आज का विचार यह, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हे यज्ञमान! तू याज्ञिक बन करके, हमारे जीवन को ऊँचा बना। हे यज्ञमान! तू याज्ञिक बन करके, तेरी धारा पवित्र बनती रहे, यह आज का वाक अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने जीवन को सौभाग्यशाली बनाते हुए, और अपने जीवन की महानता को

जान करके परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाए, यह है आज का हमारा वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि हम अपने को महान चुनौती प्रदान करें, इसके क्षेत्र में लाने का प्रयास करे, यह आज का वाक है, कल मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि आज हम अपने में, अपने को जानना चाहते हैं, परन्तु देखो, यह वाक अब समाप्त होने जा रहा है। आज का वाक समाप्त, अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। दिनांक : २३ ०८ १९८३।

9 २८ ०८ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है आज हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे, क्योंकि हमारे यहां, उस महामना देव की महिमा का परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान मानो उसकी प्रतिभा बन करके रहा है। उसकी जो प्रतिभा है, वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत प्रोत है, आज का हमारा वेदमन्त्र यागों के ऊपर अपनी कुछ चर्चा कर रहा था, क्योंकि यज्ञोमयी रथाः विष्णु क्योंकि यज्ञ का नामोकरण भी विष्णु कहा जाता है। विष्णु के यहां भिन्न भिन्न प्रकार के, वैदिक साहित्य में स्वरूप माने गएं है, यहां एक यज्ञोमयी स्वरूप भी विष्णु को कहा गया है। क्योंकि विष्णु नाम जो जीवन देने वाला है, तो यज्ञोमयी विष्णु जो कर्म है, वह सर्वत्र मानव को प्रकाश देते हैं। सुगन्धित करते है। और सुगन्ध से मानव के हृदय में, एक महानता का दिग्दर्शन होता है। तो इसीलिए हमारे यहां याग जैसे कर्मों को, वैदिक साहित्य में

विष्णु की उपाधियां प्रदान की है, अथवा विष्णु ही बहुत वर्णन किया है हम विष्णु नामो का हम बहुत से वाक लेते रहते है, परन्तु जहां विष्णु की विवेचना आती रहती है बेटा! विष्णु नाम मानो उस आभा को कहा जाता है, जिसमें मानव का जीवन पवित्र होता है, और संसार का शुद्धिकरण होता हो, मैंने बहुत पुरातन काल में यागों के सम्बन्ध में बहुत सी टिप्पणियां की है, अथवा बहुत से विचार दिए है, क्योंकि हमारे यहां जब सृष्टि का सृजन होता है, तो सृष्टि के प्रारम्भ में भी हमारे यहां मानो यज्ञ जैसा एक कर्म है। यह जो ब्रह्माण्ड है, अथवा प्रकृति का मण्डल है, यह सृष्टि है, यह एक प्रकार की मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला के रूप में इसका वर्णन आता रहता है। क्योंकि आत्मा सब रूपों में यज्ञमान माना गया है, इस शरीर में रहने वाला जो चैतन्य आत्मा है। वह प्राण स्वरूप मानो देखो, आत्मा विद्यमान है, आत्मा के कारण ही शरीर रूपी यज्ञशाला का नृत्त हो रहा है, और वह अपना क्रियाकलाप कर रहा है। इसी प्रकार यज्ञमान याग की आत्मा माना गया है, जैसे शरीर रूपी यज्ञ की आत्मा मानो देखो, यज्ञ की आत्मा माना आत्मा है। इसी प्रकार बाह्य जगत में जो यज्ञमान याग कर रहा है मानो वह भी यज्ञ की आत्मा होती है, यज्ञ का आत्मा होता है। वह यज्ञ का आत्मा वह उसका देखो, संचालन करने वाला है, अथवा निर्वाचन करने वाला है, वह ब्रह्मा उद्गाता का निर्वाचन भी कर रहा है।

तो मुनिवरों! देखो, वह एक निर्वाचन हो रहा है, वही तो मानो देखो, एक सुन्दर याग की एक प्रतिभा मानी जाती है, मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यागों के सम्बन्ध में नाना प्रकार के विचार दिए है, परन्तु देखो, यह याग हमारे यहां ऋषि मुनि वैज्ञानिकों ने पवित्रतव माना है, एक समय बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, राजा रावण के राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, दूषित वायुमण्डल बना, भगवान राम ब्रहे मानो देखो, रावण के यहां राम की आख्यिका बनी हुई है, परन्तु राम का

प्रकरण मैं इस सन्दर्भ में लेना नहीं चाहता। विचार क्या रावण के यहां एक समय बेटा! जब वैज्ञानिकों का प्रादुर्भाव हुआ विद्यालय में मानो देखो, विश्वविद्यालय में लंका में बेटा! जब विज्ञान पराकाष्ठा पर पहुंचा तो मेरे प्यारे! देखो, दूषित वायुमण्डल बन गया, जब दूषित वायुमण्डल बना तो एक समय राजा रावण के विधाता कुम्भकरण उनके पुत्र मेघनाथ जी अहिरावण पातालपुरी धीश मेरे पुत्रों! देखो, कुछ ऐसे अश्विनी कुमार सुन्धवा वैद्यराज और भी मुनिवरों! देखो, नाना वैज्ञानिकों की एक सभा हुई, मुझे उस सभा के कुछ उपदेश और उनका चलन मुझे स्मरण है। जिसमें मुनिवरों! नाना ऋषिवर ऋषि भारद्वाज मुनि को निमन्त्रित किया गया भारद्वाज मुनि के विद्यालय में से उनकी विज्ञानशाला में से ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारी पण्पेतु, ब्रह्मचारी सुकेता स्वाधु मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सामभूक ब्रह्मचारिणी की शकुन्तकेतु नाना मुनिवरों! देखो, उनके समीप राजा रावण की सभा में उपस्थित हुए, वह महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज की अध्यक्षता में बेटा! वह सभा हुई। उसमें मुनिवरों! देखो, कहीं अग्नि वेशां वैज्ञानिक उस समय, बड़े विशाल थे। मेरे पुत्रों! राजा रावण के यहां मानो विज्ञान यन्त्रों का परीक्षण होता रहता है, उससे वायु मण्डल में दूषित पन आ गया, और दूषित पने में यह हुआ, कि अति वृष्टि, अनावृष्टि मानो विचारों में दूषितपना आ गया मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार का वायुमण्डल दूषित बना तो राजा रावण ने महर्षि भारद्वाज मुनि से यह कहा क्या महाराज हमारा जो वंशलज है, अथवा हमारा यह जो पारिवारिक जीवन है, हमारा जो क्रियाकलाप है, लंका का वह आपके विद्यालय से सम्बन्धित रहता है। मानो यह आपके यहां हम सदैव विज्ञान की शिक्षा पाते रहे है, क्योंकि हम भी आप के यहां छः छः माह तक विज्ञान की शिक्षा पाते रहे है, और महाराजा कुम्भकरण मानो देखो, वह जितने भी वैज्ञानिक है, यह

वैज्ञानिक सब आप ही के द्वारा शिक्षा पाते रहे है। हे प्रभु! हम जानना यह चाहते है कि हमारा राष्ट्र यह संसार दूषितवाद में परणित हो रहा है, इस दूषित वायु मण्डल को शोधन करने का कोई क्रियाकलाप हमें नियुक्त कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि से जब यह वाक श्रवण किया तो उन्होंने ब्रह्मचारियों को आज्ञा दी। हे ब्रह्मचारियों! शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके इसके ऊपर कुछ चिन्तन किया जाए, तो मुनिवरों! देखो, चिन्तन वेत्ताओं ने चिन्तन करते हुए क्योंकि भारद्वाज को सब प्रतीत है, उन्होंने महाराजा कुम्भकरण से कहा हे कुम्भकरण! कुम्भकरण का बाल्यकाल का नाम देखो, ऋषेशकेतु ब्रह्मचारी था वह ऋषेशकेतु ब्रह्मचारी से बोले, हे ब्रह्मचारी! हे कुम्भकरण! ब्रीही तुम मानो देखो, यहां ब्रह्म का चिन्तन करते हो, जहां विज्ञान में तुम पारायण हो, तुम्हारा व्यवहार कुशल रहता है, परन्तु वहां कोई न कोई स्थितियां ऐसी नियुक्त करो जिससे शुद्ध वायुमण्डल बन जाए। तो मुनिवरों! देखो, उस समय महाराजा कुम्भकरण ने अपने व्रते सम्भव सहपाठी कृति से कहा हे कृति ब्रह्मचारी! तुम नियुक्त करो कि इसमें, क्या क्या होना चाहिए?

तो मेरे प्यारे! देखो, नाना ब्रह्मचारियों से प्रश्न अश्वत होने लगे महाराजा मेघनाथ से, क्योंकि वह भी पारायण थे विज्ञान में, इन्द्र को उन्होंने विजय किया था, वह इन्द्रजीत कहलाते थे। क्योंकि वे त्रिपुरी के स्वामी थे, उस काल में उन्होंने कहा कि भई! मेरे विचार में तो यह आता है ऋषिवर! क्या वायुमण्डल को दूषित होना, यह तो विज्ञान की मानो एक प्रति अस्वा है, परन्तु इसके ऊपर और मानो देखो, इसके प्रति श्रोत है हम अपनी श्रुति अपना एक मानो देखो, द्वितीय क्रियाकलाप बनाए की याग जैसा कर्म हो। क्योंकि याग ऐसा कर्म है, मानो देखो, जिससे हम वायुमण्डल को शोधन कर सकते है। विचारों का भी हमें याग करना है, और जहां विचारों का याग करना है, वहां वेदमन्त्रों की ध्वनि के द्वारा, मानो वायुमण्डल को भरण

करना है।

तो मेरे प्यारे! यह जब उन्होंने वार्ता प्रगट की, तो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा मुझे भी यही आंगन में आता है, ब्रह्मचारी कवन्धि ने भी यही कहा तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! वह सब स्वीकार कर लिया और महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब यह स्वीकार किया कि वास्तव में याग होना चाहिए। तो राजा रावण के यहां मानो याग की घोषणा हुई, और उन्होंने सबमें प्रथम अश्वमेध याग की रचना की अश्वमेध याग की रचना करने के पश्चात उन्होंने यह घोषणा की अपने राष्ट्र में क्या प्रत्येक गृह में देव पूजा होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, तो मानो देखो, याग का नाम विष्णु माना गया है। हे विष्णु! पूजा कहलाती है, मानो देखो, यज्ञोमयी विष्णु यह विष्णु है सतोमय है क्योंकि सत का नाम ही विष्णु माना गया है।

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहां, क्योंकि विद्यालय में नाना प्रकार के यन्त्रों निर्माण किया था, जैसे वहां अश्वमेध याग हुआ तो यन्त्रों को स्थित किया गया। तो यन्त्रों में मुनिवरों! देखो, वह शुद्धिकरण, वायुमण्डल में, मेरे पुत्रों! देखो, तरंगें जाती थी उन तरंगों के चित्र, जब मानो यन्त्र में आते रहते और वायु मण्डल में जैसे यज्ञमान स्वाहा कहता, होता गण जैसे स्वाहा कहते, तो मानो वायुमण्डल में जा करके, वह जो स्वाहा के परमाणु थे, यज्ञमान अपनी तरंगों से देखो, साकल्य की, जो साकल्य की तरंगें थी, वह जब तरंगित होने लगी, तो ऐसा मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है, कि उनके चित्र आने लगे, और दूषित वायुमण्डल को परमाणु को निगलने लगे और वह परमाणु शुद्धिकरण करने लगे। तो मेरे प्यारे! ऐसा कुछ स्मरण आता रहा है, वैज्ञानिकों ने यह बहुत पुरातन काल में सिद्ध किया है, विचारा है, चिन्तन किया है, कि हमारे यहां यागों मयी जीवन होना चाहिए याग का नाम ही विष्णु है। ये विष्णु हमारा कल्याण करने वाला है,

जैसे मुनिवरों! देखो, विचारों का और साकल्य का जब दोनों का शुद्धिकरण हो जाता है, तो वायुमण्डल पवित्र बन जाता है। जैसे मुनिवरों! देखो, ग्रह में, एक गृह में तो क्लह रहता है एक गृह में एक दूसरे की वार्ता को प्राणी स्वीकार नहीं कर रहा है, मानो वहां कलह का वास बन गया है। वहां प्रति क्रोध बन गया है, परन्तु देखो, जिस गृह में, एक मानव मानव से प्रसन्न हो रहा है पति पत्नी से प्रसन्न है, और देखो, पत्नी पति से प्रसन्न है बाल्य, बालिका एक दूसरे से प्रसन्न हो रहे है, गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा हो रही है, प्रातः कालीन गृह में याग हो रहा है, अतिथि की सेवा हो रही है मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्म का चिन्तन हो रहा है, उस ब्रह्म के चिन्तन में एक दूसरे की वार्ता को प्रत्येक प्राणी स्वीकार करता है तो वह गृह मुनिवरों! देखो, परमाणुवाद से शोधन हो रहा है। विचारों से शोधन हो गया है, उसमें मेरे पुत्रो! स्वर्ग का वास हो रहा है तो मुनिवरों! देखो, स्वर्ग कहा प्राप्त होता है। जहां विष्णु की पूजा होती है। विष्णु की पूजा क्या? याग है। विष्णु की पूजा क्या? सत्य का चिन्तन करना है, विष्णु की पूजा क्या है? मानो विचारों का शुद्धिकरण कर अपने विचारों को पवित्र बनाना है। राष्ट्र को पवित्र बनाना है। तो मेरे प्यारे! विचार विनियम क्या राजा रावण के यहां यह घोषणा हो गई कि प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए।

तो मुनिवरों! प्रत्येक गृह में याग हुआ तो राजा रावण का राष्ट्र का मानो देखो, नवीनीकरण हो गया है, शुद्धिकरण हो गया, शुद्धिकरण हो करके मुनिवरों! देखो, उनके राष्ट्र में समय समय पर वृष्टि प्रारम्भ होने लगी, देखो, मुनिवरों! देखो, प्रत्येक गृह में एक दूसरे का ऋणी भी नहीं रहा, जब ऋणी नहीं रहा तो अवऋण हो गया, देखो, अश्वमेध याग करने वाला राजा, अपने में अपने को सौभाग्यशाली स्वीकार करता है। तो मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, ऐसा कुछ प्रतीत हो रहा है, मानो देखो, राजा रावण के यहां, नित्यप्रति याग होते रहते

थे, गृहों में याग होते रहते थे, यही शुद्धिकरण बेटा! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने, अपने विद्यालय में मानो देखो, विज्ञानशाला में इस प्रतिभा को अपने में धारण किया है, इसी आभा को लाने के लिए, उन्होंने विज्ञानशाला का निर्माण किया, उस विज्ञानशाला में विष्णु की पूजा, और उस विज्ञानशाला में मुनिवरों! देखो, हमारे यहां ऐसा माना गया है, कि वायु मण्डल को शोधन करना है, पवित्र बनाना है, विचारों में मुनिवरों! देखो, शुद्धिकरण करना है जिस स्थली पर महापुरुष रहते है मानो वह याग जैसे आध्यात्मिक वाद की चर्चा करते है, वह गृह में मुनिवरों! देखो, पवित्रता आ जाती है तो विचार विनिमय क्या वह यज्ञमान बड़े सौभाग्यशाली होते है जिन अपने गृहों में वेद की ध्वनि के द्वारा यागों का चलन कराते रहते है द्रव्य के द्वारा द्रव्य का सदुपयोग करके साकल्य को मानो देखो, उसमें अग्निहोत्र करके उसमें उद्बुद्ध करते है। हे अग्नि! उद्बुद्ध स्वाहा होने वाली अग्नि! तू मेरी अन्तरात्मा को ऊँचा बना। हे उद्बुद्ध होने वाली आत्मा! तू आत्म चिन्तन करती हुई तू प्रभु का दिग्दर्शन कर। मेरे प्यारे! देखो, जब देखो, उद्बुद्ध स्वाहा कह करके यज्ञमान अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके साकल्य देखो, श्रद्धामयी घृतोमयी श्रद्धा वह अग्नि को प्रदीप्त करता है। क्योंकि देखो, अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है। हे अग्नि! तू संसार का कल्याण करने वाली है। हे अग्नि! तू कहीं काष्ठ में रहने वाली है, हे अग्नि! कहीं तू माता के विचारों में रहने वाली है। हे अग्नि! कही तू पितरों के लोकों में रहने वाली है, हे अग्नि! कहीं तू द्यौ लोक में ऊर्ज्वा को प्राप्त करके सूर्य को प्रकाशित कर रही है। हे अग्नि! कहीं तू यज्ञशाला में प्रदीप्त हो रही है। कहीं माता के द्वारा तू भोजनालय को तपा रही है। मानो देखो, यह अग्नि मङ्गलम ब्रह्मे वाचा वह मङ्गलमय देने वाली अग्नि है। जिसके द्वारा मुनिवरों! देखो, हमारे जीवन का शुद्धिकरण होता है।

तो मुनिवरों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता

है, जहां राजा रावण के यहां, मुनिवरों! देखो, नित्यप्रति याग होता था, देखो, महारानी मन्दोदरी राजा रावण प्रातःकाल में याग करते थे, एक समय बेटा! देखो, राजा रावण याग जैसे ही सांयकाल को मानो देखो, भोज्य और विचार विनिमय करके, वह जब निंद्रा की गोद में पहुंचे, तो मुनिवरों! देखो, उन्हें कही ऐसा वेद का एक मन्त्र स्मरण आया था, उस काल में, स्मरण वह वाचम् ब्रह्मे मृत्युञ्जम् भवे सम्भवा देवा मानो देखो, यह वेदमन्त्र एक आख्यिका स्मरण आई, उन्होंने यह विचारा कि मानव के हृदय में, जब यागां ब्रह्मे वाचं ब्रह्मलोकाम यज्ञो व्रताः मानो देखो, उन्होंने कुछ ऐसा अपने में उन्हें एक वेदमन्त्र स्मरण आया, जिस वेदमन्त्र में उसकी आख्यिका उसका विचार यह कह रहा था, व्यापक रूप से की मानव की मृत्यु नहीं हो सकती, जो वेदमन्त्र के आधार पर, अपने जीवन का शुद्धिकरण कर लिया जाता है। क्योंकि वेद मन्त्रों में, ऐसे ऐसे विज्ञान की चर्चा आती है, वेद की आख्यिका कहती है, दुरभाषं ब्रहे दुरभाषं द्रुव्हे असुतो वाचाम देवो ब्रीहि व्रताहं वायु रथप्प्व्हे वाचो वाचकाय स्वस्ती द्रुहा वह सम ध्वनि असुतो वाचन्नमा नमस ब्रह्मे वाचा वेद की आख्यिका यह कहती है कि मानव एक आपति काल में आ गया है, कहीं मानो देखो, व्याघ ने आक्रमण कर दिया है, वह अपनी ध्वनि उच्चारण कर रहा है दूसरा प्राणी कह रहा है मैं आ रहा हूँ परन्तु देखो, अपने साहस में रहना वह देखो, उसकी सहायता वही शब्द करता है, उस शब्द के ऊपर एक विज्ञान के, यन्त्र की रचना हो सकती है। उसी शब्द के ऊपर मुनिवरों! देखो, राजा रावण ने, एक यन्त्र का निर्माण किया था बेटा! हिमालय की कन्दराओं में विद्यमान हो करके।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है राजा रावण ने और देखो, महाराजा शिव ने एक यन्त्र का निर्माण किया था मुनिवरों! देखो, जिसको दुरभाषी अश्वानाम वृत्तिका यन्त्र कहते थे वृत्तिका यन्त्र उसे कहते है। जहां मानव के साहस की चर्चा,

जैसे मानो एक मानव यह कह रहा है, मैं आ रहा हूँ, ध्वनि कर रहा है, मैं तुम्हारे जीवन को रक्षा करूंगा। मानो उसका साहस बलवती हो जाता है, उसके शब्दों की, उसकी मानो कृतिका मानो उसके हृदय में समाहित हो जाती है। तो मानो देखो, उसी शब्द को ले करके, यन्त्र का निर्माण किया गया, मानो देखो, जिसका सम्बन्ध, मानव के नाभि केन्द्र से हो जाता है, केन्द्र से हो करके महाराजा शिव और रावण ने दोनों ने उस यन्त्र का निर्माण किया था, बारह वर्ष का तप करने के पश्चात। मेरे प्यारे! देखो, वह यन्त्र ऐसा था, क्या एक मानव संग्राम कर रहा है, संग्राम करता हुआ मानो देखो, संग्राम हो रहा है। वह यन्त्र कहीं भी देखो, उसके जीवन से सम्बन्धित उस यन्त्र की तरंगे उसके मानो देखो, बल को बलवती बनाती चली जाती है। मेरे प्यारे! देखो, दूसरा प्राणी, उस मानव को मानो देखो, विजय नहीं कर सकता, विजय नहीं कर रहा है। क्योंकि वह शक्ति दे रहा है, यन्त्र तो इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण मानो इन यागों के द्वारा, याग की प्रतिभा से जन्मित होते रहते है।

तो विचार विनियम क्या, मैं विशेष विवेचना नहीं देने जा रहा हूँ, चर्चाएं विशेष नहीं है केवल परिचय है, और वह विचार है, जिन विचारों को मुनिवरों! देखो, साक्षात्कार हमने मानो देखो, दृष्टिपात करने के लिए हम तत्पर रहे है। जिन राजाओं के यहां, मानो इस प्रकार के विज्ञान का क्रियाकलाप, ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में भी इस प्रकार का क्रियाकलाप होता रहा है, जिस क्रियाकलाप के द्वारा, मानव की जीवन की प्रतिभा, एक महानता में परणित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है भारद्वाज मुनि के यहां, मेरे पुत्रो! देखो, जब राजा रावण के यहां, यह घोषणा हो गई, क्या हमारे यहां देखो, याग होना चाहिए, विज्ञान के यन्त्रों की मानं बृही व्रता देवा राजा रावण के राष्ट्र मे, जितनी प्रतिभा शुद्ध रहती थी, यह घोषणा करने के पश्चात, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने, अपने आश्रम को प्रस्थान किया, और यह कहा कि **विज्ञान से**

जो वायुमण्डल दूषित बनता है वह याग के विज्ञान से समाप्त हो जाता है। याग करना चाहिए। मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने यह प्रगट कराते हुए कहा था, कि आधुनिक काल का जो यह वर्तमान का काल चल रहा है, इस वर्तमान के काल में भी देखो, यह वायुमण्डल दूषित हो गया है, मेरे प्यारे! देखो, महानन्द जी ने प्रगट कराया। परन्तु देखो, आधुनिक काल का विज्ञान, जैसा महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया है, कि आधुनिक काल का विज्ञान भी गो घृत के द्वारा मानो देखो, उसी में ऐसी शक्ति, ऐसी ऊर्ज्वा को प्राप्त कर रहा है, जिससे देखो, दुषित वायुमण्डल का शुद्धिकरण हो सकता है। मानो देखो, आज का विज्ञान इसमें लगा हुआ है।

परन्तु देखो, मैं आधुनिक काल की चर्चा नहीं प्रगट करने आए महानन्द जी के विचारों को ऊपर हम टिप्पणियां देने नहीं आए है। विचार क्या है मानो हमारे यहां वैदिक साहित्य में बेटा! याग का नाम विष्णु माना गया है। हे विष्णु! यज्ञोमयी विष्णु जब मानो सृष्टि में आपत प्रत्तियों को अस्तांम् मेरे प्यारे! देखो, विष्णु सतोगुण है, हमारे यहां विष्णु को सतोगुण कहा जता है, सत में रहने वाला, मानो सत का पालन करता रहे, तो विष्णु की उपासना कर रहा है, वह उपासक बन रहा है, याग का नाम भी विष्णु है, क्योंकि वह परमाणुओं से, वायुमण्डल का शोधन करना चाहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन में, जब मानो देखो, इस प्रकार के विचारों की उद्बुद्धता होती है, क्या मैं अपने में याग, मैं अपने में देखो, वेदज्ञ ध्वनि का प्रकाश कराना चाहता हूँ, वेदज्ञ ध्वनि का प्रकाश कराना चाहता हूँ यह तेरे जीवन के किसी न किसी जन्मम् ब्रह्मे वाया मानो संस्कारों का उद्बुद्ध होना होता है। जब शुद्ध संस्कारों का उद्बुद्ध हो जाता है तो मानो द्रव्य का सदुपयोग करने लगता है, देवताओं के द्वारा हूत करने लगता है, वह साकल्य द्यौ लोक में प्रवेश कराने लगता है, यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को चला जाता है। द्यौ लोक में मानो देखो, द्यौ लोक में ऊर्ज्वा

है शक्ति है और देखो, उसी से यह सूर्य अपने में प्रकाश को प्राप्त हो रहा है। द्यौ से ही मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा कान्ति को ले रहा है। मुनिवरों! देखो, वही अमृत को ले रहा है, द्यौ से ही मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिक जन मानो विद्युत को अपने में धारण करके, वही विद्युत है जो बेटा! शब्दों को अपने में धारण करा करके बेटा! द्यौ लोक तक पहुंचा देती है। वही अग्नि है ब्रह्म वाचा वह द्यौ में प्रवेश हो जाते है।

जहां मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है, राजा रावण के यहां जो रावण के विधाता, कुम्भकरण थे. वह एक समय हिमालय की कन्दराओं में विद्यमान हो करके, एक समय मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज के शिष्य, यज्ञदत्ता और ब्रह्मचारी सुकेता वहाँ पहुंचे हिमालय में अनुसंधान कर रहे थे, जो राजा रावण के विधाता वह जो कुम्भकरण थे, वह छह माह तक विश्वविद्यालय में, विज्ञान की शिक्षा देते थे, छह माह तक वह मानो अज्ञातवास रह करके, और हिमालय की कन्दराओं मानो देखो, ऊर्ज्वा से विज्ञान को प्राप्त करते रहते थे। वैज्ञानिक इतने विशाल थे बेटा! उस काल में, महर्षि भारद्वाज मुनि ने तो यह घोषणा की है, क्या जितना यह मानो देखो, यह कुम्भकरण जितना विज्ञान में रत्त रहता है और विज्ञान के जितने मानो चित्रों को यह जानते है, आधुनिक जगत में इतना ऊँचा वैज्ञानिक नहीं है। विज्ञान में रत्त रहने वाला, वह निन्द्रा को नहीं लेते थे, केवल देखो, वह एक रात्रि और एक दिवस में केवल मानो देखो, दो पहर की निन्द्रा को प्राप्त करते रहते थे।

मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने मुझे स्मरण कराया कि आधुनिक काल का प्राणी यह स्वीकार करता है, कि वह छह माह तक निन्द्रा में रहते थे, छह माह तक जागरूक रहते थे, बेटा! यह मैने अपने पुत्र से यह वर्णन कराया, क्या यह मानो एक लोलुक्तियां है यह अशुद्धम ब्रीही व्रता है, मानो देखो, जिसने अपने जीवन में आहार भी इतना पवित्र बनाया है,

आहार भी उनका इतना पवित्र था, क्या वह मानो देखो, वह लवण भी ग्रहण नहीं करते थे। मेरे प्यारे! देखो, उसका जीवन एक शुद्धिकरण में रहता था, तो मैं उच्चारण कर रहा था क्या महाराजा कुम्भकरण असुतम देखो, हिमालय की कन्दराओं में विद्यमान हो करके मानो देखो, उस द्यौ से ऊर्ज्वा को ग्रहण कर रहे थे। **जिस ऊर्ज्वा के द्वारा मुनिवरों! देखो, हम यह जान जाएं कि मानव के शब्द जब अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में प्रवेश होते है। तो द्यौ लोक में उन चित्रों की क्या गतिया होती है** वह चित्र क्या क्रियाकलाप करते है तो उन्होंने मुनिवरों! देखो, एक यन्त्र का निर्माण किया था, तो ऊर्ज्वा से मानो देखो, द्यौ अब्रहे वह उस मानो देखो, द्यौ से वह यन्त्र आते वह चित्र आते रहते थे चित्रावलियों में चित्र आते रहते, उनके क्रियाकलाप मानो उसमें प्रदर्शित होते रहते थे। तो बेटा! मैं दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ विचार यह चल रहा था कि यज्ञोमयी विष्णु मानो देखो, विष्णु हम किसे कहते है? बेटा! जो मानो शुद्धिकरण करने वाला है, मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जाना है, मेरे प्यारे! देखो, माम ब्रहे वाचन्नमम ब्रीव्ही व्रता ऐसा मुझे स्मरण है मानो उनके यहां मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की प्रतिभा का जन्म होता रहा है। क्योंकि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में, इस प्रकार के नाना यन्त्र विद्यमान थे, मानो देखो, एक एक यन्त्र में, रक्त के बिन्दुओं से चित्र आते रहते थे, मानो शब्दों की प्रतिभा से, मानवीयता का दिग्दर्शन होता रहा है। तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें यह उच्चारण करने लिए जा रहा हूँ, क्या मानव को अपने जीवन में कितनी महानता को लाना है, हमें अपने जीवन में याग जैसे क्रर्मों को करके, हमें विष्णु की प्राप्त होना है। हमें स्वतः विष्णु बन करके यज्ञोमयी विष्णु जो सुगन्धि देता है, जो मानो सुगन्ध दे करके वायुमण्डल को पवित्र बनाता है, ऊर्ज्वा से शक्ति प्राप्त करके, मानव को शक्ति प्रदान करता है। मानो देखो, वह

परमाणुवाद की प्रति आहुति बन जाती है।

तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है? आज मैं बेटा! बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ, मैं रावण के वंशलज पर चला गया, परन्तु कहीं भारद्वाज मुनि की यज्ञशाला में प्रवेश हो गया, परन्तु विचार यह चल रहा था यज्ञो भवा सम्भवी मेरे प्यारे! यज्ञ को हमारे यहां विष्णु कहते है, हे विष्णु! तू कल्याणकारी है हे विष्णु! तू विज्ञान में ही रत्त रहने वाला है, हे विष्णु! तू यज्ञोमयी श्रेष्ठ है, हे विष्णु! तू मानो सङ्कल्प में विद्यमान रहता है। हे विष्णु! तेरी मिथ्या वाक्यों के गर्भ में भी कहीं कहीं सत्य वाक्यों को प्रतिष्ठा दृष्टिपात आती है, कहीं तू तमोगुण में भी मानो देखो, तमोगुण में जो शब्दोमयी देखो, तमोगुण के गर्भ में वहां भी विष्णु विद्यमान रहता है। कहीं मानो देखो, रजोगुण के गर्भ में कहीं सत्य विद्यमान रहता है, मानो देखो, तीन गुण मानव के शरीर में वास करते रहते है। सबसे प्रथम सतोगुण है, जिसे हमारे यहां विष्णु कहते है। द्वितीय गुण का नाम रजोगुण है, जिसे हमारे यहां शिव कहते है। जो न्यायकारी है न्यायधीश है। मेरे पुत्रों! देखो, न्याय हो रहा है मुनिवरों! देखो, एक तमोगुण है जहां उत्पति के लिए मानव प्रतिभाषित हो रहा है और उत्पति के लिए मुनिवरों! देखो, उस उत्पति में भी उसके गर्भ में भी विद्यमान है और रजोगुण में भी मानो न्याय में भी सतोगुण विद्यमान है, और विष्णु तो सतोगुण है, बेटा! स्वतः मानो देखो, अपने में भी विष्णु है। विचार क्या मुनिवरों! देखो, तीनों गुणों में रत्त करने वाला है, माता पिता के हृदय में, एक सङ्कल्प जागा है, क्या हम पुत्र याग करना चाहते है। तो उस याग का नाम विष्णु है। परन्तु पुत्र का जो सङ्कल्प है, वह माता पिता के हृदय में आता है, परन्तु देखो, वह सङ्कल्प में तमोगुण विद्यमान है, परन्तु तमोगुण में सतोगुण की पुट लगी हुई है। कैसी विचित्रता है बेटा! मानो देखो, वह सतोगुण ब्रणे जब मानो देखो, किसी पुत्र से यह कहता हूँ हे ब्रह्मचारी! हे बालक!

तू माता पिता का पुत्र है। माता का पुत्र है, तू पिता की सन्तान है, तू मानो कौन सी प्रतिभा ऐसी है तो मेरे प्यारे! देखो, वह उत्तर नहीं दे पाता। परन्तु मैं पिता से यह प्रश्न कर रहा हूँ माता से कह रहा हूँ पिता से कहता हूँ यह पुत्री तुम्हारी है, इस पुत्री में मानो देखो, कौन से अंश है तुम्हारी पुत्री, तो पिता भी निरूत्तर हो गया। मानो माता से प्रश्न किया गया, हे माता! यह पुत्र मानो देखो, किस स्थली से कौन सा अङ्ग तेरा पुत्र है। तो माता भी मौन हो जाती है। परन्तु देखो, जब ऊँची उड़ान उड़ने वाला, दार्शनिक कहता है क्या वह जो जिस समय याग करने की प्रवृत्ति माता पिता की बनी थी, तमोगुण में, वह जो सङ्कल्प बना था, परन्तु वह इस सङ्कल्प में ही मानो देखो, पुत्र और पुत्रियों के मानो सङ्कलन बन गएं। वही मानो देखो, पुत्र पुत्रियों के, वही उनके हृदयों में भी देखो, माता पिता का सङ्कल्प बन गया था। उस सङ्कल्पमयी बेटा! देखो, कौन पुत्र पुत्रियाँ विद्यमान है, उसी सङ्कल्प में बेटा! यह जगत बना हुआ है, यही मुनिवरों! देखो, यही सङ्कल्प अपने में महानता को धारण करता हुआ, अपने में महानता की प्रतिभा को धारण करता हुआ, बेटा! देखो, वह सङ्कल्प ही विष्णु कहलाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विचार क्या दे रहा हूँ मुनिवरों! देखो, विचार जो दर्शनों की प्रतिभा में वेद की प्रतिभाषा में, मानो अपने में पूर्णता को प्राप्त होते रहते हैं। विचार क्या मुनिवरों! देखो, सङ्कल्प ही, यह संसार एक सङ्कल्प से कटिबद्ध हो रहा है, यही सङ्कल्प है परमात्मा भी मुनिवरों! देखो, सङ्कल्प में कटिबद्ध हो रहा है। विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, माता का पुत्र चला गया है आत्मा चला गया शरीर से माता रूधन कर रही है, मैं माता से यह प्रश्न कर रहा हूँ माता! क्या तेरा यह शरीर पुत्र है या आत्मा तेरा पुत्र है। । माता निरुत्तर बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतम ब्रह्म वाचा मुनिवरों! देखो, वह शरीर पुत्र होता, तो उसको दाह क्यों करते? मानो यदि आत्मा पुत्र होता, तो मुनिवरों! देखो, आत्मा अपने में

स्वतः चेतना है। वह मुनिवरों! उसके स्वरूप को उसके स्वरूप को माता पिता नहीं जानते की आत्मा कैसा है, कितने आकार वाला है, तो माता तू रूधन क्यों कर रही है? जब तेरी कोई भी वस्तु नहीं तो विचार आता है कि रूधन है वह जो सङ्कल्प नष्ट हो गया है। मानो देखो, सङ्कल्प का रूधन है, सङ्कल्प में ही मानो पुत्र पुत्रियाँ थे, वह नहीं रहे तो मानो देखो, सङ्कल्प का विच्छेद हो जाना ही, रूधन कहलाता है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! वह सङ्कल्प ही विष्णु कहलाता है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है, हे विष्णु! तू यज्ञोमयी है, कोई माता पिता पुत्रेष्टि याग कर रहे है कोई वाजपेयी याग कर रहा है, कोई अग्निष्टोम याग कर रहा है, परन्तु सबके गर्भ में बेटा! विष्णु सत्यमयी विद्यमान रहता है। इसीलिए वह सारथी कहलाए जाते है। यह है बेटा! आज का वाक विचार विनिमय क्या है, मेरे पुत्रों! विचार यह चल रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए विष्णु की महिमा का गुणगान गाते हुए, हे विष्णु! तू याग है। हे विष्णु! तू सुगन्ध है, मानो तू सत्य में रहने वाला देखो, नास्ति को नष्ट करने वाला यह है। बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, क्या विष्णु हमारा कल्याण करने वाला यज्ञोमयी विष्णु है, यज्ञोमयी रमण करने वाला यह है बेटा! देखो, प्रत्येक गृह में, जब याग होते है, चिन्तन होता है, मनन होता है, माता पिता अपने में संयमी बनते है, पुत्र पुत्रियाँ संयमी बनते है, मानो सुगन्ध में अपने जीवन को ले जाते हैं बेटा! स्वर्ग को कल्पना की जाती है। यह आज का वाक अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज का वाक समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः मा रथम गता वायु रेधि यम ऋता यम सर्वा। ओ३म् तानु गाता ऋषि आभ्याम् रथम् ब्रह्मणा। ओ३म् देवाणाम हिरण्य रथा आभ्याम्

गता माम् भद्राः३म। दिनांक : २८ ०८ १९८३।

10 ०७ १० १९८३

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह देव इस संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है जितना भी यह ब्रह्माण्ड मानो जड़वत में और चेतना में दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह प्रायः मेरा देव विद्यमान है, उसी की प्रतिभा मानो इस ससार में व्याप रही है और वह उसमें सूत्र की भान्ति पिरोया हुआ है। आज के हमारे वेद के पठन पाठन में बहुत से अमूल्य विचार प्रस्तुत किए जा रहे थे जैसा हमने पूर्व काल में भी कई कालों में वर्णन किया है क्या वह माता वसुन्धरा के रुप में सदैव परिणित रहता है हमारा वेद कहता है हे मां! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है क्योंकि तेरे ही गर्भस्थल में यह संसार वशीभूत हो रहा है अथवा क्रीड़ा कर रहा है इसी में रत्त हो रहा है जैसे नाना प्रकार के मनके हैं और वह एक सूत्र में पिरोये हुए रहते हैं तो वह माला बन जाती है इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों वाला मानो यह जो नाना प्रकार के जो मनके हैं वह एक सूत्र में पिरोये हुए हैं और वह सूत्र क्या है वह मेरा देव मानो सूत्र के रुप में परिणित हो रहा है और यह ब्रह्माण्ड उसमें पिरोया हुआ है तो बेटा! यह प्रिय माला बन जाती है और उस माला को जो भी धारण कर लेता है वह प्रायः उसी का उसी के मूल में उसी की आभा में रमण करने लगता है हमने तुम्हे बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा था कि हे मां! तो वेदं ब्रह्मा वसुन्धरा तेरे ही गर्भस्थल में मानो यह शिशु पनप रहा है शिशु के प्रवेश होते ही बेटा!

यह नाना देवता उसकी आराधना करने लगते हैं यह नाना देवता जब उसकी आराधना करते हैं तो उस बिन्दु के समीप क्या क्या वस्तु ले करके चलते हैं मेरे प्यारे! सूर्य प्रकाश ले करके चलता है अग्नि उष्ण बनाती है चन्द्रमा अमृत प्रदान करता है नाना प्रकार के तारामण्डलों की माला बन करके उस मानो शिशु के शिशु के रुप में वह माला अपने में वह शिशु परिणत कर लेता है सर्वत्र विज्ञान उसके समीप रहता है मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में वह शिशु विद्यमान रहता है परन्तु एक माला को धारण करने वाली वो ममत्व को धारण करने वाली वसुन्धरा है उसके ही गर्भस्थल में बेटा! पनपता रहता है जीवन अपने आभा में रमण करता रहता है परन्तु देखो चन्द्रमा अमृत बहाने वाला है अहिल्या रुपी जो रात्रि है यह मानो अपने श्रृंगार को चन्द्रमा को परिणत कर देती है और अन्धकार को जब चन्द्रमा अपने में धारण कर लेता है तो बेटा! यह अमृत की वृष्टि करने लगता है मानो इसी प्रकार जब हम मानो सूर्य के समीप जाते हैं वह सूर्य मुनिवरों! देखो द्यौ से सहायता लेता है द्यौ से प्रकाश लेता है और द्यौ से प्रकाश ले करके मानो उसे तेजोमयी बना देता है मेरे प्यारे! देखो जब आभा में रमण करने वाला जीवन अपने प्रतिभा में रमण करने लगता है तो मानो एक अमूल्य ज्योति मानव के समीप परिणत हो जाती है जब हम यह विचारने लगते हैं कि हमारा जीवन मानो उस माता वसुन्धरा से कटिबद्ध हो रहा है उसी में आभायित हो रहा है वही मानव अपने में परिणत हो रहा है तो मुनिवरों! देखो अग्नि जो ऊर्ध्वा में कहलाती है अग्नि जो प्रकाश में नही मानो उष्ण बना रही है तेजोमयी बना रही है तो मुनिवरों! देखो अग्नि अपने देवत्व को प्राप्त हो करके मानव के जीवन को प्रकाश में रत्त बना देती है हे मां! तेरे गर्भस्थल में जो वह शिशु पनप रहा है परन्तु तू उसके लिए वसुन्धरा है तेरे ही गर्भस्थल में वह वशीभूत हो रहा है मानो उसी में वह रत्त रहता है उसी आभा में वह रमण करता रहता है जब वह बाह्य जगत में प्रवेश होता

है तो मुनिवरों! देखो कौन माता उसका पालन करती है वह पृथ्वी माता कहलाती है नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है मानो वह जो खाद्य पदार्थ है माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान होता है मेरे प्यारे! जब वैज्ञानिक जन इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हुए हैं जिस भी काल में उसी काल में नाना प्रकार के धातु पिपाद को ले करके राष्ट्र का निर्माण उसी से हुआ है मानो देखो जब वैज्ञानिक जन पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश किया गया तो जल को जो शक्तिशाली बनाने वाली नाना प्रकार की अग्नि का जो भण्डार इस पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान रहता है तो मुनिवरों! देखो वह जो पृथ्वी में भण्डार है अग्नि का वही तो मानव को ऊर्ध्वा में ले जाता है पवित्र बना देता है आभा में रत्त बना देता है नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को ले करके मानव के जीवन को उद्बुद्ध बना देता है हे मां! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है तुझे वैज्ञानिक दुहने वाले हैं मानो तुझे कौन दुहता है वैज्ञानिक दूहने लगता है जब मुनिवरों! मुझे वह काल स्मरण आने लगता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का और भी नाना वैज्ञानिकों का काल मुझे स्मरण आता है तो बेटा! मेरा हृदय तो गद् गद् होने लगता है और हम यह कहा करते हैं कि उन्होंने पृथ्वी के गर्भ में दस दस योजन निचरले गर्भ को यन्त्रों से दृष्टिपात करते थे मेरे प्यारे! कौन सा खनिज कितनी दूरी पर है खाद्य कितनी दूरी पर है उससे क्या क्या वस्तु हम प्राप्त कर सकते हैं तो मुनिवरों! देखो वह माता वसुन्धरा हमारा प्रायः कल्याण करने वाली है यह पृथ्वी माता है जिस वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! संसार की प्रत्येक वस्तु विद्यमान है मानो वैज्ञानिको के लिए क्या प्रिय प्रभु की और माता वसुन्धरा को अपने में धारण करने के लिए कौन सी वस्तु नही है मानो सर्वत्र वस्तु इसमें विद्यमान है तो मुनिवरों! देखो इस माता वसुन्धरा से हम सदैव याचना करते रहें। मेरे प्यारे! देखो जब हम माता के गर्भ से भी पृथक हो जाते हैं तो कौन माता है जो हमे धारण कर लेती है मेरे प्यारे!

वह चैतन्य देव है। जो माता है जो इस संसार को धारण कर रही है मानो उसी के गर्भ में हम विद्यमान हो जाते हैं और उसी के गर्भ में रत्त रह करके अपने जीवन को महान और पवित्र बना लेते हैं उस चेतना में रत्त हो जाते हैं नाना प्रकार की जो विडम्बना है उससे हम रहित हो जाते हैं जब विडम्बना से रहित हो करके परमात्मा को हम अपनी माता के रुप में वसुन्धरा के रुप में की हम उसी के गर्भ में विद्यमान हैं उसी में ओत प्रोत हैं तो मानव उस समय उसी को प्राप्त कर लेता है वह ममत्व को धारण करता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाता है यह जो सागर हमे दृष्टिपात आ रहा है जहां मानव अपमानित हो रहा है जहां मानव का मानो देखो मानव वृत्ति ब्रव्हे जहां मानव मान और अपमान में रत्त हो रहा है मेरे प्यारे! देखो इस संसार में मानव रत्त नही रहता वह प्रभु की माता की गोद मं अपने को स्वीकार करता है जैसे माता का प्रिय बालक है उसे क्षुधा लग रही है परन्तु देखो जब क्षुधा लग रही है वह व्याकुल हो रहा है माता अपनी आनन्दमयी लोरियों का पान कराती हुई उसकी क्षुधा को दूरी कर देती है इसी प्रकार हे मानव! तू जब प्रभु को अपने माता के वसुन्धरा के रुप में स्वीकार करता है क्या तू इसी की गोद में विद्यमान है तो मानो वह माता वसुन्धरा हमारा कल्याण करने वाली है बेटा! मुझे बहुत काल स्मरण आता रहता है साहित्यिक चर्चाएं भी आती रहती हैं परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है हे माता! तू चेतना है तेरे ही गर्भ में मानो देखो हम सर्वत्र विद्यमान हैं यह मानव जब अपने को अपने में प्रभु को स्वीकार नही करता तो मानव अपने सिद्धान्त से दूरी हो जाता है अपने क्रियाकलाप से दूरी हो जाता है यह ज्ञान से शून्य हो जाता है ज्ञान जब नही रहता तो शून्यता को प्राप्त हो करके यह नाना प्रकार के रुपों को प्रभु को नाना प्रकार के रुपों में दृष्टिपात करता है मेरे प्यारे! वह नाना रुप भी मानव देखो उस रुप में नही पान कर रहा है जो वास्तव में पान करने चाहिए मेरे प्यारे!

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में मुनिवरों! व्रतोमयी यज्ञं ब्रह्मा जैसे विष्णु शब्द आ रहा था यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! देखो यज्ञोमयी विष्णु कहलाता है हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला तु सत्यमयी रत्त रहने वाला है मानो देखो यज्ञोमयी विष्णु मानो देखो जितना भी मानव का क्रियाकलाप है वह शुद्ध रुपों में है सतोगुण में है मानो वही विष्णु कहलाता है मेरे प्यारे! देखो यज्ञोमयी विष्णु मुझे वह काल स्मरण आता रहता है बेटा! मुझे वह काल त्रेता के काल मे तुम्हे ले जाने के लिए आया हूं मानो राजा रावण और उनके विधाता कुम्भकरण और भी नाना वैज्ञानिक मानो एक पङ्क्ति में विद्यमान थे कुछ विचार विनिमय हो रहा था तो वेद का पठन पाठन करने वाले अश्विनी कुमार भी वहां विद्यमान थे सुधन्वा नामक वैद्यराज भी वहां विद्यमान तो उन्होंने एक वाक कहा अश्विनी कुमारों ने क्या यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! क्योंकि राजा रावण के राष्ट्र में विज्ञान बहुत प्रियता में था विज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर मानो देखो विज्ञान चरमसीमा पर था मुझे जब वह काल स्मरण आता है क्या उस काल में किस प्रकार का विज्ञान किस प्रकार का आयुर्वेद मानो देखो चरमसीमा पर जा रहा था मेरे प्यारे! देखो जब यज्ञोमयी विष्णु का वर्णन आया तो उस समय महात्मा सुधन्वा ने अश्विनी कुमारों ने राजा रावण से यह कहा कि आपका जो विज्ञान है वह मानो पराकाष्ठा पर है परन्तु वायुमण्डल इससे दूषण हो गया है वायुमण्डल जब दूषित हो गया है इसका कोई न कोई मानो क्रियाकलाप भी हमे जानना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो उस समय वेद का वाक तो यह कह ही रहा था कि यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! जब वेद एक ही वाक कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु तो मुनिवरों! उन्होंने कहा यज्ञो भूतो अस्तो तो मेरे प्यारे! यह निश्चय हुआ कि इस दूषण को समाप्त करने के लिए हमे याग कर्म करना है हमे विष्णु की पूजा करनी है विष्णु याग करना है तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है क्या मानो देखो उन्होंने महर्षि भारद्वाज

मुनि को निमन्त्रित किया क्योंकि उस समय महर्षि भारद्वाज राजा रावण का जितना भी वंशलज था मानो भारद्वाज मुनि महाराज का वह शिष्य कहलाता था तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने निमन्त्रित किया और मुनिवरों! देखो महाराज कुम्भकरण जिनका बाल्यकाल का नाम सुनुतकेतु था मेरे प्यारे! देखो सुनुतकेतु को यह कहा गया को आप जाईये और भारद्वाज मुनि और उनके शिष्य मानो उनसे कुछ विचार विनिमय करेंगें मेरे प्यारे! देखो वहां से महाराज कुम्भकरण और देखो वहां से सुतकेतु मानो वहां से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो कजली वनों में आ गए कजली वनों में आ करके महर्षि भारद्वाज अपने ब्रह्मचारियों के सहित कुछ चर्चाएं कर रहे थे कुछ वेद के मन्त्रों के ऊपर अध्ययन कर रहे थे कुछ विज्ञान की धाराओं को अपने में लाने का प्रयास कर रहे थे परन्तु जैसे उन्होंने कुम्भकरण को दृष्टिपात किया उन्होंने कहा आईये भगवन! मेरे प्यारे! वह विराजमान हो गए उन्हे कुछ कन्दमूल इत्यादि का पान कराया उन्होंने कहा हे भगवन! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ बिना सूचना के महर्षि भारद्वाज ने जब ऐसा कहा तो मुनिवरों! उन्होंने कहा ब्रह्मे वस्तुत प्रहे मानो भगवन मैं इसीलिए आया हूं क्या हमारे यहां दूषित वायुमण्डल बन गया है हम एक विष्णु याग की रचना के लिए आपसे प्रार्थना करने के लिए आये हैं क्योंकि आप विज्ञान को भी जानते हैं अणु से ले करके परमाणु विज्ञान में आपकी प्रतिभा रहती है हे भगवन! ब्रह्मे वाचा महर्षि भारद्वाज मुनि और ब्रह्मचारी सुकेता ब्रह्मचारिणी शबरी इत्यादि मानो देखो कुछ ब्रह्मचारियों के सहित उनके निमन्त्रण पाते ही मुनिवरों! देखो वहां से मुनिवरों! से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो वह सम्भूति ब्रह्मवाचा अप्रव्हे लोकां मानो देखो लंका में जब उनका प्रवेश हुआ। तो राजा रावण के राष्ट्र में एक आनन्दयुक्त वायुमण्डल बन गया वायुमण्डल के मानो देखो एक आनन्दयुक्त बन जाने के पश्चात मुनिवरों! देखो

उन्होंने कहा सम्भवो देवाः ब्रव्हा राजा रावण ने उनके चरणों को स्पर्श करके कहा कि हे प्रभु! आज हम वेद का अध्ययन कर रहे थे प्रातःकालीन परन्तु वेद का मन्त्र यह कह रहा था यज्ञोमयी विष्णु हे प्रभु! मैं विष्णु सात्विक वायुमण्डल को पवित्र बनाने के लिए मेरी यह कामना जागरुक हुई है उन्होंने कहा बहुत प्रियतम मे जगत तो मैं कल ही प्रगट करुंगा आज तो केवल यज्ञोमयी विष्णु तो केवल राजा रावण ने एक मानो देखो याग की रचना की जिसको हम विष्णु याग कहते हैं विष्णु याग उसे कहते हैं जहां वायुमण्डल का दूषित वायुमण्डल पवित्र हो जाए राजा अपनी प्रजा से मानो यह आज्ञा दे कि मानो तुम्हारे गृह में सुगन्धि होनी चाहिए प्रत्येक मानव जब सुगन्धि युक्त हो जाता है और सुगन्धि युक्त होने का केवल एक ही मार्ग है क्या मुनिवरों! देखो वह याग है प्रत्येक मानव जब याग में परिणित होता है यागों में अपने क्रियाकलाप करने लगता है मन, वचन, कर्म को याग में परिणित कर देता है मानो देखो उस समय वह विष्णु रुप बन करके अपने मानवतव को पवित्र बना लेता है तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या क्या विष्णुमयी यागा हे यज्ञं ब्रह्मवाचा तू विष्णु है वायुमण्डल को सात्विक बनाने वाला है मानो देखो वायुमण्डल को हम दूषित वायुमण्डल को यदि हम पवित्र बनाना चाहते हैं तो वैसे अमृतं ब्रह्मा मानो देखो सुगन्ध से ऊंचा बना सकते हैं प्रत्येक मानव के विचारों में सुगन्धि होनी चाहिए। जब मानव पति पत्नी एकान्त स्थली पर विद्यमान हो तो वह दर्शनों की चर्चाएं होनी चाहिए। परन्तु देखो जहां एक दूसरे की सम्मति की चर्चाएं होती हैं तो मुनिवरों! देखो वह विचारों की सुगन्धि मानव के गृह को पवित्र बना देती है मानो इसी विचार को ले करके जब बाह्य रुपों में साकल्य अग्न्याधान करते हुए हम वायुमण्डल को बाह्य जगत को ऊंचा बनाते हुए मुनिवरों! देखो यज्ञोमयी विष्णु बन जाते हैं विचार व राष्ट्र जहां चर्चाएं आती हैं वेद का मन्त्र भी राष्ट्र की चर्चा करता है परन्तु राष्ट्र अपने में कोई राष्ट्र नही होता राष्ट्र तो

केवल मानव समाज को मानो अपने अनुशासन में लाने के लिए और देखो अपने अशुद्ध क्रियाकलाप को मनाने के लिए राष्ट्र की पद्धतियां बना करती हैं परन्तु जब पद्धतियों में महानता आती है तो राजा नही रहता वह विष्णु बन जाता है मानो जब तक वह प्रजा से मानो प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला अपने में आनन्दित होना चाहता है जब तक वह राजा विष्णु नही बनता मानो वह स्वार्थपरता में रत्त हो करके मानो देखो वह सुगन्ध को नही ला सकता अपने समाज में मेरे प्यारे! देखो गृह में पति पत्नी अपनी एकान्त स्थलियों में विद्यमान हैं आचार्य ब्रह्मचारी दोनों अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं जब आचार्य ब्रह्मचारी को महान बनाना चाहता है उसे अपने उद्गार देना चाहता है उसे अपने चरित्र की मेरे प्यारे! वेद का पठन पाठन करते रहते थे महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज वैज्ञानिक तथ्यों को ले करके वैज्ञानिक रुपों को ले करके उस याग की रचना करा रहे हैं तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो विचार क्या उन्होंने एक ही वाक कहा है कि कोई भी मानव समाज को ऊंचा बनाना चाहता है राजा यदि अपनी प्रजा को ऊंचा बनाना चाहत है गृह में पति पत्नी अपनी सन्तान को ऊंचा बनाना चाहते हैं। तो इनके विचारों में सुगन्धि होनी चाहिए क्रियाकलाप में सुगन्धि होनी चाहिए जिससे वह सुगन्धि द्यौ लोक को प्राप्त हो करके मुनिवरों! वह उसी को प्राप्त होती रहे विचार विनिमय क्या है मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तुम्हे देने नही आया हूं केवल परिचय कराने के लिए मैं तुम्हारे समीप आया हूं और वह परिचय क्या है मुनिवरों! देखो यज्ञोमयी विष्णु हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है तू सत्यमयी रत्त रहने वाला है हे विष्णु! तू महानता में देखो राष्ट्र को ऊंचा बनाता है तो मुनिवरों! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज जहां वैज्ञानिक थे एक अणु के ऊपर परमाणु के ऊपर अनुसन्धान करते रहते थे जहां चित्रवालियों के ऊपर अनुसन्धान करते रहते थे वहां मेरे प्यारे! वह यज्ञो में भी महान कर्मठ थे यज्ञ में

भी एक विशेषता उनके यहां प्रायः रहती थी ब्रह्मचारियों को उस यागाम् ब्रह्म लोकाः मानो देखो उनके यहां यन्त्रों में ऐसे ऐसे यन्त्रों की प्रतिभा रहती थी क्या वह जैसे स्वाहाः उच्चारण करते उनके चित्र उनकी चित्रावलियों में प्रायः दृष्टिपात आते रहते थे मेरे प्यारे! देखो वह याग यागां जहां विज्ञान में परायण रहता है प्राणी वहां उसका क्रियाकलाप मन वचन कर्म से भी मुनिवरों! देखो प्रभु के समीप रहना चाहिए प्रभु को समर्पित कर देना चाहिए प्रभु को क्योंकि संसार में जितनी भी वस्तु हैं जितना भी यह जगत है मानो देखो यह प्रभु की सम्पदा है प्रभु की ही महानता है वह माता वसुन्धरा के रुप में सदैव परिणत रहती है माता वसुन्धरा चाहे वह माता के रुप में हो जननी कर रुप में चाहे वह अपने में धारण करने के रुप में हो मेरे प्यारे! चाहे वह चेतना के रुप में रत्त रहने वाली हो परन्तु देखो इस चेतना के ऊपर मानव को परम्परागतों से ही अनुसन्धान करना चाहिए विचार विनिमय करना चाहिए चाहे वह चेतना बन करके मानव को उद्बुद्ध कर रही है चाहे वह पार्थिव तत्वों को ले करके अपने में धारण कर रही है चाहे वह जननी बन करके अपने में धारण कर रही है परन्तु उसका हमे पूजन करना है हमे उसके समीप उसके गुणों को धारण करते हुए अपने जीवन को ऊंचा बनाना है उसमें में हमे अपने को समर्पित कर देना है तो मुनिवरों! देखो आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! देखो यह याग विष्णु कहलाता है मानव का अन्तरात्मा भी विष्णु के रुप में परिणत रहता है विष्णु की प्रतिभा में रत्त रहने वाला है तो मुनिवरों! देखो सतोगुण में विष्णु है रजोगुण में शिव है और मुनिवरों! देखो तमोगुण में ब्रह्मा कहलाता है ब्रह्मा उत्पन्न करने वाला है और शासन में हमारे यहां देखो शिव को राजा कहते हैं और विष्णु को हमारे यहां सतोगुण में और उसको यज्ञोमयी विष्णु आत्मा का नाम भी विष्णु है राजा का नाम भी विष्णु है राजा के यहां जहां चरित्र की प्रतिभा मानवीयता का स्रोत्र बहने

लगता है तो वह राजा विष्णु बन जाता है आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना ने देता हुआ आज का विचार क्या मुनिवरों! देखो राजा रावण के यहां याग हुआ नाना ऋषिवर मेरे पुत्रों देखो उन्होंने याग किया याग के पश्चात विष्णु की पूजा करने के पश्चात याग सम्पन्न हो गया वायुमण्डल में मानो पवित्रता छा गई तो विचार क्या मुनिवरों! देखो हमारा विचार यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का हमारा वाक हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है तेरे में ही हम सब वशीभूत हो रहे हैं तेरे में ही रत्त हो रहे हैं तू मानो देखो नौ रुपों में रमण करने वाली है हे ममत्व! मानो देखो तू नौ रुपों में रमण करती हुई मानव को नवनं कहलाती है क्योंकि संसार की जितनी भी गणना है वह नौ तक कहलाती है संसार का जितना भी विभाजन होता है वह नौ प्रकार से होता है नौ ही पदार्थ होते हैं संसार में जो अनादि कहलाते हैं तो मुनिवरों! देखो नौनं मानो देखो नौ से आगे गणना भी नही होती तो मुनिवरों! देखो दस प्राण होते हैं और दस इन्द्रियां होती हैं और नौ तक संसार की गणना होती है यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह मेरे प्यारे! वह माता वसुन्धरा जो हमे अपने में धारण कर रही हैं एक माला के रुप में मानो देखो लोक लोकान्तरों को धारण करके अपने में रत्त करा रही है। कल मुझे समय मिलेगा तो कल बेटा! देखो महर्षि भारद्वाज और महर्षि कागभुषुण्ड जी का जो संवाद राजा रावण के याग में प्रस्तुत हुआ था वह चर्चाएं मैं कल प्रगट करुंगा आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन ओ३म् देवाः यम शना रथं आप्यां गतौ सर्वा वाचन्नमाः।ओ३म् रेवं मधु मां खानिगृहिता यौ सर्वाः३म्। ओ३म् भद्रं सर्वं रुद्रा मां ब्रह्माः।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन!। दिनांक ०७ १० १९८३।

11 ## २१ ०७ १९८४ महर्षि याज्ञवल्क्य, चाक्राणी गार्गी संवाद

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो उसी की चेतना में बद्ध, यह जगत हमें दृष्टिपात आता रहता है। प्रत्येक वेद मन्त्र, उस महान देव की गाथा का वर्णन कर रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है और यह पृथ्वी जिस प्रकार ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा परमात्मा का वर्णन कर रहा है और वह यह कहता है कि ब्रह्म वाचों ब्रह्माग्नि यह संसार मानो एक अग्निमयी दृष्टिपात आता रहता है, और उसी सूत्र में यह पिरोया हुआ है।

कल्पवृक्ष तुल्य संसार

मुझे स्मरण आता रहता है कि नाना ऋषिवर बेटा! ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में प्रायः चिन्तन करते रहते थे। ब्रह्म की उड़ान उड़ते रहते हैं। यह कोई नवीन वाक नहीं है, यह परम्परागतों से ही, आ रहा है। परमात्मा के सम्बन्ध में अपना कोई वक्तव्य अथवा अपनी कोई धारा का वर्णन प्रायः नहीं कर सका है। परन्तु इस संसार के सम्बन्ध में नाना प्रकार की उड़ाने उड़ी जाती हैं। वह काल मुझे स्मरण है बेटा! जिस काल में ऋषि मुनि विद्यमान हो करके, इस संसार के सम्बन्ध मे, विचार विनिमय करते रहे हैं। कोई ऋषि बेटा! अनुसन्धानवेत्ता

इस ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में अपनी कल्पना कर रहा है क्या यह ब्रह्माण्ड तो एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, जो परमात्मा का अमूल्य जगत है, इसको कल्पवृक्ष के रूप में परणित किया, कि मानव ने सङ्कल्प किया और वस्तु प्राप्त हो गई। इसलिए बेटा! इसे कल्पवृक्ष कहते हैं। कल्पना करते ही संसार की वस्तु प्राप्त हो जाती है। तो वह क्या हुआ? कल्पवृक्ष में जो भी मानव, इस संसार रूपी वृक्ष के नीचे विद्यमान है, मानो वह सङ्कल्पोमयी प्रतीत हो रहा है। वह मानव कल्पवृक्ष के रूपों में परणित हो रहा है। और इसको कल्पवृक्ष की भान्ति ही दृष्टिपात करता रहता है।

सङ्कल्पमयी संसार

परन्तु देखो, एक कल्पना ऐसी, महान कल्पवृक्ष के रूपों में परणित रहती है मानो देखो, इसके नीचे मन्द सुगन्ध वायु चल रही है। यदि उस मन्द सुंगन्ध वायु से उपराम हो गया, तो प्रायः ब्रह्मवाची बन जाता है। ब्रह्म का दिंग्दर्शन करने के लिए तत्पर हो जाता है। परन्तु देखो, इनको विचारने से यह प्रतीत हुआ, कि उनका वाक भी यथार्थ है जो संसार को कल्पवृक्ष के रूपों में परणित कर रहे हैं परन्तु द्वितीय दार्शनिक कहता है कि नहीं, यह संसार तो एक सङ्कल्पोमयी संसार है, यहाँ मानव सङ्कल्पं ब्रव्हे व्रताम्, यहाँ सङ्कल्पमयी संसार रहता है। माता पिता भी सङ्कल्प में रहते हैं। माता से यदि मैं यह प्रश्न करने लगूँ हे माता! यह जो तेरा पुत्र है यह क्या है क्योंकि जबकि वेद का मन्त्र कहता है पूर्णमिदं पूर्णमुञ्चते पूर्णवृत्ति देवाः क्या पूर्णता में से पूर्णता की उत्पत्ति हो रही है। तो माता से जब मैं यह प्रश्न करता हूँ कि माता तेरा जो पुत्र बन गया है, यह पुत्र क्या है? परन्तु माता नहीं जानती कि पुत्र क्या है।

मानो माता से, पितर से यह कहते हैं जो तू पितर बन गया है, यह कौन सी धारा है? कौन सा नियम है? मानो जो तू पितर बन गया है। तो पिता भी निरूत्तर बन जाता है, कि क्या मैं इस सम्बन्ध में नहीं जानता। परन्तु देखो, यही वाक

जब मैं इसके ऊपर टिप्पणी प्रारम्भ करता हूँ कि हे माता! यह जो तेरा पुत्र है यह तेरा सङ्कल्प है, सङ्कल्पोमयी पुत्र है, सङ्कल्पोमयी पुत्री है। परन्तु देखो, आत्मा न किसी की पुत्री बनती है, न पुत्र बनता है यह जो पञ्च महा भौतिक पिण्ड हैं इसका भी पुत्र पुत्री नहीं बनता। बेटा! यह कैसा अमूल्य जगत है यह चिन्तन करने में नहीं आ पा रहा है, ऋषि मुनि चिन्तन की उड़ाने उड़ते रहते हैं परन्तु देखो, सङ्कल्पवादियों ने इस संसार को सङ्कल्पोमयी संसार कहा है। और यह जिस आंगन में मानव ले जाता है उसमें पूर्णता दृष्टिपात अपने लगती है। अन्तिम चरण, उसका एक मौन बन जाता है। मेरे प्यारे! न तो पिता की पुत्री है, न माता का पुत्र है। यह क्या है, एक सङ्कल्प है। सङ्कल्पमयी संसार है, जिस समय माता पिता, अपने में सङ्कल्प करते हैं रजतव वीरतव के रूप में बेटा! वही तो पूर्णता को प्राप्त हो रहा है, वही तो अणु कहलाता है। उस अणु ही रूपों में देवता उसकी रक्षा करते हैं। मानो जब शिशु प्रवेश हो जाता है, जिसको अणु कहते हैं, तो देवता उसकी सहायता के लिए तत्पर हो जाते हैं। मानो देखो, वायु प्राण देने लगता है, सूर्य प्रकाश देता है, अग्नि उष्णता देती है, चन्द्रमा अमृत देता है, वायु ब्रहे मानो देखो, अपने रूपों में यह परणित हो रहा है।

तो विचार गाथा हे माता! तू इतना भी नहीं जानती, क्या तेरे गर्भ स्थल में शिशु विद्यमान है परन्तु कौन कौन इसकी रक्षा कर रहे है। मानो देखो, चन्द्रमा अमृत बहा रहा है, सूर्य प्रकाश दे रहा है, अग्नि उष्ण बना रही है। मानो देखो, यह अग्नं ब्रह्म आपो वाचो जल बन करके रहता है। बेटा! वह जल बन करके पाशे में विद्यमान है, माता के गर्भ स्थल में, जब शिशु रहता है तो मानो आपो ही आपो दृष्टिपात आता है, वह जल ही जल दृष्टिपात आता है, जल ही उसका ओढ़न, जल

ही पाशें एक आभा में परणित होने वाला अमूल्य जगत है।

सृष्टि की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि यह संसार, एक सङ्कल्पोमयी कहलाता है। सङ्कल्प ही पुत्र है, सङ्कल्प ही पुत्री है, सङ्कल्प ही पिता है, सङ्कल्प ही पत्नी है, सङ्कल्प ही मानो भौजाई कहलाता है। यह सर्वत्र जगत बेटा! एक सङ्कल्पोमयी गति कर रहा है। प्रभु का सङ्कल्प कितना नितान्त है। बेटा! सृष्टि का चक्र चल रहा है, लोक लोकान्तरों का समूह है। परन्तु देखो, एक निहारिका, द्वितीय निहारिका, तृतीय निहारिका, लोक लोकान्तर गतियाँ कर रहे हैं परन्तु अपने में कोई लोक लोकान्तर अपने में संघर्ष नहीं कर रहा है। अपने में मानो अपना गठबंधन नहीं कर रहा है, वह कैसा विचित्र मेरे प्यारे! प्रभु का जगत है, एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला यह जगत है। बेटा! चाक्राणी ने यही तो कहा था, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से, यही तो कहा, प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ कि जैसे राजा जनक के यहाँ, जैसे भौतिक याग देव याग, होता रहता है। इसी प्रकार मानो मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह संसार, एक याग के रूप में परणित हो रहा है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ जो चारों प्रकार की सृष्टि है, चार प्रकार की सृष्टि, बेटा! सबसे प्रथम स्थावर द्वितीय मानो देखो, जंगम, अण्डज और स्वेदज यह चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है। परन्तु यह चारों प्रकार की सृष्टि किसमें प्रतिष्ठित हो जाती है। भगवन! मैं उनकी प्रतिष्ठा को जानना चाहती हूँ।

पृथ्वी की प्रतिष्ठा

याज्ञवल्क्य मुनि बोले देवी! इनकी जो प्रतिष्ठा है, वह पृथ्वी में रहती है, मानो पृथ्वी में ही ओत प्रोत हो जाती है, यह लय हो जाती है। तो पृथ्वी इसकी प्रतिष्ठा कहलाती है। जैसे माता का पुत्र, माता के गर्भ में रहता है, तो माता प्रतिष्ठित कहलाती है। मानो इस प्रकार यह प्रतिष्ठायां भविते देवाः मेरे प्यारे! देखो, यह प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित रहता है। तो विचार

विनिमय क्या, चाक्राणी गार्गी ने कहा प्रभु! यह वाक्, मैं अपने पूज्यपाद गुरुओं से श्रवण करती रही हूँ। मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह जो चारों प्रकार की सृष्टि की, मानो प्रतिष्ठा पृथ्वी है और पृथ्वी की प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा पृथ्वी की प्रतिष्ठा योगं ब्रह्मणा देवं अश्वना पाः यह आपो में ही ओत प्रोत हो जाती है, आपो में प्रतिष्ठित हो जाती है, उसी में लय हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, आपो ही संसार में प्राण है, आपो ही, मेरे प्यारे! देखो, कृषक, नाना प्रकार के, पृथ्वी व्यंजनों वाली बनती है, केवल प्राण के द्वारा बनती है, प्राणतव सम भागा यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक प्राण सूत्र में पिरोया हुआ, यह माला बन जाती है, माला बन करके उसमें ओत प्रोत हो जाती है।

आपो की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी ने कहा प्रभु! प्रियतम है। परन्तु यह आपो की व्याख्या मैं कई काल में श्रवण करती रहती हूँ पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान रह करके, विद्या का अध्ययन किया उन्होंने कहा प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ आपो किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा देवी! यह जो प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठिं प्रतिष्ठां भविते देवाः मानो यह जो प्रतिष्ठा का वितरण आता है सम्भूति में परि अस्तो मानो यह आपो में परणित रहने वाला है मानो यह आपो, जल अग्नि में ओत प्रोत हो जाता है मानो देखो, अग्नि और जल दोनों का समन्वय हो जाता है। जल को अग्नि अपने में मानो निगल जाती है, और निगल कर अपनी प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित कर जाती है। मेरे प्यारे! देखो, तब ही तो मेघों से वृष्टि होती है और उसको अग्नि ही करती है क्योंकि अग्नि का जब प्रकाश, अग्नि की उष्णता समुद्रों में जब प्रवेश करती है तो उसी काल में, उससे मेघों की उत्पत्ति होती है। मेघां से वृष्टि होती है, उससे नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म होता है। बेटा! यदि जल देखो, अग्नि में जल में यदि देखो, यह वह वैश्वानं ब्रीहि यह बड़वानल नाम की अग्नि न हो तो मानो समुद्रां में अग्नि नहीं लग सकती। समुद्रों में जिस भी

काल में जल प्लावन आते हैं, तो उस समय बड़वानल नाम की अग्नि का प्रकोप हो जाता है। बड़वानल नाम की अग्नि से मानो देखो, अब्रहे समुद्रों में अग्नि जल प्रदीप्त हो करके, जल प्लावन आते हैं। करोड़ों प्राणी उसकी आहुतियों में अपने में ले जाती है। मानो देखो, वह ब्रह्म वाचो देवं ब्रह्म ब्रहादेवाः वेद का ऋषि कहता है कि हे देवी! यह मानो देखो, आपो जो जल है यह अग्नि में ओत प्रोत हो जाता है, अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, इतने में ऋषि के वाक्यों को पान करती हुई देवी ने कहा प्रभु! यह जो अग्नि है इसकी प्रतिष्ठा क्या है? यह प्रतिष्ठायाम कहलाती है मानो यह ओत प्रोत वाली चर्चा तो बड़ी विचित्र है मानो यह जो अग्नि है यह वायु में ओत प्रोत हो जाती है। वायु प्राण देती है, प्राणों में भ्रमित हो जाते हैं, जहां वायु होती है, वहीं अग्नि होती है और जहां वायु नहीं होती, वहां अग्नि की प्रतिष्ठा, अग्नि अपने स्वरूप में प्रवेश हो जाती है। वह मानो देखो, वह प्रदीप्त नहीं होती। तो विचार क्या मानो देखो, अग्नि ही इस वायु में, ओत प्रोत है वायु प्राणवर्धक है, प्राण को देने वाली है, प्राण सूत्र है। मानो प्राण सूत्र ही तो अग्नि कहलाता है। बेटा! मैं जब यह विचारता हूँ कि लोक लोकान्तरों में, तारामण्डलों की एक झड़ी लगी हुई है, एक माला बनी हुई है, परन्तु उस माला को कौन धारण कर रहा है, वैज्ञानिक और ऋषि मुनि पान करते हैं, उस माला को अपने में धारण करते हैं।

लोकों की माला

बेटा! कैसी प्रिय माला है जब मैं यह विचारता हूँ कि प्राण कैसे कार्य कर रहा है, बेटा! एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला जगत, मेरे प्यारे! यह पृथ्वियाँ हैं जिसमें हम विद्यमान हैं, यह पृथ्वियाँ कहलाती हैं। और पृथ्वी तीस लाख पृथ्वियां की माला बना करके सूर्य अपने में गति कर रहा है, प्रकाश दे रहा है, आनन्दवत बना रहा है। परन्तु देखो, यह जो बृहस्पति

है यह एक सहस्र माला मानो एक सहस्र सूर्यों की माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। बेटा! यह कैसा अमूल्य मेरे प्यारे! प्रभु का जगत है। मुनिवरों! देखो, अप्रतो ब्रह्मवाचो देवं हिरण्यं रथनम् वेद का ऋषि कहता है क्या, एक सहस्र बृहस्पति जो आरूणि मण्डल है वह अपने में धारण कर रहा है और एक सहस्र आरूणि मण्डल मेरे पुत्रों! देखो, ध्रुव मण्डल उनकी माला बनाए हुए है, कैसी विचित्र माला है, कैसा विचित्र ओत प्रोत होने वाला जगत है यह, ऋषि कहता है देवी! मानो देखो, वह जो ब्रह्म वाचप्पव्हे वह जो ध्रुव है एक सहस्र ध्रुव है, जो जेठाय् नक्षत्र, उनकी माला बना रहा है। एक सहस्र जेठाय नक्षत्र है। मेरे पुत्रों! देखो, स्वाति नक्षत्र उनकी माला बनाए हुए है, एक सहस्र मानो देखो, एक सहस्र अरूणं ब्रीहि व्रतं देवाः एक सहस्र स्वाति, मुनिवरों! अचंग मण्डल अपने में ओत प्रोत कर रहा है। अपने में धारण कर रहा है। मानो इसी प्रकार एक सहस्र अचंग मण्डल, रोहिणी केतु मण्डल अपने में धारण कर रहा है, माला बनाए हुए है। बेटा! देखो, उसी माला को धारण करने वाला मुनिवरों! देखो, एक सहस्र ब्रहे मुनिवरों! देखो, यह गन्धर्व लोकों में ओत प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र गन्धर्व मानो इन्द्र लोकों में ओत प्रोत हो करके बेटा! एक दूसरे की माला बनाए हुए है। कैसी यह माला है बेटा! मानो देखो, एक सहस्र मण्डलां का बेटा! एक सौर मण्डल बनता है, उस सौर मण्डल को देखो, वह आकाश गंगा, उन सौर मण्डलों को धारण किए हुए है। बेटा! देखो, सहस्रों क्या, अरबों खरबों इस प्रकार के सौर मण्डलों को धारण करने वाली बेटा! अजामय कहलाती है वह अपने में मानो देखो, जिसको हम आकाश गंगा कहते हैं, जिसको हम निहारिका कहते हैं, ऐसी ऐसी निहारिका मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु के जगत में, वैज्ञानिकों ने अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, नौ सौ बहत्तर आकाश गंगाओं का दिग्दर्शन किया है मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्माण्ड कितना अनन्तमयी कहलाता है। विचार

विनिमय क्या बेटा! मैं दूरी न चला जाऊँ, विचार देता हुआ, दूरी न चला जाऊँ, विचार यह दे रहा था, चाक्राणी गार्गी ने यह प्रश्न किया, क्या मानो देखो, इन सब में प्राण सूत्र पिरोया हुआ है। नाना प्रकार की मालाएँ हैं, उनमें प्राण सूत्र हैं, जैसे साधारण माला में मानो सूत्र पिरोया हुआ, है नाना मनके हैं, दोनों का समन्वय हो करके बेटा! एक माला बन जाती है। विचित्र माला बन जाती है।

वायु की ओत प्रोतता

आओ, मेरे प्यारे! यह भी एक माला है, तो उच्चारण क्या कर रहा था, ऋषि ने कहा देवी! यह इतना विशाल ब्रह्माण्ड है ओत प्रोत होने वाला, परन्तु चाक्राणी ने कहा प्रभु! यह व्याख्या तो मैंने वैज्ञानिक पक्ष में बहुत श्रवण की है, मैं यह जानना चाहती हूँ मेरी उत्सुकता यह है, मेरी यह इच्छा है कि मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन! क्या, यह जो वायु है, यह किसमें ओत प्रोत हो जाती है? उन्होंने कहा अन्तरिक्ष में, अन्तरिक्ष में तो वायु गमन करती है। नाना प्रकार के परमाणुओं को ले करके गमन कर रही है, मानो शब्दों को ले करके गमन करती है, शब्द अन्तरिक्ष में विद्यमान होते हैं। चित्रायां भविते देवाः अपने नाना पूर्वजों के चित्र बेटा! अन्तरिक्ष में विद्यमान है। मानो देखो, उनके शब्द हैं, उनका क्रियाकलाप है, उनका मानो देखो, शब्दों के साथ में जो भी हो रहा है, वह शब्द चित्र के साथ में बेटा! अन्तरिक्ष में रहते हैं।

अन्तरिक्ष की प्रतिष्ठा

तो विचार विनिमय क्या, ऋषि कहता है देवी! यह जो महान अमूल्य जगत हमें दृष्टिगत आ रहा है यह महान प्रतिभा अप्रतो में ओत प्रोत होने वाला जगत है, मेरे पुत्रों! देखा, चाक्राणी ने उपस्थित हो करके कहा प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि यह जो अन्तरिक्ष है, यह किसमें ओत प्रोत होता है, उन्होंने कहा यह अन्तरिक्ष कहाँ ओत प्रोत हो रहा है, किसमें प्रतिष्ठित हो रहा है। यह मानो देखो, महत्तत्व में महत्तत्व एक शून्य

बिन्दु है, उसमें यह समाहित हो रहा है। मानो उसी से इसका निकास होता है। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी कुछ मौन हो करके बोली प्रभु! मैं इसकी दूसरी प्रतिक्रिया ओर जानना चाहती हूँ। उन्होंने कहा बोलो, देवी! क्या भगवन! देखो, यह जो महत्तत्व इसकी प्रतिष्ठा किसमें है? उन्होंने कहा देखो, इनकी प्रतिष्ठा देवी! चन्द्र लोकों में है, चन्द्र लोकों में इसकी प्रतिष्ठा रहती है। ब्रह्म वाचो देवी ने कहा प्रभु! यह जो मानो ब्रह्माचो ब्रीहि वर्तो देवाः यह चन्द्र लोक किसमें प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा सूर्याणि गच्छं ब्रह्मे यह सूर्य में ओत प्रोत रहता है। यह सूर्य में आभाषित रहता है। सूर्य के प्रकाश से ही तो चन्द्रमा सहायता को प्राप्त होता है, वह अपनी कान्ति देता है, अमृत को बहाने लगता है, शीतल बन जाता है। समुद्रों के जलों को अपने में धारण करके सोम बना करके पान कर जाता है।

सूर्य लोकों की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा कि हे देवी! यह जो सूर्य है यह प्रतिष्ठायां चन्द्रमा प्रतिष्ठायाम, उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है परन्तु ऋषि ने जब ऐसा कहा, तो देवी चाक्राणी ने कहा प्रभु! मैं यह न्यौदा में बहुत प्रश्नों को श्रवण करती रहती हूँ, परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ कि भगवन! यह सूर्य लोकों की प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा द्यौ लोकं ब्रह्म वाचो वह द्यौ लोक में ओत प्रोत हो जाते हैं। द्यौ में ही मानो यह प्रतिष्ठित हो जाते हैं, द्यौ में मानो ओत प्रोत हो करके, अपने में अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त हो जाते हैं।

मेरे पुत्रों! जहां उन्होंने यह वाक प्रगट किया, इतने में चाक्रणी उपस्थित हो करके बोली प्रभु! मैं आपको नतमस्तिष्क हो गई, परन्तु यह जानना चाहती हूँ यह गन्धर्व लोक किसमें प्रतिष्ठित है? किसमें ओत प्रोत हो जाते हैं, उन्होंने कहा यह गन्धर्व लोक, इन्द्र लोगों में ओत प्रोत हो जाते हैं। इन्द्र ही इनकी प्रतिष्ठा कहलाती है। यह प्रतिष्ठायां ब्रह्म वाचो देवाः मानो देखो, यह अप्रति अस्तो यह ब्रह्म वाह कृति ब्रहे उन्होंने

कहा प्रियतम, मैंने श्रवण कर लिया। परन्तु मैं यह बहुत कथन श्रवण कर गई हूँ मैं यह जानना चाहती हूँ क्या भगवन! यह जो मानो इन्द्र है, यह किसमें प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा प्रजापति में। यह प्रजापति तो इन लोकों की प्रतिष्ठा कहलाती है। उसी में यह ओत प्रोत हो जाता है, उसी में महानता को प्राप्त हो जाता है।

परन्तु देखो, उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह वचन बहुत श्रवण कर रही हूँ, परन्तु यह प्रजापति किसमें रहता है, यह किसमें ओत प्रोत होता है? कहाँ इसकी प्रतिष्ठा है? उन्होंने प्रजापति ब्रह्म वाचो यह जो प्रजापति है यह मानो देखो, इन्द्र प्रजापति में और प्रजापति यज्ञ में ओत प्रोत हो जाता है। यज्ञ में प्रतिष्ठित हो जाता है। यज्ञ में महानता को प्राप्त होता है। ब्रह्मवाचो देवाः यह मौन ही करके बोले देवी! तुम प्रश्न किए जाओ, चाक्राणी ने कहा प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ यज्ञ किसमें ओत प्रोत होता है, यज्ञ किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा देखो, दक्षिणां ब्रह्म वाचो यज्ञाः यह यज्ञ दक्षिणा में रहता है। दक्षिणा के भिन्न भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं। एक दक्षिणा द्रव्य कहलाता है, वह दक्षिणा नहीं कहलाती, वह तो मानो उसके लिए सहयोग है, उदर की पूर्ति का सूत्र है, परन्तु देखो, वह जो यज्ञमान बनता है। यज्ञशाला में उसकी जो त्रुटियाँ हैं वह मानो देखो, आचार्य को प्रदान कर देता है, यज्ञमान अपनी त्रुटियों को त्याग करके ही तो यज्ञमान बनता है और वह त्रुटियाँ ब्रह्म वाचो देवाः मानो उन त्रुटियों को समाप्त करना, गुरु को अर्पित करना, आचार्य को दे देना यह उसकी मानो दक्षिणा कहलाती है। हे प्रभु! मैं दोषों से उपराम होना चाहता हूँ। परन्तु देखो, यही तो दक्षिणा कहलाती है।

दक्षिणा की प्रतिष्ठा

चाक्राणी बोली कि प्रभु! यह मैने बहुत से वाक श्रवण किए हं,ै मैं और यह जानना चाहती हूँ कि मानो इसकी प्रतिष्ठा, दक्षिणा की प्रतिष्ठा का, उन्होंने कहा दक्षिणा की

प्रतिष्ठा हृदय है, दक्षिणा की प्रतिष्ठा मानव की श्रद्धा है, श्रद्धा में ओत प्रोत रहते हैं श्रद्धायां ब्रहे वर्णा ब्रह्मे परमपिता परमात्मा को श्रद्धामयी, अपने को धारण करता हुआ पार हो जाता है। यह श्रद्धा ही मानव का जीवन है, पुत्र अपनी पितर भक्ति कर रहा है, वह केवल श्रद्धा है। माता की सेवा कर रहा है, वह श्रद्धा है। मानो देखो, जन समूह में परणित हो जाता है वह श्रद्धा है। श्रद्धा का कोई अन्त नहीं होता। श्रद्धा ही श्रद्धा कहलाती है। श्रद्धायां मानव के प्रति सहानुभूति का नाम भी श्रद्धा कहलाता है। मानो देखो, श्रद्धायां प्रतिष्ठाम् यह इसमें प्रतिष्ठित हो जाते हैं। दक्षिणा मानव के मानो देखो, उसमी श्रद्धा में रहती है। ऋषि कन्या ने कहा प्रभु! यह प्रतिष्ठा, यह हृदय में श्रद्धा, श्रद्धा किसमें प्रतिष्ठित हो जाती है?

उन्होंने कहा श्रद्धा मानव के हृदय में ओत प्रोत हो जाती है। यह हृदय ही तो संसार कहलाता है। यह हृदय ही तो ब्रह्मपुरी कहलाती है। यह हृदय ही तो मानो विष्णुपुरी कहलाती है। यह हृदय ही देवपुरी कहलाती है। देवपुरी योगा स्थली कहते हैं। बेटा! देखो, हृदय को परमात्मा के हृदय से आलिंगन करना जैसे माता अपने पुत्र को क्षुधा में लोरियो का पान करा करके अपने में आलिंगन करके मानो उसे क्षुधा से तृप्त कर देती है। इसी प्रकार यह जो मेरा प्यारा प्रभु है, प्रभु का हृदय मानव के हृदय दोनों को एक दूसरे में प्रतिष्ठा यां प्रतिष्ठो ब्रह्म वाचा यह प्रतिष्ठित हो जाते हैं।

अभिमान से मृत्यु

मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी यह उच्चारण करती हुई, आगे प्रश्न करने वाली थी, याज्ञवल्क्य ने कहा देवी! तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा। तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी और यदि तुम अतिप्रश्न करोगी, तुम्हारे प्रश्नों का, सबका उत्तर तुम्हें प्राप्त हो गया। आगे मानो देखो, यह अनुभव का विषय है, इसे वाणी से उच्चारण नहीं कर सकते। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी मौन हो गई, परन्तु मस्तिष्क नीचे गिर जाने का अभिप्राय क्या है?

बुद्धिमान से तुम प्रश्न करते रहो, कुप्रश्नों में जब चले जाओगे तो वह मौन हो जाएगा, निरूत्तर हो जाएगा और वह जहाँ निरुत्तर हुआ तुम्हें अभिमान जागरुक हो जाता है और जहाँ अभिमान आया, मस्तिष्क नीचे गिर गया, मानव की मृत्यु हो गई है। बेटा! अभिमान ही तो मृत्यु कहलाती है। अभिमाना ब्रह्म वाचो देवाः मेरे प्यारे! देखो, अभिमान ही मृत्यु है।

बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का एक नृत्त अनके आंगन में आ गया। चाक्राणी ने कहा प्रभु! धन्य हैं आपको, आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया है, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म समाज से बोली हे ब्राह्मणों! इस याज्ञवल्क्य से बुद्धिमान तुम्हारी सभी में कोई ब्रह्मवेत्ता नहीं है। इसलिए तुम मौन हो जाओ, इसका पूजन करो। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी इतना कह कर नम्रता से अपने आसन पर विद्यमान हो गई।

तो मेरे प्यारे! यह क्या हुआ, हृदय और हृदय में श्रद्धा, श्रद्धा में दक्षिणा, दक्षिणा में याग, याग में प्रजापति, प्रजापति में इन्द्र और इन्द्र मुनिवरों! देखो, गन्धर्वों में और गन्धर्व सूर्य में और सूर्य, चन्द्रमा में। यह इसका द्वितीय रूप हो गया। महत्तत्व में जब परमाणुओं की क्रान्ति आती है तो मानो उस समय अन्तरिक्ष बनता है। अन्तरिक्ष वायु में, और वायु अग्नि में, और अग्नि जल में और जल मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी पर और पृथ्वी से यह चारों प्रकार की सृष्टि उद्बुद्ध हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, यह चाक्राणी गार्गी का उत्तर, प्रश्न चला। परन्तु मैं ओत प्रोत की चर्चा कर रहा था, विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं व्याख्याता नहीं हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है? क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनि इतने मनको की माला अपने में धारण करते हैं। यह एक मनकों वाली माला बन गई है ज्ञान, विज्ञान की एक माला बन गई इसको चिन्तन करने का नाम धारण करना है,

धारयामि बनाना है। प्रतो दोषि बनाना है।

मन्त्र का रहस्य

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था ममतो भवा सम्भवा देवं भद्राणि गच्छं ब्रह्मे वाचो अस्सुतां लोकां देवो ब्रह्मा ऐसा वेद के ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा है, ऐसा वेद का आचार्य कहता है कि हमारा जीवन महान बनें, पवित्र बनें, और हम परमपिता परमात्मा की गाथा का गान गा रहे हैं। प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! देखो, उस ब्रह्म का गान गा रहा है ब्रह्म की गाथा का वर्णन कर रहा है मानो देखो, जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, यह जो ब्रह्म है, व्रत्यं देवाः मेरे प्यारे! इस ब्रह्म की, एक एक वेद मन्त्र, इसकी गाथा गा रहा है, इसके गुणों का वर्णन कर रहा है गुणातीत बन रहा है।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं विचार रहा था कि यह सङ्कल्पमयी जगत है, यहाँ सङ्कल्पोमयी संसार बना है। यह परमात्मा का सङ्कल्प है बेटा! एक एक मनका एक मानो सूत्र में पिरोया हुआ मानो सङ्कल्पोमयी कहलाता है। जैसे माता का पुत्र, माता पिता दोनों का सङ्कल्प मात्र ही तो है। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है मानो यह नाना लोक लोकान्तरों की आभा में दृष्टिपात आ रहा है। तो बेटा! यह एक माला है, इस माला को जो मानव अपने में धारण कर लेता, वह धारयामि बन जाता है, वह विचित्र बन जाता है। मानो उस माला को कौन धारण करता है, ऋषि मुनि, विचारक जन, विज्ञानवेत्ता मानो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी, मेरे प्यारे! देखो, बुद्धिमान चार प्रकार की बुद्धियों का वर्णन करता है, इस सम्बन्ध में मानो देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा कहलाती है और नाना प्रकार की बुद्धियों के समूह का निर्माण होता रहता है।

सङ्कल्पोमयी संसार

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि

कहता है हे आचार्य! आओ, हम प्रभु को अपना सङ्कल्पोमयी स्वीकार करें। इस मानो देखो, सङ्कल्प में माता है, सङ्कल्प में पिता है, सङ्कल्प में पुत्री है, सकंल्प में पुत्र है, सङ्कल्प में गृह है, सङ्कल्प में वायु है। बेटा! यह कैसा सङ्कल्पमयी जगत बनाया प्रभु ने, तो मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषि मुनि दार्शनिक जन विद्यमान हो करके नाना प्रकार की कल्पना करते रहे हैं, नाना प्रकार की आभा का वर्णन करते रहे हैं, उस आभा में ओत प्रोत हो करके, बेटा! अपनी नृत्यानि बनाते रहे हैं। मानव के सङ्कल्प का यह जगत है। सङ्कल्पोमयी यह संसार बना करता है, गुरु शिष्य भी केवल एक सङ्कल्प ही तो है।

प्रभु, क्योंकि देखो, सब में विद्यमान है, परमात्मा देखो, एक वृक्ष पर दो पक्षी विद्यमान हैं, दो मानो वायु वृत्तियों में विद्यमान है। एक आनन्द ले रहा है एक आनन्द को दृष्टिपात कर रहा है। अपने में निहार रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यह प्रभु का अमूल्य चेतनामयी जगत कहलाता है। बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ, कि यह परमात्मा का अमूल्य जगत है, इस जगत में, यह नाना प्रकार की धाराएँ, यह सङ्कल्पोमयी संसार कहलाता है। दार्शनिक तो बहुत कुछ कहते हैं, कोई संसार को चिन्तनशाला उच्चारण कर रहा है, कोई यज्ञशाला उच्चारण कर रहा है, मानो देखो, भिन्न भिन्न प्रकार के रूप बेटा! बनाते रहते हैं।

यह आज का वाक्, अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! हमारा आज का वाक्, कि हम आत्मवेत्ता मानो संसार को अङ्गों और उपांगां से जान करके, इस सागर से पार होना है, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक समाप्त,

अब वेदों का पठन पाठन ओ३म् देवं रथा आभ्यां रुद्रश्चमा मां हिशणा रुद्रश्चमा रथं गाता वाचन्मा ग्राहणां त्वा महानं आपो रथा ओ३म् श्वञ्जना रथप्राची माहं धेनु रथां अच्छा भगवन्! आज्ञा! २१/७/८४ स्थान अज्ञात

12 २२ ०७ १९८४

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, दोनो प्रकार की उड़ाने उड़ने वाले विचारक रहें हैं एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता और एक भौतिक विज्ञानवेत्ता परन्तु दोनों का परस्पर एक मानवीय चिन्तन होता रहा है। इससे पूर्व काल में बेटा! हम उच्चारण कर रहे थें क्या यह संसार क्या है? प्रत्येक मानव के हृदय में आशङ्का लगी रहती है कि जिस संसार में हम आए हैं, यह है क्या? तो नाना ऋषि मुनियों ने दार्शनिकों ने अपनी उड़ाने उड़ी हैं किसी विद्वान ने बेटा! किन्ही दार्शनिक ने संसार को कल्प वृक्ष के रूप में परणित किया है। परन्तु किन्हीं आचार्यों ने इनको मानो देखो, एक सङ्कल्पोंमयी संसार माना है, कि प्रत्येक मानव सङ्कल्प में ही कटिबद्ध हो रहा है। परमात्मा का सङ्कल्प, इस संसार की प्रतिभा में रत्त रहने वाला है। इसी प्रकार माता पिता पुत्र पुत्रियाँ ये संसार सब एक सङ्कल्पमयी माना गया है। परन्तु जब दार्शनिकों ने अपना मन्तव्य प्रगट किया, और ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ करके, माला के मनकों को अपने में धारण कराया तो मुनिवरों! देखो, तृतीय दार्शनिक कहता है कि नही, यह

संसार जहाँ सङ्कल्पोमयी संसार है यह संसार एक प्रकार की चिन्तन शाला है। प्रत्येक मानव जो यहाँ आया है, वह चिन्तन और मनन करने के लिए आया है। प्रत्येक मानव को चिन्तन और मनन करना चाहिए। चिन्तन और मनन किसे कहते हैं? इस संसार की एक प्रतिभा को, मानव दृष्टिपात करता रहता है, और उसको चिन्तन में लाता है, अपने आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनों का समन्वय करता है। दोनों का समन्वय करता हुआ वह मेरे प्यारे! जो एक आभा में परणित होता हुआ अपने में ही मानो अपनेपन को दृष्टिपात करता हुआ, संसार में रत्त हो जाता है। परन्तु देखो, जब चिन्तन शाला के सम्बन्ध में यह वाक प्रगट किया गया तो मुनिवरों! एक आचार्य ने यह कहा कि यह संसार तो एक मानो देखो, मृत शाला है प्रत्येक मानव को मृत्यु से पार होना है। मृत्यु यह है क्या? इसके आङ्गन में मानो देखो, प्रत्येक मानव मृत्युञ्जय बनने की कल्पना करता है। विचारता रहता है, कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। प्रत्येक मेरी प्यारी माता, अपने पुत्र के लिए व्याकुल हो रही है। पितर अपने लिए व्याकुल हो रहा है, वह विचारता रहता है कि वह मृत्यु क्या है?

मृत्यु का अभिप्राय

तो बेटा! देखो, मृतकशाला के सम्बन्ध में आदि आचार्यों ने बेटा! बहुत ऊँची उड़ाने उड़ते हुए, बेटा! आओ, आज तुम्हें ऋषि मुनियों की एक सभा में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि मुनि अपना अपना चिन्तन करते रहे हैं ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते हुए मृत्यु से पार होने का प्रयास करते रहते हैं आओ, मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें, उसी शाला में ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! मुझे तो स्मरण आता रहता है, नाना ऋषि मुनियों का जीवन, मानो बेटा! देखो, एक समय महर्षि जगदग्नि आश्रम में एक सभा हुई थी, उस सभा में बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, चाक्राणी, गार्गी, महर्षि सोमभानुकेतु मुनि मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी

कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, देवर्षि नारद, सोमकेतु सम्भूमिका, मानो देखो, विभाण्डक मुनि और व्रेतकेतु इत्यादि ऋषियों का एक समूह एकत्रित हुआ। महर्षि पिप्लाद मुनि भी सभा में विद्यमान थे। तो मेरे प्यारे! उस सभा में यह प्रसंग उत्पन्न होने जा रहा था कि यह मृत्यु क्या है? प्रत्येक मानव मृत्यु के ऊपर अपनी कल्पना करने लगा किन्हीं आचार्यों ने कहा कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है, परन्तु देखो, देवर्षि नारद इत्यादियों ने कहा कि इसके ऊपर और चिन्तन किया जाएं।

तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी उपस्थित हो करके, बोली कि प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, कि यह मृत्यु भवा सम्भवा शरीराणां भविते ब्रह्मवाचो मानो शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा कि यह हमारे विचारों में नही आया, महर्षि पिप्लाद ने कहा, अभावाम् व्रेत केतु मृत्यु व्रता महर्षि पिप्लाद ने कहा, कि मृत्यु संसार में कोई वस्तु नही हैं, मृत्यु का अभाव है, मृत्यु कोई वस्तु नही है। चिन्तन करने से यह प्रतीत होता है, कि मुत्यु कोई वस्तु है ही नही। परन्तु देखो, देवर्षि नारद मुनि महाराज ने, इसका समर्थन किया और आदि ऋषियों ने भी कहा कि मृत्यु का अभाव है। मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में, नाना प्रकार के विचार विनिमय, जब उत्पन्न होने लगे, परन्तु देखो, वह सन्ध्या का काल हो गया, सन्ध्या काल होते ही मुनिवरों! देखो, सब ऋषि मनि अपने अपने कक्ष में जा पंहुचे।

पिप्लाद मुनि को बहुत समय हो गएं थे गृह को त्यागे, वह भी भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! अपने गृह में प्रवेश किया। जब वह भी मानो देखो, गृह में पंहुचे तो उनकी पत्नी का नाम शकुंतका था, शकुंतका मानो व्याकुल हो रही थी, महर्षि पिप्लाद मुनि बोले कि देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं इसीलिए व्याकुल हो रही हूँ, क्या मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। और

मैं उसके भ्रम में व्याकुल हो रही हूँ, उन्होनें कहा हे देवी! मैं तो ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से आ रहा हूँ, ब्रह्म विचारक हूँ में हमारे विचारों में तो मृत्यु का अभाव है संसार में, मृत्यु कोई वस्तु नही हैं। उन्होंने कहा तो प्रभु! यदि मृत्यु नही हैं, तो यह मेरा शरीर क्या है? उन्होंने कहा यह परमाणुओं का संघात है। मानो परमाणुओं के संघात का नाम ही शरीर कहा गया है। नाना प्रकार के परमाणु चेतना रूपी सूत्र में पिरोएं हुए हैं, मानो उनकी सुगठिता होती रहती है, उनका मानो अपने को अपने में ओत प्रोत करा करके, यह शरीर बन जाता है। उन्होने कहा प्रभु! ऋतम्भरे ये परमाणु का संघात ऋषि ने तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, जब यह परमाणुओं का संघात है, जब यह मेरा शरीर इस रूप में नही था, उससे पूर्व यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? परमाणुवाद की क्या दशा थी? उस समय उन्होंने इस सम्बन्ध में कहा कि यह परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान है। मानो इन्हीं परमाणुओं से मानव के शरीर का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो, मेरी भोली माता अपने विज्ञान से प्रायः वंचित्त रहती है। क्योंकि माता के गर्भस्थल में जहाँ शिशु का प्रवेश हुआ, परमाणुवाद उसके अङ्ग संग प्रायः युक्त हो जाते हैं मानो देखो, सूर्य उसे प्रकाश में रत्त करने लगता है, चन्द्रमा अमृतमयी बना देता है, और देखो, अग्नि उष्ण बना देती है, और मुनिवरों! देखो, पृथ्वी गुरूतव देना प्रारम्भ कर देती है जल आपोमयी प्रवेश करा देता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह द्यौ में आभा को प्राप्त होता हुआ, मानो सब देवता उसकी रक्षा करते हैं।

मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान कितना नितान्तर है मानव के शरीर में मानव की वृत्तियों में बेटा! देखो, जब माता के गर्भस्थल में यह शिशु विद्यमान होता है, इन परमाणुओं से बहतर करोड़ बहतर लाख दस हजार दौ सौ नाड़ियों का निर्माण होता है। तो मेरे पुत्रों! मेरी भोली माता को कोई प्रतीत नही होता, कैसे बुद्धि का निर्माण होता है, मानो देखो, बुद्धि भी

चार प्रकार की, मैंने वर्णन की है। देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी यह चार प्रकार की बुद्धियों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। परन्तु इसी प्रकार ब्रह्मा वचो सम्भवा देवाः हिरण्यं ब्रहा अस्तुतो मेरे पुत्रों! देखो, ये माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, मेरी भोली माता को कोई प्रतीत नही, कि कौन निर्माणवेत्ता है, कौन रचयिता है कौन विश्वाकर्मा बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, रचना कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, इस ब्रहे मानो जब ऋषि ने इस प्रकार की विवेचना प्रारम्भ की, तो चाक्राणी गृहे सम्भवाः मेरे पुत्रों! देखो, उस सयम उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! यह तो चक्रों वृत्ति वाक है, मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या भगवन! जब माता का गर्भाशय नही था, उससे पूर्व यह परमाणुवाद कहाँ रहते थे? उन्होंने कहा देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, वह पिता के ओजस्वी ब्रह्मो वाचस्प्रही वृतो देवाः यह वीरतव रूपों में वर्णित थे, वीरांगना के रूप में परमाणु विद्यमान थे, तो मानो देखो, कुछ परमाणु मानो वीरांगना है और इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला ही ब्रह्मवर्चोसि को प्राप्त होता है, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला, मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है।

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! देखो, देवकेतु सम्भौति ऋषि महाराज के आश्रम में, बेटा! कन्या अध्ययन करती थी तो मुनिवरों! देखो, जब वेदों अध्ययन करती थीं, साम गान गाती रहती थी, तो उस समय सिंह राज और मृगराज भी उस वेदज्ञ ध्वनि को, अपने में श्रवण करते रहे हैं, सर्पराज बेटा! वेदज्ञ ध्वनि को, अपने में परणित करता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वह वीरांगना कहलाती हैं, जो अपने जीवन में महानता मे प्राप्त हो करके मानो अपनी महती प्रतिभा को जान करके, मानो देखो, अपने प्रभु में संलग्न हो जाती हैं। हे माता! ब्रह्म वाको सम्भवा तू वीरांगना कहलाती है। परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीरांगना है। मानो देखो, द्वितीय रूप में, परमाणुओं की रक्षा करने वाला, मानव देव

पुरी को प्राप्त हो जाता है। देवतव को प्राप्त हो जाता है, देवतामयी बन जाता है, यही मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि प्राप्त करता हुआ, ब्रह्म वाचो ब्रह्म देवाः वह ब्रह्म में परणित करता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मवादी बन करके, वह देवताओं की सभा में परणित हो जाता है। यही तो ब्रह्मचरिष्यामि है, वेद के दो ही शब्द माने गएं हैं ब्रह्म और चरी। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को, मानो दोनों को अङ्गों और उपांगों से जानने का नामोकरण ही बेटा! ब्रह्मचर्य व्रत कहलाता है।

तो विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता है कि हे मानव! तू देवता बन और देवता तू किस काल में बनेगा जब परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति हो जाएगी, क्योंकि दो प्रकार की गति परमाणुवाद की होती हैं, एक परमाणुवाद की गति ऊर्ध्वा में, एक ध्रुवा में रहती है। मानो ध्रुवा में पितर यागी बनते हैं, और ऊर्ध्वा में देव यागी बना करते हैं, देवलोक को प्राप्त हो जाते हैं। वह देवपुरी में अपने को वास करके, देवतव में परणित हो करके अपने में मानो अपने में ही भासते रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या वेद के ऋषि ने कहा है कि क्या हम अपनी मानवीयता में परणित होते हुए, ब्रह्मवर्चोसि का मानो देवतव को प्राप्त हो जाएं।

मेरे पुत्रों! जब यह व्याख्या ऋषि ने प्रगट की, तो मुनिवरों! उनकी पत्नी शकुंतका ने, कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ जब यह वीरतव वीरांगनातव नही होता तो उससे पूर्व यह परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन! तो मेरे प्यारे! ऋषि कहता है हे देवी! सृष्टि के पिता ने जब सृष्टि का प्रारम्भ किया, तो मानो सात प्रकार के अन्नों को उत्पन्न किया था उस देव ने, सात प्रकार के अन्नों का उत्पन्न किया, बेटा! एक अन्न को मानो देखो, पशु पान कर रहा है, एक अन्न को मानव पान कर रहा है, एक अन्न मानो देखो, हूत कहलाता है, एक अन्न प्रहूत कहलाता है एक अन्न मानो देखो, जो मनोवृत्तियों में होता है

एक अन्न मानो देखो, जो बुद्धि वर्चोसि में होता है यह मानो ग्रतियों में जो हमारी इन्द्रियों में समाहित रहता है, बेटा! यह सात प्रकार का अन्न, सृष्टि के पिता ने, सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया। मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु कितना महान है, एक ही पौधा है, उस पर दो प्रकार के अन्न विद्यमान होते हैं। एक मानव पान करता है, ओज और तेज की उत्पति कर रहा है, एक मानो पशु पान कर रहा है वह दुग्ध दे रहा है वह मानो पय वृत्तिया दे रहा है आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! गो नाम के पशु की बड़ी प्रशंसा की है, पशुओं की बडी विशालता बड़े प्रशंसनीय बनाएं हैं क्योंकि अपने अपने में प्रत्येक प्राणी, अपना महत्वयुक्त होता है। महत्व से प्राप्त होता हुआ, अपने में ओजस बनता रहता है, परन्तु वह पय दुग्ध की उत्पति करता है। मेरे प्यारे! मानव पान कर रहा है, एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है, एक अन्न पशु वृत्तियों में प्राप्त होता है वह पय वृत्तियों को प्राप्त हो जाता है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है हे देवी! यही परमाणु मानो देखो, अन्नाद में विद्यमान होते है, अन्नादाम भूतो ब्रह्म वाचो ब्रह्म वर्णा ब्रह्म वाचो ब्रह्म वृत्ति देवा हिरण्यम रथा वाचो वृत्ति देव ब्रहा मेरे प्यारे! देखो, वह दो प्रकार के अन्न सृष्टि के पिता ने एक ही पौधे पर उत्पन्न किया परन्तु द्वितीय जो अन्न है वह हूत कहलाता है, हूत कहते हैं आहुति देने को हूत कहते हैं अग्न्याध्यान करने को हूत कहते हैं। देवताओं की हवि को, मेरे पुत्रों! क्योंकि अग्नि यह जो विभाजन करती है प्रत्येक परमाणु का विभाजन कर देती है, जब यह अग्नि में परणित किए जाते हैं नाना प्रकार के साकल्य, हम हूत करते हैं, जब बेटा! याग में आहुति देते हैं, तो बेटा! उससे देवता प्रसन्न होते हैं, क्योंकि यह जो अग्नि है, यह देवताओं का मुख कहलाता है। जो अग्नि में प्रवेश करोगे, वही मानो विभाजन बना देती है, उसको सूक्ष्म परमाणु बना करके

अन्तरिक्ष में ओत प्रोत करा देती है। मानो द्यौ मण्डल में ओत प्रोत हो जाते है। नाना प्रकार का परमाणुवाद अपने में प्रमाणित रहने वाला, प्रतिभा में रत्त रहता है।

तो विचार विनिमय क्या मानो हूत मानो तृतीय अन्न कहलाता है। सम्भूति ब्रह्मवाचो देवाः यह मानो देखो, अन्नाद है, जो देवताओं को हम हवि देते हैं, देवता ही तो पर्जन्य कहलाते हैं, देवता ही तो मेरे प्यारे! देखो, हवि को बना करके छा देते हैं, देखो, चन्द्रमा मेघों में प्रणे ब्रहे मानो देखो, समुद्रों में अग्नि की प्रतिभा का उद्बुद्ध हो जाता है, वही मानो देखो, उद्बुद्ध हो करके, सोम की वृष्टि होती है, सोम की वृष्टि हो करके बेटा! नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाली, यह पृथ्वी है, यह मानो पृथा है, यह वृत्तिका कहलाती है, यह सोमलता है सोम के देने वाली है सोम कृतिभा को देने वाली है जिससे बेटा! मानव का जीवन पवित्र बना करता है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार व्याख्या, उन्होंने कहा तृतीय जो अन्न है वह प्रहूत कहलाता है। प्रहूत उसे कहते हैं जो पुरोहित जन होते हैं जो बुद्धिमान है हमें शुभ प्रेरणा प्रदान करते हैं, हमें सुमार्ग पर ले जाते हैं, बेटा! वह मानो हम उसको हम मानो प्रहूत कहते हैं। यही प्रहूत भी याग है, पुरोहितों की सेवा करनी चाहिएं, जो ऊँचे विद्वान मानो देखो, वह हमारे पुरोहित जन हैं, उपकारं ब्रह्मे वह महान कर्म क्रियाकलाप में लगे हुए हैं वह समय समय पर आ करके, वह राष्ट्र की चर्चाए वह मानो देखो, वह आत्मा की चर्चाएं, करते चले जाते हैं, हमें वह ओजस प्राण दे जाते हैं। हमें मानो देखो, हमारी तृप्ति कर जाते हैं, मानव को भिन्न भिन्न प्रकार की क्षुधा मानव के हृदय में परणित होती रहती है, एक अन्नाद की क्षुधा है, एक देव पूजा की क्षुधा है, एक मानो देखो, परोपकार करने की क्षुधा रहती हैं यह सब क्षुधा हैं और इनको तृप्त करने के लिए बेटा! देखो, उपदेश और मानव को ज्ञान की आवश्यकता रहती है। ज्ञान को अपने

में धारण करने वाला ही बेटा! देखो, प्रहूत याग करता है।

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराते हुए कहा था, त्रेता के काल का वाक तुम्हें स्मरण होगा, बेटा! त्रेता के काल में महाराजा विश्वामित्र को एक धनुर्याग कराना था, मानो देखो, धनुर्याग राम के द्वारा क्योंकि त्रेता के काल में राम के दो गुरु विशेष माने जाते थे, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता, आध्यात्मिक गुरु तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज थे, और मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान में रत्त रहने वाले ज्ञान और विज्ञान की उड़ान में मुनिवरों! देखो, महाराजा विश्वामित्र थे। देखो, महर्षि वशिष्ठ आध्यात्मिक और महर्षि विश्वामित्र भौतिक विज्ञान की शिक्षा में परायणता को प्राप्त कराते रहते थें, तो मानो देखो, धनुर्याग करना था, वह धनुर्याग को पूर्ण कराने के लिए बेटा! वह उन्होंने अयोध्या के लिए गमन किया, और वह अयोध्या में भ्रमण करते हुए, वह अयोध्या में प्रवेश किया। राजा दशरथ के जब स्थली पर प्रवेश हुआ तो राजा दशरथ ने कहा प्रभु! यह मेरा कैसा अहोभाग्य है, आप मानो बिना सूचना के, राष्ट्र में पधार रहे हैं, आप यदि मुझे आज्ञा देते तो मैं आपको वाहनों में ले करके आता, हे प्रभु! आप क्या इच्छा ले करके आए? महाराजा विश्वामित्र ने कहा हे राजन्! मैं तुम्हारे जो किशोर पुत्र हैं, राम और लक्ष्मण, उनको ले जाना चाहता हूँ। मैं धनुर्याग कर रहा हूँ, धनुर्याग करना ही मेरा कर्तव्य है, उन्होंने कहा प्रियतम, मैं आपके याग को मैं पूर्ण कराऊंगा, वह बाल्य तो किशोर हैं, उन्होंने कहा नही, कदापि नहीं।

तो बेटा! देखो, अयोध्या में उस काल में इस प्रकार की नियमावली बनी हुई थी क्या पुरूषों का न्याय राजा किया करते थे, देवियों का न्याय मानो राजलक्ष्मियां किया करती थी, तो यह श्रवण करके की ऋषि का आगमन हुआ है, तो बेटा! देखो, कौशल्या जी सर्वत्र मानो उनके समीप आ पंहुची, समीप आने के पश्चात उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्म वाचो ब्रह्मे कृतो देवं ब्रह्मा वाचन्नमा कृतं देवा उन्होंने कहा हे प्रभु! सम्भूति ब्रह्मे

आईए, आपका कैसे आगमन हुआ? विश्वामित्र ने कहा हे देवियों! मैं इसीलिए आया हूँ, मैं एक धनुर्याग कर रहा हूँ, राम और लक्ष्मण को ले जाना चाहता हूँ। मानो तीनों रानियों ने एक ही स्वर में कहा प्रभु! प्रिय। यह तो हमारे लिए सौभाग्य है, ले जाईएं, मेरे पुत्रों! राम लक्ष्मण दोनों को, कौशल्या ने ऋषि को प्रदान किया। उन्होंने कहा लीजिए भगवन! धनुर्याग कीजिए। तो मेरे पुत्रों! देखो, राम लक्ष्मण को ले जा करके, महर्षि विश्वामित्र ने धनुर्याग किया, और धनुर्याग करके बेटा! उन्होंने परमाणुओं का अणुओं का नाना प्रकार के यन्त्रों का उन्हे बोध कराया, अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का भी बोध कराया। मेरे प्यारे! तुम्हें प्रतीत होगा, क्या वहाँ विश्वामित्र के यहाँ, यन्त्रालय विद्यमान थे उनके मानो देखो, यन्त्रालयों में ऐसे ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, जो पृथ्वी के दस दस योजन के गर्भ मानो देखो, प्रत्यक्ष उन्हें दृष्टिपात आता रहता था। कौन सी धातु कितनी दूरी पर है, कौन सा परमाणु कहाँ गति कर रहा है अग्नि कैसे अग्न्याध्यान बन करके आपो में प्रवेश हो करके पृथ्वी में अग्नि का पुंज बना हुआ है। मानो इस प्रकार यन्त्रों में, यहाँ पृथ्वी की, इस प्रकार की प्रतिक्रियाएं जो गर्भ में हो रही हैं वह दृष्टिपात आती रहती थी।

तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने यज्ञाम् भूतं ब्रह्मा उन्होंने धनुर्याग किया। तो बेटा! उन विद्वानों को हमारे यहाँ प्रहूत कहते हैं वह पुरोहित जन हैं, जो ऊँची शिक्षा दे करके हमारे अन्तर्हृदय को तृप्त करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा देवी! यह प्रहूत ही यज्ञ कहलाता है, प्रहूतां अन्नाद भूतं मनं भूतं यह प्रहूत अन्न कहलाता है, जिस अन्न के द्वारा मानव अपने में महान बनता रहता है। मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा, ये तीन प्रकार के अन्न तो मानो देखो, परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने, एक मानव के लिए निर्धारित किया, यह चार प्रकार का अन्न, भौतिक अन्न कहलाता है। और देखो, तीन जो अन्न हैं जिसको बेटा! मनस्तव कहते हैं, यह मन है मन को

जानना, बेटा! बुद्धि को जानना, प्राण सूत्र को जानना है मेरे प्यारे! देखो, मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है इन सर्वत्रता को जान करके मानवीयता में परणित हो करके, अपनी आभा में सदैव आभायित होना है। अपने में चिन्तन की उज्ज्वल शैली में ले जाना है, जिससे बेटा! मानव का हृदय, महान पवित्रता में परणित हो जाता है। विचार क्या, बेटा! देखो, मन को जानना, यह मन क्या है अपने में क्या कहलाता है, यह प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु कहलाता है, इसके आङ्गन में बेटा! चित्त का मण्डल बना हुआ है, मानो देखो, चित्त के मण्डल में, मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। मानव के चित्र भी विद्यमान होते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, चित्त के मण्डल में जब तक संस्कार बने रहते हैं, तब तक मानो देखो, मनस्तव की प्रतिभा में रत्त होता है। मानो देखो, चित्त का मण्डल और देखो, यह मनस्तव प्रतिभा मानो देखो, मन बुद्धि में लय हो जाता है, और बुद्धि चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाती है मानो वही तो कृतिका कृतिवादन कहलाता है। मानो देखो, उसके ऊपर अन्वेषण करना, विचार करना, योगाभ्यास और देखो, चित्त की प्रक्रिया को जानना है।

हे देवी! वह मानो देखो, मनस्तव अन्न कहलाता है, नेत्राणि गच्छम् ब्रह्मा यह जो नेत्र हैं यह मानो देखो, याग कर रहे हैं, जब मानो देखो, इन्हें भी अन्न कहलाया जाता है, मानो रूप, रस गन्ध में सर्वत्र मानो देखो, अन्न विद्यमान रहता है। बेटा! रूपों को दृष्टिपात कर रहा है, वह मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, हृदय अगम्य में, वह चित्त के मण्डल में वह प्रवेश कर जाते हैं, स्वप्नतव में, चित्त के मण्डल में से उन संस्कारों को ले करके मानव चित्रों का दिग्दर्शन करता रहता है। अपने में भासता रहता है, एक मानव कहता है धर्म की प्रतिभा, यह धर्म क्या है? प्रत्येक मानव देखो, धर्म के सम्बन्ध में, अपने में चिन्तित रहता है मानो देखो, धर्म को संसार में कोई मानव नष्ट नही कर सकता। धर्म एकोकी वचन कहलाता

है, धर्म अपने में पूर्णता में रहता है। परन्तु देखो, नेत्रों से सु दृष्टिपान करने का नाम धर्म है, कुदृष्टिपान करने का नाम बेटा! अधर्म माना गया है। ये दोनों व्याख्याएं अपने में एक दूसरे में पूर्णता को प्राप्त होती रहती हैं, जैसे मानव सुदृष्टिपान करता है, प्रत्येक मानव उसकी पूजा करता है, एक मानव कुदृष्टिपान कर रहा है, प्रत्येक मानव उसका तिरस्कार कर रहा है।

तो मेरे प्यारे! विचार क्या मानो देखो, यह नेत्रों का अन्न ब्रहे यह रूपमयी बेटा! अन्नाद कहा जाता है, अन्नं ब्रह्म वाचो अन्नं देवोः अन्नाम् भू अब्रति चित्त व्रताः मेरे प्यारे! देखो, अन्न में ही संसार विद्यमान रहता है। ये मानव का एक अन्न है जो नेत्रों से रूप को दृष्टिपात करके, अपने अन्तर्हृदय की क्षुधा को शान्त करता है, मानो इसी प्रकार बुद्धि वर्णा प्रत्येक मानव शब्दों में शब्दायमान होना चाहता है, प्रत्येक शब्द को ग्रहण करके, अपना सम्बन्ध दिशाओं से, समन्वय करना चाहता है मानो देखो, अपने आन्तरिक जगत को मानो देखो, दिशाओं में ले जा करके शब्द को गोलकना बना करके अपने में प्रतिष्ठित हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार की व्याख्या की क्या यह सात प्रकार का अन्न, सृष्टि के पिता ने मानो सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया, इसी अन्न के द्वारा, मानो अपने अन्नाद प्रतिक्रिया को प्राप्त कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, इतने में ही शकुन्तका ने कहा प्रभु! मैं अन्न की व्याख्या नही चाहती हूँ, मेरी इच्छा तो यह है प्रभु! क्या यह अन्न भी नही होता तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? भगवन! उन्होंने कहा देवी! जब यह अन्न नही होता, तों यही परमाणुवाद मानो कुछ अग्नि में होता है, कुछ आपो में, कुछ मानो देखो, पृथ्वी में तीन प्रकार के परमाणु होते हैं, और वायु इन परमाणुओं को गति देती है, अवकाश में यह गति करते रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या मानो देखो, ब्रह्मे वाचा विज्ञान यह अन्नाद ब्रहे व्रताः हे देवी! यह मानो पञ्च महा भौतिक, पिण्डों में रत्त रहने

वाले हैं इसी में रत्त रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी ने, अमृतो भागं ब्रह्मे चाक्राणी की वन्दना करते हुए, उन्होंने कहा शकुन्तका ने, प्रभु! देखो, हमारे वंशलज में चाक्राणी हुई है, वह भी मानो बुद्धिमता थी, परन्तु वह भी प्रश्नों की झड़ी लगा देती थी, इसी प्रकार मैं भी यह जानना चाहती हूँ भगवन! क्या यह परमाणु मानो कृतियों में नही होता, तो यह कहाँ चला जाता है?

अज्ञानी की मृत्यु

उस समय कहा हे देवी! यही परमाणुवाद, जब मानव के शरीर से आत्मा निकस जाता है तो मानो देखो, यह तत्त्व अपनी अपनी आभा में रत्त हो जाते हैं। मानो देखो, जब अग्नि में दाह कर किया गया, आत्मा का विनाश नही हुआ है, परन्तु देखो, कोई वस्तु का विनाश नही होता, देवी! मानो जल के परमाणु जल में प्रवेश कर गएं हैं, अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रवेश कर गएं और आपो के गुरूतव परमाणु मानो पृथ्वी में प्रवेश कर गएं हैं। इसी प्रकार देखो, यह प्राण वायु में प्रवेश कर गया, और देखो, अवकाश अन्तरिक्ष में चला गया। तो देवी! इन परमाणुओं की भी मृत्यु नही होती। तो देवी! मृत्यु तो पञ्च महा भौतिक वृत्तियों की भी नही होती। तो हे देवी! आत्मा कदापि विनाशता को प्राप्त नही होता, आत्मा सदैव चैतन्य बनी रहती है, वह परमाणुवाद मानो प्राण और सूत्र में पिरोय हुए मानो अन्तरिक्ष में गति करते हैं। तो देवी! मैं जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या संसार में मानो मुझे मृत्यु का इसीलिए अभाव दृष्टिपात आता रहता है, यह मृत्यु अपने में कोई वस्तु नही हैं मृत्यु का मुझे अभाव ही दृष्टिपात आता रहता है तो देवी! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि मृत्यु क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो गई, और ऋषि पत्नी ने कहा धन्य है प्रभु! आपने मेरे अज्ञान को समाप्त किया। मेरे पुत्रों! देखो, पिप्लाद मुनि बोले, कि देवी! नहीं मानो मृत्यु भी है, ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नही होती। जो ब्रह्म को जानता है उसकी

मृत्यु नही होती, इससे सिद्ध हुआ कि अज्ञान का नाम मृत्यु है, प्रकाश का नाम जीवन है। मेरे प्यारे! जो प्रकाश में रत्त रहता है उसकी मृत्यु नही हुआ करती, अन्धकार नही आता सदैव प्रकाश में रत्त रहने वाला प्राणी अपने में प्रकाश को प्राप्त करता रहता है। प्रकाश को धुता रहता है अन्धकार को त्यागता रहता है।

तो इसीलिए वेद का ऋषि कहता है न मृत्यु परमाणुवाद की होती है, और न आत्मा की, परन्तु देखो, अज्ञान की मृत्यु होती है अज्ञान नही रहना चाहिए, अज्ञान का अभाव हो जाता है, जो ज्ञान होने पर देखो, उसका अभाव बन जाता है। तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, मृत्यु अभावा सम्भवे यह आत्मा की मृत्यु नहीं परमाणुवादों की मृत्यु नही होती हैं, यह अपने मे पूर्णा अपनी पूर्णता में रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो करके, बोली कि धन्य है प्रभु! आपने मुझे मृत्यु की प्रतिभा का वर्णन कराया, उन्होंने कहा मृत्यु भवा सम्भवा विक्रतं दिव्यां गते वर्णास्ति वेद का आचार्या कहता है हे धर्मों वाचा मानो देखो, मृत्यु भविते, संसार में प्रभु का राष्ट्र कितना विशाल है, प्रभु के राष्ट्र में बेटा! अन्धकार नही होता है। वहाँ सदैव प्रकाश रहता है, प्रभु के राष्ट्र में बेटा! आलस्य नही होता, प्रमाद नही होता, जब आलस्य प्रमाद नही होता तो रात्रि नही होती, जब रात्रि नही होती तो सदैव प्रकाश रहता है और जब सदैव प्रकाश रहता है तो बेटा! मृत्यु भी नही होती।

तो विचार विनिमय क्या हम प्रभु के राष्ट्र में अपने को स्वीकार करके मृत्यु से उपराम हो जाएं, मृत्यु हमारा अस्सुतो मृत्यु अपने में कोई वस्तु नही हैं, यह उच्चारण करके बेटा! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गया। ऋषि पत्नी अपने में मौन हो गई, ऋषि पत्नी ने कहा प्रभु! आपने मेरे अज्ञान को नष्ट कर दिया है आपने मुझे प्रकाश में लाने का प्रयास किया है, आपको मैं धन्य धन्य कह रही हूँ। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ प्रत्येक मानव प्रत्येक देव कन्याएं अपने में दार्शनिकता में रत्त

होती रही है। अपने में विचारती रही हैं क्या हमारा मानवीय जीवन क्या है? हमें क्या कर्म करना है, किस क्रियाकलाप को लेना है, क्योंकि यह परमात्मा का जो अमूल्य जो जगत है, यह महानता में रत्त रहने वाला है तो विचार विनिमय क्या दार्शनिकों ने कहा कि यह संसार एक प्रकार की मृत्यु शाला है, यहाँ मृत्यु को विजय करने के लिए, प्रत्येक प्राणी आया है। यह संसार मृत लोक कहलाता है। हे मृत्यु को विजय करने वालों! आओ, तुम मानो देखो, मृत में प्रवेश हो जाओ यह मृत लोक क्या है? मेरे प्यारे! मृत्यु को विजय करने का, एक लोक है। अपने क्रियाकलापों को ऊँचा बनाना है, तो आदि ऋषियों ने कहा है आचार्यों ने कहा है क्या हमें मृत लोक में आ करके, मृत्यु को विजय करना है, मृत्यु से उपराम होना है, मृत्यु मानव की नही आनी चाहिए, मृत्यु क्या है? बेटा! देखो, मृत्यु अज्ञान है, अज्ञान का नामोकरण ही मृत्यु है, तो वेद के ऋषियों ने बेटा! इस प्रकार अपनी विवेचना प्रगट करते हुए बेटा! ऋषि पत्नी नतमस्तिष्क हो गई और चरणों की वन्दना करते हुए उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आपने मेरे अज्ञान को समाप्त किया है, आपको धन्य है, आप मानो देखो, वृत्तिका कहलाते हैं यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक्.............शेष अनुपलब्ध।

13 १८ ०८ १९८४ सम्पाति, गरुड़ की शिक्षा दीक्षा

... मुनिवरों! देखो, भगवान राम, विद्यालय में अध्ययन करते रहते थे। उनके अध्ययन की जो प्रतिक्रिया थी, मानो वह राष्ट्रीयवाद के ऊपर रहती थी। अध्ययन करने का, उनका जो एक विषय था, वह यही था कि मैं त्याग पूर्वक इस संसार में, किस प्रकार अपने जीवन को व्यतीत कर सकता हूँ। मानो देखो, उनकी आभा में, रमण करने वाले नाना वैज्ञानिकों के पुत्र, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के उस विद्यालय में बेटा! जहाँ ये राजकुमार शिक्षा पाते थे, वहाँ और ऋषि पुत्र भी थे और उस विद्यालय में, एक त्रिकेत नामक एक राजा हुए हैं,

मानो उनके दोनों पुत्र थे। मेरे प्यारे! देखो, वह स्वस्तप्रहा, जिनका नाम सम्पाति था और एक का नाम गडकेश्वर था। परन्तु वे दोनों महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ, प्रायः अध्ययन करते थे। मेरे प्यारे! सम्पाति की बुद्धि महान कुशल थी, और गरूड़ की बुद्धि उससे भी महानता की वार्ता को विचार विनिमय करती रहती थी। परन्तु एक समय प्रातः कालीन महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को पूर्वाभिमुख ले करके मानो वह प्रातः कालीन याग करते थे, जब वह याग में परणित हो गये, ब्रह्मचारी, याग करने लगे पूर्वाविमुख हो करके, बेटा! याग करते थे। क्योंकि पूर्व दशा से प्रकाश आता है, और उस प्रकाश में महान रहस्यतम तत्त्वों का बेटा! उद्घाटन होता रहता है। क्योंकि वह प्राची कहलाती है, उसमें अग्नि की धाराओं का जन्म होता है, और अग्नि की भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं को ले करके, बेटा! विज्ञान अपने में महान रहा है और याज्ञिक पुरुष मुनिवरों! देखो, याग कर्म कहने में तत्पर रहे हैं।

महर्षि वशिष्ठ का विद्यालय

तो मेरे प्यारे! प्रत्येक मानव को विचार विनिमय करना है कि हम प्रातः कालीन मानो देखो, अग्नि के सम्मुख विद्यमान हैं, यह अग्नि हमें मुनिवरों! प्रकाश देती है। तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ ब्रह्मचारी बेटा! अध्ययन करते रहे, प्रातः कालीन मुनिवरों! देखो, याग कर्म करना, अनुष्ठान करना, उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, यह गार्हपथ्य नाम की अग्नि का प्रायः चयन करते रहे। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों के विषय भी भिन्न भिन्न रहते थे। मुझे स्मरण है, ब्रह्मचारी सम्पाति ने जब वह विद्या अध्ययन में लगे, तो उनका केवल परमाणु विद्या के ऊपर अपना अधिपथ्य था, और विचारते रहते थे कि हमें अग्नि वास कृति अस्तो मानो हम उस विद्या को जानना चाहते हैं, जिस विद्या में रमण करने के पश्चात्, हम राष्ट्र और समाज को मानो उन जनसमूह समाज को हम ऊँचा बना सकें,

तो यह प्रायः उनके मनो की एक कामना उदधृत होती रहती थी।

तो आओ, मेरे प्यारे! क्या महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अपने विद्यालय में अध्ययन कराते रहते। मुनिवरों! देखो, कुछ समय के पश्चात महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज पूर्णिमा के दिवस मानो चन्द्रमा की कान्ति में विद्यमान थे, ब्रह्मचारी सम्पाति और भगवान राम, मेरे प्यारे! गरूड़ ये तीनों मङ्गल ब्रहे असुताम् मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ के चरणों में पहुँचे उन्होंने कहा कि हे प्रभु! आप याग कर्म करते हैं, परन्तु यह याग क्या है, इसके गर्भ में क्या है? तो मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि यह जो याग कर्म है, जिससे हम अग्नि का ध्यान करते हैं, उसका चयन करते हैं। मानो वह ज्ञान की प्रतिनिधि है। ज्ञान में हमें परणित करा देती है। तो आज हम देखो, उस विद्या का अध्ययन और चयन करते रहते हैं।

गार्हपथाग्नि का पूजन

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने, जब यह वाक ब्रह्मचारियों के सम्मुख कहा, ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! हम एक मानो गार्हपथ्य नामक याग को जानना चाहते हैं। तो उस समय मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ ने गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन किया और उन्होंने वर्णन कराया कि गार्हपथ्य उसे कहते हैं जिस अग्नि में बाल्य काल में ब्रह्मचारी तपता रहता है ब्रह्मचारिणी तपती रहती हैं। तपने के पश्चात मानो देखो, वह नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दिया जाता है। विचार क्या गार्हपथ्य नाम की अग्नि के गर्भ में मानो सरस्वती विद्यमान रहती हैं। ब्रह्मचारी जब प्रातः कालीन अग्न्याधान करता हुआ, गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है, गार्हतथ्य वह कहलाती है जहाँ मानव मानव अपने ब्रह्मचर्यतव को अपनाता हुआ अपने में सुसज्जित बनता हुआ, मानव ऊँची से ऊँची

उड़ान उड़ता रहता है। परमात्मा के गर्भ में, परमात्मा के राष्ट्र में, अपने को स्वीकार करता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों ने महाराज की वार्ता को स्वीकार किया। परन्तु देखो, उनके अध्ययन का कर्म ऋषि के चरणों में चलता रहा, परन्तु गार्हपथ्य और गृहपथ्य नाम की अग्नि का उन्होंने चयन किया।

गार्हपथाग्नि का पूजन

ब्रह्मचारियों ने कहा कि हे प्रभु! आपने गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन तो वर्णन किया है। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि गृहपथ्य नाम की अग्नि क्या है? तो उस समय मुनिवरों! देखो, महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि गृहपथ्य नाम की अग्नि वह है जो मानो देखो, प्रत्येक गृह में प्रदीप्त रहती है, वह अग्नि कही विचारों की अग्नि में प्रदीप्त हो जाती, कहीं वहीं अग्नि मानो यज्ञ के स्वरूप में मानो साकल्य को निगलने वाली बन जाती है, कहीं वहीं अग्नि मानो सूर्य के रूप में परणित हो करके, प्रकाशक बन जाती है। मानो वहीं अग्नि है जो चन्द्रमा की कान्ति को तपाती रहती है, मानो शीतलता प्रदान करती रहती है, उस अग्नि को हमारे यहाँ गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं। जिस अग्नि में मानो देखो, पति और पत्नी दोनों तपते हैं। मेरे प्यारे! देखो, विचारों से तप रहे हैं, आभा से तप रहें हैं परमात्मा के नामोकरण से तपा करते हैं। मेरे प्यारे! आगे अपनी संतति को मानो देखो, जो जनरूप आना है जो संतति हैं, बाल्य, बालिका है उनको ऊँचा बनाने के लिए, उनको याज्ञिक बना करके, ऊर्ध्वा में ले जा करके बेटा! वह गृहपथ्य नाम की अग्नि का चयन कराते रहते हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! देखो, यहाँ नाना ऋषिवर मेरी पुत्रियाँ इस प्रकार की हुई है, जिन्होंने बेटा! अग्नि का चयन किया गृहपथ्य नाम की अग्नि का अभिप्राय केवल इतना ही है कि पति पत्नी अपने विचारों से गृह में पनपा करते हैं और उनका जो विचार है, उन विचारों को बाल्य बालिका अपने में ग्रहण करते हुए, मानो वह गृह को ऊँचा बनाते हैं।

तो इसलिए उसे गृहपथ्य नाम की अग्नि कहा जाता है। कोई भी मानव, अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है, मेरी पुत्री यह चाहती है कि मैं अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहती हूँ, मानो यह चाहता है कि मैं स्वर्ग बनाना चाहता हूँ। तो बेटा! पति पत्नी दोनों गृह को स्वर्ग बनाने में लगे हुए रहते हैं, परन्तु स्वर्ग बनता उस काल में है, जो अपने विचारों की अग्नि को प्रदीप्त, करके उसमें प्रभु की साक्षी हो, तो मुनिवरों! देखो, वह माता पिता अपने विचारों को देते हैं। बाल्यों को विचारों को दे करके ओर वह मुनिवरों! देखो, बाल्य पवित्र बन जाते हैं, महान बन जाते है, पवित्र बन करके बेटा! अपने में मानो सुसज्जित हो जाते हैं, इसका नाम गृहपथ्य नाम की अग्नि कहलाता है। मेरे प्यारे! जहाँ शत्रुता नहीं रहती, जहाँ केवल मित्रता ही रहती है, अग्नि का चयन ही होता रहता है, मानवीयता पवित्र होती है, ऐसा मानो देखो, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि कहा जाता है।

सम्पाति गरुड़ को दीक्षा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन किया, तो सम्पाति और ब्रह्मचारियों ने बारी बारी बेटा! उनके चरणों को स्पर्श किया, तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज भी महान मानो देखो, विज्ञान में रत्त रहते थे, वशिष्ठ मुनि महाराज, ब्रह्मविद्या में रत्त रहते थे परन्तु दोनों की महानता विचित्रवत कहलाई गई। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ से बेटा! ब्रह्मचारी दीक्षित हो करके जाते, दीक्षा ले करके जाता। एक समय बेटा! सम्पाति और गरुड़ दोनों की विद्याएँ जब पूर्ण हो गई और दोनों उत्तर, प्रश्नों में सुसज्जित बन गये, तो मेरे प्यारे! देखो, सम्पाति और गरूड़ दोनों को उपदेश देना प्रारम्भ किया। वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! आज मैं तुम्हें दीक्षित बना रहा हूँ, क्योंकि दीक्षा लेना बहुत अनिवार्य है, दीक्षित हो जाना ही

यश कहलाता है। अब मैं तुम्हें दीक्षित बना रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, गरूड़ और सम्पाति दोनों विद्यमान थे, विद्यमान हो करके, वह दीक्षा देने लगे और उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम दीक्षित हो करके जाओ। तुमने हमारे आश्रम में जो ब्रह्मविद्या को पान किया है, जो तुमने परमाणुविद्या का अध्ययन किया है यह जो ज्ञान, कर्म उपासना की आभा को तुमने लिया है इसमें तुम पारायण हो गएं हो, तुम्हारा मानो यह ज्ञान और इच्छिता बनी रहे, क्योंकि इसको बनाने का तुम सदैव प्रयत्न करो।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुतप्रिय। वशिष्ठ कहते हैं कि तुमने ब्रह्मविद्या का अध्ययन किया है परन्तु उसमें देखो, आत्मविज्ञान क्या है तुमने शारीरिक विज्ञान का अध्ययन किया है। यह जो तुम्हारा शरीर है, इसको सुसज्जित बनाना, इसको महान बनाना, पवित्रता में ले जाना तुम्हारा कर्तव्य है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि वेद का आचार्य कहता है, कि मानव को शारीरिक जीवन को ऊँचा बनाना है, परन्तु देखो, संसार में रहते हए, अपने जीवन की महानता को विचार विनिमय करना है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि तुम सदैव ब्रह्मचर्य व्रत्त को धारण कर लेना और देखो, विज्ञान में तुम पारायण हो जाना, तुम्हारी उड़ान सम्पाति! इतनी होनी चाहिए कि तुम सूर्य की किरणों के साथ, तुम्हारी मानो देखो, ऊर्ध्वा गति होनी चाहिए। जिससे तुम्हारा विज्ञान एक महान बनें, विज्ञान में एक पवित्रता आ जाए, तुम्हारा आध्यात्मिकवाद इतना प्रबल हो, कि आध्यात्मिकवाद में तुम ब्रह्म को छुने वाले बनो, ब्रह्म की उड़ान उड़ने वाले बनो, मानो देखो, सम्पाति ने कहा प्रभु! जैसी आपकी आज्ञा हो, मैं वैसा ही कर पाऊँगा।

समिधा के दो प्रकार

परन्तु महर्षि वशिष्ठ मुनि कहते हैं कि हे ब्रह्मचारियों! अब दीक्षा तुम्हें प्रदान की जा रही है, तुम्हें दीक्षित बनाया जा रहा है, तुम प्रभु के नामोकरण को अपने से दूरी न करो,

क्योंकि ब्रह्मवर्चोसि बन करके, तुम्हें देवता बनना है, योगेश्वर बनना है, और योगियों की शरण में जा करके तुम्हें महानता को प्राप्त करना है। मानो देखो, यह उपदेश दे करके और तुम प्रातः कालीन मानो सूर्य उदय होता है, वह मानो समिधा की भान्ति प्रकाश देता रहता है, जैसे मानो देखो, समिधा के अग्न्याधान होते ही प्रकाशक बन जाती है, ब्रह्मचारी जन उसी से, ब्रह्म विद्या को प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु इसी प्रकार तुम समिधा ले करके मानो याग करना, समिधा हमारे यहाँ दो प्रकार की कहलाती है, एक समिधा, जो भौतिक अग्नि का चयन करती रहती है, द्वितीय समिधा है जो आत्मिक अग्नि का चयन करती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, भौतिक अग्नि को चयन कराना समिधा का कर्तव्य है। ऐसे ही जैसे बाह्य जगत में, समिधा अग्नि बन करके, साकल्य को भस्म करती है इसी प्रकार हमारे इस मानव शरीर में, एक प्राण समिधा बन करके बेटा! वह मानो देखो, अन्नाद को निगलता रहता है, अन्नाद को भाषित करता रहता है, रस बना करके प्रदान करता रहता है। मेरे प्यारे! वह प्राण रूपी जो समिधा है यह समिधा बाह्य जगत में, काष्ठों में, वही प्राण गति करता है वही प्राण तुम्हारे शरीर में गति करता है, हे ब्रह्मचारियों! तुम प्राण को भलीभान्ति जान गये, यह प्राण ही तुम्हारे विज्ञान का मूलक बनता है, यह प्राण ही मानो देखो, शरीर को सुसज्जित बनाता है, इस प्राण सखा को तुम जान लेना, यह प्राण सखा है मानो देखो, इसके विकृत्त रूप को जान करके, तुम परमाणुओं में, अणुओं में मानो देखो, ऊर्ध्वा में गति करने वाले यन्त्रों का निर्माण कर सकते हो।

प्राण का महत्व

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ ने देखो, उन दोनों को ऊर्ध्वा में उपदेश देते हुए कहा कि जैसे समिधा अग्नि को यज्ञशाला में प्रदीप्त कर देती है, इसी प्रकार मानो देखो, तुम्हारे शरीरों में जो प्राण रूपी अग्नि है, प्राण रूपी जो सखा है जो निगलता

रहता है, आभा में, तुम्हारे शरीर को स्वस्थ बनाए रहता निकलता रहता है क्षुधा का मूलक बना हुआ है। मानो देखो, प्राण सखा को जान सकेगा, प्राण सखा को जानने वाला, मानव है ब्रह्मचारी, योगी बन जाता है, वह योगी कैसे बनता है? वह अपने मन को इस प्राण में सिमट लेता है और जब मुनिवरों! सिमट करके, इसको आचार्य कहता है यह प्राण ब्रह्म छाया कहलाती है। यह ब्रह्म छाया बन करके, आध्यात्मिकवादियों के लिए मेरे प्यारे! देखो, इसको योगीजन समेट लेते हैं। और समेट करके यह अपने मे स्थिर हो करके मुनिवरों! देखो, अन्तरात्मा के प्रकाश को मेरे प्यारे! देखो, उद्बुद्ध कर देते हैं, वह समिधा जागरूक हो जाती है, वह समिधा मानां अग्नि में प्रवेश करके, मानो देखो, अग्नि को प्रदीप्त कर देती है। मानव के शरीर में प्रवेश हो करके, बेटा! मानव को ज्ञानी बना देती है, विवेकी बना देती है, चेतनास्वप्त बना देती है।

मेरे प्यारे! वशिष्ठ जी कहते हैं क्या तुम्हें इस समिधा के द्वारा, अग्न्याधान करना है मानो जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान विद्यमान हो करके अग्नि को उद्बुद्ध स्वाहा कह करके पुकारता है, अग्न्याधान करके पुकारता है इसी प्रकार तुम प्राण सखा को, उद्बुद्ध कह करके जागरूक करना है मानो इसी के द्वारा तुम्हें द्यौ लोक में जाना है, इसी के द्वारा तुम्हें लोक लोकान्तरों के द्वारा अनन्तमयी जो लोक है, अनन्तवान जो लोक है मानो देखो, उससे तुम्हारा जीवन शान्त हो जाएगा।

महर्षि वशिष्ठ का अध्ययन विषय

मेरे प्यारे! वशिष्ठ जी ने अपना उपदेश दिया और अपना क्रियात्मक एक उपदेश दिया हे ब्रह्मचारियों! जब मैं विद्यालय में अध्ययन करता था, तो मेरा अध्ययन करने का जो विषय रहा वह, ब्रह्मज्ञान रहा था। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जी ने, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव सोमकेतु आचार्य महाराज, शानककेतु

महाराज थे, वह दद्दड और अङ्गिरस गोत्रों से मानो दोनों से उनका समन्वय रहता था। मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ बोले, जब मानो देखो, आचार्यों के समीप विद्यमान हो करके, दीक्षित बनाया आचार्य ने और उन्होंने मुझे एक ही वाक कहा कि तुम ब्रह्मविद्या में शान्त रहना मानो मेरा सौभाग्य रहा है, क्या, मैं ब्रह्मविद्या में सदैव शान्त रहता हूँ, ब्रह्मविद्या को पान करता रहता हूँ, क्योंकि ब्रह्म में जाना ही हमारा कर्तव्य है, ब्रह्मविद्या का चयन करना ही, अपने में ग्रहण करना ही यही हमारी मौलिकता कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ जी कहते हैं कि मेरा अध्ययन मेरा विषय का ब्रह्मज्ञान, लोक लोकान्तरां को जानने का रहा। परन्तु देखो, कई समय हुए, हम यन्त्रों में विद्यमान हो करके, सूर्य लोकों की यात्रा की है। परन्तु देखो, ऋषि ने जब यह अपना परिचय दिया, संक्षिप्त मानो देखो, मैं ब्रह्मविद्या में पारायण हुआ था, आचार्य ने मुझे ब्रह्मविद्या की दीक्षा दी, इसी प्रकार हे ब्रह्मचारियों! तुम भी दीक्षित होने जा रहे हो, मैं दीक्षान्त, तुम्हें अपना उपदेश दे रहा हूँ क्या, तुम जिस विद्या में, तुमने मानो घनिष्ठ परिश्रम किया है, उस विद्या को तुम्हें जानना है, उस विद्या के ऊपर तम्हें अपने जीवन को क्रियात्मक बना करके, अग्रणीय बनना है। मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ ने कहा क्या, तुमने विज्ञान में बहुत अध्ययन किया है सम्पाति जी! मुझे प्रतीत है कि तुम्हारा अध्ययन करने का जो विषय रहा है वह केवल परमाणुवाद और यागवाद रहा है सूर्य की किरणों के ऊपर तुम्हारा अनुसन्धान रहा है मानो तुम्हारा जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे आज मैं तुम्हें दीक्षा दे रहा हूँ, क्या तुम्हें अपने इस विज्ञान में महान बनना है।

सम्पाति के पास पादुका यन्त्र

मेरे प्यारे! देखो, सम्पाति के द्वारा बेटा! एक उन्होंने चरण पादुका नामक एक यन्त्र का निर्माण किया था, बेटा! मानो, देखो, जो चरण पादुका यन्त्रों में विद्यमान हो करके, वह समुद्रों को पार करते थे। मेरे पुत्रों! तुम्हें प्रतीत होगा, हनुमान

जी जब सीता के लिए लंका में गएं तो मानो देखो, सम्पाति ने उन्हें वह यन्त्र प्रदान किया था। हनुमान के द्वारा भी यन्त्र थे, परन्तु वह यन्त्र सम्पाति ने ही दिया था, क्या, जाओ, लंका में, तुम्हें समुद्र से पार होना है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, महाराजा सम्पाति मानो देखो, दीक्षा में पारायण और वशिष्ठ ने उन्हें दीक्षित बनाया और यह कहा कि तुम माता और पिता मानो देखो, उनके चरणों को स्पर्श और आचार्य मानं ब्रह्मे व्रता उनके चरणों को स्पर्श किया है, ब्रह्मचारी तुम्हें मिलकर रहना है जैसे ध्रुवा है, ध्रुवा होते ही प्रवृत्ति जब मानव की ऊर्ध्वा, ध्रुवा में प्रवेश करती है तो वह पालन सतोगुणी बनता है, सतोगुणी कौन बनता है?

जीनव में नम्रता

जो मेरे प्यारे! देखा, नम्रता से रहता है, मधुता से रहता है, उसका व्यवहार और आहार दोनों पवित्र होते हैं, तो मानो बेटा! वह संसार में पालन कर सकता है, वह जो मानव के द्वारा पालन क्रिया है, पालन जो एक महान आभा है, उस पालन में ही पालन होता रहता है क्योंकि वह ध्रुवा है, परमात्मा भी ध्रुवा हो करके, विष्णु बन करके संसार को मुनिवरों! देखो, सतोमयी प्रदान कर देता है। इसी प्रकार प्रत्येक ब्रह्मचारी, ऋषि मुनियों का कर्तव्य है, कि वह मानो नम्रता से अपने को जीवन व्यतीत करने वाले हो, मेरी पुत्री जब जीने लगती है मानो वह नम्र बन जाती है, तो बाल्य बालिका को नम्रता की शिक्षा प्रदान कर देती है। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु के राष्ट्र में, हम सब आए हैं यहाँ अभिमान किसका हो, यह जब विचारता है प्राणी, तो बेटा! नम्रता स्वतः आ जाती है, कि परमात्मा का राष्ट्र इतना अनुपम है, इतना महान है क्या उसके राष्ट्र में हम मानो देखो, सदैव क्रियाकलाप करते रहते हैं इसके पश्चात भी उसका ज्ञान विज्ञान अनन्तमयी कहलाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ ने यह उपदेश दिया, और यह कहा कि तुम्हें सदैव नम्र बन करके, ब्रह्मवर्चोसि बनना है,

हे सम्पाति! तुम्हें राष्ट्र को अपनाना है, राष्ट्र काल में, तुम जब राजा बनोगे, तो मानो देखो, तुम प्रजा को और अपने को स्वयं सतोगुण में परणित कर देना, सतोगुणी प्राणी ही संसार में मानवीयता को प्राप्त करता है। परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में रमण करने लगता है तो मानो देखो, इसी प्रकार वशिष्ठ ने जब बेटा! उन्हें दीक्षांत उपदेश दिया और यह कहा कि यह जो तुम्हारा परमात्मा का साम्राज्य है, परमात्मा का राष्ट्र है, परमात्मा का जो प्राणी मात्र है, सम विचार अपने में धारण करके मानो देखो, तुम्हें सम विचारक बन करके इस सागर से पार होना है।

सम्पाति, गरुड़ द्वारा गुरु दक्षिणा

मेरे प्यारे! देखो, सम्पाति, गरूड़ इत्यादियों ने यह दीक्षांत उपदेश ले करके बेटा! वहाँ से उन्होंने गमन किया और गुरुदेव से यह कहा गमन होते समय, क्या प्रभु! आपको मैं गुरुदक्षिणा देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम गुरुदक्षिणा क्या देना चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! जो आपकी इच्छा हो, वह आप मेरे से स्वीकार करें, वह मैं देने के लिए तत्पर हूँ। उन्होंने कहा दीक्षां तां ब्रह्मा दक्षिणां देहि मनप्प्रमाणं कृतां देवाः उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! मुझे तू दक्षिणा देना चाहता है तो मानो मैं यह चाहता हूँ कि मैं यह तेरा शरीर वह जीवन दृष्टिपात करना चाहता हूँ जो तू सूर्य की किरण के साथ अपने जीवन, अपने मानवीय शरीर की गमन मे ले जाओ, मेरी वही दक्षिणा है। वह मुझे प्रदान कर देना, इससे मेरा नामोकरण ऊँचा बन जाए।

मेरे प्यारे! सम्पाति ने यह वाक स्वीकार किया और उसके पश्चात भी दक्षिणा का प्रश्न किया। उन्होंने कहा, वशिष्ठ बोले कि हे ब्रह्मचारी! तुमसे मैं दक्षिणा नहीं चाहता, केवल जो मैं चाहता था वह तुमने प्रदान किया। परन्तु और मैं यह चाहता हूँ कि इसमें तुम राष्ट्र में रहो, तो देखो, सत्य के मार्ग को अपनाने वाले बनो, यही मेरी दक्षिणा है, इसी को मैं चाहता

हूँ। मानो देखो, उन्होंने सब सङ्कल्पवादी बन करके, ब्रह्मचारियों ने बेटा! वहाँ से प्रस्थान किया और वह भ्रमण करते हुए अपने राष्ट्र में आ गए, अहा उनके पिता ने बेटा! हमारे यहाँ यह नियम था, क्या आचार्य कुल से ब्रह्मचारी जब गृह में प्रवेश कर रहा है तो माता पिता बेटा! उनके चरणों को जल से स्पर्श करते थे और स्पर्श करके मानो जल से आचमन करके वह अपने में यह स्वीकार करते, हमारा अहो भाग्य, यह ब्रह्मचारी है, ब्रह्मचष्यिमि है, यह ब्रह्म की निष्ठा वाला ब्रह्मचारी है, मानो देखो, इसके चरणों के जलों से आचमन कर लिए जाए, तो सतोगुणतां आभायित न रहेगा। मेरे प्यारे! देखो, हमारे उस काल का यह नियमावली बनी हुई थी, क्या, ब्रह्मचारी गृह में जब प्रवेश करता है तो माताः पिता उसे आदरणीय ब्रह्म आभा में, ब्रह्मयाग और देव याग दोनों की रचना करते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, यह उपदेश ले करके दोनों ने वहाँ से प्रस्थान किया। और मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म पतित्रमाणं ब्रह्मे अस्तो, पिता के यहाँ जा करके, उस समय मुनिवरों! देखो, पिता ने यह पित्रां भवति अस्ते उन दोनों ब्रह्मचारियों ने पितरं याग किया, पितर याग का अभिप्राय यह है कि पितरों को एकत्रित किया और एकत्रित करके मुनिवरों! देखो, उन पितरों के द्वारा विद्यमान हो करके, पितरों से शिक्षा पा करके, पितरों से एक महानता को प्राप्त, आशीर्वाद ले करके बेटा! देखो, उनके चरणों कृति आभा, वह पितर याग क्या है, मेरे प्यारे! पितरों को भोज कराना, पितरों के प्रति हम अपनी सहानूभूति प्रदान करना और मेरे प्यारे! वह जो पितरजन हैं, वे हमारे जीवन के उत्थान के लिए कोई उपदेश देते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, सम्पाति के महापिता थे शौनक केतकानु मेरे प्यारे! देखो, शौनकेतकानु ने ब्रह्मचारियों को कहा कि हे ब्रह्मचारियों! धन्य है, तुम विद्यालय से आए हो, तुम मानो देखो, आचार्य के द्वारा दीक्षित हो करके आए हो, यह हमारे गृह के बड़े सौभाग्य है, हमारा गृह उसी काल में पवित्र

बनता है, जब सुसज्जित गृह में, ब्रह्मचरिष्यामि होते हैं, ब्रह्मचारी होते हैं वर्चोसि बन करके गृह को पवित्र बनाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी प्रसन्न हो गये, आचार्यों के चरणों स्पर्श करते हुए उन्हें आचमन करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, सब पितर उनके समीप विद्यमान हो गये, और सम्पाति इत्यादियों ने कहा कि हे भगवन! हमें कोई आज्ञा दीजिए, हम आज्ञा के लिए उत्सुक हैं। उनके पितरों ने कहा कि आज्ञा यही है कि हमारा जो गृह है यह राष्ट्र गृह चला रहा है बहुत समय से, परन्तु देखो, यह राष्ट्रीयता उसमें महान बन करके रहे, हमारे राष्ट्र में कुरीति न हो, हमारे राष्ट्र में ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्मचारी हो, परन्तु देखो, हमारी यही इच्छा रहती है ब्रह्मचारियों ने यह स्वीकार कर ली।

सम्पाति, गरुड़ की वैज्ञानिक गतियाँ

मुनिवरों! देखो, उनको राज स्थान मेरे पुत्रों! देखो, गृह में प्रवेश हुआ और वह केवल उनका विषय और उनके जो पिता थे, वह राज कर रहे थे, पिता चाहता था सम्पाति, तुम राजकीय पालन करने वाले बनो। सम्पाति ने कहा कि भगवन! मैं वैज्ञानिक बनूगाँ, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव से जो विद्या अध्ययन की है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह गरूड़ और सम्पाति दोनों राष्ट्र के आंगन में विद्यमान हो करके, बेटा! अनुसन्धान करने लगे। मुझे स्मरण है बेटा! उन्होंने बहुत से यन्त्रों का निर्माण किया, उन्होंने यन्त्र का ऐसा निर्माण किया था, मानो जो मानव के हृदय की आभाओं को, तरंगों का चित्रण होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, गरूड़ जी एक समय सम्पाति से बोले कि महाराज! मैं सूर्य मण्डल की यात्रा करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वही गरूड़ थे, जो मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणों के साथ, सूर्य में गति करने लगे, मेरे पुत्रों! देखो, यह विज्ञान में रत्त रहते थे, विज्ञान में रमण करने वाले, अपने राष्ट्र का पालन करना, सतोगुणी बनाना, यह उनका कर्तव्य बन गया। मेरे प्यारे! देखो, इसी की दूरी पर, महाराजा जामवन्त के पिता

केशवानुकेतु ऋषि महाराज बेटा! वह राजा बन गएं थे, राजा से ऋषि बन गएं थे, परन्तु देखो, उनके एक पुत्र था, जिनका नाम जामवंत कहलाता है। वह भी मुनिवरों! देखो, राज्यों के आदान प्रदान करते रहते थे।

मेरे पुत्रों! देखो, यह सम्भवे असना विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ एक महानता में रमण होता रहा है, विज्ञान और ज्ञान क्या, मुनिवरों! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के चरणों में विद्या का अध्ययन होता रहा, परन्तु देखो, उनके यहाँ कितने ब्रह्मचारी दीक्षित हो करके, दीक्षा ले करके मुनिवरों! आश्रम को त्याग दिया। भगवान राम भी उनके आश्रम में अध्ययन करते हुए मेरे प्यारे! वह भारद्वाज मुनि के यहाँ जाते, उनके द्वारा अध्ययन करते, परन्तु ऋषि के चरणों में ओत प्रोत रहते थे। वशिष्ठ मुनि महाराज जहाँ ब्रह्मवेत्ता थे, ब्रह्म की उड़ान उड़ते थे, वहाँ मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान में भी रत्त रहते थे। उनका भौतिक विज्ञान, एक महानता में रमण करता रहा है। भौतिक विज्ञान मानो देखो, किसी नाना ब्रह्मचारियों को, वैज्ञानिकों को ला करके विद्यालय में उन का उपदेश होता रहता था।

कुम्भकरण का उद्बोधन

मानो देखो, जिस समय राम अध्ययन करता था, तो एक समय राजा रावण के विधाता कुम्भकरण, जो भारद्वाज मुनि के विद्यालय में वह अध्ययन करते थे। वह अस्त्रों शस्त्रों का अध्ययन करते रहते थे, जब मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज ने पुलस्त्य ऋषि महाराज के पौत्र की यह प्रशंसा स्वीकार की, क्या यह मानो देखो, बुद्धिमान है। उन्होंने कहा मेरे आश्रम में जो ब्रह्मचारी हैं, उनके उपदेश अमृत पान करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उस ब्रह्मचारी को निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करके उनसे कहा कि तुम ब्रह्मचारियों को विद्यालय में तुम्हारा कुछ शिक्षा पर उपदेश होना चाहिए, तो उस समय महाराजा कुम्भकरण ने बेटा! देखो, उन्होंने विज्ञान की तरंगों

में अपनी उड़ाने उड़ते हुए उन्होंने बहुत से तथ्य वर्णन किए, उनके बहुत से तथ्यमयी अहावृत्तियों में उदघृत होते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन उपदेशों को पानामृत से पान करते हैं वह कहते हैं कि हे वशिष्ठा! तुम शेष अनुपलब्ध १८/८/८४ ग्रा. कानैनी बुलन्दशहर

14 ३० ०८ १९८४ सांय महादेव शिव याग

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। अथवा उसके गुणों का गुणवादन किया जाता है, क्योंकि वह भिन्न भिन्न रूपों में वर्णन होने वाला है और मानव जब उसके ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करने लगता है तो उसके भिन्न भिन्न प्रकार के स्वरूप मानव के समीप, आने प्रारम्भ हो जाते हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के रूपों का वर्णन प्रायः आता रहता है और आज के वेद के मन्त्र में उस महामना देव की प्रतिभा का वर्णन प्रायः आता रहता है आज का हमारा वेदों का पठन पाठन मानो देखो, सम्भवा वेद ब्रह्म वाचा शिव का वर्णन आ रहा था। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! शिव याग का भी वर्णन आता रहा है। परन्तु जहाँ शिव याग का वर्णन है, वहाँ शिव नाम परमपिता परमात्मा को कहा जाता है, क्योंकि शिव उसे कहा जाता है, जो महादेव कहलाता है। जो देवताओं का भी देवता है, मानो वह शिव कहलाते हैं। वह महादेव कहलाता है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! शिव की हमने विवेचना तुम्हें प्रगट की थी, क्योंकि वैदिक साहित्य में बेटा! शिव के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। महादेव की भी नाना पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं, महादेव उसी को कहते

हैं, जो देवताओं का अथवा देव कहलाता है। तो इसीलिए हमारे वैदिक साहित्य में, मानो शिव का वर्णन आता रहता है, जिस शिव और महादेव की विवेचना हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में आती रहती है। मुझे एक समय बहुत पुरातन काल हुआ, शिव की व्याख्या करते हुए, महामना देव की महिमा का गुणगान अथवा उसके यागों का वर्णन भी आता रहा। यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन, प्रायः आता रहता है।

तो मुनिवरों! देखो, यह प्रसंग, एक समय ऋषि मुनियों की सभा में यह प्रसंग आया, एक समय बेटा! त्रेता के काल में, भगवान राम, सुलक्षण ब्रह्मचारी और तुलसी कृति ब्रह्मचारी मानो यह तीनो ब्रह्मचारी सोम ऋषि के चरणों में ओत प्रोत थे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, अपने आसन पर शान्त मुद्रा, में मुद्रित हो रहे थें, परन्तु सुलक्षण ब्रह्मचारी उनके समीप पंहुचे, और सुलक्षण ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आज हम कुछ वेदों का अध्ययन कर रहे हैं, परन्तु वेद मन्त्रों में शिव का वर्णन आता रहा है, यह शिव क्या है? महादेव का भी वर्णन आता रहा है, यह क्या है? तो मुनिवरों! देखो, उसी चिन्तन वार्ता को ले करके महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि इसका उत्तर तुम्हें प्रातः काल याग में परणित होगा अथवा याग में इसका निर्णय हो सकेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, वह मुद्रित हो करके मुद्रा में परणित हो गएं प्रातः काल माता अरूणधती और नाना ब्रह्मचारी और उनमें ब्रह्मनिष्ठ और ब्रह्मवेत्ता भी विद्यमान रहते, प्रातःकालीन बेटा! देखो, जब याग प्रारम्भ हुआ, तो माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों अपने आसनों पर विद्यमान हैं। परन्तु उस सभा में, बेटा! एक नही नाना ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हैं, सब मुनिवरों! देखो, सुलक्षण ब्रह्मचारी हैं और भगवान राम ने ब्रह्मचारियों से यह प्रश्न किया, कि महाराज! यह शिव याग क्या है? क्योंकि आपके यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है, अथवा यागों का वर्णन होता रहता है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि शिव याग क्या है? और

शिव याग

तो मेरे प्यारे! माता अरूणधती ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! ये प्रथम तुम्हारे गुरु हैं एक तो याग का प्रश्न है, और एक प्रश्न तुम्हारा है कि महादेव क्या है? तो उन्होंने कहा कि प्रियतम! हम ऐसा ही जानना चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, माता अरूणधती ने तो अपना यह निर्णय दिया, क्या शिव नाम परमपिता परमात्मा का है, और शिव नाम आत्मा का भी है, और शिव नाम गुरु का भी है, परन्तु देखो, जब शिव, इस पृथ्वी से इनका जब दोनों का सम्पर्क होता है, दोनों का मिलान होता है, तो यह मानो देखो, प्रिय एक प्रिय याग हो रहा है, याग की उन्होंने विवेचना की सूर्य की जो नाना प्रकार की जो किरणें हैं, उनका सम्बन्ध पृथ्वी से होता है, पृथ्वी उसे तेजोमयी को अपने में धारण कर लेती है और वह नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म दे देती है, तो मानो देखो, याग याग का अभिप्राय है मुनिवरों! देना। याग का अभिप्राय है यागां भविते देवां जो मानो देखो, प्रवृत्तियों को ऊर्ध्वा में पंहुचाने वाला हो, तो मुनिवरों! देखो, वह याग कहलाता है, जो यज्ञमान को, ऊर्ध्वा बना करके, और वह द्यौ लोक में उसकी प्रवृत्ति को गमन कराने वाला, उसका नाम यागां भविते वह शिव याग कहलाता है। परन्तु याग का अभिप्राय यह है क्या जो मानो देखो, सु कर्म करता है, सु विचारों में परणित होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती तो यह वाक कह करके मौन हो गई परन्तु जब मौन हो गई तो सुलक्षण ब्रह्मचारी ने भगवान राम ने दोनों ने माता अरूणधती के विचारों पर चिन्तन किया, चिन्तन करके उसकी अन्तरात्मा में शान्ति की स्थापना नही हुई, जब शान्ति की स्थापना नही हुई, तो उन्होंने महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से, यह प्रश्न किया, क्या महाराज! यह जो शिव याग की माता ने याचना की है इससे हमारा अन्तर्हृदय प्रसन्न नही हुआ है, हम मानो देखो, शिव याग को जानना चाहते

हैं। हमारे यहाँ, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन, प्रायः होता रहता है, यहाँ शिव याग का वर्णन है, वहाँ विष्णु वाजपेयी यागों का वर्णन भी आता रहता है। परन्तु हमारे अन्तर्हृदय में शान्ति की स्थापना नही हुई। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा ब्रह्मे ब्रहो व्रताम् नाम भविते देवाः, इस आख्यिका का वर्णन करते हुए, महाराजा वशिष्ठ ने कहा कि शिव नाम तो ब्रह्म का वाची कहलाता है मानो जो ब्रह्म को जानता है, वह शिव की प्रतिभा में रत्त रह जाता है। हे ब्रह्मचारियों! आओ, विराजो, अब मैं तुम्हारे वाक्यों का निराकरण करूंगा जितना मेरे लिए हो सकेगा, उन्होने कहा प्रिय बहुत सुन्दरं। मेरे पुत्रों! जब वह ओत प्रोत हो गए और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का वर्णन करने लगे, तो क्योंकि वेद में बहुत से मन्त्र, सूक्त इस प्रकार के हैं तो मानो देखो, जब वह निर्णय देने लगे, तो उन्होंने कहा कि शिव नाम ब्रह्म का है, और हमारे यहाँ शिवो ब्रह्म वाचा शिव कहते हैं। जो शिवां भविते देवाः शिव राजा को भी कहते हैं, और राजा जब अपने राष्ट्र में याग करता है, तो मानो देखो, वह अपने राष्ट्र को शिव तुल्य बना लेता है। शिव तुल्य बनाता है, क्योंकि राजा के राष्ट्र में जितना भी याग कर्म होता है, यागां भविते देवाः जितने सुविचार रहते हैं, उतना राजा का राष्ट्र पवित्र बनता है, और वह शिव पुरी बन करके रहती है। मानो देखो, वह शिवं भंविते देवाः शिव नाम ब्रह्म का जहाँ वाची है, वहाँ शिव नाम राजा का वाची है, क्योंकि ब्रह्म का चिन्तन करने वाला जो शिव को प्राप्त होता है, परन्तु देखो, याग जब हमारे यहाँ शिव याग का वर्णन आता है। तो मानो देखो, जो ब्रह्म को प्राप्त करना चाहते हैं वह शिव याग करते हैं, शिव याग का अभिप्राय यह है क्या मानो देखो, भिन्न भिन्न प्रकार का साकल्य बनाते हैं, और साकल्य बना करके वह मानो देखो, जिस साकल्य में अग्नि प्रधान होती है, जिस साकल्य में सूर्य की रेणुका मानो गमन करा करके अपने आभा को उसमें प्राप्त करा रही है। उन औषधियों को एकत्रित

करके जब यज्ञमान याग कर्म करता है, याग करता है तो उसका जो अन्तरात्मा है, वह पवित्र बनना प्रारम्भ हो जाता है। मानो देखो, प्रवृतियों में मनस्तव को अपने में धारण करने लगता है, तो वह शिव यागी जो पुरूष है, मानो शिव नाम की एक बूटी कहलाती है, शिवं भविते मानो देखो, जो ब्रह्म वाचा अपने में माता पिता यह चाहते हैं कि अपने गृह में हम शिव के गुणों को सन्तान को जन्म देना चाहते हैं, तो शिवा बूटी का पान किया जाता है, माता मानो देखो, प्रारम्भ में ही शिवा बूटी का पान करती है, मानो देखो, जिसको हम शिवम् बूटी भी कहते हैं। उसको शिव लिंगी भी कहते हैं, शिव रेकनी भी कहते हैं। परन्तु देखो, उन औषधियों को ले करके हम पान करते हैं, तो माता पिता अपने में यह चाहते हैं कि हम शिव याग करने वाले बनें। क्योंकि सन्तान को उत्पन्न करने का नाम भी मानो एक याग कहलाता है। उसको आचार्य बेटा! शिव याग में शिव याग के रूपों में परणित किया हैं, तो आज मैं देखो, इसके सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मुनिवरों! देखो, शिव याग का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! एक समय हम मानो देखो, मगध राष्ट्र में पंहुचे और मगध राष्ट्र में बेटा! देखो, महर्षि सोमकेतु एक समय याग कर रहे थे, वह शिव याग कर रहे थे, शिवा बूटी का पान करते और शिवा बूटी का साकल्य बना करके मानो देखो, गो घृत और दुग्ध के द्वारा वह आहुति दे रहे थे। मानो उनकी जो वाणी को जो स्वाहा था वह मुनिवरों! देखो, शिव पुरी को प्राप्त हो रहा था शिव नाम परमपिता परमात्मा का यहाँ वाची कहा जाता है, और जो मानो देखो, जो शिव पुरी को प्राप्त हो करके सूर्य की किरणों के साथ ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो करके मेरे पुत्रों! देखो, अवकाश में वह शब्द विद्यमान हो गएं। और वह जो शब्द विद्यमान थे उन्हीं के साथ साथ मुनिवरों! देखो, उन औषधियों की प्रतिभा, वह उसकी

सुगन्ध उसकी तरंगें उसका परमाणुवाद मेरे पुत्रों! देखो, अन्तरिक्ष में वह लय हो रहा था।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विशेषता में तो तुम्हें नही ले जा रहा हूँ, केवल विचार यह कि मानो देखो, शिव नाम यहाँ शिव याग का वर्णन आता रहता है शिव नाम जहाँ परमपिता परमात्मा को वहाँ शिव नाम मेरे पुत्रों! वहाँ नाना औषधियों को भी शिव कहते हैं। सूर्य का नामोकरण भी शिव कहा जाता है, परन्तु देखो, आगे वेद के ऋषि ने वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मवेत्ता ने कहा कि महाराज! मानो ब्रहे व्रतां हे ब्रह्मचारियों! शिव याग हमें प्रायः करना चाहिए, और वहाँ से महादेव देवताओं का देव कहलाता है, जब देवताओं का देव है, परमपिता परमात्मा है, जो देवताओं का देव है, वह आत्मा है। जब मुनिवरों! देखो, साधक जब साधना करने के लिए तत्पर होते हैं, जब वह साधना करते है। तो वह महादेव की साधना में रत्त हो जाते हैं, वह कहते हैं कि महादेव को हम जानना चाहते हैं महादेव की प्रतिभा में रत्त रहना चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, उस समय वह शिव की आराधना और वह महादेव की आराधना करने लगता है, आराधना कौन करता है, जो आत्मचिन्तनित होता है, मेरे पुत्रों! देखो, पांच इन्द्रियों का साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में वह याग करता है, अथवा याग करता है वह महादेव को प्राप्त कर लेता है। वह महादेव की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो सोमकेतु ऋषि महाराज एक समय मानो देखो, महादेव की आराधना कर रहे थें, तो जब मगध राष्ट्र में पंहुचे तो मानो सोमकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचे तो सोमकेतु ऋषि महाराज अपने में रत्त रह करके महादेवों के देव के समीप जाना चाहते हैं। तो उन्होंने साकल्य बद्ध मन को बेटा! जैसे प्राण को भी हमारे यहाँ महादेव कहा जाता है, जो मेरे प्यारे! देखो, शिवां भविते जो शिव सूत्र में अपने को पिरो देता है। मेरे पुत्रों! देखो, जितना भी अणु है, परमाणु हैं मानो देखो, यह लोक लोकान्तर

है, यह प्रत्येक मानो देखो, एक आभा में पिरोया हुआ है, वह महादेव में पिरोया हुआ है, वह देवता उसमें पिरोएं हुए हैं, इसी प्रकार जैसे मानव के शरीर में उसका जब तक उसका अन्तरात्मा महादेव रहता है। यह सर्वत्र इन्द्रियां मानो देखो, देवताओं का प्रतिनिधि है, और निधितव करने वाला आत्मा है। जब तक आत्मा शरीर में विद्यमान रहता है, जब तक मुनिवरों! देखो, चेतना बनी रहती है, पञ्च महाभूत अपना नृत्त करते रहते हैं, शरीर में क्रियाकलाप हो रहा है, परन्तु जब महादेव इनकी आत्मा निकल जाता है तो शून्य बिन्दु हो जाता है।

तो परिणाम क्या मानो देखो, हमें उसकी आराधना के स्वरूप में करनी है, प्रत्येक मानव अपने अपने रूपों में जैसे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने मुझे यह प्रगट कराया था कि यह जो मानो देखो, शिवं ब्रव्हा यह महादेव यह जो है स्थली में, एक अण्डाकार बन करके रहता है एक लिंग के रूप में परणित रहता है तो मानो देखो, उन्होंने उसके जीवन मण्डन के रूप में उसकी प्रतिभा का वर्णन किया। परन्तु देखो, बहुत काल हुआ, जब उन्होंने यह वर्णन किया, परन्तु देखो, इसकी व्याख्या जब हमारे शरीर में आनी प्रारम्भ हो जाती है तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने, ब्रह्मचारियों के मध्य में मुनिवरों! देखो, ये विवेचना प्रगट की, उन्होंने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा कि जब हम मगध राष्ट्र में हम पंहुचे, तो उन्होंने लिंगमयी की याचना की, मानो देखो, शिव कहते है, इस ब्रह्माण्ड को, लिंग कहते हैं इस मानव के शरीर को लिंग कहते हैं जहाँ मानो देखो, शिशु का प्रवेश होता हो, शिशु को भी लिंग कहा जाता है, परन्तु लिंगम भविते देवां जहाँ पार्वती और शिव दोनों का समागम होता है। जहाँ सूर्य और पृथ्वी का दोनों का मिलन होता है मानो देखो, वह भी हमारे यहाँ एक लिंग के रूप में परणित किया जाता है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, लिंगों भविते

देवाः महादेवाः महादेव जो हमारे यज्ञ के रूप में परणित किया गया है, परन्तु देखो, एक लिंगमयी शरीर की व्याख्या करते हुए, मगध राष्ट्र में रहने वाले, ऋषितव ने यह वर्णन किया था क्या मानो देखो, हमारा जो मानवीय शरीर है, यह लिंगमयी ज्योति बन करके, मानो देखो, ज्योतिवान हो रहा है, वह ज्योति अप्रते ब्रह्म वाहा वाचन्न ब्रह्म लोकाः जब वाचन्न ब्रह्म लोक का वर्णन आता है तो मानो उसकी आभा में, एक आभा वृत्तियों में रमण करने लगती है, और वह साधक अपने में साधक बन जाता है, सोमकेतु तो मुनिवरों! लगभग मानो देखो, पिचासी वर्ष हो गएं थे जब वे शिव याग करते करते शिव याग का अभिप्राय यह क्या शिव बूटी को पान करना, उसी का अग्नि होत्र करना, गो घृत और दुग्ध को ले करके प्रवृत्तियों को उन्हीं को शोधन करना, यन्त्रों का निर्माण करना और यन्त्रों में उन चित्रों को दृष्टिपात करना मानो वह शिव की याचना है, शिव याग करते करते बेटा! पिचासी वर्ष हो गएं थे भयंकर वनों में याग कर रहे हैं, सोमकेतु ऋषि के यहाँ नाना ऋषिवर गमन करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, शिव याग की व्याख्या, वशिष्ठ मुनि महाराज ने की, तो ब्रह्मचारियों को सन्तुष्टि हुई। परन्तु देखो, यह जो सुलक्षण ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! अभी हमारी सन्तुष्टि नही हुई है। महादेव के सम्बन्ध में सन्तुष्टि नही हुई। हमें और वर्णन कराईए।

मेरे प्यारे! देखो, जब यह व्याख्या वशिष्ठ नही कर पाए तो मुनिवरों! देखो, वहाँ कागभुषुण्ड जी विद्यमान थे महर्षि कागभुषुण्ड जी बोले कि तुम, क्या चाहते हो ब्रह्मचारियों? उन्होंने कहा प्रभु! हम शिव की याचना करना चाहते हैं। हम मानो शिव याग को जानना चाहते हैं वह याग मानो मौन केतु ऋषि पिचासी वर्षों तक वह याग कर रहे हैं मैंने यहाँ साहित्य में अध्ययन किया है, क्या एक वाचिक नामक एक ऋषि हुए हैं भगवान राम कहते हैं सुलक्षण भी कह रहे हैं क्या आज से मानो देखो, कुछ काल हआ, जब एक ऋषि हुए हैं, उन ऋषि

का नाम श्वेपातक ऋषि था, वह श्वेपातक ऋषि महाराज, दण्डक वनों में मानो देखो, कहीं कजली वनों में विद्यमान हो करके, वह शिव याग करते रहे। तो उन्होंने मानो देखो, दो सौ पिचासी वर्षों तक शिव याग किया और दो सौ पिचासी वर्षों तक याग करते करते मानो अपनी प्रवृत्तियों को वह द्यौ में पंहुचाना, द्यौ से लाना और द्यौ से प्रवेश करना मानो देखो, वह शिव याग करते थे। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा जब कागभुषुण्ड जी ने ऐसा जब अपना निर्णय दिया, परन्तु वह क्रियाकलाप दो सौ वर्षों तक कैसे करते थे? मानो देखो, वह शिवा बूटी और एक पार्वती नामक एक औषध होती है, इन दोनों का खरल बना करके, दोनों को पान करके मानो देखो, उसका सेवन करना, उसी को अग्निहोत्र में लाना मानो अग्निहोत्र करते करते मेरे पुत्रों! देखो, वह ऋषि की प्रवृत्ति इतनी विशाल बन गई, क्या वह महा देव, परमात्मा और आत्मा को स्वीकार करके मानो देखो, द्यौ लोक में गमन करते रहते थे। वे द्यौ लोक में प्रवेश करते रहते थे कागभुषुण्ड जी ने कहा कि यह मानो देखो, पातक ऋषि महाराज अपने में अन्वेषण करते रहते थे, परन्तु देखो, यहाँ महादेव की याचना, जो परमपिता परमात्मा कहलाता है, जो संसार का धिपति है, जो शून्य बिन्दु बना करके, मानो संसार की रचना कर देता है और रचना को खेचरी के रूपों में प्रवेश करा देता है वे परमपिता परमात्मा महादेव कहलाता है। परन्तु देखो, जहाँ इस प्रकार आख्यिका वर्णन करते हुए जब मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा तो उन्होंने कहा कि हे ऋषि! हे ब्रह्मचारियों! एक समय मानो देखो, मैं और लोमश मुनि महाराज दोनों अपने आसन पर विद्यमान थे, मानो देखो, शिवा बूटियों का वर्णन कर रहे थे, शिव याग की विवेचना अपने में लेखित कर रहे थें परन्तु एक समय दोनों भ्रमण करते हुए, मानो ऋषि ने अपने आसन को त्याग दिया क्या हम महादेव और शिव की याचना में प्रवेश होना चाहते हैं, हम शिव को जानना चाहते है, महादेव को

जानना चाहते हैं। तो मानो देखो, भ्रमण करते करते जब देखो, शिव की जिज्ञासा में भ्रमण करते हुए महर्षि पिप्लाद मुनि के समीप पंहुचे और महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज, उस समय मानो देखो, च्यवन ऋषि आश्रम को गमन कर रहे थें जब देखो, पिप्लाद मुनि से कहा कि महाराज, यह महादेव, शिव क्या है? उन्होंने कहा कि मैं भी इसी जिज्ञासा में गमन कर रहा हूँ देखो, महर्षि चमन ऋषि के द्वार पर हम गमन करना चाहते हैं मानो देखो, उन्होंने अपनी आयु का कल्प किया है और मानो देखो, वहीं मानो अश्विनी कुमार दोनों अश्विनी कुमार प्राप्त होंगें। महात्मा दधीचि भी आश्रम में गमन करके मानो उनके द्वार पर पंहुचे। तो मुनिवरों! उन्होंने कहा बहुत प्रिय, तो मानो उन्होंने कहा महर्षि पिप्लाद दोनों से कागभुषुण्ड जी बोले कि हम मानो भ्रमण करते हुए, वह महर्षि चमन ऋषि के द्वार पर पंहुचे। तो महर्षि चमन ऋषि, महाराज उस समय मानो देखो, अपनी सन्ध्या, अपने प्रभु से अपनी बुद्धि से मिलान कर रहे थें मानो देखो, एक स्थली पर विद्यमान हो करके, अश्विनी कुमार लेखनियाँ बद्ध कर रहे थें, अश्विनी कुमार के पिता, महात्मा भृगु मुनि महाराज वह भी कुछ लेखनियाँ बद्ध कर रहे थे, और लेखनी बद्ध इस सम्बन्ध में कि शिव क्या है? और पार्वती क्या है? मानो देखो, महादेव क्या है? इस सम्बन्ध में देखो, वह अपने अश्विनी कुमार दोनों लेखनियाँ बद्ध कर रहे थें, निर्णय देने वाले, उनके पितर महर्षि मुनिवरों! देखो, महर्षि महात्मा भृगु मुनि महाराज जो मानो देखो, शाण्डिल्य गोत्रीय कहलाते थें।

तो मेरे पुत्रों! जब इस प्रकार का उनका निर्णय ब्रहो जब मानो देखो, चमन ऋषि महाराज अपने आसन से निवृत्त हुए और अपनी क्रियाओं से रत्त हो गएं कि हमारा एक समाज विद्यमान हैं परन्तु दृष्टिपात करके उन्होंने कहा अहो मेरा अहो भाग्य है, आज मानो कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश पिप्लाद मुनि जो ब्रह्मवेत्ता सदैव ब्रह्म का ही निर्णय देते रहते

हैं, वह विद्यमान हैं, कि हमारा कैसा अहोभाग्य है। तो मानो देखो, उनके द्वारं ब्रहे उन ऋषि ने कहा कहो भगवन! कैसे आगमन हुआ है? आज तो बिना सूचना के ही ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन हो गया है, क्योंकि मुझे ऐसा स्मरण है कि एक समय, कागभुषुण्ड जी तुम्हें राजा समेतकेतु के यहाँ से एक निमन्त्रण आया था, परन्तु तुमने निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया था। राजा क्या ऋषियों के द्वारा भी आगमन नही होता, तुम महान तपस्वी हो, ब्रह्मवेत्ता हो, हे प्रभु! आपका आगमन यहाँ कैसे हुआ? उन्होंने कहा ऋषिवर! हम इसीलिए आए हैं, क्या मानो देखो, हमें यह निर्णय लेना है, क्या ब्रह्मे वाचा वाचन्न ब्रह्मे अपने में चिन्तन कर रहे हैं, और न्यौदा में से कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थें, और न्यौदा में से मन्त्रों का अध्ययन करते करते मानो देखो, शिव याग मानो देखो, वह महादेव की स्तुति उसकी क्रिया का वर्णन आ रहा था। परन्तु अपने में निमटारा नही कर सकें हैं। लोमश मुनि हम दोनों चिन्तन कर रहे हैं, गम्भीर चिन्तन करते करते परन्तु हमारे आङ्गन में नही आ पाया है कि प्रभु! हम क्या निर्णय कर सकें।

तो महर्षि च्यवन ऋषि ने कहा कि यह तो बहुत ही सूक्ष्म सा एक विषय है, मानो देखो, शिव याग तो प्रायः हम भी करते रहते हैं, परन्तु देखो, महादेव जो परमपिता परमात्मा है जो देवों का महादेव है, क्योंकि इस मानव के शरीर में महादेवों का देव आत्मा है, बाह्य जगत में इस संसार को धारण करने वाला महादेव जो देवताओं को अपने में स्थिर कर रहा है, वे परमपिता परमात्मा है परन्तु रहा याग का सम्बन्ध क्या यह जो शिव याग है हमारे यहाँ शिव नाम मानो देखो, बाह्य जगत में शिव नाम राष्ट्र को कहा जाता है बाह्य जगत में शिव नाम देखो, राजा के राष्ट्र में देखो, गऊंओं की सेवा करना और गऊंओं का पूजन करना मानो देखो, शिव याग कहलाता है शिव कहते है जो पालन करने वाला है जो पालना करता है शिव कहते हैं जो न्याय युक्त पालना करता है वह शिव

कहलाता है जब हमारे यहाँ गऊंओं का पालन होता है गऊंओं की रक्षाएं होती हैं। तो उस समय मानो देखो, शिव याग हो रहा है उसके गो घृत के द्वारा हम मानो नाना प्रकार का साकल्य और औषध एकत्रित करके और गो घृत के द्वारा याग कर्म करते हैं क्रियाकलाप करते हैं तो हम अपनी भावनाओं को अपने क्रियाकलाप को हम मानो देखो, द्यौ लोक में पंहुचा देते हैं, वह द्यौ लोक में जो भावना है, वह जो तरंगें हैं उनके आकार बन बन करके द्यौ लोक में प्रवेश कर जाते हैं, और वह जब द्यौ लोक में प्रवेश करते हैं, मानो वही द्यौ लोक से मानो देखो, वायुमण्डल बनता है। उसी द्यौ लोक से वायु मण्डल बनता है, वायु मण्डल से यह द्यौ लोक का निर्माण होता है, द्यौ लोक जब स्वच्छ होता है तो मानो देखो, यह जो पृथ्वी लोक है, यह पवित्र बनता चला जाता है, समय पर वृष्टि होती है, समय पर मानव अपनी क्रियाकलाप में रत्त हो जाता है। माता पिता जब सन्तान को जन्म देते हैं। तो याग कर्म करते हैं याग कर्म में मानो देखो, पूर्ववत उसकी प्रतिभा को अपनाना प्रारम्भ करते हैं।

तो मानो देखो, जिस प्रकार मेरा तो यह मन्तव्य रहा है इस सम्बन्ध में शिव याग मैंने मानो सौ वर्षों तक मैंने देखो, तीन सौ पचास वर्षों तक शिव याग किया है शिव याग का अभिप्राय यह है क्या आयु को दीर्घ बनाना शिवा बूटी का पान करना है शिव में मानो देखो, समिधा के रूप में भी परणित होती है मानो देखो, यह जो बेल का वृक्ष है इसकी जो समिधा है और चन्दन की समिधा दोनों के द्वारा मानो देखो, एक शिवा वृक्ष होता है शिवांग कृति नामक एक वृक्ष होता है उसके मानो देखो, पत्र फलों को ले करके साकल्य बनाया जाता है मानो देखो, चन्देनकेतु से साकल्य बना करके उसमें केशर पुष्पांजलि, पुत्र केतु नाना प्रकार की औषधियों का मिलान करके, मानो देखो, गो घृत के द्वारा, जो याग करता है, शिवा बूटी का पान करके, उसी का पाञ्चाङ्ग बना करके पान करता

है, तो दो तीन सौ वर्ष याग करने से, मानो देखो, उसकी दो हजार की आयु दीर्घ बन जाती है तो मानो देखो, यह वाक महर्षि च्यवन ऋषि ने यह वाक उन्हें निर्णय दिया, और निर्णय देते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वह याग कहलाता है, वह क्रियाकलाप, एक महानता की प्रतिभा कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने महर्षि लोमश मुनि से कहा कहो ऋषिवर! तुम्हारा क्या मन्तव्य है? उन्होंने कहा जो ऋषि ने कहा वह यथार्थ है मानो देखो, पिप्लाद ऋषि से यह प्रश्न आया क्या महाराज! आपका मन्तव्य क्या कहता है? क्या ऋषि यथार्थ उच्चारण कर रहे हैं। उन्होंने कहा ऋषि सदैव यथार्थ उच्चारण किया करते हैं। तो मानो देखो, इतने में उनकी वार्ता प्रारम्भ हो रही थी, इतने में अश्विनी कुमार भी उनके समीप आ गएं अश्विनी कुमार अश्विनी कुमारों ने कहा कहो भगवन! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है? भगवन! उन्होंने कहा प्रभु! हम इसीलिए आए हैं क्या हम शिव याग और महादेव के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! कागभुषुण्ड जी ने जब यह प्रश्न किया तो इतने में अश्विनी कुमारों ने महात्मा दधीचि ने उन्होंने कहा कि देखो, शिव नाम परमपिता परमात्मा का है महादेव जो देवताओं को स्थिर करने वाला है जैसे मानव के शरीर मे पञ्च महाभूत क्रियाकलाप कर रहे हैं, स्थिर करने वाला उनके अस्तित्व को निर्माणित करने वाला, जीवात्मा महादेव कहलाता है परन्तु देखो, ब्रह्माण्ड गति कर रहा है, नाना प्रकार के लोक लोकान्तर गतियां कर रहे हैं, एक समय अश्विनी कुमारों ने कहा क्या एक समय देखो, महर्षि धुक धुक ऋषि महाराज के आश्रम में विद्यमान थे, तो दुकतेत्वर ऋषि महाराज को हम शिक्षा का मानो देखो, गुरूतव की चुनौती प्रदान करते थे वह इतनी भव्य शिक्षा प्रदान करते थे जिस समय मानो देखो, मौन हो करके मध्य रात्रि के काल में वह समाधि के क्षेत्र में ले गएं समाधि के क्षेत्र में जहाँ मन और प्राण का एकाग्र सूत्रित होता है, वह सूत्रित होता हुआ वह

मानो देखो, जब एक आकाश गंगा में ले गएं दूसरी आकाश गंगा में, निहारिकाओं में ले जाते चले गएं, नाना सूर्यों के प्रकाश से पार होते चले गयें सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो, उस रेखां ब्रह्मे समाधि क्षेत्र में हमें यह प्रकृति का मण्डल दृष्टिपात आने लगा, जिसको वैज्ञानिक जन मानो देखो, निहारिकाओं के रूप में परणित करते रहे हम उन्हें आकाश गंगा और स्वाति के रुपों में परणित करते हैं परन्तु देखा हमने एक लोक ऐसा दृष्टिपात किया, जिस लोक का नाम मृचि लोक कहते थें, तो मृचि लोक के अङ्ग संग मानो देखो, तीन सौ सूर्य मानो जो एक ही मृचि मण्डल को प्रकाश दे रहे थे। तो मानो देखो, जब इस प्रकार का यह ब्रह्माण्ड ये दृष्टिपात किया तो मुनिवरों! देखो, हमें यह दृष्टिपात किया यह क्या ब्रहे है मानो देखो, उसी समय से हमने महादेव की उपासना करनी प्रारम्भ की, वह तो महादेव है, जो इतने ब्रह्माण्डों को स्थिर किए रहता है, जैसे मानव के शरीर को, एक अन्तरात्मा पञ्च महाभूतों का एक महादेव बना हुआ है इसी प्रकार वे परमपिता परमात्मा है जो ब्रह्माण्ड का नेतृत्व करने वाला है, जो देवताओं को स्थिर कर रहा है, जो देवताओं को अपने जैसे एक राजा होता है वह राजा अपने राष्ट्र में नाना कर्मचारियों को नाना मन्त्रियों को अपने हृदय में अपने में स्थिर कर लेता है मन्त्री विभाग अपना क्रियाकलाप विशुद्ध रूपों से क्रिया परणित कर रहा है इसी प्रकार जो परमपिता परमात्मा है, इस ब्रह्माण्ड को इस मानो देखो, निहारिकाओं को वह महादेव अपने में धारण कर रहा है क्योंकि उसको महादेव कहते हैं वह देवताओं का देव है।

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने जब यह निर्णय कराया तो वह प्रश्न हो गएं और यही वाक उन्होंने भगवान राम, सुलक्षण ब्रह्मचारी को बेटा! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ प्रातःकालीन जो ब्रह्मचारियों के मध्य में याग हो रहा था यह वाक उन्होंने निर्णय कराया कि देखो, हमने युवा अवस्था में ब्रह्मा देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के मध्य से प्राप्त

किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब महादेव की विवेचना ब्रह्मचारियों ने श्रवण की, तो वह मौन हो गएं। मानो देखो, वही वह अश्विनी कुमारों ने यह आख्यिका प्रगट की, और मानो देखो, यही आख्यिका, मेरे पुत्रों! देखो, वह महात्मा दधीचि ने यह प्राप्त कराया। तो परिणाम क्या है मुनिवरों! देखो, आज हमारे इन वाक्यों का कि हम अपने में महादेव को और शिव याग में परणित हो जाएं याग का अभिप्राय है कि यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाना है, यज्ञमान मानो अपने साकल्य को विशुद्ध रूपों से जब आहुति देता है तो वह अपने यज्ञशाला के होताजनों के रथ को रथ बना करके यज्ञशाला के वह द्यौ लोक में परणित करा देता है। वह मानो देखो, सूर्य की किरणों के साथ, नाना प्रकार की तरंगों के रूप में तंरगित होता हुआ मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रमाणं ब्रह्म वाचो वह यागाम् भविते देवाः उसका परमाणुवाद बन करके बेटा! वायु मण्डल का निर्माण करता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने, यह वर्णन कराया, तो मेरे पुत्रों! देखो, वह मौन हो गएं ब्रह्मचारियों ने कहा, धन्य है प्रभु!

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या हमारें यहाँ देखो, शिव याग किसे कहते हैं शिव याग आयु को दीर्घ बनाता है, प्रवृत्तियों को महान बनाता है परन्तु देखो, इसी मध्य में अपने में आत्म चिन्तन करना आत्मा को महादेव स्वीकार करके मेरे पुत्रों! परमपिता परमात्मा को जो ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए रहता है मानो देखो, जो ऋषि मुनियों के अनुभव में बेटा! नाना आकाश गंगाएं, जिनकी हम गणना नही कर सकते, वह अनुभव में आती रही हैं तो उनको जो स्थिर करने वाला वह महादेव कहलाता है। वह पवित्रतम कहलाता है वह पणोली कहलाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या ब्रह्मे वाचम ब्रह्म लोकां हिरण्य रथा जो मेरे प्यारे! देखो, हिरण्यं रथा जो अपने गर्भ में संसार को धारण कर रहा है जैसे माता अपने

पुत्र के अङ्ग प्रत्यंग को अपने गर्भ में धारण कर रही हैं, उसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी मानवतव को प्रत्येक प्राणी को अपने में धारण कर रही हैं। इसी प्रकार यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हैं इस ब्रह्माण्ड को मेरे पुत्रों! प्रभु अपने में धारण कर रहा है वह महादेवों का देव कहलाता है जिसको जान करके हम इस सागर से पार होना चाहते हैं। आओ, मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, तो कागभुषुण्ड जी ने कहा हे राम! हे सुलक्षण ब्रह्मचारी! हम मगध राष्ट्र में मानो देखो, जब ब्रह्मे वाचम कजली वनों में और वेत्तोक्त वनों में जब पंहुचे तो मानो देखो, हम च्यवन ऋषि के द्वारा ब्रह्म वाचा हम मानो देखो, शिक्षा का अध्ययन और अश्विनी कुमार और महात्मा दधीचि जिससे मानो देखो, अस्थियों के वज्र बन जाते है। तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, अपने में अधिक चेष्टा साधना कहलाती है, जिस साधना में मानव परणित रहता है, कि जहाँ तक यह पिण्डाकार का सम्बन्ध हैं, मेरे पुत्र ने एक समय वर्णन कराया था क्या इसको मानो देखो, लिंग कहते हैं। तो मैने अपने विवेचना प्रगट करके अपने में यह कहा था क्या यह जो ब्रह्माण्ड है अपने में माना देखो, मापना चाहते हैं, तो यह मानो देखो, लिंगमयी अण्डाकार के यह मानो देखो, जैसे श्वानन्द कहलाता है। मानो देखो, यह एक एकां ब्रहे एक अणुति रूपों में अण्डाकार के रूपों में ब्रह्माण्ड द्दष्टिपात आता है जैसे मानव के अनुकृतियों की गतियां हैं। उसी प्रकार गति करता रहता है, वह गतिवान हो करके ही मेरे पुत्रों! देखो, उस मानव को गतिवान बना रहा है, परमात्मा का यह जो ब्रह्माण्ड है, यह प्रत्येक ब्रह्माण्ड अपने में नृत्त कर रहा है, अपने में गतिशील हो रहा है इसीलिए बेटा! इसको हमें अपने में धारण करना उस परमपिता परमात्मा की आराधना करना यह है, बेटा! आज का हमारा वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या यह शिव याग और मुनिवरों! देखो, ब्रह्म ब्रहे व्रातं मानो देखो, महादेव की हमे

पूजा करनी चाहिए। पूजा का अभिप्राय यह है क्या अपनी अन्तरात्मा को जाने वह महादेव है, इस शरीर का धिपति है, बाह्य जगत का वह जो परमपिता परमात्मा जो इस चैतन्य के शून्य बिन्दु में परणित कर दें, और मानो देखो, शून्य बिन्दु को विकास में ला दे, उसी को हम महादेव कहते हैं। वह देवताओं का देव है। पञ्च महाभूतों को अपने में स्थिर कर रहा है, लोक लोकान्तरों को एक सूत्र में पिरो रहा है, बेटा! हम उस महादेव की उपासना करते हुए, उसके भोग पर जाना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हम आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनें, भौतिक विज्ञानवेत्ता बनें, उस परमपिता परमात्मा के स्वरूप में अपने को दृष्टिपात करके और परमात्मा को अपने समीप स्वीकार करके, उसकी पूजा करनी है। क्योंकि यह पापाचरण उस काल में होता है, जब महादेव को अपने से दूरी कर देते हैं, महादेव को यह स्वीकार करते हैं, उसे दूरी कर देते हैं, अपनेपन में अभिमान की मात्रा आ करके हम मानो दूरित क्रियाकलाप करके अपने को प्री अस्तोत बना देते हैं। यह है बेटा! आज का वाक समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

15 ०९ ०९ १९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन, किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा

रहा है, क्योंकि जितना भी वेदां प्रकाशां भविते वधनं देवं ब्रह्मा क्योंकि जितना भी वेदों का गान है, वेदों की प्रतिभा हैं, वह सर्वत्र मानो उस परमपिता परमात्मा से ओत प्रोत है, बहुत पुरातन काल हुआ जब बेटा! ओत प्रोत की चर्चा आने लगती है, तो प्रायः एक एक परमाणु ओत प्रोत होता हुआ हमें दृष्टिपात होने लगता है। जिस भी क्षेत्र में तुम एक एक वेदमन्त्र के शब्दों को ले करके उसकी विवेचना करना प्रारम्भ करोगे, उड़ान उडता हुआ वेटा! ऊर्ध्वा में गति करने लगोगे, तो यह ब्रह्माण्ड का एक एक परमाणु मानो उस परमपिता परमात्मा वह जो माता वसुन्धरा है, उससे ही ओत प्रोत होता हुआ तुम दृष्टिपात करने लगोगे।

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में वैज्ञानिक जनों ने, विज्ञान के ऊपर उड़ान उडना प्रारम्भ किया, और परमाणु को उन्होंने जानने के लिए तत्पर रहे, तो मानो परमाणुवाद में जा करके, अपने को उन्होंने उसमें रत्त करना उच्चारण पारम्भ किया। आज मैं विज्ञान के क्षेत्र में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु आज का हमारा वेद का मन्त्र क्या कह रहा है, मानो उच्चारण कर रहे थे, कि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहा है, उस माता वसुन्धरा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, क्योंकि माता को होना ही मानो देखो, पुत्र उसकी गाथा का वर्णन करता है, मानो जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की, प्रतिभा का वर्णन कर रही है। मानो यदि पृथ्वी ही ऐसी है, जो ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, एक एक लोक का वर्णन करा रही है, एक एक लोक की छाया को अपने में धारण कर रही है, मानो प्रत्येक तत्त्वों को अपने में धारण करके मानो खनिज हम ममत्वां ब्रह्मवा वाचन्न वसुन्धरो दिव्यां गतप्रमाणं वृत्ति देवाः मेरे प्यारे! देखो, वह जो माता वसुन्धरा चेतना है, वह जो प्रभु है, जो संसार को अपने में धारण किए रहता है, आज हम उसके गर्भ में जाना अथवा एक एक वाक

के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते है तो प्रायः मुनिवरों! एक एक परमाणु क्या एक एक मानव का शब्द और शब्द में जो परमाणु गति कर रहा है और परमाणु में जो शिशु रत्त हो रहा है, मानो बेटा! वह उसमें ओत प्रोत होता हुआ दृष्टिपात आता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हे विशेष विवेचना देने के लिए नहीं आया हूँ, बेटा! आज का एक एक मन्त्र आ रहा था, जिसमें यागों का बड़ा प्रिय वर्णन आता रहता है मैंने याग के सम्बन्ध में नाना ऋषि मुनियों का अपना मन्तव्य प्रगट किया और अपने मन्तव्य क्योंकि ऋषि मुनियों ने, अनुसन्धान करने वालो ने बेटा! याग में अपने जीवन को ले गएं क्योंकि इन्होंने याग के सम्बन्ध में, मन्थन करते करते बेटा! अपने जीवन की समाप्ति कर दी। मानो कहीं वह योग में चले गएं हैं, कहीं परमाणुवाद में रत्त हो गएं हैं, कहीं माता के गर्भ में प्रवेश किया है, कहीं मानो देखो, सूर्य लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ने लगे हैं, परन्तु योगां भविते यागाः वह याग एक ऐसा शब्द है, ऐसी एक रचना है, जिसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से अनुसन्धान अपने में रत्त होता रहा है। अथवा विचार विनिमय करने वालों ने, बहुत अनुसन्धान किया, आज मैं बेटा! उसके सम्बन्ध में मैं तुम्हे विवेचना देना करना प्रारम्भ करने वाला हूँ। मैंने तुम्हे बहुत पुरातन काल में महर्षि वैशम्पायन की चर्चाएं की, परन्तु उससे पूर्व मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्रीय ऋषियों के सम्बन्ध में, भी नाना प्रकार की उड़ाने उड़ी गई, परन्तु देखो, जैसे उन ऋषि मुनियों ने अपनी उड़ाने उड़ी हैं, आज मैं तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाने के लिए, सदैव तत्पर रहता हूँ।

बेटा! एक समय मुझे स्मरण आता रहता है, मेरे पुत्रों! देखो, उद्दालक गोत्र में, एक ऋषि हुए जिनका नाम देखो, महर्षि विश्वश्रवा कहते थें। मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा विश्वश्रवा, एक समय भ्रमण करने गएं, परन्तु वह मगध राष्ट्र में पंहुचे

और मगध राष्ट्र में जा करके, वह मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि सोमपान ऋषि के द्वार पर पंहुचे, सोमपान ऋषि महाराज ने, विश्वश्रवा उद्दालक का मानो उनका आदर, उनका स्वागत किया। उनके चरणों की वन्दना की, तो सोमकेतु ने कहा कहिए भगवन! आपका आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! मैं आज प्रातःकालीन विद्यालय में विद्यमान हो करके, ब्रह्मचारियों के मध्य में, कुछ वेद का अध्ययन कर रहा था, और वेद के पठन पाठन में, वेद की प्रतिक्रियाओं में, मानो देखो, याग का बड़ा वर्णन आ रहा था, मेरे मनों की इच्छा यह हुई, क्या मैं याग करूं और मोक्ष को प्राप्त हो जाऊं। क्योंकि याग एक मोक्ष की पगडण्डी का उन्होंने वर्णन किया है क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है यागाम् भविते देवं मोक्षं बहु सम्भवो देवाः मानो देखो, मैं उस मोक्ष को प्राप्त करना चाहता हूँ, उस पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता हूँ, जिस पगडण्डी पर चलने के पश्चात, गमन करने के पश्चात मानव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। तो हे प्रभु! मेरी ऐसी एक आकांक्षा बन गई है, क्या मैं मोक्ष में जाना चाहता हूँ, तो मेरे पुत्रों! देखो, सोमकेतु ने कहा तो प्रभु! यहाँ आपके आगमन का कारण, मैं अब तक नहीं जान सका हूँ उन्होंने कहा प्रभु! मैं जानना यह चाहता हूँ, क्या याग कैसे मोक्ष की पगडण्डी है? मैं उस पगडण्डी के जानने के लिए आया हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु ऋषि महाराज बड़े मानो देखो, विज्ञान में रत्त रहते थे, याग के विज्ञान में रत्त रहते थे, तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि प्रभु! इस पगडण्डी को मैं भी नहीं जानता उन्होंने कहा तो प्रभु! और इसका निर्णय कराईए उन्होंने कहा यहाँ से कुछ ही दूरी पर कागभुषुण्ड और महर्षि लोमश मुनि महाराज की विवेचना होती रहती है। चलो, उनके मध्य में और मानो उनके कोई प्रश्न करेंगे। क्योंकि महर्षि कागभुषुण्ड जी, मानो देखो, बड़े मानो देखो, विद्धव सम्भवा है, वे याग के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं, क्योंकि कागभुषुण्ड

जी की जो माता थी और पितर थे, वे दोनो ही याज्ञिक थे। मानो देखो, अपने याग के द्वारा, वह द्यौ लोक में गमन करते रहते थे। द्यौ लोक में शब्दों की गणना करते रहते थे, और अपने पूर्वजों के चित्रों का दर्शन करते रहते थे, इसीलिए चलो, आज कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज, दोनों का संवाद होता रहता है। मानो देखो, निकटतम एक आश्रम है, मानो देखो, उस पर गमन करते हैं। तो मेरे प्यारे! दोनों देखो, वह महर्षि सोमकेतु और मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वश्रवा उद्दालक दोनों ने भ्रमण करते हुए, वह मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी, और लोमश मुनि के द्वार पर पंहुचे, दोनों ने अपने आसन को त्याग दिया, उन्होंने कहा आईए, ब्रह्मवेत्ताओं! विराजों। तो मेरे पुत्रों! उन्हें उचित्त आसन दिया, उन्हें कुछ कन्द मूल इत्यादि अतिथि किया, अतिथि करने के पश्चात, उन्होंने कहा कहिए भगवन! आपका आगमन कैसे हुआ? आप भ्रमण करते हुए दूरी चले आ रहे हैं, हम इसके कारण को नहीं जान सके हैं। तो मुनिवरों! देखो, जैसे ही कागभुषुण्ड जी ने ऐसा प्रश्न किया तो उन्होंने कहा प्रभु! यह विश्वश्रवा उद्दालक हैं, यह कुछ जानना चाहते हैं, उन्होंने कहा बोले तुम क्या जानना चाहते हो मानो जितना हम जानते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी से उन्होंने कहा प्रभु! हम इसीलिए आयें हैं, मैं वेद में एक मन्त्र का अध्ययन कर रहा था और बहुत समय से वेद का अध्ययन कर रहा था उसमें यह आ रहा था कि यह जो यज्ञम् ब्रव्हे यह जो याग है। यह मोक्ष की पगडण्डी कहलाता है, मैं उस पगडण्डी को जानना चाहता हूँ। क्या याग क्या है? और उसकी पगडण्डी क्या है? मैं उसको जानने के लिए आया हूँ।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने ये प्रश्न किया, तो कागभुषुण्ड जी ने कहा कि भगवन! ये तो लोमश मुनि जी हैं मानो देखो, याग के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं। विचार विनिमय करते रहते हैं उन्होंने कहा प्रभु! मानो देखो, यह जो

तुमने प्रश्न किया है, मैं इसको अच्छी प्रकार नहीं जानता, मैं भी अनुसन्धान कर रहा हूँ। विचार रहा हूँ मानो देखो, यहाँ से थोड़ी दूरी, पर एक दण्डक वन कहलाता है और उस दण्डक वन में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, मानो देखो, कुछ अन्वेषण कर रहे हैं, उनकी दो प्रकार की यज्ञशालाएं हैं, एक यज्ञशाला दण्डक वन में रहती हैं, एक यज्ञशाला कजली वनों में रहती है। मानो देखो, दोनों रूपों में, वह अनुसन्धान करते रहते हैं। चलों, उनके द्वार पर गमन करते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया, और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वार पर पंहुचे महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के निकटतम, मानो देखो, वहा महर्षि सोमवृत्तिका और महर्षि श्वेतकेतु ऋषि महाराज देखो, उनके आश्रम में विद्यमान थे। मानो देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि कहीं से, भ्रमण करते हुए आ गएं। महर्षि प्रवाहण और शिलभ भी मेरे पुत्रों! देखो, वह भी उनके समीप और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज मानो देखो, ऋषियों का समूह विद्यमान हो करके, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के आश्रम में बेटा! देखो, विद्यालय में अन्वेषण चल रहा था विचार विनिमय चल रहा था नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, मेरे पुत्रों! उनके जो मानो जेठे ब्रह्मचारी थे, जिनका नाम ब्रह्मचारी सुकेता था, द्वितीय मानो देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी थे, और यज्ञदत्ता और सोम ब्रीहि ब्रा अस्वे मेरे पुत्रों! देखो, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, जब मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि के द्वार पर पंहुचे, तो भारद्वाज मुनि महाराज ने, बारी बारी ऋषि मुनियों के चरणों को स्पर्श, चरणों की वन्दना करके कहा आईए भगवन! पधारिए, वह विराजमान हो गएं। उन्होंने कहा प्रभु! यह मेरा कैसा अहोभाग्य है, भगवन! जो ब्रह्मवेत्ताओं का आसन मानो ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन, मेरे आसन पर आया। ब्रह्मणे वाचप्रहे यह मेरा अहोभाग्य है। मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज विद्यमान हो गएं मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि

कागभुषुण्ड जी ने और महर्षि लोमश मुनि ने एक स्वर में कहा कि प्रभु! यह ऋषि हैं मानो भारद्वाज अप्रहे अस्वात ब्रह्मे वाचनन्नमाः हे भारद्वाज! मानो कुछ प्रश्न करना चाहते हैं। उन्होंने कहा भगवन! बोलो, क्या प्रश्न है तुम्हारा? मानो देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के प्रश्नों का उत्तर क्या दे सकता हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा है, मानो जितना मैं जानता हूँ, उतना ऊत्तर अवश्य दिया जाएगा।

तो मेरे पुत्रों! उन्होंने सम्भे क्रोणस्ति असुतां देवं ब्रह्मा मेरे पुत्रों! देखो, वह उद्दालक गोत्रीय ऋषि ने, विश्वश्रवा ने, उनसे यह प्रश्न किया कि प्रभु! मैं कुछ समय हुआ, जब वेदों का अध्ययन कर रहा था, और वेद में एक मन्त्र आया है, और मन्त्र यह कहता है कि यह जो याग है, यह मोक्ष की पगडण्डी है। याग किसे कहते हैं और मोक्ष की पगडण्डी क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज! ने कहा क्या महाराज तुम इसको क्यों जानना चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं मोक्ष के लिए, मैं अपने क्योंकि प्रत्येक मानव की एक पिपासा रहती है। क्या मैं मोक्ष को चला जाऊं। मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊं क्योंकि संसार में जितना भी मानव क्रियाकलाप कर रहा है अथवा जितना भी कर्म कर रहा है वह सब अपने आनन्द के लिए कर रहा है। परन्तु इसीलिए मेरी इच्छा है, क्या मैं भी अपने आनन्द को प्राप्त हो जाऊं, आनन्द की पिपासा के लिए, मैं यह प्रयत्न कर रहा हूँ। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो उन्होंने कहा तो आप आनन्द चाहते हैं। परन्तु भारद्वाज मुनि ने यह प्रश्न किया क्या आप आनन्द क्यों चाहते हैं? उन्होंने कहा मैं आनन्द इसीलिए क्योंकि आनन्द स्वरूप वे परमपिता परमात्मा है। मैं परमात्मा के समीप जाना चाहता हूँ, उन्होंने कहा क्या परमपिता परमात्मा आनन्द स्वरूप हैं। यह तुमने कैसे जाना? उन्होंने कहा कि भगवन! देखो, यह मैंने इसीलिए जाना है, क्योंकि मानव सदैव आनन्द की पिपासा में रहता है, कितना भी क्रियाकलाप में रत्त हो जाओ। याग इत्यादि कर्म

में रत्त हो जाओ, योगासनों में प्रवेश कर जाए, परन्तु देखो, आनन्द की पिपासा उसे बनी ही रहती है। इसीलिए भगवन! मैं इस परमपिता परमात्मा को जो कि आनन्द स्वरूप में ही रत्त रहता है आनन्दम् जो उसको आनन्द में प्रवेश कर जाता है वह इस संसार सागर से उपराम हो जाता है अथवा वह सागर में प्रवेश नहीं करता अथवा इसकी उपरामता को प्राप्त हो जाता है।

जब बेटा! देखो, ऋषि ने यह कहा तो महर्षि भारद्वाज मुनि बोले प्रियता है, आओ, सबसे प्रथम, मेरा यह विचार बन गया है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव रहते हैं परन्तु चलो, उनके द्वार पर हम गमन करते हैं मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! चलिए, ब्रहे व्रताम् मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि, अपने वाहन में विद्यमान हो करके, ऋषि मुनियों को अपने वाहन में मानो देखो, वह वहाँ से गमन करते हैं और ऋषि मुनियों को ले करके, मेरे पुत्रों! देखो, क्रतेककेतु ऋषि महाराज जमदग्नि गोत्रीय कहलाते थे, वह उनके द्वार पर पंहुचे, तो मेरे पुत्रों! देखो, जमदग्नि आश्रम ब्रहे वाचन्नम्मे ब्रह्म वाचाः वहाँ मेरे पुत्रों! देखो, उनका बाल्यकाल का नाम श्वेति था, श्वेति के देखो, उनके पिता का नाम रेणकेतु था, तो रेणकेतु और वह दोनो ही पिता पुत्र विद्यमान थे। मेरे पुत्रों! देखो, जब वह अपने विचार विनिमय कर रहे थे, भारद्वाज मुनि का आगमन मानो उनके वाहन को दृष्टिपात करके उन्होंने कहा आईए भगवन! ऋषि मुनि देखो, सब विद्यमान हो गएं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने भारद्वाज मुनि ने कहा अपने पूज्यपाद ऋषि मुनियों से कि हे प्रभु! यह मेरे पूज्यपाद गुरूदेव का आसन है, क्योंकि इनसे यह प्रश्न करो, क्योंकि यह मोक्ष की पगडण्डी को जानते हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने यह प्रश्न किया कि हे भगवन! हम मोक्ष को याग को जानना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि यह भारद्वाज मुनि महाराज सर्वत्रता में मानो देखो, यह भौतिक विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान दोनो में रत्त रहते हैं, भारद्वाज मुनि ने कहा

कि भगवन! मैं दोनों में रत्त नहीं रहता हूँ, मैं केवल भौतिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान के प्रति मानव का क्रियाकलाप भी जानता हूँ। परन्तु आध्यात्मिकवाद वही जानता है, जो प्रभु के ही राष्ट्र में ही अपने को स्वीकार करता है, और वह वीणा में रत्त हो जाता है उस वीणा में मानो अपनी ध्वनि को प्रवेश करा देता है, वही मानो देखो, आध्यात्मिक याग में, रत्त हो जाता है।

मेरे पुत्रों! जब यह वाक उन्होंने श्रवण किया, महर्षि भारद्वाज मुनि ने उन्होंने कहा प्रभु! मैं जिज्ञासु हूँ तो मानो देखो, उन्होंने अप्रतम् ब्रह्मा पांचो देवोः ब्रहे व्रताम् उन्होंने कहा तो हे ऋषियों! विराजों, परन्तु देखो, मेरे विचार में, तो यह जो याग है, इस संसार को जानने का नाम याग कहलाता है, क्योंकि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परणित रहती है। इसमें नाना रूपों में रत्त होने वाला मानो देखो, ज्ञान की धाराएं रमण कर रही हैं प्रत्येक परमाणु अपने में रत्त हो रहा है और अग्नि के मानो देखो, अग्नि में वह चयन कर रहा है, अग्नं ब्रह्मवाचो देवाः यज्ञमान जब यज्ञशाला के समीप, जब प्रवेश करता है, यज्ञशाला के निकट जाता है, तो मानो देखो, यज्ञशाला से अपने ब्रह्मो यज्ञो भविते देवाम् क्योंकि अपने शारीरिक जो याग है इसको मानो शोधन करके और उस भौतिक याग के समीप जाता है। दोनों का समन्वय हो करके, मानो देखो, जब वह उड़ान उड़ता है, तो वह मोक्ष की पगडण्डी को जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जब यह वाक उन्होंने वर्णन किया, तो भारद्वाज मुनि महाराज, उनके पूज्य गुरूदेव, मेरे पुत्रों! देखो, वह एक स्थली पर विद्यमान हो करके ऋषि मुनियों के मध्य में, उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो गएं, उनके गुरुदेव के यहाँ एक यज्ञशाला थी, और यज्ञशाला में याग होता रहता था, परन्तु देखो, जब उन्होंने याग करना प्रारम्भ किया, तो याग का एक रथ बना हुआ, मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में जाता हुआ,

मानो देखो, याग दृष्टिपात आने के लिए तत्पर होने लगा। नाना प्रकार के यन्त्र बेटा! स्थिर हो रहे थे, भारद्वाज मुनि महाराज उनके पूज्यपाद गुरुदेव और देखो, आदि ऋषिवर जो विद्यालय में अध्ययन करते थे, मानो उस यौगिक क्रिया को जानते थे। मेरे प्यारे! देखो, याग जैसे प्रारम्भ हुआ, तो मुनिवरों! देखो, ऐसे ही यन्त्र विद्यमान थे, उन यन्त्रों में मुनिवरों! देखो, जो वह याग करने लगे, जितने ऋषि मुनि, मेरे पुत्रों! उनमे कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यज्ञमान बना, कोई ब्रह्मा बन करके होता इत्यादि बन करके, जब याग प्रारम्भ होने लगा, यन्त्रों की स्थिति हो गई, और मुनिवरों! नाना प्रकार की चित्रावलियाँ मानो स्थिर हो करके जब वह याग प्रारम्भ हुआ, तो मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञशाला का रथ बन करके, और उस रथ में विद्यमान होने वाले, अध्वर्यु यज्ञमान मानो देखो, सर्वत्र मुनिवरों! देखो, उस यन्त्र में जाते हुए मुनिवरों! देखो, द्यौ लोक में दृष्टिपात आने लगे।

मेरे पुत्रों! देखो, कितना गम्भीर उनका अध्ययन, उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में, ऐसा मुझे स्मरण आता रहता है, पुत्रों! क्या मानो देखो, वह द्यौ लोक में जाता हुआ, दृष्टिपात आने लगा, तो ऋषि ने कहा हे उद्दालक! ऋषि ब्रहे मानो देखो, यह दृष्टिपात करो, मानो यह पगडण्डी है, यह पगडण्डी है द्यौ लोक में जाने की, और द्यौ लोक उसे कहते हैं जहां शब्द स्थित हो जाता है, अवकाश में वह लय हो जाता है। क्योंकि संसार यह इसी यह जो संसार है, यह शून्य बिन्दु में मानो देखो, विकास का एक ही रूप में हैं, और यह शून्य बिन्दु में ही प्रवेश हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब भारद्वाज इत्यादियों ने यह विवेचनाएं, अपने ऋषि मुनियां से श्रवण की, तो बेटा! देखो, एक आनन्द उन्हें दृष्टिपात आने लगा। मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने यह प्रश्न किया कि मानो देखो, जो जिज्ञासु हैं, वह सब जिज्ञासु हैं हम यह मानो देखो, याग

के चित्रों को दृष्टिपात करने नहीं आए। क्योंकि चित्र तो हम सदैव अपनी आभा में दृष्टिपात करते रहते हैं। हम यह जानना चाहते हैं क्या यह जो लय होने वाला द्यौ है, यह किसमें रत्त रहता है, यह किसमें स्थित होता है? मानो देखो, वही तो मोक्ष का एक अप्रत कहलाता है।

मेरे पुत्रों! जब कागभुषुण्ड जी ने ऐसा कहा तो ऋषि मुनियों ने श्वेत्ता ने कहा क्योंकि उनके पूज्यपाद गुरूदेव को श्वेत्ता भी कहते थे, श्वेत्ता ऋषि ने कहा कि भगवन! मानो देखो, मेरी दृष्टि में तो यह आता है सम्भवे देवां यह जो द्यौ है यह द्यौ है मानो वह पृथ्वी में लय है, और यह पृथ्वी मानो देखो, आपो में लय है, और आपो यह अग्नि में लय है अग्नि मानो देखो, जल में स्थित है, और यह आपो ही ब्रह्मे अग्नि में और अग्नि ही मानो देखो, वायु में स्थित हो जाता है, और वायु ही मानो अवकाश में गति करके मानो देखो, द्यौ शून्य, बिन्दु में प्रवेश कर जाते हैं। जिसको महत्तत्व कहते हैं। तो मेरे पुत्रों! जब शून्य बिन्दु में, उन्होनें प्रवेश कराया, तो उस समय कागभुषुण्ड जी ने कहा प्रभु! यह आपका वाक मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु मैं जानना यह चाहता हूँ, कि शून्य बिन्दु में मानो देखो, आनन्द में जाने वाले की क्या गति होती है? उन्होंने कहा देखो, आनन्दं ब्रह्मे मेरे पुत्रों! देखो, श्वेत्ता ने कहा हे कागभुषुण्ड! यह तुम्हारे सुयोग्य प्रश्न नहीं है, कागभुषुण्ड जी बेटा! देखो, इस वाक को स्वीकार करके, नम्र हो गएं शान्त हो गएं उन्होंने कहा कि यह वर्णन नहीं किया जाता। जो जहाँ तक देखो, इन्द्रियों का विषय है, वहीं तक वह इन्द्रियों का विषय इन्द्रिय अपने में वर्णन कर सकती है, परन्तु देखो, जहाँ शून्य बिन्दु में, स्वतः दोनों ही प्रवेश हो गएं हैं, उन गतियों को काई वर्णन नहीं कर सकता। इसीलिए तुम योग में प्रवेश कर जाओ, योगाभ्यास में प्रवेश कर जाओ, मन को मानो प्राण में लय कर दो और प्राण को वायु में लय कर दो, वायु को अन्तरिक्ष में लय कर दो और अन्तरिक्ष को मानो देखो, शून्य बिन्दु में ही प्रवेश करके

मानो देखो, तुम्हे आनन्द की प्राप्ति हो जाएगी।

मेरे पुत्रों! कागभुषुण्ड जी मौन हो गएं और मुनिवरों! देखो, वह विश्वश्रवा ने कहा धन्य है प्रभु! आपने मुझे दोनो ही वर्णन कराए हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने एक एक वाक के ऊपर अन्वेषण और विचार विनिमय, जब प्रारम्भ किया है, मानो देखो, उसको शून्य बिन्दु से, शून्य बिन्दु को विकास में, और शून्य बिन्दु को विकास में प्रवेश करा करके बेटा! मौन हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, उस समय जब याग प्रारम्भ हुआ, तो याग के मानो देखो, याग का रथ बन करके, अन्तरिक्ष में प्रवेश कर रहा था। उन्होंने चित्रों में दृष्टिपात कराया, और चित्रों में दृष्टिपात कराते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, याग सम्पन्न करके, प्रश्नोतर दे करके, ब्रह्म ज्ञान में प्रवेश करके, मानो देखो, शून्य बिन्दु से, शून्य बिन्दु को विकास में प्रवेश करके, वहाँ से उन्होंने गमन किया। मानो देखो, उन्होंने कागभुषुण्ड जी ने कहा, धन्य है, उन्होंने विश्वश्रवा से कहा हे विश्वाश्रवे! हे सोमकेतु! मानो तुम्हारा तो आगमन बड़ा ही सार्थक रहा है मानो देखो, उन्होंने अपने अनुभव की चर्चाएं प्रगट की हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया, वह भारद्वाज मुनि के विद्यालय में प्रवेश हो गएं जब विद्यालय में प्रवेश हुए, तो उन्होंने कहा प्रभु! आप भी अपने विद्यालय का हमें कुछ दिग्दर्शन कराईए, तो उस समय मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा आईए, भगवन! पधारिए वह विराजमान हो गएं और विराजमान हो करके उन्होंने कहा आओ, भगवन! मेरे विद्यालय में जो चित्रावलियाँ है नाना प्रकार के यन्त्रों का हम देखो, आधुनिक इस समय हम मानो यह अनुसन्धान कर रहे हैं, क्या याग में अश्वातम् किसे कहते हैं? हम अश्वातम् के ऊपर लगे हुए हैं मानो देखो, याग की प्रतिक्रियाओं में, उसके उज्ज्वल स्वरूप में, उसका मानो परमाणुवाद में लगे हुए हैं, शब्द कैसे कैसे गति, करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाता है?

द्यौ लोक में उसकी स्थिति हो जाती है हम इस अन्वेषण में लगे हुए हैं। हम एक अन्वेषण और कर रहे हैं क्या माता के गर्भ में, जब शिशु बिन्दु प्रवेश करता है, उस बिन्दु में मानो शिशु होता है, उस शिशु के स्वरूप को हम अब तक नही जान पायें हैं मानो इस शिशु के साक्षात स्वरूप को जानना चाहते हैं, वह आ नही पर रहा है, मानो ऐसा कोई वैज्ञानिक यन्त्र अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, अब तक ऐसे यन्त्र का कोई निर्माण नही हुआ, जो माता के गर्भ मे बिन्दु प्रवेश करता है, उसमें शिशु है, और शिशु मानो आभा बन करके रहता है, उसका कोई चित्र, कोई यन्त्र यन्त्रित कर सका है। तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! भारद्वाज ने कहा प्रभु! हम उसमें लगे हुए हैं ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी मानो देखो, एक एक वेदमन्त्र में यहाँ वर्णन तो आ रहा है परन्तु चित्र का कही वर्णन अपने में लाना चाहते हैं वह अब तक हम नही ला पाए हैं। तो मेरे पुत्रों! इस प्रकार भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ से भी महर्षि कागभुषुण्ड जी ब्रह्मचारी ब्रहे मेरे पुत्रों! देखो, सोमकेतु और महर्षि लोमश और मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वश्रवा वहाँ से गमन किया और नाना ऋषि मुनियों ने अपने आश्रम को गमन किया भ्रमण करते हुए वह उसी आश्रम में पंहुचे। मानो जहाँ मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मानो अपने आश्रम में अध्ययन कर रहे थे अब चारों ऋषिवर विद्यमान हो गएं। उन्होंने कहा प्रभु! जो श्वेत्ता ऋषि ने हमें वर्णन कराया है क्या हे भगवन! कागभुषुण्ड जी से कहा क्या आप कहाँ तक उसमें अपने विचारों को अपने में विचरित करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि प्रभु! जो उन्होंने वर्णन किया है, वही हमारे यहाँ प्रायः वर्णन आता है। हम मानो देखो, उसके ऊपर, विचार विनिमय करते रहते हैं, अनुसन्धान करते रहते हैं और उसी के विचार को ले करके, हम मानो देखो, तपस्वी अपृतो मानो देखा मन और प्राण को, दोनो को, एक सूत्र में लाने के लिए, सदैव तत्पर होते हैं। क्योंकि जितना यह ब्रह्माण्ड

है, यह सब मानो देखो, प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है।

जब हम, एक समय मानो कागभुषुण्ड जी, ने कहा एक समय हे विश्वश्रवा! हम भ्रमण करते हुए, हम एक समय अपने पूज्याद गुरुदेव के द्वारा गएं थे परन्तु देखो, हमारे पूज्यपाद गुरुदेव का नामोकरण तो तुमने श्रवण किया है, मानो जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव थे, वह मानो देखो, महर्षि अगस्त थे, और मैं अगस्त मुनि के चरणों में विद्यमान हो करके ही अन्वेषण और अनुसन्धान करता रहा हूँ। जो मानो देखो, जो वर्णन कराते रहते थे, उसी के द्वार पर मानो अपनी प्रतिभा का वर्णन करते रहते थे, प्रतो मे भवि सम्भवा मानो देखो, प्राण सूत्र की चर्चा होते हुए, एक समय पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा जाओ, लघु मस्तिष्क में चले जाओ। मानो देखो, जब मैं लघु मस्तिष्क में प्रवेश कर गया, तो लघु मस्तिष्क में जाते ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड की मानो देखो, गुत्थी मेरे समीप आ गई सर्वत्र ब्रह्माण्ड में जितना यह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ यह ब्रह्माण्ड लोक लोकान्तर मुझे दृष्टिपात आने लगा हैं, मानो लघु मस्तिष्क के ऊपर विचार विनिमय करता रहा मैं लगभग बारह वर्षों तक अनुष्ठान करके मानो ब्रीहि व्रतो मानो देखो, लघु मस्तिष्क में अपनी स्थिति को स्थित किया और लघु मस्तिष्क में नाना प्रकार का ब्रह्माण्ड, मुझे लोक लोकान्तर वाली प्रतिभा मानो देखो, मेरे समीप आने लगी, मैं उसमें रत्त हो गया। जब मानो रत्त हो गया, तो वह बारह वर्ष के पश्चात, मैं पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो गया, मैंने कहा कि प्रभु! मैं लघु मस्तिष्क में चला गया हूँ, मैं लघु मस्तिष्क में सूर्यों की गणना करता रहा, लघु मस्तिष्क में, मैं पृथ्वियों की गणना करता रहा, सौर मण्डलों में प्रवेश कर गया, मैं मानो गन्धर्व लोक में चला गया हे प्रभु! मैं उसमें अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर गया था। हे प्रभु! मैं अपने में मानो देखो, एक विचित्र सा ही अपने को अनुभव करने लगा, मुझे और मार्ग प्रवेश कराईए। मेरे

पुत्रों! देखो, जब कागभुषुण्ड जी बोले, कि जब मुझे ऐसा वर्णन कराया, तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा क्या चार प्रकार के मस्तिष्क होते हैं। तुम मानो देखो, लघु मस्तिष्क में गएं हो, अब श्वेति मस्तिष्क में चले जाओ जब मानो श्वाति मस्तिष्क में प्रवेश कर गया, तो मुझे एक एक परमाणु एक दूसरें में गुथा हुआ दृष्टिपात आने लगा। मानो मैं भी स्वतः मेरा मस्तिष्क भी स्वाति मस्तिष्क भी देखो, उन्ही परमाणुओं में गुथा हुआ, मुझे एक विराट स्वरूप दृष्टिपात आने लगा।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब कागभुषुण्ड जी ने यह वर्णन कराया, तो विश्वश्रवा चकित हो गया, सोमकेतु ने कहा प्रभु! आप ने हमें अपने अनुभव को मानो कदापि चर्चा में नहीं लाए, महर्षि लोमश मुनि ने भी ऐसा ही कहा। परन्तु देखो, मुझे स्मरण ऐसा रहता है, जब कागभुषुण्ड जी ने कहा मैं स्वाति मस्तिष्क में प्रवेश करके, मानो देखो, मैंने एक आकाश गंगा को दृष्टिपात किया, द्वितीय आकाश गंगा को दृष्टिपात किया, मैंने मानो देखो, निन्यानवे हजार मानो स्वाति मस्तिष्क में मैंने आकाश गंगाओं को की गणना कर दी। मानो देखो, उन गणनाओं का अप्रहो सम्भवा एक आकाश गंगा के, मैं पृथ्वियों की गणना करने लगा, तो मानो मुझे अनन्त दृष्टिपात आई, सूर्यों की गणना करने लगा, तो मानो देखो, पचीस खरब तक मैं सूर्यों की गणना करके मैं मौन हो गया। तो मेरे प्यारे! इस ब्रह्माण्ड की गणना करने वालों ने कितना अन्वेषण कितना, चिन्तन किया है। अपने में वह चिन्तन में प्रवेश कर गएं। तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! पचीस खरब क्या, पचास एक एक अरबों सम्भवाति देवाः मानो सूर्यो की गणना करते मौन हो गएं। द्वितीय आकाश गंगा में पंहुच गया। तो मानो ध्रुव मण्डलों की गणना करने लगा, तो मैंने देखो, अस्सी अरब के देखो, पिचासी खरब और देखो, पचीस अरब के लगभग ध्रुव मण्डल गणना करके ही मैं मौन हो गया। मानो देखो, मैं पूज्यपाद गुरूदेव के द्वारा आ गया, प्रभु! मैं इस आभा को

जानना नहीं चाहता हूँ, प्रभु! जिस अनन्त ब्रह्माण्ड में, अपने मुझे पंहुचाया है। मैं यह चाहता हूँ, जहाँ लघु मस्तिष्क, स्वाति मस्तिष्क मानो यह रेण मस्तिष्क सर्वत्र मस्तिष्क एक ही मानो धारा में एक ही सूत्र में पिरोएं जाते हैं, मैं उस सूत्र को जानना चाहता हूँ।

तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा क्या वह जो जिस सूत्र को तुम जानना चाहते हो, आप मौन ब्रह्मे वाचाः वह आत्मा सूत्र है यह प्राणं ब्रह्मे वाचाः मानो देखो, जो प्राण ही, उसके आश्रित रहता है, जो जिसके आश्रित प्राण रहता है, यह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ ब्रह्माण्ड है। मानो देखो, वह जो सूत्र है उस सूत्र का नाम ही चेतना है, उस चेतना जो तुम्हारे शरीर में, चेतनित हो करके, एक एक परमाणु को सुगठित कर रही है, एक एक परमाणु को मिलान मिलान रही है, मानो देखो, तुम उसको जान करके, अपने में मौन हो जाओ। परन्तु देखो, उसका तुम वर्णन नहीं कर पाओगे, कागभुषुण्ड जी यह कह करके मौन हो गएं।

तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से भ्रणम करते हुए सोमकेतु इत्यादि कि शङ्काओं का निवारण हो गया, वह अपने में अन्वेषण करते हुए, मुनिवरों! देखो, विचार विनिमय करते हुए महर्षि विश्वश्रवा उद्दालक गोत्रीय मुनि महाराज ने बेटा! देखो, उसके पश्चात याग का अपना क्रम बनाया, यह याग की चर्चाएं जो उन्होंने याग किया था उनकी चर्चाएं कल मुनिवरों! देखो, प्रगट करूंगा, आज का वाक याग में बेटा! ऋषि मुनि अपने अपने मन्तव्य प्रगट करते रहते थे देवता और देवतव की चर्चाओं में रत्त रहने वाला यह चर्चाएं बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक्, यह समाप्त होने जा रहा है आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या है मेरे पुत्रों! देखो, यह जो परमपिता परमात्मा है, यह जो माता वसुन्धरा है, जिसके गर्भस्थल में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड ओत प्रोत हो रहा है। मानो देखो, इसमें स्वाति बन करके हे वसुन्धरा! तू हमारा

कल्याण करने वाली है, कहीं तू पृथ्वी के रूपों में कहीं जननी के रूप में, मानो कही चेतना के रूपों में, रत्त रह करके, तू संसार को अपने में धारण कर रही है।

आओ, मेरे प्यारे! मुनिवरों! देखो, यह ब्रह्माण्ड जितना मैंने तुम्हे वर्णन कराया, यह सब परमपिता परमात्मा की आभा में, माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो गतिशील है, उसी में रत्त है उसी में प्रतिपादित हो रहा है, यह है बेटा! आज का वाक आज का वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, क्या याग क्या है? पगडण्डी क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, याग कर्म करने के पश्चात मानो देखो, अपने को एक एक कण कण में प्रभु को दृष्टिपात करना और उसमें याग होता हुआ दृष्टिपात करना अपने को महान अपने को देखो, निस्वार्थ बना करके, मानो देखो, अपने में रत्त रह करके, प्रभु की आभा में, यह प्रभु का ही सब कुछ स्वीकार करके, जब गति करता है तो बेटा! वह याग की पगडण्डी कहलाती है। वह मानो देखो, मोक्ष की पगडण्डी है, क्रियाकलाप याग है, वह यागों में रत्त रह करके, अपने में रत्त हो रहा है, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। इसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् देवं भगाश्वमा मां रथं दधि गायन्त्वाः माणं आ पाहाम्। ओ३म् जनिता रूद्रां मणं गायन्त्वाहम् मनोः आभाहाम्। ओ३म् सुप्रजां रयीणाम गाता रथं आभ्यां गतौ सर्वां। ओ३म् सर्वं भद्रा मां गतप्रजाहाम्। दिनांक ०९ ०९ १९८४।

16 ## २६ ०९ १९८४ मोक्ष की पगडण्डी यात्रा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस

पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है क्योंकि जितना भी वेदां प्रकाशां भविते गच्छतं देवं ब्रह्मा क्योंकि जितना भी वेदों का गान है, वेदों की प्रतिभा है वह सर्वत्र मानो उस परमपिता परमात्मा से ओत प्रोत है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! ओत प्रोत की चर्चा आने लगती है, तो एक एक परमाणु हमें ओत प्रोत होता हुआ दृष्टिपात आने लगता है। जिस भी क्षेत्र में तुम एक एक वेदमन्त्र के शब्दों को ले करके, तुम उसकी विवेचना करना प्रारम्भ करोगे, और उड़ान उड़ता हुआ बेटा! ऊर्ध्वा में गति करने लगोगे, तो बेटा! यह ब्रह्माण्ड का, एक एक परमाणु मानो उस परमपिता परमात्मा का वह जो माता वसुन्धरा है, उससे ही ओत प्रोत होता हुआ, तुम दृष्टिपात करने लगोगे।

मन्त्र में, ब्रह्माण्ड गाथा

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में वैज्ञानिक जनों ने विज्ञान के ऊपर उड़ान उड़ना प्रारम्भ किया और परमाणु को जानने के लिए तत्पर रहे। मानो परमाणुवाद में जा करके, अपने को, उन्होंने उसमें रत्त करना प्रारम्भ कर दिया। आज मैं विज्ञान के क्षेत्र में, तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु आज का हमारा वेद का मन्त्र क्या कह रहा है मानो उच्चारण कर रहे थे कि प्रत्येक वेद मन्त्र, उस माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहा है, उस माता वसुन्धरा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है क्योंकि माता का होना ही मानो देखो, पुत्र की गाथा का वर्णन करना है। मानो देखो, यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का वर्णन कर रही है, मानो यह पृथ्वी ही ऐसी है, जो ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। एक एक लोक का वर्णन करा रही है।

एक एक लोक की छाया को, अपने में धारण कर रही है। मानो प्रत्येक तन्तुओं को धारण करके नाना प्रकार के मानो खनिज प्रदान कर रही है सुगन्ध के रूप में विद्यमान रहती है। हे ममत्वा ब्रह्मवाव्ह वाचन्नमं वसुन्धरा दिव्यां गतं प्रमाणं कृति देवाः मेरे प्यारे! वह जो माता वसुन्धरा चेतना है, वह जो प्रभु है, जो संसार को अपने में धारण किए रहता है आज जब उनके गर्भ में जाना अथवा एक एक वाद के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते है तो मुनिवरों! एक एक परमाणु क्या, एक एक मानव का शब्द और उसके साथ में जो परमाणु गति कर रहा है और परमाणु में भी जो शिशु दृष्टिपात हो रहा है मानो देखो, बेटा! वह उसमें ओत प्रोत होता हुआ दृष्टिपात आता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष तुम्हें विवेचना देने के लिए नहीं आया हूँ बेटा! आज वेद का एक वेदमन्त्र आ रहा था, जिसमें यागों का बड़ा भव्य वर्णन आता रहता है। मैंने याग के सम्बन्ध में नाना ऋषि मुनियों का विचार प्रगट किया और अपने मन्तव्य क्योंकि ऋषि मुनियों ने अपने वाक्यों में कहा है बेटा! याग के जीवन को ले लिया। ऋषि मुनियों ने बेटा! चिन्तन करते हुए अपने याग की समाधि लगा दी मानो कहीं वह योग में चले गएं हैं कहीं परमाणुवाद में रत्त हो गएं हैं कहीं माता के गर्भ में प्रवेश हो गया है कहीं मानो वह लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ने लगे हैं परन्तु योगां भविते यागाः यह याग एक ऐसा एक कर्म है ऐसी एक रचना है जिसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से अनुसन्धान, अपने में रत्त होता रहता है अथवा विचार विनिमय करने वालों ने बहुत अनुसन्धान बेटा! आज इसके सम्बन्ध में मैं तुम्हें विवेचना देना प्रारम्भ करने वाला हूँ। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में महर्षि वैशम्पायन की चर्चाएँ की, परन्तु उनके मूल में मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्रीय ऋषियों के सम्बन्ध में नाना प्रकार की उड़ाने उड़ी गई, परन्तु देखो, जैसे ऋषि मुनियों ने अपनी उड़ाने उड़ी

हैं आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता हूँ।

उद्दालक गोत्रीय महर्षि विश्वश्रवा

बेटा! एक समय मुझे स्मरण आता रहता है मेरे पुत्रों! उद्दालक गोत्र में एक ऋषि हुए हैं, उनका नाम देखो, महर्षि विश्वश्रवा था। मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा विश्वश्रवा एक समय भ्रमण करने गये। परन्तु वह मगध राष्ट्र में पहुँचे और मगध राष्ट्र में जा करके वह मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि सोमकेतु ऋषि के द्वार पर पहुँचे। सोमकेतु ऋषि महाराज ने विश्वश्रवा उद्दालक का मानो, उनका आदर, उनका स्वागत किया, उनके चरणों की वन्दना की। सोमकेतु ने कहा कहिए भगवन! आपका आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! मैं आज प्रातः कालीन विद्यालय में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों के मध्य में कुछ वेद का अध्ययन कर रहा था, वेद के पठन पाठन में, वेद की प्रतिक्रियाओं में मानो देखो, याग का बड़ा वर्णन आ रहा था। मेरी इच्छा यह हुई कि मैं याग करूँ और मोक्ष को प्राप्त हो जाऊँ। क्योंकि याग, एक मोक्ष की पगडण्डी का उन्होंने वर्णन किया है। क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है यागां भविते रेवस प्रभु सम्भवे देवाः मानो देखो, मैं मोक्ष को प्राप्त करना चाहता हूँ। उस पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता हूँ जिस पगडण्डी पर चलने से बेटा! गमन करने के पश्चात मानव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। तो हे प्रभु! यह मेरी आकांक्षा बन गई है, क्या मैं मोक्ष में जाना चाहता हूँ।

मोक्ष की पगडण्डी

तो मेरे पुत्रों! देखो, सोमकेतु ने कहा कि प्रभु! आप के यहाँ आने का उद्देश्य नहीं जान पाया हूँ? उन्होंने कहा प्रभु! मैं जानना यह चाहता हूँ कि याग कैसे मोक्ष की पगडण्डी है? मैं उस पगडण्डी को जानने के लिए आया हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु ऋषि महाराज बड़े वह मानो देखो, विज्ञान में रत्त रहते थे, याग के विज्ञान में रत्त रहते थे। तो मेरे प्यारे! उन्होंने

कहा कि प्रभु! इस पगडण्डी को मैं भी नहीं जानता। उन्होंने कहा तो प्रभु! आप इसका निर्णय कराईए? उन्होंने कहा यहाँ से कुछ ही दूरी पर कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज की विवेचना होती रहती है। चलो, उनके मध्य में और मानो उनसे कुछ प्रश्न करेंगे, क्योंकि कागभुषुण्ड जी मानो देखो, बड़े विद् सम्भव हैं, वह याग के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं, क्योंकि कागभुषुण्ड जी की जो माता थीं और पितर थे, वे दोनों ही मानो देखो, अपने याग के द्वारा वह द्यौ लोक में गमन करते रहते थे। द्यौ लोक में शब्दों की गणना करते रहते थे और अपने पूर्वजों के चित्रों का दर्शन करते रहते थे। इसलिए चलो, लोमश मुनि महाराज और कागभुषुण्ड दोनों का संवाद होता रहता है। तो मानो देखो, निकटतम एक आश्रम है उसमें गमन करते हैं।

मेरे प्यारे! दोनों, ब्रहे महर्षि सोमकेतु और मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वश्रवा उद्दालक दोनों ने भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि के द्वार पर पहुँचे, दोनों ने अपने आसन को त्याग दिया, उन्होंने कहा आइये, ब्रह्मवेत्ताओं! विराजो। तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्हें उचित्त आसन दिया, कुछ कन्दमूल इत्यादि अतिथि सत्कार करने के पश्चात उन्होंने कहा कि भगवन! आपका आगमन कैसे हुआ? आप भ्रमण करते हुए दूरी से आ रहे हैं, हम इसके कारण को नहीं जान सके हैं। मुनिवरों! देखो, जैसे ही कागभुषुण्ड जी ने ऐसा उच्चारण किया, तो उन्होंने कहा प्रभु! यह विश्वश्रवा उद्दालक हैं यह कुछ जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा बोलो, यह क्या जानना चाहते हैं मानो जितना हम जानते हैं, उसका अवश्य उत्तर दिया जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा प्रभु! हम इसलिए आए हैं, मैं वेद के एक वेदमन्त्र का अध्ययन कर रहा था और बहुत समय से वेद का अध्ययन कर रहा था, उसमें यह आ रहा था कि यह जो यज्ञं ब्रह्मे वह जो याग है, यह मोक्ष की पगडण्डी कहलाता है, मैं उस

पगडण्डी को जानना चाहता हूँ। कि याग क्या है और उसकी पगडण्डी क्या है? मैं उसको जानने के लिए आया हूँ।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह प्रश्न किया तो कागभुषुण्ड जी ने कहा कि भगवन! यह जो लोमश मुनि जी हैं और मानो देखो, ये याग के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं, विचार विनिमय करते रहते हैं। तो उन्होंने कहा प्रभु! मैं मानो देखो, यह जो तुमने प्रश्न किया है मैं उसको अच्छी प्रकार नहीं जानता, मैं अभी अनुसन्धान कर रहा हूँ विचार रहा हूँ मानो देखो, यहाँ से थोड़ी दूरी पर एक मानो देखो, दण्डक वन कहलाता है और उस दण्डक वन में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज मानो देखो, कुछ अन्वेषण कर रहे हैं उनकी दो प्रकार की यज्ञशाला हैं एक यज्ञशाला दण्डक वन में रहती है, एक यज्ञशाला कजली वनों में रहती हैं। मानो देखो, दोनों रूपों में वह अनुसन्धान करते रहते हैं। तो चलो, उन के द्वार पर गमन करते हैं।

महर्षि भारद्वाज के आश्रम में ऋषियों का समूह

तो मेरे पुत्रों! वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वार पर पहुँचे। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के निकटतम मानो देखो, यहाँ महर्षि सोमकृतिका और महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज उनके आश्रम में विद्यमान थे। मानो देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि कहीं से भ्रमण करते हुए आ गए, महर्षि प्रवाहण और शिलक भी मेरे पुत्रों! देखो, वे भी उनके समीप और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज मानो देखो, ऋषियों का समूह विद्यमान हो करके, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के आश्रम में बेटा! देखो, उनके विद्यालय में अन्वेषण चल रहा था। विचार विनिमय चल रहा था। नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। मेरे पुत्रों! उनके जो नाना ब्रह्मचारी थे, जिनका नाम ब्रह्मचारी सुकेता था, देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी थे और यज्ञदत्ता

और सोम ब्रीहि वहाँ मेरे पुत्रों! देखो, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। जब मुनिवरों! भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे तो भारद्वाज मुनि महाराज ने बारी बारी ऋषि मुनियों के चरणों की वन्दना करके कहा, आइये, भगवन! विराजिए। वे विराजमान हो गये, उन्होंने कहा प्रभु! यह कैसा मेरा अहोभाग्य है, भगवन! ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन मानो मेरे यहाँ हुआ है। ब्रह्मणे वाचप्पव्हे यह मेरा अहोभाग्य है। मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने बारी बारी ऋषि मुनियों के चरणों की वन्दना करके कहा, आईए, भगवन! वह विराजमान हो गये। उन्होंने कहा प्रभु! यह कैसा सौभाग्य है, भगवन! जो ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन मानो मेरे आसन पर आया। ब्रह्मे वाचप्पव्हे यह मेरा सौभाग्य है।

मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने और महर्षि लोमश मुनि ने एक स्वर में कहा कि प्रभु! ये ऋषि है, मानो भारद्वाज अब्रहे ब्रह्मे वाचन्नमा हे भारद्वाज! यह मानो कुछ जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भगवन! बोलो क्या प्रश्न है तुम्हारा? मैं मानो ब्रह्मवेत्ताओं के प्रश्नों का उत्तर क्या दे सकता हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा है तो मानो जितना मैं जानता हूँ, उतना उत्तर अवश्य दिया जाएगा। तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने समे रुद्रा अस्वतां देवाः ब्रह्मा मेरे पुत्रों! देखो, वह उद्दालक गोत्रीय ऋषि विश्वश्रवा ने उनसे जो प्रश्न किया, वह प्रश्न मैं कुछ समय हुआ वेदों का अध्ययन कर रहा था और वेद में एक मन्त्र आया है और मन्त्र यह कहता है कि यह जो याग है, यह मोक्ष की पगडण्डी है। याग किसे कहते हैं? और मोक्ष की पगडण्डी क्या है?

मानव की पिपासा

तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि महाराज! इसको क्यों जानना चाहते हैं? उन्होंने कहा प्रभु! मैं मोक्ष के लिए, क्योंकि प्रत्येक मानव की एक पिपासा रहती है। कि मैं मोक्ष को चला जाऊँ? मैं आनन्द को मानो

आनन्द को प्राप्त हो जाऊँ, क्योंकि मानव जितना भी क्रियाकलाप करता है, अथवा जितना भी कर्म कर रहा है वह मानो आनन्द के लिए कर रहा है, परन्तु इसलिए मेरी इच्छा है कि आप भी अपने आनन्द को प्राप्त हो जाओ। आनन्द की पिपासा के लिए यह प्रयत्न कर रहा हूँ। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो उन्होंने कहा आप आनन्द चाहते हैं।

परन्तु भारद्वाज मुनि ने यह प्रश्न किया कि आप आनन्द क्यों चाहते हैं? उन्होंने कहा कि मैं आनन्द इसलिए चाहता हूँ क्योंकि आनन्द स्वरूप परमपिता हैं परमात्मा। मैं परमात्मा के समीप जाना चाहता हूँ। तो उन्होंने कहा तो परमपिता परमात्मा आनन्द स्वरूप है यह तुमने कैसे जाना? उन्होंने कहा कि भगवन! देखो, यह मैने इसलिए जाना है क्योंकि मानव सदैव आनन्द की पिपासा में रहता है, जितना भी क्रियाकलाप में रत्त हो जाओ, कर्म में रत्त हो जाओ, योग में प्रवेश कर जाओ, परन्तु देखो, आनन्द की पिपासा उसे बनी ही रहती है। इसलिए भगवन! मैं परमपिता परमात्मा को क्योंकि जो आनन्दमयी स्वरूप में रत्त रहता है, जिस समय आनन्द को, आनन्द में प्रवेश हो जाता है, तो वह इस संसार सागर से पार हो जाता है अथवा सागर में प्रवेश नहीं करता, परन्तु इसकी उपरामता को प्राप्त हो जाता है। जब बेटा! देखो, ऋषि ने यह कहा तो महर्षि भारद्धाज मुनि बोले आओ, सबसे प्रथम मेरा यह विचार बन गया है कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहते हैं परन्तु देखा, उनके द्वार पर हम गमन करते हैं।

मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! गमनां ब्रीहि व्रताम मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि अपने वाहन में विद्यमान हो करके ऋषि मुनियों को अपने वाहन में मानो देखो, वह वहाँ से गमन करते हैं और ऋषि मुनियों को ले करके मेरे पुत्रों! देखा, कृतेककेतु ऋषि महाराज, जमदग्नि गोत्रीय कहलाते थे। वह उनके द्वार पर पहुँचे, तो मेरे पुत्रों! देखो, जमदग्नि आश्रम ब्रहे वाचं मे ब्रह्म वाचा वह मेरे पुत्रों! देखो, उनका बाल्य काल

का नाम श्वेति था। श्वेति के देखो, उनके पिता का नाम रेणकेतु था, तो वे दोनों ही पिता पुत्र विद्यमान थे।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब वह तपों में अपने विचार विनिमय कर रहे थे, भारद्वाज मुनि का आगमन वाहन में दृष्टिपात करके उन्होंने कहा आईए, भगवन! ऋषि मुनि सब मुनिवरों! देखो, सब विद्यमान हो गये। मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा कि ऋषि मुनियों से कि हे प्रभु! यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का आसन है, परन्तु देखो, इनके लिए मोक्ष की पगडण्डी को मानो जानते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने यह प्रश्न किया कि हे भगवन! हम मोक्ष के याग को जानना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि यह भारद्वाज मुनि सर्वत्रता में मानो देखो, यह भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान दोनों में रत्त रहे हैं। भारद्वाज मुनि ने कहा प्रभु! मैं दोनों में रत्त नहीं रहता हूँ। मैं केवल भौतिक विज्ञान और मानो भौतिक विज्ञान का क्रियाकलाप भी जानता हूँ, परन्तु आध्यात्मिकवाद वही जानता है जो प्रभु के ही राष्ट्र में अपने को स्वीकार करता है और वह विद्या में रत्त हो जाता है। मानो अपनी ध्वनि को प्रवेश करा देता है वही मानो देखो, आध्यात्मिक याग में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! जब यह वाक भारद्वाज मुनि ने, कहा प्रभु! मानो मैं हूँ, उन्होंने कहा देखो, अप्रतं देवो ब्रहे तो उन्होंने कहा कि हे ऋषियों! विराजो, परन्तु देखो, मेरे विचार में तो यह जो याग है, इस संसार को जानने का नाम याग कहा जाता है। इस संसार को जानने का नाम याग कहलाता है। बेटा! देखो, यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परणित है, इसमें नाना रूपों में रत्त होने वाला मानो देखो, विज्ञान की धाराएँ रमण कर रही हैं। प्रत्येक परमाणु अपने में रत्त हो रहा है और मानो देखो, अग्नि उसे चयन कर रहा है। अग्नं ब्रह्म वाचो देवाः यज्ञमान जब यज्ञशाला के समीप प्रवेश करता है, यज्ञशाला के निकट जाता है तो मानो देखो, यज्ञशाला में यज्ञो ब्रह्मो क्योंकि अपने जो, शारीरिक याग है इसको मानो स्वयं करके और

भौतिक याग के समीप जाता है, दोनों का समन्वय हो करके मानो देखो, जो वह उड़ान उड़ता है, तो वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता है।

द्यौ लोक

मेरे पुत्रों! देखो, जब यह वाक उन्होंने वर्णन किया तो भारद्वाज मुनि महाराज, उनके गुरुदेव मेरे पुत्रों! देखो, वह एक स्थली पर विद्यमान हो करके, ऋषि मुनियों के मध्य में, उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया मानो देखो, एक यज्ञशाला में विद्यमान हो गये, उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी और यज्ञशाला में याग होता रहता था। परन्तु देखो, जब उन्होंने याग करना प्रारम्भ किया, याग का एक रथ बना हुआ, उन्हें अन्तरिक्ष में जाता हुआ, दृष्टिपात आने के लिए मानो तत्पर होने लगा। नाना प्रकार के यन्त्र बेटा! स्थिर हो गये। भारद्वाज मुनि महाराज पूज्यपाद गुरुदेव और देखो, आदि ऋषिवर देखो, जो विद्यालय में अध्ययन करते थे मानो देखो, इस विद्या को जानते थे। मेरे प्यारे! देखो, याग प्रारम्भ हुआ, तो मुनिवरों! ऐसे ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, उन यन्त्रों में मुनिवरों! जितने ऋषि मुनि थे, मेरे पुत्रों! कोई उनमें उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यज्ञमान, होता बना, कोई ब्रह्मा बन करके होता इत्यादि बन करके, जब याग प्रारम्भ होने लगा, यन्त्रों की स्थिति हो गई। तो मुनिवरों! वहाँ नाना प्रकार की यंत्रावली स्थित हो करके, जब यह याग प्रारम्भ हुआ तो मेरे पुत्रों! देखो,! यज्ञशाला का रथ बन करके और उस रथ में विद्यमान हो करके, अध्वर्यु, यज्ञमान सर्वत्र मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह सर्वत्र मुनिवरों! देखो, यन्त्र में जाते हुए, मुनिवरों! देखो, द्यौ लोक में दृष्टिपात आने लगे। मेरे पुत्रों! देखो, कितना गम्भीर उनका अध्ययन, उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में ऐसा मुझे स्मरण आता रहता है, पुत्रों! क्या मानो देखो, वह द्यौ लोक में जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा। तो ऋषियों ने कहा है उद्दालक ऋषि अब्रहे मानो यह दृष्टिपात करो, मानो यह पगडण्डी है,

यह पगडण्डी है द्यो लोक में जा रही है, और द्यौ लोक उसे कहते हैं जहां सब स्थित हो जाता है, अवकाश में लय हो जाता है। क्योंकि उसका जितना संसार है यह शून्य बिंदु, में संसार ही नहीं मानो इस रूप में है, क्या यह शून्य बिन्दु में ही प्रवेश हो जाता है।

आनन्द की प्राप्ति

मेरे पुत्रों! देखो, जब भारद्वाज इत्यादियों ने यह विवेचनाएँ श्रवण की, तो बेटा! उनको एक आनन्द दृष्टिपात आने लगा। मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने यह प्रश्न किया कि मानो देखो, यह जो जिज्ञासु है, हम सब जिज्ञासु हैं मानो देखो, याग को दृष्टिपात करने नहीं आये, यह तो हम सदैव अपनी आभा में दृष्टिपात करते रहते हैं, हम यह जानना चाहते हैं क्या, यह जो लय होने वाला द्यौ है, यह किसमें रत्त रहता है? यह किसमें स्थित होता है मानो देखो, वही तो मोक्ष की एक पगडण्डी कहलाता है। मेरे पुत्रों! जब कागभुषुण्ड जी ने ऐसा कहा, सब ऋषि मुनियों ने, श्वेत्ता ने कहा, क्योंकि उनके दृष्टिपात करते ही श्वेत्ता भी कहते है, श्वेत्ता ऋषि ने कहा कि भगवन! मानो देखो, मेरी दृष्टि में तो यह आता है क्या, यह जो द्यौ है, यह द्यौ मानो देखो, पृथ्वी में लय है और यह पृथ्वी मानो आपो में लय है और अग्नि मानो देखो, वायु में लय है। वायु मानो देखो, अवकाश में स्थित हो करके, यह द्यौ में प्रवेश कर जाते हैं। जिसे महत्तत्व कहते हैं। तो मेरे पुत्रों! जब शून्य बिन्दु में प्रवेश कराया, तो उसी में कागभुषुण्ड जी ने कहा प्रभु! यह आपका वाक हमने स्वीकार कर लिया, परन्तु मैं जानना यह चाहता हूँ शून्य बिन्दु इस मानो देखो, आनन्द में जाने के बाद क्या गति होती है। उन्होंने कहा देखो, आनन्दं ब्रहे मेरे पुत्रों! देखो, श्वेत्ता ने कहा हे कागभुषुण्ड! यह हमारे सुयोग्य है, कागभुषुण्ड जी ने बेटा! देखो, इस वाक को स्वीकार कर लिया, शान्तं ब्रहे उन्होंने कहा कि यह वर्णन नहीं किया जाता, जहाँ तक देखो, इन्द्रियों का विषय है, वहीं तक तो

इन्द्रियों का विषय, इन्द्रिय अपना वर्णन कर सकती है। परन्तु देखो, जहाँ शून्य बिन्दु में, दोनों ही प्रवेश होते हैं उन गतियों को कोई वर्णन नहीं कर सकता। यह तुम योग में परणित हो, योगाभ्यास में प्रवेश कर जाओ, मन को मानो प्राण में लय कर दो और प्राण को वायु में लय कर दो और वायु को अन्तरिक्ष में लय कर दो और अन्तरिक्ष को मानो शून्य बिन्दु में प्रवेश करके यह मानो तुम्हें आनन्द की प्राप्ति हो जाएगी।

मेरे पुत्रों! कागभुषुण्ड जी मौन हो गएं और मुनिवरों! देखो, वह विश्वश्रवा ने कहा धन्य हैं प्रभु! आप ने मुझे मानो दोनों ही वर्णन कराए हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने नैतिकवाद के ऊपर अन्वेषण और विचार विनिमय जब प्रारम्भ किया है तो मानो देखो, शून्य बिन्दु को विकास में और आकाश ही शून्य बिन्दु में प्रवेश करके मौन हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने, जब याग प्रारम्भ हुआ, तो याग का रथ बन करके मानो अन्तरिक्ष में प्रवेश कर रहा है। उन्होंने चित्रों में दृष्टिपात कराया और चित्रों में दृष्टिपात कराते हुए मेरे पुत्रों! देखो, याग सफल करके, प्रश्नों का उत्तर दे करके, मेरे प्यारे! देखो, प्रश्नोत्तर दे करके, ब्रह्म ज्ञान में प्रवेश करके मानो देखो, शून्य बिन्दु को विकास में प्रवेश करके उन्होंने वहाँ से गमन किया। मानो देखो, उन्होंने कागभुषुण्ड जी ने कहा धन्य हैं उन्होंने विश्वश्रवा से कहा हे विश्वश्रवा! हे सोमकेतु! मानो तुम्हारा तो आगमन बड़ा ही सार्थक रहा है। मानो देखो, ऋषि मुनियों ने अपनी चर्चाएँ प्रगट की हैं।

महर्षि भारद्वाज का विद्यालय

तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया। वह भारद्वाज मुनि के विद्यालय में प्रवेश हो गये, विद्यालय में प्रवेश हुए तो उन्होंने कहा प्रभु! अपने विद्यालय का हमें दिग्दर्शन कराइये। तो मुनिवरों! उस समय उन्होंने कहा आईए, भगवन! पधारिए, वह विराजमान हो गये। और विराजमान हो करके उन्होंने कहा आओ, भगवान! मेरे विद्यालय में ये यंत्रावलियाँ

हैं। नाना प्रकार के यन्त्रों का मानो हम यह अनुसन्धान कर रहे हैं कि याग में अश्वातम् किसे कहते हैं? अश्वातम के ऊपर ले गएं मानो देखो, याग की दृष्टि में उसके ऊपर रूप में उसका मानो परमाणुवाद में लगे हुए हैं, यह शब्द कैसे कैसे गमन कर जाता है? द्यौ लोक में उसकी स्थिति हो जाती है, हम इस अन्वेषण में लगे हुए है, हम एक अन्वेषण ओर कर रहे हैं कि माता के गर्भ में, जब शिशु बिन्दु प्रवेश करता है तो उस बिन्दु में मानो शिशु होता है, उस शिशु की आभा को हम अब तक नहीं जान पाएँ हैं। मानो देखो, उसको साक्षात स्वरूप में लाना चाहते हैं, वह आ नहीं पा रहा है। मानो देखो, ऐसा कोई वैज्ञानिक यन्त्र अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके अब तक ऐसे यन्त्र का निर्माण नहीं हुआ, जो माता के गर्भ में बिंदु प्रवेश करता है, उसमें शिशु है और शिशु मानो आभा बन करके रहता है। उसका मानो कोई चित्र, कोई यन्त्र देखो, हम यन्त्रित कर पाए हैं।

मन प्राण की एक सूत्रता

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि के आश्रम में लगे हुए है ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी मानो देखो, एक एक वेदमन्त्र में वर्णन आ रहा है परन्तु चित्र का कहीं वर्णन अपने में लाना चाहते हैं। वह अब तक नहीं ला पाए हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ से भी महर्षि कागभुषुण्ड जी ब्रह्मचारी ब्रहे मेरे पुत्रों! देखो, सोमकेतु और महर्षि लोमश और विश्वश्रवा उन्होंने वहाँ से गमन किया और नाना ऋषि मुनियों ने अपने आश्रम को गमन किया, भ्रमण करते हुए मानो वह उसी आश्रमों में पहुँचे जहाँ मुनिवरों! कागा मुनि और महर्षि लोमश मानो अपने आश्रम में अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मानो जो, इन्होंने वर्णन कराया है क्या, हे कागभुषुण्ड जी! आप कहाँ तक उच्चारण करते हैं। विचारों को अपने विचित्र करते रहते

हैं। उन्होंने कहा कि प्रभु! जो उन्होंने वर्णन किया है वही हमारे यहाँ प्रायः वर्णन आता है। हम मानो देखो, उसके ऊपर प्रायः विचार विनिमय करते रहते हैं। अनुसन्धान करते रहते है और उसी विचार को ले करके हम मानो देखो, मन, प्राण दोनों को एक सूत्र में लाने के लिए सदैव तत्पर होते हैं। क्योंकि जितना यह ब्रह्माण्ड है, यह सब मानो देखो, प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है। यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है।

लघु मस्तिष्क से ब्रह्माण्ड दर्शन

जब तुम एक समय मानो कागभुषुण्ड जी ने कहा कि एक समय हे विश्वश्रवा! हम भ्रमण करते हुए, एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा गये, परन्तु देखो, हमारे पूज्यपाद गुरुदेव का नामोकरण तो तुमने श्रवण किया है मानो जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव थे वह मानो देखो, महर्षि अगस्त्य थे। और मैं अगस्त्य मुनि के चरणों में विद्यमान हो करके, यह अन्वेषण और अनुसन्धान करता रहा हूँ जो मानो देखो, वर्णन कराते रहते थे, उसी के द्वार पर मानो देखो, अपनी अन्तंर्हृदय से वर्णन करते रहते थे गतो में भविष्यं ब्रह्मा मानो देखो, प्राण की चर्चा होती थी। एक समय पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा जाओ, लघु मस्तिष्क में प्रवेश कर जाओ। जब लघु मस्तिष्क में प्रवेश कर गया, तो लघु मस्तिष्क में जाते ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड की मानो देखो, गुत्थी मेरे समीप आ गई, सर्वत्र ब्रह्माण्ड में, जितना यह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ, यह ब्रह्माण्ड, लोक लोकान्तर मुझे दृष्टिपात आने लगा मानो देखो, लघु मस्तिष्क में यह विचार विनिमय करता रहा। मैने लगभग बारह वर्षों तक अनुष्ठान करके मानो देखो, मानं ब्रीहि व्रतो लघुमस्तिष्क को दृष्टिपात किया और लघु मस्तिष्क में नाना प्रकार का ब्रह्माण्ड मुझे लोक लोकान्तर वाली प्रतिभा मानो देखो, मेरे समीप आने लगी। मैं उसमें रत्त हो गया, जब मानो रत्त हो गया, तो वह बारह वर्ष के पश्चात मैं पूज्यपाद के चरणों में विद्यमान हो गया। मैंने कहा कि प्रभु! मैं लघु मस्तिष्क मे चला गया हूँ। मैं लघु

मस्तिष्क में सूर्यों की गणना करता रहा, लघु मस्तिष्क में मैं पृथ्वियों की गणना करता रहा, सौर मण्डलों में प्रवेश कर गया, मैं मानो गन्धर्व लोक में चला गया हूँ। हे प्रभु! मैं उसमें, अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर गया। हे प्रभु! मैं अपने में मानो देखो, एक विचित्र सा ही अपने को अनुभव करने लगा। मुझे और मार्ग प्रवेश कराईए।

मस्तिष्क के चार प्रकार

मेरे पुत्रों! देखो, जब कागभुषुण्ड जी बोले कि जब मुझे ऐसा वर्णन कराया तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा चार प्रकार के मस्तिष्क होते हैं। मानो देखो, लघु मस्तिष्क में गएं हो, अब स्वाति मस्तिष्क में चले जाओ, जब मैं स्वाति मस्तिष्क में प्रवेश कर गया, तो मुझे एक एक परमाणु एक दूसरे में गुथा हुआ दृष्टिपात आने लगा। मानो मैं भी, मेरा मस्तिष्क भी स्वाति मस्तिष्क भी मानो उन्हीं परमाणुओं में गुथा, मुझे एक ब्रहात रूप दृष्टिपात आने लगा। तो मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने यह वर्णन कराया तो विश्वश्रवा गद गद हो गये, सोमकेतु ने कहा प्रभु! आप हमें अपने कदापि ज्ञान में नहीं लाए, महर्षि लोमश मुनि ने भी ऐसा ही कहा। परन्तु देखो, मुझे ऐसा स्मरण रहता है। जब कागभुषुण्ड जी ने कहा मैंने प्रवेश करके मानो देखो, आकाश गंगा को दृष्टिपात किया, द्वितीय आकाश गंगा को दृष्टिपात किया, मैंने मानो देखो, निन्यानवे हजार एक मानो मैंने स्वाति मस्तिष्क में दृष्टिपात की। मानो देखो, उन गणनाओं का जब प्रहो सम्भवा एक आकाश गंगा में मैं पृथ्वियों की गणना करने लगा तो मानो मुझे अनन्त दृष्टिपात आई। सूर्यों की गणना करने लगा तो मैंने मानो पच्चीस अरब तक सूर्यों की गणना पा करके, मैं मौन हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो, इस ब्रह्माण्ड की कल्पना करने वालों ने पिच्चानवे तक प्रयत्न किया है अपने में वह चित्त में प्रवेश कर गये।

चित्त के आश्रित प्राण

तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! पच्चीस खरब छह

सौ पचास मानो देखो, सूर्यों की गणना करके मानो मौन हो गये। द्वितीय आकाश गंगा में पहुँच गया, तो ध्रुव मण्डलों की गणना करने लगा, तो मैंने देखो, पिच्चासी खरब और अस्सी अरब के लगभग गणना करते ही मैं मौन हो गया मानो देखो, मैं पूज्यपाद गुरुदेव के द्वार आ गया। प्रभु! मैं इस आभा को त्यागना नहीं चाहता हूँ। मानो जिस ब्रह्माण्ड में मानो आपने मुझे पहुँचाया है, मैं यह चाहता हूँ जहाँ लघु मस्तिष्क, स्वाति मस्तिष्क मानो देखो, रेण मस्तिष्क उसकी भी मानो धारा में एक ही सूत्र में पिरोएं जाते हैं। मैं उस ही सूत्र को जानना चाहता हूँ। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि जिस आभा को तुम जानना चाहते हो, आत्मा ब्रह्मे वाचा यह आत्मा, वह प्राण ब्रह्मे वाचा मानो देखो, जो प्राण ही उसके आश्रित रहता है जो चित्त के आश्रित प्राण रहता है, यह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ ब्रह्माण्ड है मानो देखो, यह जो शब्द है इसका नाम ही चेतना है, एक चेतना तुम्हारे शरीर में चेतनित हो करके, तुम्हारे शरीर को सुगठित कर रही है। एक परमाणु को मिलाती जा रही है मानो तुम उसको जान करके अपने में परन्तु देखो, इसको तुम नहीं मानते कागभुषुण्ड जी यह कह करके मौन हो गये।

परमात्मा का वसुन्धरा रूप

तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से भ्रमण करते हुए ऋषियों की शङ्काओं का निवारण हो गया। यह अपने में अन्वेषण करते हुए मुनिवरों! देखो, विचार विनिमय करते, वह महर्षि विश्वश्रवा उद्दालक ऋषि महाराज ने बेटा! देखो, उसके पश्चात याग का अपना कर्म बन गया, यह याग की चर्चाएँ जो उन्होंने याग किया, मैं उसकी चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। मुनिवरों! देखो, सब ऋषि मुनि अपने अपने मन्तव्य प्रगट करते रहते थे। देवताओं देवतव की चर्चाओं में रत्त रहने वाला, बेटा! ये चर्चाएँ, मैं कल प्रगट करूँगा। आज का वाक यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा

क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, यह जो परमपिता परमात्मा है, यह जो माता वसुन्धरा है जिसके गर्भस्थल में बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड ओत प्रोत हो रहा है। मानो देखो, इसमें हे स्वाति! मानो तू हमारा कल्याण करने वाला है। कहीं बुद्धि के रूप में, कहीं ध्वनि के रूप में, मानो कहीं चेतना के रूप में, इस संसार को अपने में धारण कर रही है।

आओ, मेरे प्यारे! अब मुनिवरों! देखो, यह ब्रह्माण्ड मैंने तुम्हें अब तक वर्णन कराया, यह सब परमपिता परमात्मा की आभा में माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो गतिशील है। मानो उसी में रत्त है, उसी में प्रतिभाषित हो रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, कि याग क्या है, पगडण्डी क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, याग कर्म करने के पश्चात देखो, अपने को एक एक कण कण में, प्रभु को दृष्टिपात करना और उसमें याग होता हुआ दृष्टिपात करना अपने को देखो, निःस्वार्थ बना करके मानो देखो, अपने में रत्त रह करके प्रभु की आभा में, यह प्रभु का ही सब कुछ स्वीकार करके याग करता है।

तो बेटा! यह याग मोक्ष पगडण्डी कहलाता है। तो मानो देखो, मोक्ष की पगडण्डी है, क्रियाकलाप याग है। याग करके अपने में रत्त हो रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा, इसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी। २६/९/८४ ग्रा. कैथवार्ज जिला मेरठ

17 १३ १० १९८४ भौतिक, आध्यात्मिक विज्ञान

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ, मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस

पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर, तुम अध्ययन करना प्रारम्भ करोगे, उसी वेदमन्त्र में तुम्हें अनन्तता का दिग्दर्शन होगा। मानो उस ब्रह्म का दर्शन होता चला जाता है। हमारे यहाँ नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान मानो यह पूर्णता में रमण करने वाले हैं। वह उनका आयतन माना गया है। परन्तु मानव सदैव ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ता रहता है। उस उड़ान उड़ने वालों में, नाना ऋषि हुए हैं, जिन्होंने बेटा! अपना अपना मन्तव्य दे करके चले गये, परन्तु अन्तिम चरण में वह मौन हो जाते हैं। दो प्रकार का विज्ञान, हमारे यहाँ, प्रायः हमें भासता रहता है, जब भी किसी स्थली पर विद्यमान होते हैं, और विचार विनिमय प्रारम्भ होता है।

विज्ञान के दो प्रकार

तो दो प्रकार के विज्ञान का भास होता है। एक हमारे यहाँ भौतिक विज्ञान है और एक आध्यात्मिक विज्ञान है। परन्तु दोनों प्रकार के विज्ञान को हम वैदिक साहित्य में ले जाते हैं, तो वैदिक साहित्य के चिन्तन करने से, यह प्रतीत हुआ, कि दोनों प्रकार के विज्ञान, एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानो एक दूसरे में वह समावेश होते रहते हैं, जिस भी काल में, ऋषि मुनियों ने मानो मनन करने वालों ने, यह मनन किया कि यह भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान क्या है? तो बेटा! समय समय पर अपना अपना दृष्टिकोण, ऋषि मुनियों ने अपनाया। जब हम भारद्वाज के काल में प्रवेश करते हैं तो उनके मनन करने का और विज्ञान में रत्त होने के लिए, वह सदैव तत्पर रहते थे, परन्तु मनन करने का माध्यम बड़ा विचित्र रहा है। एक वेदमन्त्र में आख्यिका आई, उसके ऊपर मनन

करना प्रारम्भ किया, और उसकी क्रियात्मक मानो भूमिका बनाना प्रारम्भ करते रहते थे। मेरे प्यारे! जहाँ वह भूमिका बनाई अब यन्त्रों में वह परिवर्तित होता रहता है, धातु पिपाद को ले करके पञ्चीकरण को, एक दूसरे में समावेश करते हुए, उन्होंने बेटा! यन्त्रवाद में मानो अपनी उन्नति और अपनी उड़ाने उड़ी हैं। मैंने तुम्हें कई काल में यह प्रगट करते हुए कहा है, कि मानव पृथ्वी से उड़ान उड़ करके नाना लोंको में एक ही यन्त्र से उड़ान उड़ता रहा।

परन्तु वह जो आध्यात्मिक विज्ञान है, मुझे स्मरण है एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! अमृतो भा सम्भवति एक विचारवेत्ताओं की सभा हुई। उसमें कागभुषुण्ड और लोमश मुनि ने यह विचारा, लोमश ने कहा कि भगवन! आज तो हम कजली वनों में भ्रमण करना चाहते हैं। और भारद्वाज मुनि के यहाँ कुछ ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं मानो उस अध्ययन के ऊपर, हम भी कुछ अपना विचार विनिमय करना चाहते हैं। महर्षि कागभुषुण्ड और महर्षि लोमश दोनों ने वहाँ से गमन किया। भ्रमण करते बेटा! कजली वनों में, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे। भारद्वाज मुनि ने बेटा! अपने आसन को त्याग करके और ब्रह्मवेत्ताओं को नतमस्तिष्क हो करके उन्हें उचित्त आसन प्रदान किया। मानो उनका अतिथि करने के पश्चात, कहा कहो, भगवन! यह मेरा बड़ा अहोभाग्य है कि ब्रह्मवेत्ताओं का मुझे दर्शन हो रहा है। मेरे प्यारे! कागभुषुण्ड जी ने कहा ऋषिवर! हम कुछ विचार विनिमय करने के लिए आए। उन्होंने कहा प्रभु! विचार विनिमय तो होना चाहिए। भारद्वाज मुनि ने कहा कि विचार तो हमारा एक अङ्ग बन गया है, और विचार विनिमय करके अपने में महान बनना हमारी एक उत्कृष्ट इच्छा बनी रहती है।

मौलिक सम्पदा विज्ञान

तो आओ, भगवन! कुछ विचार विनिमय करें, तो मुनिवरों! देखो, उस समय कागभुषुण्ड जी ने यह कहा प्रभु!

हमने यह श्रवण किया है, कि आपके यहाँ विज्ञान का कोश और मानो देखो, उसकी उड़ान बड़ी विचित्र मानी जाती है। भौतिक विज्ञान में आपकी जो गति है, वह सराहनीय है, क्योंकि दर्शनों में हम जिसको अध्ययन करते रहे हैं, वेद मन्त्रों में जिसकी विचारधारा हमारे मस्तिष्कों में प्रायः आती रही है, परन्तु उन विचारधाराओं में हम रत्त हो करके और यह चिन्तन भी करते रहते हैं कि भौतिक विज्ञान, एक मानव की मौलिक सम्पदा कहलाई जाती है। तो यह विज्ञान आपकी और हमारी सबकी सम्पदा है। क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में हम सब प्राणी रमण कर रहे हैं। उनका पञ्चीकरण हो रहा है, परन्तु उनके मस्तिष्कों में जो एक उज्ज्वलता आ रही है, महानता आ रही है। ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मवर्चोसि का पालन करते हुए, ब्रह्मचरिष्यामि बन रहे हैं। यह सब हमारा मानो देखो, एक मौलिक क्रियाकलाप कहलाता है। तो क्या भगवन! हम यह जानना चाहते हैं भारद्वाज! क्योंकि आपके यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता, और शबरी और ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन प्रायः करते रहते हैं। ऊँची ऊँची उड़ान, नाना प्रकार की चित्रावलियों का दर्शन भी होता रहा है और उस दर्शन में हम यह भी अपने में अनुभव करते है कि जो मानव, अपनी स्थली से उड़ान उड़ता हुआ, वह लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ता है, वह अग्नि का अपना शरीर, अग्नि को अपनी प्रतिभा बना करके ही मानो देखो, उड़ान उड़ता रहता है।

परमाणु कृतिका यत्र

ऋषिवर भारद्वाज मुनि से उन्होंने कहा कि एक समय हम भ्रमण करते हुए वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर गएं थे। तो वैशम्पायन ऋषि महाराज और हम भ्रमण करते हुए मानो उद्दालक गोत्रीय ऋषियों के द्वार पर पहुँचे। जो उद्दालक गोत्र के ऋषिवर, अपनी एक यज्ञशाला में कुछ निर्माण, कुछ यन्त्रों की धारा में रत्त हो रहे थे। तो वह मानो अपने पूर्वजों के क्रियाकलापों को, अपने यन्त्रों में दृष्टिपात कर रहे थे। तो मानो

भगवन! यह विज्ञान की एक उड़ान है, आपके यहाँ भी प्रायः ऐसे ही यन्त्र है, परन्तु देखो, जहाँ अणु और परमाणुओं का और उनका विभाजन किया जाता है, वह भी बड़ा विचित्र है। तो मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने ब्रह्मचारी सुकेता से कहा हे ब्रह्मचारी! सुकेता। जाओ, परमाणु कृतिका यन्त्र को लाया जाए। तो वह मानो देखो, परमाणु कृतिका यन्त्र को लाए, और उन्होंने एक परमाणु को लिया और परमाणु का जब यन्त्र में विभाजन हुआ, तो जितना यह ब्रह्माण्ड है, उस ब्रह्माण्ड का सर्वत्र मानो चित्र चित्त में से मानो देखो, उस परमाणु में उन्हें दृष्टिपात होने लगा। तो मेरे प्यारे! विज्ञान अपने में बड़ा विचित्र मानवीय मस्तिष्कों में खिलवाड़ करता रहा है, और नृतिका में नृत्त करता रहा है। मेरे पुत्रों! महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि प्रभु! यह कोई आश्चर्य नहीं है। क्या अपने पूर्वज अन्तरिक्ष में जो शब्द के समय में, चित्र रमण कर रहे हैं मानो देखो, वह चित्र आ सकते हैं हमारे यहाँ तो इस प्रकार का यन्त्र है, जिस यन्त्र में एक परमाणु से ही, एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का दर्शन करते रहते हैं।

भौतिक विज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, उस समय भारद्वाज मुनि के इन वाक्यों ने, वैज्ञानिक तथ्यों को दृष्टिपात करते हुए, कागभुषुण्ड जी दोनों आश्चर्यचकित हो गये। मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा प्रभु! हम आप से कुछ प्रश्न करना और चाहते हैं। उन्होंने कहा क्या चाहते हैं भगवन! उन्होंने कहा कि हम आध्यात्मिक विज्ञान को ओर जानना चाहते हैं। यह, तो आपका भौतिक विज्ञान है। पूर्वजों का दर्शन होना, एक परमाणु में विभाजन करने से ब्रह्माण्ड का चित्र दृष्टिपात होना और जैसे सब भौतिक विज्ञान कहलाता है। मानो देखो, एक एक रक्त के बिन्दु में, चित्रावलियों में, मानव का दिग्दर्शन होना, यह भी एक मानो देखो, भौतिकतव में रत्त रहता है। हम यह जानना चाहते हैं भगवन! आध्यात्मिकवाद और

भौतिक विज्ञान में, कौन सा अन्तर्द्वन्द्व है मानो देखो, आध्यात्मिकवाद किसे कहते हैं और भौतिक विज्ञान किसे कहते हैं?

पञ्चीकरण

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने, अपनी अपनी उड़ान, जैसी उनकी उड़ान थी वैसी उड़ान उन्होंने उड़ना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा प्रभु! आप क्या जानना चाहते हैं? तो महर्षि लोमश मुनि ने यह कहा भारद्वाज! मुनि से, क्या प्रभु! यह जो पञ्चीकरण कहलाता है, क्या यह एक दूसरे को नष्ट भी कर सकता है? तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने यह कहा कि यह मानो जैसे अग्नि है, जल है, पृथ्वी है, और वायु और अन्तरिक्ष परन्तु एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं, परन्तु एक दूसरे के जो गुण हैं, उन्हें वह नष्ट नहीं कर सकते। किसी भी काल में जल जहाँ ओत प्रोत हो गया है, जल अपनी सूक्ष्म मानो वह अदिति की धारा को धारण कर लेता है, जिस काल में भी जल ने अपने मानो देखो, अपने रंग और रूपों को धारण कर लिया है तो वह अग्नि स्वरूप बन जाता है। परन्तु देखो, अग्नि अपने में जल में भी अग्नि बन करके मेरे पुत्रों! वह अग्नि स्वरूप बनी रहती है। परन्तु अस्तित्व समाप्त नहीं कर सकते, किसी का, यह जो पांचों तत्त्व हैं ये एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक दूसरे में भासते रहते हैं एक दूसरे से प्रतिभाषित होते रहते हैं। परन्तु अपने में वह अपनेपन में मानो निहित रहते हैं।

तो मेरे प्यारे! लोमश मुनि ने इन वाक्यों को स्वीकार कर लिया, परन्तु कागभुषुण्ड जी ने प्रश्न किया कि महाराज! यह आध्यात्मिकवाद क्या है? उन्होंने कहा जहाँ यह पञ्चीकरण रहता है, और पञ्चीकरण में भी आत्मा का दर्शन करने लगता है, तो मानो देखो, वहाँ से आध्यात्मिकवाद की प्रारम्भता होती है जैसे मानो पञ्च महाभूत हैं और पञ्च महाभूत अपने अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं कर सकते, अपने गुणों को गुणाधानम

मानो देखो, वह अपने गुणों को अपने में धारण करते रहते हैं परन्तु देखो, जब हम यह विचारते हैं कि आध्यात्मिवाद का इससे क्या समन्वय रहता है, तो विचार आता है, वेद के मन्त्र आते हैं, परन्तु हमारा चिन्तन करने का माध्यम हमारे समीप आने लगता है, क्या इनमें भी हम चेतना को भासने लगते हैं। जब मानो देखो, इन पञ्चीकरण में जो चेतना, क्रियाकलाप हो रहा है हमारे मानव शरीर में, मानो एक आत्मा पञ्चीकरण को धारण करके, इस शरीर का अस्तित्व बनाए रहती है, परन्तु जब चेतना का और मानो पञ्चीकरण दोनां का विच्छेद हो जाता है, तो मानो देखो, आत्मा मानो भिन्न बन जाता है चेतना के रूप में, और यह पञ्चीकरण अपने रूपों में रत्त हो करके अपने रूपों को प्राप्त होता रहता है।

तो मानो देखो, वह हम विचारते हैं कि इन पञ्चीकरण में इस भौतिकता में मानो एक चेतना क्रियाकलाप कर रही है, जिस चेतना का नामीकरण हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा! आध्यात्मिक अथवा आत्मा से सम्बन्धित किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवादी जो प्राणी है वह इस विज्ञान में नहीं जाना चाहते हैं, वह इस विज्ञान से मानो उपराम बन जाते हैं, और उपराम कैसे बनते हैं, यह बड़ा विचित्र एक गहन गम्भीर एक रहस्यतम कहलाया जाता है। मानो देखो, जब तक हमारा जो चित्त मण्डल बना हुआ है, हमारे मानो शरीर में, मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार कहलाते हैं। चतुष का, मानव का मानो अन्तःकरण कहलाता है। यह अन्तःकरण मानो देखो, अपने में जब भास।

महर्षि स्वाति भारद्वाज

मुझे तो कुछ ऐसा स्मरण है। भारद्वाज मुनि ने यह कहा कि एक समय मेरे जो महापिता थे। मेरे पिता का नाम रेंगणी भारद्वाज था मानो मेरे महापिता का नाम शोधनी भारद्वाज था, मेरे मानो चतुष भारद्वाज का नामोकरण स्वाति था, तो मेरे जो महापिता मानो स्वाति थे, एक समय उन्हें जिज्ञासा जागी, क्या

मैं सोम रस को पान करना चाहता हूँ? मैं सोम को अपने में धारण करना चाहता हूँ, जिस सोम से मेरा विच्छेद हो गया है, तो मानो उन्होंने विचारा की मैं मानो देखो, अहिंसा परमो धर्मी बनूँ तो, अहिंसा परमोधर्म में वह जब अपने में धारा को अपनाने लगे, तो मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ पर चले गएं क्या, वह जब प्रत्येक वस्तु में जब अहिंसा का भान करने लगे, भान करते करते वहाँ चले गएं तो वायु में जो पोषक तत्त्व थे, वह प्राण के द्वारा मानो अपने उदर की पूर्ति का साधन बनाने लगे, तो मुझे ऐसा, मेरे पिता ने वर्णन कराया क्या स्वाति, जो मेरे महापिता थे, वह पिच्चासी वर्षों तक एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, ब्रह्म में आभासित हो करके, मौन रह करके मानो उन्होंने यह सिद्ध किया कि अहिंसा परमोधर्म क्या है? मानो देखो, अहिंसा परमोधर्म क्या है और देखो, यह भी निश्चय किया कि चतुष अन्तःकरण में जो संस्कारों का प्रादुर्भाव हो रहा है मुझे भी मानो देखो, वह कहीं समाप्त करना है। वह जब मानो अहिंसा परमोधर्म से मानो साधन और उसकी प्रतिक्रिया को बनाते बनाते बेटा! वायु से अपने पोषक तत्त्वों को लेने लगे, परन्तु अपने में रत्त हो करके, परिणाम यह हुआ कि मुनिवरों! पिच्चासी वर्षों से, तप करने से, एक सौ पांच वर्ष का तप किया और एक सौ पांच वर्ष का इस प्रकार तप करके मानो देखो, उन्हें वह चतुष अन्तःकरण बना हुआ, उसकी प्रतिक्रियाएँ, उन्हें साक्षात्कार हो गईं। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ यह जितने भी अदद्भुत कहलाए जाते हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार यह जो चतुष हैं यह भी तिताञ्जलीय बन जाता है वह तिताञ्जलीय जब बन जाता है तो मानो देखो, एक रस रह जाता है। उस एक रस में, न तो बुद्धि रहती है न मनस्तव रहता और न मेरे पुत्रों! अहङ्कार और न देखो, उसमें शुद्धता रहती है मानो देखो, एक रस रह करके चेतना, चेतना का समावेश हो जाता है। चेतना, चेतना में जब रत्त हो जाता है तो मानो देखो, वह जानाति सम्भवा परिवाचक कृति लोकाः

मानो देखो, ऐसी वेद की आख्यिका कहती है कि वह केवल एक मानो ज्ञान, प्रयत्न मानो दोनों, यह मानो एक प्राणस्तव, प्रकृतितव दोनों की प्रतिक्रिया, उस आत्मा के साथ में मानो देखो, उस चेतना में रत्त हो करके, वह उसमें निहित रहती है। मानो देखो, जब वह उसमें निहित हो जाती है, तो मेरे प्यारे! देखो, अपने आनन्द को वह प्राप्त करता रहता है, एक रस बना हुआ, एक रसता का आनन्द अपने में अनुभव करके जितनी हमारी यह चित्रावलियाँ हैं, अथवा जितना भी अणु में, परमाणु में, हम ब्रह्माण्ड का दर्शन करते हैं, तो मानो देखो, ब्रह्म को अपने में, उस ब्रह्माण्ड को अपना आयतन स्वीकार करते हैं वह उनको अनुभव ही नहीं होता, वह तो उनका आयतन बन गया है। जहाँ आयतन का मानो प्रसंग आता है, वहाँ वहाँ को यह कहे कि मैं इसमें रत्त हो गया हूँ। मानो जहाँ तक इसकी परिक्रमा का सम्बन्ध है, जब मानो जो ब्रह्माण्ड, एक रस रहने वाला, कण कण में विद्यमान है, वह उसका अनुभव कर रहा है। वहाँ परिक्रमा का भी मानो वह स्रोत हो जाता है।

सूक्ष्मतम तन्तु मन

तो मेरे प्यारे! देखो, जहाँ तक परिक्रमा का सम्बन्ध है, वह मानव के ब्रह्मरन्ध्र तक रहता है वह प्राण और मन की जहाँ तक साधना होती है, वहाँ तक मुनिवरों! देखो, परिक्रमा का सम्बन्ध होता है। मुझे ऐसा स्मरण आया है, बहुत पुरातन काल हुआ पुत्रों! कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि का दोनों के संवाद में भी यह आता रहा है और भारद्वाज की विज्ञानशाला में क्रियात्मक भी दृष्टिगपात किया गया है। मानो देखो, यह प्राण और मन की क्योंकि मन जो है यह सूक्ष्म इस प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु माना गया है। परन्तु यह जो प्राणस्तव है यह ब्रह्माण्ड का अथवा ब्रह्म का, ब्रह्माण्ड का भी नहीं मानो देखो, यह ब्रह्म का मानो देखो, प्रतिनिधितव करने वाला है, जब मानो दोनों की प्रतिभा, एक दूसरे में रत्त हो जाती है तो मानो जब यह परिक्रमा में रत्त हो करके मानो एक

रस नहीं हुए है दोनों का विभाजन हो गया है, मन मानो प्राण के ऊपर अश्वत हो करके, जब यह भ्रमण करता है तो यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है मैंने ब्रह्माण्ड की चर्चा करते हुए, कल तुम्हें बहुत सा वर्णन कराया था, परन्तु नाना निहारिकाएं आकाश गंगाएँ मानो सौर मण्डलों की चर्चाएँ करते हुए, उसमें देखो, प्रकाश अपने में रत्त ब्रीहि है मानो देखो, जब प्राण और मन दोनों, इस ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करते हैं तो बेटा! ऐसा मुझे ऋषि मुनियों से प्रतीत हुआ है। पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, ऐसा कुछ भान हुआ है, क्या मानो देखो, एक अरब पिच्चानवे करोड़, नवासी लाख और दस हजार पांच सौ बावन मुनिवरों! वह एक क्षण समय में परिक्रमित हो जाता है।

तो ऐसा मानो, देखो, यह ऋषि मुनियों से प्राप्त हुआ। परन्तु देखो, जब ऋषि इस प्रकार के अन्वेषण में लग गये, अन्वेषण करने लगे तो बेटा! उन्होंने ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया और ब्रह्माण्ड को मानो अपने में ही, इस अन्तःकरण में, मेरे पुत्रों! देखो, मापने लगता है। जहाँ तक अन्तःकरण की प्रतिभाषिता कहलाती है, जहाँ तक अन्तःकरण की सीमा कहलाती है, वहीं मेरे पुत्रों! देखो, यह चतुष अन्तःकरण बन करके, इस प्रकृति को मापता रहता है। जहाँ मुनिवरों! देखो, मन का, बुद्धि का और चित्त और अहङ्कार का अस्तित्व, जहाँ समाप्त हो जाता है वहाँ वह परमानन्द को प्राप्त हो करके, बेटा! यह ब्रह्माण्ड उसका आयतन बन जाता है। वहाँ न परिक्रमा का सम्बन्ध होता है। वहाँ तो केवल एक कैवल्य में मानो चेतना में चेतना का भान होता रहता है, वह उसका आयतन स्वीकार करके अपने में महानता का दिग्दर्शन करता रहता है।

तो बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ, विचार तो कुछ ओर ही चल रहा था, परन्तु देखो, मैं कागभुषुण्ड और लोमश मुनि इत्यादियों की चर्चा में, हम जा

रहे थे। विचार यह हो रहा था कि आध्यात्मिकवाद और भौतिकविज्ञान क्या है?

आध्यात्मिकवाद

मेरे पुत्रों! देखो, भौतिक विज्ञान जहाँ तक मन, बुद्धि अपनी सीमा को बद्ध कर देती है, वहाँ तक भौतिकवाद कहलाता है। और जहाँ मुनिवरों! देखो, बुद्धि, मन लुप्त हो करके, चित्त अहङ्कार के मण्डल में प्रवेश हो करके एक ही सूत्रीय क्रियाकलाप बन करके, प्राण में रत्त हो जाते हैं, परिक्रमा का समन्वय हो जाता है। और जहाँ ये दोनों आत्मा से मिलान करके कैवल्य आत्मा बन करके प्रकृतिवाद समाप्त हो गया, चैतन्यवाद की प्रतिभा में वह भ्रमित हो जाता है। उसे बेटा! आध्यात्मिकवाद कहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, दोनों आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों अपने में एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं, जहाँ से भौतिक विज्ञान मानो देखो, समापन हो जाता है, वहाँ आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! हमारे ऋषि मुनियों की बड़ी एक विचित्र देन रही है क्योंकि ऋषि मुनियों ने इस विज्ञान को जिस भी काल में उन्होंने निहारा तो अपने अन्तःकरण, आन्तरिक जगत से इसको निहारने का प्रयास किया, जिस काल में भी ऋषि मुनि, इस विज्ञान को मानो देखो, अपने अन्तर्हृदय से अन्तर्हृदय में झाँक करके मानो देखो, इसमें झरोखों में दृष्टि, अन्तःकरण में दृष्टिपात करेंगे, उसको बाह्य जगत में लाना प्रारम्भ करेंगे, वह विज्ञान मुनिवरों! देखो, संसार का सार्थिक विज्ञान बन करके रहता है और जिस भी काल में, धाराओं का निराकरण करता करता मुनिवरों! देखो, अन्त में दूसरा जन्म ले लेता है। उसमें पुनः लग जाता है मानो तृतीय जन्म ले लेता है, उसमें पुनः लग जाता है। मेरे प्यारे! वह भौतिक विज्ञान को तय नहीं कर पाता, वह उसकी सीमा को नहीं पाता, परन्तु देखो, आध्यात्मिक जो विज्ञान या आन्तरिक जगत से विज्ञान को जानते हैं, पञ्चीकरण में मानो सर्वत्र संसार का विज्ञान निहित

रहता है।

श्रोत्रों का विज्ञान

एक मानव में बेटा! अपने श्रोत्रों के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ किया, अन्वेषण करता करता, बहुत दूरी चला गया, अन्वेषण करता करता मेरे प्यारे! दिशाओं में रमण करने लगा, दिशाओं में चला गया और वह आन्तरिक मानो उन्होंने श्रोत्रों से, दिशाओं को जाना, उन दिशाओं में कितने अवान्तर भेदन है, कितने परमाणु हैं, कितने लोकों की रचना हो रही है, कितनी धाराएँ, कितनी दूरी पर रमण कर रही हैं। रजोगुणी धारा कितनी दूरी पर जा करके, वह अपने में रत्त रहती है? सतोगुणी कहाँ रहती है? तमोगुणी कहाँ रहती है, तो यह सब भाव उसे मानो देखो, श्रोत्रों की इन्द्रियों के विज्ञान को जानने से प्राप्त हो जाता है।

वाणी पर अनुशासन

मानो देखो, इसी प्रकार, वाणी है इस वाणी से स्वर उच्चारण करता करता वह बहुत दूरी चला जाता है, मानो वाणी को विचारता है, मेरी कटु वाणी से क्या लाभ हुआ है, मानो उससे लाभहानि में चला जाता है, उससे भी उसे त्याग करके उपराम होता है मैं सत्य उच्चारण करता हूँ तो उसमें क्या लाभ है मानो उसमें भी और ऊर्ध्वा में जाता है। जब सत्य में रमण करता हुआ, वाणी से विचारता है। क्या मेरा एक शरीर है, इस शरीर के अङ्ग संग मानो नाना प्राणी मुझे पान करना चाहते हैं। जितने विषैले प्राणी हैं, सब तुझे पान करना चाहते हैं। मानो देखो, सर्पराज हैं, सिंहराज है, विषेतकर राज हैं नाना प्रकार के जो प्राणी विषैले हैं वह तुझे पान करना चाहते हैं। ऐसा कौन सा मैं क्रियाकलाप कर सकता हूँ जिससे मैं उपराम हो जाऊँ। तो मानो वह उस समय वाणी के ऊपर अनुशासन करता हुआ, और वाणी से पांचों इन्द्रियों पर अनुशासन हो जाता है, वह मानव सब को जब मित्र की दृष्टि से दृष्टिपात

करता है तो मानो उसके चरणों में ओत प्रोत हो जाते हैं।

वेद ज्ञान से अहिंसा

मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है, जब हम अपने पूज्यपाद गुरुदेव के यहाँ विद्यालयों में अध्ययन करते रहते थे, मानो देखो, एक समय हम पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा पहुँचे, तो वह सामगान गा रहे थे, जब कोई प्राणी नहीं था मध्यरात्रि का काल था, तो वह जब गान गाया जा रहा था तो सिंहराज उनके चरणों की वन्दना कर रहा है, सर्पराज उनके चरणों की वन्दना कर रहा है, नाना विषैले प्राणी उनके अङ्ग संग विद्यमान हैं। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा प्रभु! इसमें क्या मूल है, क्या तात्पर्य है, इसको हम नहीं जान पाए, उन्होंने कहा हे पुत्र! जब मानव अपनी वाणी को, अपने उदगारों को इतना महान बना लेता है, क्या उन उद्गारों का सम्बन्ध प्रभु से हो जाए, तो यह भी प्राणी उनमें एकोकी आत्मा देखो, वह आत्मा है, जो ज्ञान की पिपासी है, और वह सत्य ज्ञान से जब वेद के मन्त्रों में, प्रभु के ज्ञान से मानो वाणी का समन्वय होता है तो मानो देखो, वह इस वाणी के इच्छुक बने हुए है और कौन अभागा ऐसा प्राणी है, जो अपने माता पिता की प्रशंसा नहीं चाहता। मेरे प्यारे! यह अपने पिता की, जब प्रभु की प्रशंसा होती है, प्रकृति की प्रशंसा होती है, तो मानो देखो, जब वाणी उद्गार बन जाती है, उद्गम बन करके, विवेकी बन करके, अहिंसा परमोधर्मी बन करके जब मानो देखो, वह परमाणु परमाणित होते हैं, ओत प्रोत होते हैं तो मानो देखो, हिंसक प्राणी भी अपनी हिंसा को त्याग देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब मानो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वाक प्रगट कराया, तो मेरा अन्तर्हृदय गद् गद् हो गया।

तो विचारा कि ऋषि मुनि बेटा! यहाँ से अपने विज्ञान को प्रारम्भ करते रहते हैं। तो इस विज्ञान में हिंसा नहीं होती मानो देखो, यन्त्रों का निर्माण करके, यन्त्रों में भ्रमण करते रहते मानो देखो, एक इन्द्रिय है वह मुनिवरों! देखो, वह जल और

पृथ्वी को देवता बना करके अनुसन्धान करते मानो देखो, एक में कोई देवता है एक में पृथ्वी देवता है, तो एक में वायु देवता है, दोनों का अन्वेषण कर रहे हैं। ऋषिवर विचार विनिमय कर रहा है, विचारता हुआ याग के समीप जा करके मानो देखो, वहाँ यन्त्रों का निर्माण करता है।

अग्नि का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! इसी प्रकार हम जब चक्षुओं के द्वार पर जाते हैं। मेरे प्यारे! माता का चक्षुओं से हम दिग्दर्शन कर रहे हैं। दिग्दर्शन करते करते मानो सूक्ष्म परमाणुओं को दृष्टिपात करने लगते हैं, यह अग्नि का अवधान कहलाया गया है। अग्नि की मानो धाराएं इसे धारित करने लगती हैं और करती करती एक समय वह आता है वैज्ञानिक अपने नेत्रों में, यन्त्रों का निर्माण करता हुआ, वह अग्न अस्त्रों का निर्माण करता है मानो अग्नेय चित्रावलियों का निर्माण करता है और निर्माण करता हुआ, एक समय बेटा! नेत्रों से अन्वेषण करता करता इतनी दूरी चला जाता है कि वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण उसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। मानो देखो, भिन्न भिन्न प्रकार की अग्नियों मानो इसके समीप आ जाती हैं। वह कौन सी अग्नि है बेटा! कोई बड़वानल नाम की अग्नि है, मुनिवरों! देखो, कोई मानो देखो, वैश्वानर नाम की अग्नि है, कोई कृतिभा नाम की अग्नि है, कोई जटा अग्नि है, नाना प्रकार की अग्नियों का चयन बेटा! उसे दृष्टिपात आने लगता है। उन परमाणुओं को वह एकत्रित कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, शरीर पर उन परमाणुओं का लेपन यदि वह कर ले तो मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि में उसका दाह भी नहीं होता। तो विचार विनिमय क्या बेटा! मैं विज्ञान के इस रहस्यतम मानो देखो, तत्त्वों में जाना नहीं चाहता था, पुत्रों! परन्तु तुम्हारी यह जो प्रेरणा है तुम्हारा जो यह विचार इनका भी कुछ शोधन करना बहुत अनिवार्य है।

विभिन्न लोकों में अग्नि

विचार विनिमय केवल हमारा क्या है कि बाह्य पुरातन

मानो ऋषि मुनियों, ने इस भौतिक विज्ञान को, आन्तरिक जगत से दृष्टिपात जब करने लगते है तो बेटा! उसमें सार्थकता होती है और जब वैज्ञानिक बेटा! अग्नि को बाह्य जगत में दृष्टिपात करता है, कहीं काष्ठों में जा रहा है, कहीं समुद्रों में प्रवेश कर रहा है इसमें कैसे अग्नि लग गई है मानो कहीं अन्तरिक्ष में, यह कैसे परमाणु एक दूसरे के मानो देखो, अमृत होते हुए, यह अग्नि प्रदीप्त हो गई है। बेटा! देखो, सूर्य में कई समय अग्नि का प्रहार हो जाता है। चन्द्रमा में भी कई काल में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है परन्तु मङ्गल में भी कई काल में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। पृथ्वी में भी अग्नि प्रदीप्त हो जाती है, तो मैं अग्नियों के सम्बन्ध में बेटा! बहुत चर्चा करना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय हमारा यह है कि हम परमपिता परमात्मा की जो महानता है, उसके ऊपर हम विचार दे रहे थे। क्या बेटा! जो मानव का शरीर है इसका निर्माण माता के गर्भ में हुआ है, देवताओं की सहायता के द्वारा परमात्मा मानो विश्वकर्मा बन करके निर्माण कर रहा है और जो मानो इस तथ्य को अच्छी प्रकार जान लेता है, वह भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों की आभा में रत्त हो करके मानो अपने में आनन्द को ग्रहण कर लेता है।

महर्षि भारद्वाज का विज्ञान

तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा विचार मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें संक्षिप्त परिचय देने चला आया हूँ, और वह परिचय क्या है, कि हम परमपिता परमात्मा के विज्ञान को, मेरे प्यारे! कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! अन्वेषण की दृष्टि से विचार विनिमय करते थे। छह माह तक बेटा! उनका विचार विनिमय होता रहा। नाना प्रकार का जो विज्ञान था, भारद्वाज के यहाँ, उसे दृष्टिपात करते रहते थे। बेटा! एक यन्त्र उनके यहाँ था, मानो एक स्थली पर विद्यमान है परन्तु वह प्रस्थान कर गया है। ढ़ाई घड़ी के पश्चात बेटा! देखो, वह मानव उस

मानव का चित्र ले लेता था, एक यन्त्र ऐसा है। क्या मानो एक रक्त का बिन्दु है, उस रक्त के बिन्दु को, यन्त्र में प्रवेश करो और मानो देखो, उसी मानव का जिसका रक्त का बिन्दु है, उसी का साक्षात्कार दर्शन हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह एक यन्त्र ऐसा भारद्वाज के यहाँ था, जिस यन्त्र में अपने मानो देखो, पचासवें महापिता तक के मानो प्रायः यन्त्रों में दर्शन होते रहते थे। उनके मानो देखो, शब्द अन्तरिक्ष में हैं और वह शब्द और क्रियाकलाप मानो देखो, यन्त्रों में साक्षात्कार आते रहते थे।

एक यन्त्र ऐसा था बेटा! मानो देखा, ब्रह्मचारी सुकेता, कवन्धी, शबरी, रावण के विद्याता कुम्भकरण मानो देखो, इनकी सहकारिता से इनके ही मानो देखो, वांगमय में उसका निर्माण हुआ तो बेटा! बहत्तर लोकों तक का एक ही यन्त्र भ्रमण करता रहता था। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का यन्त्र भारद्वाज के यहाँ याग हो रहा है, याग में मानो देखो, परीक्षण हो रहा है, क्या देखो, कोई यज्ञमानं ब्रह्मे होता जन की प्रवृत्ति अशुद्ध तो नहीं बन गई। वह प्रायः मानो देखो, इस पृथ्वी लोक तक रहती है। जिसकी वाणी में स्वाहा में आत्मीयता रहती है। सुहृदय रहता है उसके चित्र बन करके द्यौ लोक को जाते थे, यह यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहता है।

मेरे प्यारे! इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण प्रायः हमारे यहाँ होता रहा है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, परन्तु यह जितना विज्ञान मानो जाना है यह सब प्रभु के विज्ञान में, एक से एक पंक्ति भरी रहती है। मानो सूक्ष्मता है, उसका विज्ञान बड़ा नितान्त है जो मानो मानव उसको जानने के लिए तत्पर होता है तो जाना नहीं जाता है। बेटा! मानव शरीर का निर्माण किया है उसमें कहीं बुद्धि का निर्माण है, कहीं मनस्तव है, कहीं अहङ्कार है मानो कहीं चित्त की प्रतिभा का और उस चित्त का सम्बन्ध अन्तरिक्ष में समावेश कर लिया। ब्रह्म ने, वह देव कितना

महान है बेटा! मेरे शरीर में, हमारे शरीर में कहीं मानो देखो, हृदयों का निर्माण किया, एक हृदय लघु मस्तिष्क में रहता है, एक हृदय अङ्गुष्ठान स्थली पर रहता है, परन्तु दोनों हृदयों का समन्वय अपने परमात्मा के हृदय से समन्वय हो गया है। मेरे प्यारे! कैसा विचित्र मेरा प्रभु है। मुनिवरों! देखो, इसके उपरान्त जब ओर विचार विनिमय करते रहते हैं तो बेटा! अनन्तता दृष्टिपात आती रहती है। बेटा! देखो, मन का सम्बन्ध प्रकृति से, प्रकृति के सूक्ष्म तन्तुओं से प्रतिभाषित कर दिया। चित्त का मण्डल भी प्रकृति का मण्डल है, जहाँ संस्कार निहित होते हैं, मेरे पुत्रों! मानव शरीर में भी चित्त का मण्डल एक करोड़ों करोड़ों जन्म के संस्कार निहित होते हैं, और ऋषि मुनि बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं, बेटा! जन्म जन्मान्तर समाप्त हो जाते हैं, परन्तु वह उससे उपरामता को जब तक नहीं होते तब तक हम शून्य बिन्दु एक रस, जो प्रभु है, बेटा! उससे मिलान नहीं कर सकते। तो मेरे प्यारे! देखो, प्रभु कितना महान वैज्ञानिक है, माता के गर्भ में, एक बिन्दु प्रवेश हुआ है, उस बिन्दु के प्रवेश होते ही, मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा उसे अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है, वायु प्राण देने लगती है, अग्नि मानो देखो, ... शेष अनुप्लब्ध। १३/१०/८४ ग्रां. खतौला मुजफ्फरनगर

18 २४ १० १९८४

.... ऐसा वेद का आचार्य कहता है वेद का ऋषि कहता है क्या मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में मानो देखो, यज्ञमान अपने शब्द को द्यौ लोक में पंहुचा रहा है, शुद्ध और पवित्र स्वाहाः उच्चारण करके यह द्यौ लोक में जाता है मानो देखो, यदि वह चञ्चलता में आहुति देता है, मानो देखो, वह भू लोक में तो उसकी आहुति रज में चली जाती है, और देखो, यदि वह शान्त अग्नि है, और उसमें आहुति दे रहा है मानो देखो, तम कहलाती है, वह मुनिवरों! देखो, भू लोक में, भुवः और स्वः मुनिवरों! देखो, यह तीन प्रकार की आहुतियाँ की

स्थलियां हैं। वह स्थलियां हैं जिस प्रकार का मानो देखो, याग करना चाहता है, तीव्र अग्नि के द्वारा वह द्यौ लोक में, उसका शब्द जा रहा है उसका विचार अग्नि से नही हैं, मानो देखो, उसका जो आत्मिक चिन्तन है यज्ञमान का चिन्तन के साथ अग्नि की धारा में, तो उसे अग्नि का स्वभाव तो उसे अपने में विद्यमान करके, उसे स्थली पर पंहुचा देना है। अग्नि का तो यही क्रियाकलाप है, मानो देखो, यही विचार आता है।

मानो देखो, उन्होंने कहा क्या प्रभु एक समय मैं मानो भ्रमण करता हुआ, उद्दालक गोत्रीय ऋषि शिकामकेतु के यज्ञ में पंहुचा तो मानो देखो, वह प्रातःकालीन याग में विद्यमान हुए, तो मानो देखो, याग में प्रतिभा ब्रहे जब वह याग में आहुति देने लगे, तो उनकी सात्विक आहुति बन करके द्यौ लोक में पंहुची, और द्यौ लोक में वह आहुति कहती है मुनिवरों! देखो, वह द्यौ लोक में आ गई, मैं द्यौ में प्रवेश कर गई हूँ, अब मेरा क्या बनेगा? क्योंकि द्यौ में आ करके ही, तो मैं मानो देखो, देवतव को प्राप्त हो सकती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वह इस प्रकार समिधा अग्नं ब्रह्मा समिधा में देखो, अपने को भस्म करके सुगन्ध ले करके वह समष्टि में चली जाती है, इसी प्रकार यज्ञमान का जो हृदय है, वह भी समष्टि में चला जाता है, वह तीन आचमन करता है और आचमन करता हुआ कहता है, कि हे देव! हे अग्नि! मानो तू मेरी साथी बनी रही है, हे अग्नं ब्रह्मा हे आपो! तू ही तो मेरा साथी बनी हुई है, मानो अब भी मेरे आङ्गन में जल है और वह जल की धारा विराजमान करके, द्यौ लोक में प्रवेश कर जाती है। मानो देखो, इसी प्रकार मानो देखो, वह भी तो याग था, जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को पान करने वाले माता और पितर थे, उन्होंने मानो पुत्रेष्टि पुत्र याग किया, जब पुत्र याग किया, तो मानो देखो, मैं माता के गर्भ में प्रवेश कर गया था। मैं वही शिशु हूँ, मैं वही अश्व हूँ, मानो जो माता के गर्भस्थल में आपो है, मानो देखो, यह तीन आचमन, यह तीन मानो देखो, मेरा

आसन, मेरा ओढ़न मेरे पांशे बन करके मेरी रक्षा हो रही है। मैं वही तो रक्षा चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, यह उद्गीत गाने वाला, उनमें जो भाव विद्यमान हैं, उन्हें मुनिवरों! देखो, अपने में धारण करना चाहिए। उन्हें अपने में धारण करके हमें द्यौ लोक में जाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, यह बड़ा विचित्र, एक क्रियाकलाप है, उसके पश्चात वह मानो देखो, आचमन के पश्चात, अग्नि में सवितां ब्रह्मे अग्नि को मानो देखो, घृतोमयी श्रद्धा अर्पित करता है, यह घृत श्रद्धा है और अग्नि मानो देखो, श्रद्धा को स्वीकार कर रही है, वह अपने मुख में उस हवि को ले करके देवताओं को प्रदान कर रही है, वही तो हूत कहलाता है, वही तो द्यौ कहलाता है, वही मेरे प्यारे! व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करा रहा है।

मेरे प्यारे! ऋषि ने बहुत ऊँचा उद्गीत गाया, परन्तु देखो, यज्ञशाला में, जब कर्म काण्ड की पद्धतियों में आता है, मानो देखो, मुझे बहुत सा काल स्मरण आ रहा है, आज मैं उस काल में तो जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह देना चाहता हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, यागां भविते लोकाम् मानो देखो, वह उस आगमन के पश्चात वह मुनिवरों! देखो, अपने में प्रकाश में रहना चाहता है प्रकाश में जाना चाहता है, वह प्रकाश की उपासना करता है, अग्निहोत्र करता हुआ, अग्नि में मानो देखो, मन्त्र यह कहता है, क्या मैं इस रथ में विद्यमान हो गया हूँ, और यह रथ मेरा द्यौ लोक में जा रहा है, यह रथ मेरा द्यौ लोक में जाएगा, तो वही द्यौ लोक वाला रथ मानो देखो, तरंगों के रूप में, सूर्य के रूप में, सूर्य ही समुद्रों से समन्वय करता हुआ, वही मानो देखो, मेरी आत्मा को प्राप्त होगा। मेरे हृदय को, वही तो प्राप्त होगा, जो मैं क्रियाकलाप कर रहा हूँ, मेरे प्यारे! देखो, यह याग के कर्म काण्ड की प्रतिभा, वह समुद्राणि ब्रह्मा वह मानो देखो, जल का सिंचन कर रहा है, जल का सिंचन करता हुआ कहता है हे अग्नि! तू मानो पूर्व ऊर्ध्वा ब्रह्मा मानो देखो, हे अग्ने! तू ही तो मानो

देखो, समुद्र का रूप धारण करके मानो देखो, मेरा कल्याण करती है, मेरे राष्ट्र का कल्याण हो रहा है। हे अग्ने! मानो तू तो अन्नादं भूतं ब्रह्मे तू अन्न बन करके ही मेरे राष्ट्र का कल्याण कर रहा है। अन्नादं भूतम् तू ज्ञानं और विवेकी बना करके, मेरे राष्ट्र में मानो देखो, तू ज्ञान और विवेक को प्रदान कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार यज्ञमान अपने मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, यह उद्गीत गाता है और उद्गीत गा करके बेटा! जब उसमें भूमिका बन जाती है, याग की भूमिका बनी उसके पश्चात मानो देखो, किसी मन्त्र का जिसका अश्व में यागा प्रद उसका मन्त्रों में उद्गीत गाता है, देखो, अब उद्गाता उद्गीत गाता रहता है अग्नि में मानो देखो, वह तरंगे मानो अर्पित करता रहता है, वह देव पूजा कहलाती है। वह अश्वमेध याग कहलाता है। मानो देखो, प्रजा और राजा दोनों विद्यमान हो करके, इस प्रकार की जब उपासना करते हैं, तो वह अश्वमेध याग बन जाता है। अश्वमेध का अभिप्राय क्या मानो देखो, पशु, मेरे राष्ट्र मे हैं, मेरा प्राणतव ऊँचा बने, मानो मेरे राष्ट्र में पुरूषार्थी प्राणी हों, मेरे प्यारे! देखो, जब राष्ट्र में प्राणियों का पुरूषार्थ चला जाता है, वह राष्ट्र समाप्त हो जाता है। जिस राजा के राष्ट्र में, मानो देखो, अश्वमेधा समाप्त हो जाती है उस राष्ट्र का भी प्राण चला जाता है, तो मुनिवरों! देखो, यह राष्ट्रां आत्मवेत्ता मुनिवरों! देखो, कर्म काण्ड के सम्बन्ध में या मुनिवरों! देखो, उनके विज्ञान में रत्त होने की चर्चाएं, प्रगट की, बेटा! यह वार्त्ताएं तो बहुत विचित्र हैं, यह बहुत अनुसन्धान करने के पश्चात मानो देखो, यह विज्ञान, हमारे समीप आया है, इसकी शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें, आज का वाक्, अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में एक बुद्धिमान परीक्षा लेता है, यज्ञमान से कहता है और होता उद्गाता से उच्चारण करता हुआ, ब्रह्मा और पुरोहित के द्वारा जा करके, वह यह जानने के लिए, कि यह

याग अन्धकार पूर्वक तो नही हो रहा है, यह ज्ञान पूर्वक ही हो रहा है या नही मानो देखो, इस प्रकार के बुद्धिजीवी प्राणी ब्राह्मण यागी होने चाहिएं, और याग में अहिंसा परमोधर्म होना चाहिए, हिंसा याग का गुण नही कहा जा सकता, याग मोक्ष की प्रथम मानो पगडण्डी कही जाती है और जहाँ मोक्ष की पगडण्डी होगी, वहाँ देखो, हिंसा का प्रसंग नही आ सकता, वहां अहिंसा परमोधर्म आता है मानो देखो, अहिंसा ही परमोधर्म है, यह परमधर्म कहलाता है, अहिंसा की चर्चा कल प्रगट करेंगें आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

19 ०३ ०२ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे हैं ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुण गाया जाता है जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता का निर्णय दे रहा है, वह ममतव को धारण कर रही है, और बाल्य उसका वर्णन कर रहा है कि मम व्रती व्रता है इसी प्रकार प्रत्येक मानो शब्द में उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी महानता निहित रहती है। तो आओ, आज हमारा वेदमन्त्र, जहाँ परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है, वहा हमारे वैदिक मन्त्रों में शब्दों की प्रतिभा का वर्णन आ रहा था, मृत्युंजम् भवि वर्णनं ब्रह्मे वाचाः प्रत्येक मानव इस संसार का मानव ही क्या प्राणी मात्र मानो बेटा! मृत्यु से, अपने में मृत्यु नही चाहता, उसके हृदय में यह आकांक्षा लगी हुई है, क्या मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, परन्तु मानव यह किसी काल में भी चिन्तन नहीं कर रहा है, क्या यह मृत्यु हैं क्या? जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, बेटा! अन्वेषण करता चला आया है, अनुसन्धान कर रहा है, और

विचारता रहता है, कि वह मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। मेरी प्यारी माता, अपने पुत्र के वियोग में, मानो रूदन और विलाप में रत्त हो रही है। मानो किसी दार्शनिक ने यह प्रश्न किया, कि हे मातेश्वरी! तू इतनी व्याकुल क्यों हो रही है? तो माता कहती है कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है तो वह दार्शनिक कहता है क्या हे मातेश्वरी! इतनी व्याकुल क्यों हो रही है? तेरा पुत्र मृत्यु को चला गया परन्तु यह शरीर की मृत्यु होती है, या जो उसमें वह चेतना रत्त रहती है वह मृत्यु हैं। मानो देखो, माता निरूतर हो जाती है, और कहता है दार्शनिक क्या वह चेतना तेरा पुत्र है, या यह शरीर तेरा पुत्र है, तो माता इसमें निरूतर हो करके मौन हो जाती है। तो इससे यह प्रतीत होता है, क्या मृत्यु के ऊपर प्रत्येक मानव को विचार विनिमय करना चाहिए। और अपने में यह अनुसन्धान, अन्वेषण करना चाहिए, कि मृत्यु है क्या? जिसके ऊपर मानव अपने मे मानो अपने मानवतव को ही समाप्त कर देता है। तो मेरे प्यारे! आओ, आज मैं कुछ, ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि मुनि, अपने में विचार विमनय करते रहते थे, अथवा अनुसन्धान करते रहते थे, और यह विचारते रहते थे, कि मृत्यु है क्या?

मेरे प्यारे! देखो, एक समय महर्षि जमदग्नि आश्रम में, बेटा! एक सभा हुई, जिस सभा में महर्षि पिप्लाद और महर्षि सोमकेतु, महात्मा प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धी ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी, यज्ञदत्ता ब्रह्मचारी कौशिक इत्यादि मानो देखो, ऋषि मुनियों का समाज जिसमें चाक्राणी गार्गी, और देवर्षि नारद, सोमकेतु ऋषि, महाराज, वाचकैची ऋषि, तो मुनिवरों! देखो, नाना ऋषि विद्यमान थे तो मानो देखो, दण्डक आश्रम में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ, क्या यह मृत्यु क्या है? वेद का मन्त्र इस मृत्यु के सम्बन्ध में क्या कह रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर विचार विनिमय होने लगा। क्या वह मृत्यु

क्या है? तो मुनिवरों! देखो, मृत्यु के सम्बन्ध में, महर्षियों ने जब यह प्रसंग लिया तो देवर्षि नारद मुनि महाराज उपस्थित हो करके बोले क्या, यह मृत्यु क्या है? तो मुनिवरों! देखो, ऋषियों ने कहा, इस शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु हैं, परन्तु देखो, उसमे और नाना प्रकार के प्रसंग उत्पन्न होने लगे। उन्होंने कहा शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है, तो मानो शरीर और जो वस्तु शरीर में है, वह दोनो भिन्न हैं और जो वस्तु चली गई है, उसका भी अभाव नहीं हैं, और जो वस्तु रह गई है उसका भी अभाव प्रतीत नहीं होता। क्योंकि वह दृष्टिपात आ रही है। तो इससे प्रतीत हुआ, कि रूपान्तर है, तो मानो इसके ऊपर महर्षि पिप्लाद मुनि ने कहा कि मृत्यु का अभाव है, मृत्यु कोई वस्तु नहीं हैं संसार में, जैसे मानो दो वस्तुओं के मिलन से, तीसरे शब्द की उत्पति हो जाती है। इसी प्रकार यह मानो देखो, शरीर और चेतना के दोनों के विच्छेद से ही, मानो दोनों के पृथक होने से, एक तीसरे शब्द की उत्पति होती है, उसको मृत्यु कहते हैं। जैसे मानो दोनो वस्तुओं के मिलान से ही, चेतना और जड़वत के दोनों के मिलन से, तीसरे शब्द की उत्पति है। उसका नाम मानो देखो, मानवतव कहते हैं।

इसी प्रकार विचार विनिमय होता रहा परन्तु पिप्लाद मुनि ने अपने में यह निर्णय कर दिया, क्या यह मृत्यु कोई वस्तु नहीं, इसका अभाव है संसार में। केवल एक अज्ञान है, यह शब्द ही अज्ञानता से उत्पन्न होता है। तो मेरे प्यारे! पिप्लाद मुनि महाराज ने अपना निर्णय और उस सभा में यह घोषणा की, परन्तु इस घोषणा के होने के पश्चात, मेरे प्यारे! उस काल में विचार विनिमय और होने वाला था, सन्ध्या का काल हो गया, सब ऋषि मुनि अपनी सन्ध्या के कक्ष में जा पंहुचे।

परन्तु देखो, रात्रि, सांयकाल का समय था, पिप्लाद मुनि को बहुत समय हो गया था। अपने आश्रम से पृथक हुए, तो मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने, वहाँ से गमन किया, और भ्रमण करते हुए, वह अपने गृह अपने

आश्रम में पंहुचे, उनकी पत्नी का नाम शकुंतका था। वहाँ देखो, उनकी पत्नी शकुंतका व्याकुल हो रही थी तो उन्होंने कहा देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा कि महाराज! मैं इसीलिए व्याकुल हो रही हूँ, कि मेरा एक पुत्र था, मानो वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है, उन्होंने कहा देवी! यह ब्रह्म वाचप्रव्हे वाचा सम्भवा देवाः मानो देखो, जो तुम वाक उच्चारण कर रही हो, ये तो मैं में दार्शनिकों के मानो सभा में से पधार रहा हूँ, और मैंने यह निर्णय कर दिया है, कि मृत्यु कोई वस्तु नहीं हैं, और तुम अपना निर्णय दे रही हो कि मृत्यु है। तो मानो तुम्हारा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया, यह तुम्हारा कथन है, यह तुम्हारी एक मानो विचारं अस्ततु मुझे दृष्टिपात आ रहा है। तो मानो देखो, उन्होंने कहा प्रभु! मैं तो ऐसी ही मानो मेरा पुत्र मेरे द्वार था मानो न रहा आपको दृष्टिपात करके मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा देवी! तुम व्याकुल न हो उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, जब आप मृत्यु का अभाव उच्चारण कर रहे हैं, तो मानो मेरा यह शरीर क्या है? मैं इस शरीर के सम्बन्ध में जानना चाहती हूँ, उन्होंने कहा देवी! यह जो तुम्हारा शरीर है, यह शरीर मानो परमाणुओं का एक संघात है, परमाणुओं का मिलन होता है। परमाणु मानो चेतना मानो इस शरीर में विद्यमान है उस चेतना के आश्रित हो करके, परमाणुवाद आ जाता है। और उस परमाणुओं का ये समूह है, मानो यह परमाणुवाद विच्छेद जहाँ हुआ, चेतना में मानो शरीर को त्यागा, तो तुम्हारा मानो देखो, अप्रतम ये मानो देखो, दोनों वस्तु भिन्न हो गई, परमाणुवाद अपने स्वरूप में चला गया, और मानो देखो, आत्म चेतना, जो शरीर में अपना क्रियाकलाप कर रही थी, वह नही रही मानो देखो, दोनो एक दूसरें में, एक दूसरें अपने ही कारण में लय हो जाते हैं। तो उसका अभाव नहीं होता। तो मानो देखो, जब उन्होंने यह कहा तो यह नहीं तो मानो देखो, उनकी पत्नी बोली कि प्रभु! कि यह चलो मैंने

जान लिया, मानो यह परमाणुवाद है, मैं यह जानना चाहती हूँ, जब मेरा यह शरीर इस रूप में नहीं रहता यह परमाणुवाद कहाँ चला जाता है? इस परमाणुवाद की प्रतिष्ठा, यह किसमें प्रतिष्ठित हो जाती है। तो मानो देखो, जब उन्होंने यह कहा, तो देव ब्रव्हे मेरे प्यारे! पिप्लाद मुनि ने कहा देवी! यही परमाणुवाद है, जो माता मानो देखो, माता के और मानो देखो, पितर प्रव्हा वाचम् माता के शरीर में इन्हीं परमाणुओं से तुम्हारे शरीर की रचना हो रही थी। मानो देखो, मानव के शरीर में, जैसे माता के गर्भस्थल में, मानो देखो, एक बिन्दु का प्रवेश होता है, और वह बिन्दु मानो जाते ही सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं, मानो देखो, जैसे यह बिन्दु, मानो देखो, उसको हमारे आचार्यों ने, ऋषि मुनियों ने शिशु भी कहा है, वह शिशु का जैसे ही प्रवेश हुआ, तो मानो उसी समय, सब देवता अपने अपने महत्व को ले करके, उसके समीप निहित हो जाते हैं। मानो देखो, सूर्य प्रकाश देने लगता है, अग्नि उसे ऊष्ण बनाने लगती, चन्द्रमा उसे अमृत देने लगता है, मानो पृथ्वी गुरूतव देने लगती है और जल आपोमयी मानो देखो, वह निहित हो करके उसकी रक्षा करने लगते हैं। सर्वत्र देवता उसके समीप निहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, निर्माणवेत्ता, उन्हीं परमाणुओं से निर्माण में लग जाता है, निर्माण करता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, सर्वत्र देवता, उसकी रक्षा में, ऐसे तत्पर हो जाते हैं, जैसे मानो देखो, मधु मक्खियों में मानो देखो, एक विशेष होती हैं, और उस विशेष की अनन्य मक्खियां उसकी रक्षा के लिए वह तत्पर हो जाती हैं इसी प्रकार वह जो शिशु जैसे ही माता के गर्भस्थल में प्रवेश हुआ उसी काल में मेरे पुत्रों! देखो, उसमें नाना प्रकार के, देवता अपनी अपनी आभा प्रगट करने लगते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, अन्तरिक्ष अवकाश देने लगता है, वायु प्राण देने लगता है मेरे पुत्रों! देखो, वह आपम् ब्रह्म वाचा प्रव्हे आपो मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में, आपो इसका ओढ़न रहता है, आपो ही उसका

आसन बन जाता है, आपो ही उसके पांशे बन जाते हैं, मेरे पुत्रों! जैसा मेरे प्यारे! प्रभु वैज्ञानिक की एक वैज्ञानिकता है, माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा हैं, परन्तु मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं होता, कौन निर्माण कर रहा है, कौन मानो उस शिशु को आसन दे रहा है, कौन विश्राम करा है, माता के गर्भस्थल में अमृत बहाया जा रहा है, परन्तु वह अमृत अमृतं ब्रह्म वाचो प्रतिष्ठम् ब्रहे वह उसी में ओत प्रोत होता है माता नहीं जानती, क्या मेरे गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है। निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, देवता अपने अपने देवतव को प्राप्त हो रहे हैं। मेरे प्यारे! वह जो मेरा देव है, वैज्ञानिक है, वह कितना विज्ञानमय है, कितना वैज्ञानिक है, पुत्रों! मानो एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड निहित हो रहा है, और वह परमाणु मानो देखो, उसमें निहित देवतव उसे प्रदान कर रहे हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! जब ऐसा मानो भान होने लगता है, तो प्रतीति होने लगती है कि यह कैसा विचित्र विज्ञान है, मेरे पुत्रों! देखो, देवी ने कहा शकुंतका बोली कि प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, यह व्याख्या तो मेरे पितर जनों ने कई काल में अनन्य कालों में प्रगट की है, परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, जब माता का गर्भाशय नहीं होता, तो उससे पूर्व, यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि ने कहा देवी! यही परमाणुवाद मानो जग यह ब्रहे वाचं ब्रह्मा माता का गर्भाशय नही होता, तो यही परमाणुवाद मानो देखो, वीरतव और वीरांगाना के रूप में परणित रहता है। मानो इन्हीं तत्त्वों की, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली, मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है। मानो देखो, विदुषी बन जाती है, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला, मानो देवता बन जाता है इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो देखो, देवतव को प्राप्त होता है, योगेश्वर बन जाता है, प्राणस्वरूप में परणित हो जाता

है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है ऋषि मुनियों का जीवन भी स्मरण आता रहता है, मानो इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली, मेरी पुत्रियाँ होती हैं। मानो वीरांगना होती हैं, वह अपने में वीरांगनावत को प्राप्त करके बेटा! मानो विदुषी बन जाती हैं। परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में निहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, जब मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी, अपने में मानो देखो, तपस्या में निहित रहती, तो जब वे वेद का गान गाती रहती, तो वीरांगना बन करके वेदों का गान गाया जाता है विदुषी बन करके वेदों का गान गाया जाता है। और गान में जब मुनिवरों! देखो, वह एक प्रति तन्मय हो करके, गान गाया जाता है, तो मेरे प्यारे! जितने मानो भंयकर वनों में, मानो देखो, जितने हिसङ्क प्राणी होते हैं, अहिंसा में प्राणी होते हैं, वे सब मानो देखो, एक पंक्ति में विद्यमान हो जाते हैं, क्योंकि वेदों का जो ज्ञान है, मानो वो परमपिता परमात्मा की एक धरोहर है, परमात्मा का अनुपम ज्ञान है, क्या मानो देखो, वह जब गान गाता है, तो मुनिवरों! देखो, सर्पराज क्या, मृगराज क्या, मानो हिंसक प्राणी कौन? मेरे पुत्रों! यह नाना रूपों में परणित हो करके, एक गान के रूपों में मेरे पुत्रों! गान की प्रतिभा में निहित हो जाते हैं। तो परिणाम यह होता है, अपने में निहित हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, वह गान गाता रहता है, और हिंसक प्राणी चरणों में ओत प्रोत हो जाता है। चरणों की वन्दना करने लगता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, वह वीरांगना गान गा रही है, गान को श्रवण करने वाले, मानो देखो, वह हिंसक प्राणी हैं, जहाँ कोई प्राणी व्रते, मुझे स्मरण आता रहता है, जब मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनि ब्रह्मचारी जन विद्यालय से निवृत्त को करके जब वनों में जा करके गान गाते रहते थे तो मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में निहित था जैसे मुझे स्मरण है जैसे एक समय महर्षि भारद्वाज ऋषि मुनि महाराज जब मानो

देखो, विद्यालय उन्होंने त्याग दिया, तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, एक समय बेटा! भयंकर वनों में, गान गाने लगे, जब वह वेदों का गान गाने लगे स्वरों में स्वर ध्वनियां होने लगी, आत्मा की, मानो देखो, तरंगों से जो गान गाता है, मुनिवरों! देखो, उसमें आत्मवत रहने वाला है, वह मुनिवरों! देखो, उस गान को श्रवण करता है, उन तरंगों में, वह तरंगे मानो देखो, अपने शोधन के रूप में परणित हो जाती हैं, मुझे ऐसा प्रतीत होता है, सिंहराज भी, उनके चरणों को स्पर्श करता है। तो मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार यह वीरांगना का वर्णन आ रहा था जब चाक्राणी गार्गी बेटा! वीरांगना बन करके गान गाती रहती तो सर्पराज भी चरणों में ओत प्रोत होते रहते। तो मानो देखो, क्योंकि यह जो वेदों का ज्ञान है, यह परमपिता परमात्मा का ज्ञानमयी स्वरूप है, और उसको कौन ऐसा अभागा प्राणी है, जो उसको श्रवण नहीं कर सकता। मेरे प्यारे! देखो, जब मैं यह विचारता रहता हूँ, क्या वीरतव अपने परमाणुओं की रक्षा करके देवता बनता है, वे देवताओं की सभा में जाता है, देवतापने से उसका स्वागत होता है, मानो देखो, जब वे देवता, अपने प्राणों में और मुनिवरों! देखो, मनों में अपनी रक्षा करता रहता है, ब्रह्मवर्चोसि बन करके, मानो उन परमाणुओं की रक्षा करता है, जिन परमाणुओं से, मेरे प्यारे! वह वीरतव कहलाता है, ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है, ब्रह्मचारी बन जाता है। तो मेरे पुत्रों! उन परमाणुओं की रक्षा करने से ही, मानव योगेश्वर बन जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! एक समय मेरे प्यारे! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने यह कहा अपनी देवी से कि मैं एक समय भ्रमण करता हुआ मानो देखो, मैं भयंकर वनों में जा पंहुचा, भयंकर वनों में मैं महर्षि लोमश मुनि महाराज और मानो देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी दोनों अपने में तपस्या कर रहे थे तपस्या करते हुए मानो देखो, महर्षि लोमश मुनि के हृदय में मानो यह आशङ्का विचार आया कि मैं प्राण को, अपने में मानो सिंचन

करना चाहता हूँ, तो मानो देखो, उन्होंने अपने इन प्राण के मानो पांच के दस विभाग बन गएं हैं मानो शरीर में आते ही मानो देखो, जैसे प्राण है उदान, समान, व्यान, मानो देखो, ये पांच प्राण कहलाते हैं। पांच उपप्राण हैं, जैसे नाग, देवदत, धनञ्जय, कुरू और कृकल मानो देखो, ये पाचं उप प्राण कहलाते हैं। इस मानव शरीर का संचालन करने वाले ये पांच प्राण कहलाते हैं, पांचों प्राण हैं और पांच उप प्राण हैं जैसे मानव का शरीर अपने में संचालन होता रहता है। परन्तु एक समय महर्षि लोमश मुनि के हृदय में यह विचार आया, कि में मानो यह विचार आया कि मैं मानो देखो, प्राण को अपने में संचय करना चाहता हूँ, इन दस प्राणों को एक एक प्राण के रूप में अपने ब्रह्मरन्ध्र में ले जाना चाहता हूँ, तो मानो देखो, उन्होंने अपनो देखो, पदामान अप्रतम स्थिर आसन लगा करके, उन्होंने अपने में एक सङ्कल्प किया, और सङ्कल्प करके मानो देखो, नाग प्राण को देवदत में, देवदत को धनञ्जय में, धनञ्जय को कृकल में, और कृकल को कृरू में मानो देखो, एक प्राणों का समूह बना। इसके पश्चात वही प्राण मानो देखो, व्यान में और व्यान समान में और समान उदान में, उदान देखो, वहा कृतियों में और मुनिवरों! देखो, एक प्राण के रूप में, ऋषि ने अपने में एक सङ्कल्प लिया और वह सङ्कल्प मात्र से, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मरन्ध्र से वह अपनी उड़ान उड़ने लगा, जब ब्रह्मरन्ध्र से अपनी उड़ान उड़ने लगा, तो वह ब्रह्मरन्ध्र आगे मानो देखो, नाभि चक्र में, वायु का वेग मानो देखो, जिसको अपान कहते हैं, वह अपान से वेग में आया, अपान के वेग से जब आगे गमन करने लगा, तो मानो देखो, वही जा करके हृदय चक्र में, हृदय अस्वान में प्रवेश हो करके, मेरे प्यारे! वही कण्ठ चक्र में और कण्ठ चक्र से मानो स्वादिष्ठ में और स्वादिष्ठ से जब वह त्रिवेणी में पंहुचा, तो त्रिवेणी में यह इंगला, पिंगला और सुषुम्णा का एक समूह बनता है, और समूह बन करके, जब मानो देखो, प्राण और उनकी टिकटिकियां अपने में अपने में

कृतिका और कृतिका में स्वः, स्वः होने लगी, तो मेरे प्यारे! देखो, तो ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश हो गई, अब ब्रह्मरन्ध्र मेरे प्यारे! शून्य स्थलियों को कहते हैं, वह शून्य स्थलियों में बेटा! प्राण अपने में उदान के साथ, अप्रतो में रमण करता हुआ बेटा! उसमें एक तवरित हो गया, जब तवरित हो गया तो मुनिवरों! देखो, महर्षि लोमश मुनि ने, महर्षि कागभुषुण्ड से यह कहा क्या, जब मैं शून्य बिन्दु में प्रवेश हो जाएगा, मेरा प्राण, और मानो देखो, उस समय एक अवृत्तियों में प्रवेश कर जाएं, तो तुम्हें यदि मुझे जागरूक में संसार में लाना हो, तो मेरी ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी का जहाँ समन्वय होता है, जहाँ मिलान होता है, उस सुषुम्ना नाड़ी को अग्रीय भाग में उसको अपने में क्रतरित कर देना, तो मानो देखो, मेरा प्राण शून्य बिन्दु से मानो देखो, उँची स्थलियों में आना प्रारम्भ हो जाएगा। मैं उसी रूप में परणित हो जाऊँगा, जिस रूप में मेरा मानो देखो, जहाँ से मेरी गति एक दूसरे प्राण से मिलान होने में, मानो विस्तृत हो गई थी।

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी मानो देखो, श्रवण कर ही रहे थे, और जब यह लोमश मुनि का प्राण वहाँ गति किया, सङ्कल्प मात्र से तो मानो देखो, वह शून्य बिन्दु हो गया, जब शून्य बिन्दु हो गया, तो शून्य बिन्दु की, हमारे यहाँ कुछ ऐसी कल्पना की जाती है, ऐसी कल्पना ही नही, वास्तव में यथार्थ रूपों में भी कुछ ऐसा कहा गया है। क्या वह क्या वह मानो देखो, कई कई क्या वर्षों मानो देखो, लगभग मानो देखो, पचास पचास वर्षों में मानो देखो, वह अपनी समाधि शून्य बिन्दु तक प्रवेश कर जाता है। जैसे मैने चमन ऋषि के जीवन की घटनाएं, मैंने तुम्हे कई काल में प्रगट की। परन्तु आज मैं मानो देखो, तुम्हे इस क्षेत्र में तुम्हे ले जाना चाहता हूँ, आज मैं योग के क्षेत्र में भी तुम्हे ले जाना नहीं चाहता था, परन्तु देखो, जब मानो देखो, अनहाद होता है, जब बारह वर्ष महर्षि लोमश मुनि को इस गति में हो गएं तो मानो देखो,

कागभुषुण्ड जी ने मुनिवरों! देखो, उन्होंने यह विचारा कि यह तो शून्य ब्रहो वाचम् यह तो शून्य बिन्दु में चला गया। तो मानो देखो, जहाँ ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना का मिलान होता है, जिसे हम त्रिवेणी कहते हैं, मानो जो एक सुषुम्णा नाम की नाड़ी है, उसको उन्होंने मानो देखो, अपने में एक पृथ्वी तत्व और एक अग्नि तत्व हमारे मानो अङ्गुष्ठान मात्र में होती है, उन्होंने दोनो से, उस नाड़ी को मानो देखो, अकृत अपने में ग्रहण करके, उस नाड़ी को एक गति दी और नाड़ी को एक स्वातिक दिया तो मानो देखो, देने से, उनका जो प्राण था, वह ब्रह्मरन्ध्र से गति करने लगा। मानो देखो, जब ईंगला को, जब सुषुम्णा की आभा में, और ईंगला, पिंगला और तीनों नाड़ियों को जब उन्होंने कृतिका गति दी, तो मानो देखो, प्राण उसमें पुनः संचित्त हो गया, और संचित्त हो करके, मानो देखो, उसी प्रकार जैसे प्राण उदान में उदान मानो देखो, वह अपान में, और अपान, समान में और समान मानो देखो, व्यान में, और व्यान इसी प्रकार देखो, धनञ्जय में, धनञ्जय, कृकल में इसी प्रकार विचार यह कि सब प्राण इसी प्रकार इसी प्रकार शरीर में गति करने लगा। तो मानो देखो, बारह वर्ष के पश्चात, कागभुषुण्ड जी ने, मानो उसके प्राण को पुनः से अपनी अपनी स्थलियों में वह नियमित गति करने लगा। तो मानो इस प्रकार का यह जो वाचक गति है, यह हमारे इस प्राणी की प्रतिभा कही जाती है तो वह जो परमाणुओं की रक्षा होने लगी की उसकी ऊर्ध्वा गति बन गई वह मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र में अब वह क्या करता है बड़ा विचित्र उत्पन्न होता है। क्या वह ब्रह्मरन्ध्र में प्राण अपान सब चला गया आत्म तत्व चला गया, तो वहाँ करता क्या है? तो मानो वहाँ परमपिता परमात्मा के, जो आनन्दमयी जो जगत है, उसको वह अपने में आनन्दमयी प्राप्त होता रहता है वह आनन्द को अपने में आनन्दित करता रहता है, तो इसी प्रकार मानो देखो, उसके अब्रहा मानो वाचक यह जो ब्रह्माण्ड है, निहारिका है, निहारिका में भी नाना प्रकार

का जो लोक लोकान्तर हैं, वह मानो देखो, उसके अन्तर्गत आ करके, मानो देखो, उसे वह निहारता रहता है, क्योंकि इसीलिए क्योंकि यह जो प्राण है, प्राण और मन और देखो, अन्तरों से इतना ब्रह्मे मानो देखो, इसके सम्मिलान से ही, मेरे प्यारे! देखो, प्रकृति का मण्डल बनता है, और मण्डल भी उसी प्रकार मण्डल में मण्डल का समन्वय हो जाता है।

तो मैं इस सम्बन्ध में बेटा! विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ, कि हमारे यहाँ, एक प्राण दूसरे में मानो समाहित होता रहता है, एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिभा मानो इसको आचार्यों ने बेटा! संगतिकरण के नामों से वर्णन किया है। इसका एक दूसरे में संगतिकरण होता रहता है। मानो इसी प्रकार मेरे प्यारे! वह जो महापुरूष हैं, जो इस प्रकार मेरे प्यारे! देखो, अपने में समाधिष्ट हो करके अपने में ही परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बनाता रहता है, तो पिप्लाद ने कहा देवी! मानव वह देवता होता है और वह देवता बन करके, देवताओं की सभा में, सुशोभनीय होता है ये उन्ही परमाणुओं की रक्षा करने से, एक रचना है, उन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने से, मानव समाधिष्ट हो जाता है, और इस निहारिका और ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करता रहता है। तो परिणाम ऋषि ने कहा पिप्लाद ने, हे देवी! आज मानो देखो, इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने से ही, देवता बनता है, ऋषि बनता है, और ऋषि बन करके मानो देखो, वह एक दूसरे में यातायात बना लेता है, एक दूसरे की प्रतिभा में निहित हो जाता है। तो मानो देखो, जब यह वर्णन किया, कि वीरतव, वीरतव के रूप मे यह परमाणुवाद निहित हो जाता है, तो उनकी रक्षा करने वाला, मानो ब्रह्मचारी बन जाता है। ब्रह्मवर्चोसि बन करके, वह ऋषि बन जाता है। और ऋषि बन करके देवतव बन करके योगेश्वर बन जाता है। तो हे देवी! वह देवतव को प्राप्त होता रहता है तो इसीलिए मानव को अपने देवतव के ऊपर विचार विनिमय करना

चाहिए। वह देवताओं की सभा में, बड़ा सुशोभनीय होता है। हमारे यहाँ मानो देखो, जब इस प्रकार की धाराओं में रत्त हो जाता है, तो उसी से मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का जन्म हो जाता है। मानो देखो, जब यह मानव, इस प्रकार की बुद्धि की धाराओं को उपजाने वाला है। तो मानो देखो, वह प्राणायाम करता हुआ, सङ्कल्पमयी निहित होता हुआ, तो सबसे प्रथम मानो उन परमाणुओं का निरोध करता रहता है, इसका दूसरा रूप यह है, एक रूप तो शून्य बिन्दु हैं, एक दूसरा रूप इसका व्यापकवाद है, विचारता रहता है, चिन्तन करता हुआ इन परमाणुओं के क्षेत्र में, प्रवेश होता हुआ मानो देखो, चिन्तन करता है, वह चिन्तन के क्षेत्र में चला गया मानो देखो, बुद्धि संसार को दृष्टिपात किया, उसके रूप को निहारता रहा है ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को मानो देखो, लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात कर रहा है दृष्टिपात करता हुआ वह गम्भीर मुद्रिका में मुद्रित हो करके मानो देखो, वह बुद्धि से दृष्टिपात करता है, और मेधा से, मेधा उपजने लगती है, जब मेधा उपज जाती है, तो मानो देखो, लोक लोकान्तरों के स्वरूप को दृष्टिपात करने लगता है, उसके गर्भ में जाने लगता है, सूर्य में क्या है? मानो सूर्य से कितनी धाराओं का जन्म होता है, चन्द्रमा क्या है? वह कैसे अमृत को बहाता है, मानो पृथ्वी गुरूतव है, वह कहाँ कहाँ गुरूतव, किन किन निहारिकाओं में निहित रहता है। तो इस प्रकार वह अपने में चिन्तन करता हुआ, बेटा! मेधावी क्षेत्र में प्रवेश करता है, जब इसको दृष्टिपात कर लेता है, तो मानो देखो, वह मेधा, देखो, ऋतम्भरा के क्षेत्र में प्रवेश हो करके, ऋतम्भरा क्या है? क्या इस संसार को दृष्टिपात कर लिया है। विचार दे दिए हैं विचारों को लेने के लिए तत्पर हो गया है, तो गम्भीर हो जाता है। वह मुद्रित हो जाता है और मुद्रित हो करके बेटा! बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा में मुद्रित हो करके बेटा! वहाँ मौन हो जाता है और मौन हो करके, मेरे प्यारे! पञ्चीकरण का अनुभव करके मानो

देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, वह प्रज्ञावी क्षेत्र में पंहुच जाता है। प्रज्ञावी उसे कहते हैं, जहाँ मानव सब कुछ जान करके मेरे प्यारे! वह जितना मुद्रित हो करके जान लेता है, अन्त में वह यह विचारता है अरे, इसके कण कण में तो चेतना मुझे दृष्टिपात आ रही है वही चेतना मेरे में है, वही चेतना इस ब्रह्माण्ड में गति कर रही है, उस चेतना के ऊपर, मैं स्वतः चेतनित हो जाऊं, अपनी चेतना का समन्वय और मानो देखो, चेतना का समन्वय हो करके, वह आनन्दित हो जाता है, वह मानो अपने में मुद्रित हो जाता है, उन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने से बेटा! उसके दो प्रकार के स्वरूप बन जाते हैं, वह दोनो स्वरूप ही मानो देखो, वह उस परमाणुवाद की महिमा है जिसके ऊपर मानव, विचार विनिमय करता रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब शकुंतका ने यह विचार श्रवण किए तो वह शान्त होने लगी, उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आप ने बड़ा विस्तृत मुझे मानो ज्ञान दिया है, विवेक दिया है, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है मैं अपने में प्रसन्न हो रही हूँ, हे भगवन! मैं सदैव यह चाहती रहती हूँ, यदि मेरा देवी का शरीर प्राप्त करें, परमपिता परमात्मा करे तो आप जैसे सुयोग्य मुझे पतिदेव की प्राप्ति हो, मुझे मानो ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ाने वाले मानो देखो, विचारों में रत्त होती रहूँ, मानो देखो, वह महात्मा पिप्लाद मुनि महाराज ने बेटा! अपना मन्तव्य दिया और अपना मन्तव्य दे करके वह देवी ने कहा प्रभु! ये विचार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब मैं अपने विद्यालय में अध्ययन करती थी यह विचार वह भी देते रहते थे, परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ जब यह वीरतव नहीं होता तो भगवन! यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी ने जब यह कहा क्या यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? तो बेटा! देखो, अन्न की विवेचना प्रारम्भ हुई, उन्होंने कहा यह अन्नाद में रहता है, मानो देखो, अन्न भी नाना प्रकार के हैं, एक अन्न मानो देखो, प्रभु की प्रतिभा कितनी विचित्र है,

एक ही पौधा है उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है, एक अन्न को पशु पान कर रहा है, मानो एक अन्न को मानव पान कर रहा है, एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है, एक अन्न को पशु पान करके मानो दुग्ध दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह अन्नाद है, एक ही पौधा है, वाह, रे मेरे प्रभु! तू कैसा विचित्र कितना महान वैज्ञानिक है एक ही पौधा है जिस पौधे पर दो प्रकार का अन्न है, एक को मानव पान कर रहा है, एक को पशु पान कर रहा है, मानव पान कर रहा है, ओज और तेज की उत्पति कर रहा है एक पशु पान कर रहा है, तो वह दुग्ध दे रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, वह कैसा वित्रित्र है एक ही पौधे से बेटा! यह जगत बन रहा है। मैं इसके ऊपर क्या टिप्पणी कर सकता हूँ, यह बड़ा एक अनुपम जगत है, बेटा! यह मानो एक वनस्पति विज्ञान का बड़ा, विचित्र एक क्षेत्र है मुनिवरों! देखो, निर्णय करके पिप्लाद मुनि मौन हो गएं और ये कहा कि यह चर्चाएं मैं कल प्रगट करेंगें। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा यह विचार, अब क्या कह रहा है, पिप्लाद मुनि महाराज ने बेटा! अपना विचार देते हुए, एक यौगिक आभा में मानव को रत्त करते हुए यह विचार बेटा! देखो, क्रियात्मक तो विचार देने का एक मानो समूह रहता है। परन्तु जहाँ मैं यह विचार दे रहा था, महर्षि कागभुषुण्ड जी और मानो देखो, पिप्लाद मुनि आश्रम में देखो, उनके गमन करते रहते थे, महर्षि लोमश मुनि महाराज मानो देखो, बारह वर्ष के उन्होने मुनिवरों! देखो, लगभग पिचानवें अनुष्ठान किए थे इस प्रकार के, मेरे प्यारे! जिसको हमारे ऋषि मुनि अनुष्ठान कहते हैं। अनुष्ठान उसे कहते हैं, जो सङ्कल्प बद्ध हो करके, मानव अपने में मानो रत्त हो जाता है। तो महर्षि लोमश मुनि महाराज ने, बेटा! पचानवे अनुष्ठान किए थे बारह बारह वर्ष के तो इस प्रकार के अनुष्ठान करने से मेरे पुत्रों! देखो, वायु दीर्घ हो जाती है। विचित्र बन जाती है, और देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने एक सौ बाईस

अनुष्ठान किए इस प्रकार के, तो मेरे प्यारे! इस प्रकार के बारह बारह वर्ष के अनुष्ठान मनिवरों देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने महर्षि लोमश मुनि महाराज मानो देखो, एक दूसरे की सहकारिता में, वह अनुष्ठान करते थे, तो वह प्राणों का सञ्चार करते थे, इसी प्रकार प्राणों में ईंगला, पिंगला, सुषुम्णा को अपनी गुरूतियों से मुनिवरों! वह जानते थे, शरीर की प्रत्येक रचना का भान, उसी योगी को होता है जो बेटा! प्राण की, प्रत्येक क्रिया को एक दूसरें में सङ्कल्प से मिलाने की प्रतिक्रिया में लग जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार इसी अनुष्ठान के द्वारा मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमारों ने यह अनुष्ठान किसी काल में महर्षि च्यवन ऋषि को कराए थे मेरे प्यारे! देखो, उनके बाईसों वर्ष की आयु का अनुष्ठान मानो देखो, उनका आयु बना। तो मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ, केवल विचार यह आज का विचार यह, कह रहा है क्या प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर, जब अनुसन्धान करना प्रारम्भ करोगे, तो ये विद्याएं मेरे पुत्रों! वैदिक साहित्य में तुम्हें प्राप्त हो जाएगी यह वैदिक मन्त्रों में इस प्रकार की विद्याएं निहित हैं, इसी से आयुर्वेद का निकास होता है तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या आज मैं मानो देखो, तुम्हे अनोखी चर्चाएं प्रगट कर रहा था, बेटा! एक दूसरा ऋषि एक दूसरे की सहायता में परणित होता हुआ, अनुष्ठानों का क्षेत्र बन जाता है। ब्रह्मज्ञानी जब अनुष्ठान करता है, तो वह ब्रह्म में रत्त हो करके करता है यह है बेटा! आज का वाक्, समय मिलेगा मैं आगे की शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं गा ता आभ्यां रथं मां गताः। ओ३म् सर्वं भागा वायु रथं मा नाः। ओ३म् यौ सर्वा। ओ३म् सर्वं भद्राः। दिनांक ०३ ०२ १९८५।

20 ०४ ०३ १९८५

जीते रहो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें

प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, अथवा उसके गुणों का गुणवादन किया करता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, मानो संसार की प्रत्येक तरंगों में, उस परमपिता परमात्मा की चेनतता, प्रायः हमें दृष्टिपात आती रहती है और अपने में चिन्तन करते रहते हैं, कि वे परमपिता परमात्मा तो सर्वज्ञ है उसकी आयतन जैसी प्रतीति में हमें ये दृष्टिपात आता रहता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान और पवित्र है प्रत्येक अनूठी रचना में मानो वह रचनाकार है और वह परमाणु मानो देखो, उसका आयतन माना गया है जब हम विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते हैं, तो विज्ञानवेत्ता को यह प्रतीत होता है, क्या इस परमाणु के गर्भ में, अणु के गर्भ में, संसार की बहुत सी सामग्री, उसमें निहित होती है क्योंकि उसी सामग्री का, वैज्ञानिक अपने में समन्वय करता रहता है, अथवा उसका मिलान करता रहता है और उसके सम्मिलन से मानो नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण भी कर लेता है।

तो इसीलिए उस परमाणुवाद में, अणुवाद ही मानो देखो, उस परब्रह्म परमात्मा का आयतन माना गया है, वह उसमें निहित रहता है, हमारे यहाँ परम्परा, अतीत के वैज्ञानिकों ने, अणु के रूप में मानो परमाणु के रूप में, जब ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात किया जाता है, तो मुनिवरों! देखो, जो ब्रह्माण्ड, योगीजन साधना के, रूप में प्रवेश हो करके, उस तक जाने का प्रयास करते हैं, परन्तु वैज्ञानिक जन, भौतिक विज्ञानवेत्ता, एक एक अणु और धारा को जानने के पश्चात, उस धारा में रत्त हो करके उस अणु का जब परमाणु का विभाजन करते हैं तो उसमें बेटा! यह संसार, यह ब्रह्माण्ड जो हमें दृष्टिपात आता है जिन वैज्ञानिकों ने बेटा! साधनाएं की हैं, अथवा जिन्होंने

इस संसार को दृष्टिपात किया है, उन्हें यह प्रतीत है, जिन ऋषि मुनियों ने अपने मन और प्राण के माध्यम से इस संसार को दृष्टिपात किया है, वह एक अनुपम माना गया है। इसी प्रकार मानव जब साधना के क्षेत्र में प्रवेश होता है, तो अपनी मानो प्रवृत्तियां, जब मानव की बिखर जाती हैं, प्रवृत्तियों में जब भिन्न भिन्न प्रकार के मानो एक दूसरें में आक्रमण होते रहते हैं, तब मानव की प्रवृत्ति में अशुद्धवाद आ जाता है, और बेटा! मैं तुम्हे त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ साहित्यिक विचार मुनिवरों! देखो, जब भगवान राम, लंका को विजय करके अपनी अयोध्या में आ पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, भरत इत्यादियों ने उनका बड़ा स्वागत किया, बड़ी विशाल एक राज सभाएं हुई, मानो देखो, राजा इत्यादि सब विद्यमान थे, जिसमें महाराजा शिव महाराज इन्द्र और भी राजा जितने पृथ्वी पर थे, मानो सबकी एक सभा अयोध्या में हुई। तो मुनिवरों! देखो, राम को उचित्त एक स्थान प्रदान किया गया, ऋषि मुनि भी सब विद्यमान थे तो मुनिवरों! देखो, माता अरूणधती और वशिष्ठ और महर्षि कागभुषुण्ड जी, लोमश इत्यादियों का ऋषियों का एक समूह मानो द्वार पर आए, विराजमान हुआ मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम एक स्थली पर विद्यमान थे, महाराज शिव तो उन्होंने ऊर्ध्वा में आसन प्रदान किया। एक स्थली पर माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि को, उन्होंने ऊर्ध्वा आसन प्रदान किया। और राम मानो देखो, उनके मध्य में विद्यमान हो गएं, मेरे प्यारे! भरत मानो चरण पादुका के समीप विद्यमान हैं।

तो मुनिवरों! देखो, विचार होने लगा, भगवान शिव बोले राम! अब तुम अयोध्या के धिराज बनो। मेरे प्यारे! भगवान राम ने एक वाक कहा क्या प्रभु! मैं तो इस अयोध्या के राष्ट्र को, अभी उचित्त नहीं जान रहा हूँ, क्योंकि जब तक मेरी जो प्रवृत्तियाँ हैं, वह रजोगुण से, सात्विक रूपों में नहीं आयेंगी तब तक मैं अयोध्या के राष्ट्र का अधिकारी नहीं हूँ।

भगवान शिव बोले कि महाराज! क्या तुम्हारी प्रवृत्तियाँ रजोगुणी हैं। उन्होंने कहा कि मैं अभी बहुत विशाल संग्राम को विजय करके आया हूँ। क्योंकि मैंने वहाँ बड़ा संघर्ष किया है, मिथ्या भी उच्चारण किया है, क्योंकि जो दूसरे प्राणियों को, या राष्ट्र को जो प्राप्त राजा करना चाहता है तो उसमें भिन्न भिन्न प्रकार की, मानो धाराओं को अपनाना उसके लिए अनिवार्य हो जाता है। जिसे अपनाएगा नहीं तो विज्ञान अपने में सार्थक नहीं बनेगा, और मैं राष्ट्र को विजय नही कर सकूंगा। मानो देखो, मैंने राष्ट्र का प्रथम विचार लिया था, कि मैं राजा से संग्राम है, और ऐसे विशाल राजा से जिसके राष्ट्र में सूर्य उदय और अस्त नहीं होता है। क्योंकि पातालपुरी में राष्ट्र हैं, कोई स्थली ऐसी पृथ्वी मण्डल पर नहीं है, जहाँ रावण का राष्ट्र न हो परन्तु वह मैने मिथ्या से अपने अन्तःकरण में जो भावना मैं यह जान गया था यह मिथ्या है परन्तु उसके पश्चात भी, उसका प्रयोग किया गया क्योंकि रजोगुण की धारा में राष्ट्र को विजय किया जाता है।

तो इसीलिए मैं कुछ समय के लिए मुझे आज्ञा दो, इसीलिए मैंने इस सभा का आयोजन किया है मैं कुछ समय के लिए तपस्या करने के लिए जाऊं, और मेरे दोनो ये पूज्य महात्मा वशिष्ठ और माता अरूणधती दोनो विद्यमान हैं, मेरा बाल्यकाल भी इन्हीं के चरणों में रहा है, और मेरा तपस्या का काल भी इन्ही के चरणों में रहेगा।

मेरे पुत्रों! देखो, महाराज शिव, इस वाक को अपनी तर्क संगति से, नष्ट नही कर सके, उन्होंने कहा राम! सात्विक विचारों से तो तुम्हारा वाक बहुत प्रिय है परन्तु इस अयोध्या राष्ट्र को कौन इसको सार्थक बना सकेगा? कौन इसकी नियमावली निर्धारित करेगा। उन्होंने कहा मेरे विधाता जैसे राष्ट्र पूर्व काल से चला आ रहा है पिता जी के मानो निधन होने पर अयोध्या का राष्ट्र मानो चल ही रहा है। आज भी वह उसी प्रकार अपने में गतिशील है। भरत तपस्वी हैं मानो सखा

हैं। मानो राष्ट्र और प्रजा के प्रिय है और अयोध्या को उचित्त स्थान प्रत्येक प्राणी को देने वाले हैं। क्योंकि यह अयोध्या का निर्माण, यह तो भगवन! आप सभी को प्रतीत है, भगवान रामं ब्रहे वाचस सुहो सम्भवो इस अयोध्या का जो निर्माण है वह भगवान मनु ने किसी काल में किया था। भगवान मनु के काल को बहुत पुरातन काल हो गया है, भगवान मनु ने मानो देखो, अयोध्या में इसका निर्माण किया जब समुद्र तट भी मानो अयोध्या के कुछ ही दूरी पर था जब अयोध्या का निर्माण हुआ था, आज समुद्र बहुत दूरी चला गया है यहां से मानो देखो, यहाँ भगवान मनु ने यहीं अपनी देखो, एक नौका में विद्यमान हो करके तप किया था तप करने के पश्चात प्रजा को अधिकार की पुकार न दे करके कर्तव्यवाद के ऊपर बल दे करके, भगवान राम ने देखो, जैसे मानव का शरीर है, किसी काल में प्रभु ने मानव के शरीर को निर्माणित किया होगा, तो यह अष्ट चक्रा नौ द्वारों वाली पुरी है इस पुरी को मानो देखो, उन्होंने पुरी के तुल्य ही, इस अयोध्या का निर्माण किया, और मानो देखो, अष्ट चक्रा, नौ द्वारा का इस अयोध्या के नौ द्वार है और अष्ट चक्र हैं, इस अष्ट चक्र नौ द्वारों वाली जो नगरी है, यह मानव का शरीर भी अयोध्या के रूप में हैं, और भगवान मनु ने इसी के आश्रित, इसी का चिन्तन करते इस नगरी का निर्माण किया, और भगवान मनु ने यहाँ सबसे प्रथम राज किया था भगवान मनु के मानो देखो, साढ़े सात हजार वंशलजों का राज मानो इस अयोध्या में रहा, उसके पश्चात यहाँ और भी नाना मनु वंश के राजा हुए, परन्तु आज मैं इसके साहित्य में न जा करके, मैं यह प्रार्थना कर रहा हूँ, क्या जैसे ही इस राष्ट्र, इस नगरी का क्रियाकलाप परम्परागतों से चला आ रहा है, इसी प्रकार, आज भी मानो देखो, यह क्रियाकलाप चलता रहेगा। तो मुनिवरों! देखो, जब यह वाक राम का समाप्त हुआ, इतने में भगवान इन्द्र ने कहा इन्द्र ने कहा हे राम! वाक तो तुम्हारा यथार्थ है कि तपस्या करनी चाहिए परन्तु राष्ट्र का

यदि तुम राष्ट्र को भोगते समय यदि तुम तपस्वी बन जाओ, तो अयोध्या का क्रियाकलाप सुचारू रूप से चल सकता है। अब इन्द्र ने कहा कि मैं भी यही चाहता हूँ क्या तुम्हारी अयोध्या इसी प्रकार से सुशोभित होगी भगवान राम बोले कि नही, बिना तपस्या के राजा को राष्ट्र का कोई अधिकार नहीं होता, क्योंकि राजा यदि दूसरे के श्रृङ्गार को हनन करता रहेगा और अपने में वह कुछ नहीं कर पाएगा तो वह राष्ट्र या प्रजा को महान कदापि नही बना सकता, इस पृथ्वी का राष्ट्र मेरे समीप आ जाएं परन्तु मेरे द्वारा आत्मबल नहीं है, तो इस सर्वत्र संसार का प्राप्त हो जाएं, जब ही यह प्रियता में आता है, जब मानव के द्वारा आत्मिक बल होता है आत्मा का बल प्रायः होता है और देखो, एक मानव देखो, ब्रहो वाचन्नम ब्रहे विद्या का अध्ययन किया जाएं, विद्या का बल और सुज्जित हो जाता है तो यह नाना प्रकार का जो बल राष्ट्रीयता के द्वारा होता है, यह राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। परन्तु जब यह वाक इन्द्र से कहा तो इन्द्र शान्त हो गएं।

मुनिवरों! देखो, इतने में भरत ने कहा कि हे भगवन! आपको यह प्रतीत है मुझे बहुत समय हो गया है, मैं अयोध्या का राष्ट्र, मैं इसको सुचारू रूप से नही चला पाया हूँ, मानो देखो, इसमें पाण्डितव इतना वृद्धि नहीं कर सका, जितनी होनी चाहिए थी। क्षत्रिय अपने में क्षत्रिय बने नही हो सका, मानो जितना होना चाहिए था, हमारे पूर्वजों के काल में रहा है। परन्तु देखो, इसी आभा में यह चाहता हूँ कि भगवन! मैं यही तपस्या कीजिए, मुझे जो आज्ञा दोगे, मैं उस कार्य को करता रहूँगा। मैं उस क्रियाकलाप में रत्त रहूँगा। भगवान राम बोले कि भई! सम्भवो भवा हे भरत! मानो देखो, यह वाक मेरे विचार में आ नही पा रहा है, तो मानो जहाँ इतने समय तक इस अयोध्या का क्रियाकलाप करते रहे हो, माता पिता की आज्ञा का पालन कर रहे हो, मेरी आज्ञा का पालन क्यों कर रहे हो, इसी प्रकार तुम आगे भी इसी प्रकार क्रियाकलाप करते

चले जाओ। मैं तपस्या के लिए अवश्य जाऊंगा। क्योंकि मैंने बहुत अपने मनोनीत से अपराध किया है। क्योंकि मेरा जो चित्त का मण्डल है, वह अशुद्ध हो गया है क्योंकि जैसे मैने रावण से संग्राम किया है, तो मुझे रजोगुण भी आया है, तमोगुण भी आया है, मानो देखो, अनिष्ट विचार आयें हैं वह विचार मेरे अन्तःकरण में ज्यों के त्यों निहित हो रहे हैं। आज जब तक मैं, उन विचारों का प्रतिश्रोत नहीं कर पाऊंगा, मैं उनको मानो तपस्या में रूपों में आचार्यों के संग में जा करके जब तक सूक्ष्म नही बना दूंगा, जब तक मेरा चित्त का मण्डल क्योंकि वह तो कर्म मेरे साथ जाएगा क्योंकि मैंने तो चित्त के मण्डल में अपने कर्मों की भूमिका बनाई है मानो देखो, वह ज्यों की त्यों चित्त के मण्डल में विद्यमान है। ऋषि भी उसी काल में बनते हैं, जब चित्त के मण्डल में सूक्ष्मवाद आ जाता है, चित्त के मण्डल में कर्म की विचारों की सूक्ष्मता हो जाती है, तो वह अग्रणीय बनता है।

तुम्हें यह प्रतीत होगा कि जब मैं बाल्यकाल में पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा इनके चरणों में विद्यमान हो करके, अध्ययन करता रहा हूँ। तो एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के आश्रम में देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज पधारे थे, वह गाथा मुझे अब तक स्मरण है, तो इन्होंने ब्रह्मचारियों को एक उपदेश दिया था, और ब्रह्मचारियों से यह कहा था क्या देखो, जब मानव मुक्ति के क्षेत्र के लिए गमन करता है, या परमात्मा के मिलन के लिए गमन करता है तो मानो इस आत्मा के तीन प्रकार के शरीर होते हैं, एक शरीर स्थूल कहलाता है, सूक्ष्म है और एक कारण कहलाता है। तो मानो देखो, स्थूल शरीर यह तो मानो त्यागा ही जाता है, और जब तक मानो इसके द्वारा चित्त का मण्डल बना रहता है, आत्मा के संग तब तक सूक्ष्म शरीर में वह चित्त के मण्डल की प्रतिभा निहित रहती है, वह शरीरों को प्राप्त होता रहता है, वही संसार में आवागमन की

प्रतिभा में निहित रहता है। परन्तु देखो, जब तक यह सूक्ष्म ब्रह्मा जब तक हम अपनी तपस्या के बल से सूक्ष्म शरीर को न जान लें, क्या यह सूक्ष्म शरीर क्या है? इसमें प्रकृति की पञ्च तन्मात्रा कहलाती हैं मानो देखो, दसों प्राण होते हैं, और मन और बुद्धि होता है। ये सत्रह आभा वाला तरंगो वाला, सूक्ष्म शरीर कहो या मानो देखो, इसको यह चित्त के मण्डल की प्रतिभा कह सकते है मानो देखो, वह चित्त ज्यों का त्यों वह चित्त में संस्कार निहित रहते हैं। मुझे स्मरण है तो उन्होंने यह कहा महर्षि याज्ञवल्क्य ने ऋषि का उदधृत देते हुए, उन्होंने सरल वृत्तिका एक ऋषि हुए हैं, जो उनके उद्दालक गोत्र में हुए हैं, उन्होंने एक सौ पिचासी वर्ष तक इतना कठोर तप किया था, चित्त के मण्डल को जानने के लिए, क्या मानो देखो, चित्त में कौन कौन से संस्कार, कितने जन्मों के विद्यमान हैं। तो उन्होंने लगभग अठारह सौ जन्मों के संस्कारों को साक्षात्कार किया और वह चित्त के मण्डल मं निहित होते हैं। यह जो चित्त का मण्डल है, उसे मानो हमें सूक्ष्म बनाना है, और वह कैसे बनाएगे और वह जब बनेंगें जब हम साधना करेंगे, हम मन की प्रतिभा को मानो देखो, पञ्च तन्मात्राओं के रूप में मन बुद्धि को दृष्टिपात करेंगे, और मन बुद्धि मानो देखो, प्राण सूत्र में पिरो देंगे और प्राण सूत्र को, चेतना में जो प्रभु है जो मानो सर्वत्र जगत का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है, उसमें जब तक हम दृष्टिपात नहीं करेंगे, तब तक मानो देखो, हम उसको अपने में दृष्टिपात नही कर सकेंगे। मानो हम जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को सूक्ष्म नहीं बना सकेंगे वह जब सूक्ष्म बन जाते हैं, तो मानो देखो, तपस्या पुनः की जाती है। तपस्या के बल से उसके पश्चात मानो देखो, कारण शरीर में प्रवेश हो जाते हैं। जब कारण में चले जाते हैं, तो कारण क्या है? कारण वह है जो मुनिवरों! देखो, चित्त के मण्डल की प्रतिभा सूक्ष्म बन जाती है। और सूक्ष्म शरीर मानो देखो, चित्त में प्रवेश हो जाता है चित्त में ही वह रत्त रह जाता है जैसे देखो, स्थूल को

वह सूक्ष्म में निकस करके जाता है ऐसे ही यह जो परम ब्रह्मा ब्रहे असि मानो देखो, यह जो वृत्तियां है यह जो चित्त का मण्डल है अथवा देखो, सूक्ष्म शरीर से जब कारण शरीर निकसता है तो चित्त का मण्डल मानो देखो, निचले भाग में रह जाता है, जब निचले भाग में रह जाता है तो वही चित्त का मण्डल देखो, चित्त में प्रवेश हो गया। मेरे प्यारे! वह परमात्मा के चित्त मे चिन्तन चला गया, और वह कारण शरीर मानो केवल्य रह जाता है। कारण शरीर में, मेरे प्यारे! ऐसा ऋषि कहते हैं वेद की प्रतिभा कहती है, क्या उस समय देखो, ज्ञान और प्रयत्न दोनो प्रकार की धारा रह जाती है, मानो देखो, दोनो प्रकार की धाराएं जब तक एकोकीकरण नहीं हो जाती, तब तक मुनिवरों! देखो, जीवात्मा मोक्ष के प्रति द्वार पर नही जा सकता। मानो दोनो का समन्वय होता है ज्ञान और प्रयत्न का, दोनो का समन्वय जब होता है, तो बेटा! केवल्य आत्मा निष्क्रियता में मानो देखो, परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड में, जिसका आयतन माना गया है आत्मा जिसका आयतन माना गया है मेरे प्यारे! देखो, जिसमें रत्त हो जाते हैं।

तो यह वाक एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, मेरे पूज्य आश्रम में जब बाल्यकाल में, आचार्य के यहाँ अध्ययन करते थे, तो यज्ञ के उपलक्ष्य में यह वाक उन्होंने कहा था। तो मानो देखो, वह मुझे अब तक स्मरण है, तो मानो देखो, भगवान राम ने, जब इस मानो देखो, राष्ट्रीय सभा में, अपने वाक जब ऋषि के वाक्यों को उदधृत किया तो बेटा! देखो, सब राज सभा मौन हो गई। महाराज शिव ने कहा वाक तो तुम्हारा यथार्थ है, तो मेरे प्यारे! देखो, वाक्यों को विचार करते हुए, हनुमान जी का प्रवेश हुआ। महाराज हनुमान ने कहा प्रभु! आप तो आत्मा की चर्चा सदैव ही करते रहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, आत्म ज्ञान की चर्चा, उन दोनो की विचारधारा में अविरत्त रहती है मेरे प्यारे! देखो, सांयकाल का समय हो गया था रात्रि का काल अपने अपने कक्षो में बेटा! निमन्त्रित

किए मानो देखो, विशेष कक्षो में बेटा! उन्हें निहित किया गया। प्रातः मानो रात्रि समय भोज इत्यादि के पश्चात रात्रि के समय मानो देखो, अयोध्या में एक यज्ञशाला थी, यज्ञशाला में एक भवन था, उस भवन में विद्यमान हो करके, मानो देखो, विचारको का पुनः विचार विनिमय होने लगा। तो भगवान राम को, यह कहा गया कि भगवन! आपके बाल्यकाल की स्मरण शक्ति, आपके समीप है आप हमे कुछ और मुझे कोई उपदेश दीजिए, भगवान बोले कि भगवन! यह कैसी वार्ता प्रगट कर रहे हो? भगवन! तुम कोई वाक शिव से प्रार्थना की गई क्या महाराज कोई रात्रि काल में तुम्हारी कोई उपदेश मंजरी हो जाएं, मेरे प्यारे! देखो, भगवान शिव ने यह कहा, क्या मैं कैलाश में आनन्द में रहता हूँ। विचार विनिमय हम करते रहते हैं विज्ञान के सम्बन्ध में भी नाना प्रकार की विज्ञान की धाराओं में रत्त रहते हैं मानो देखो, उसमें हम सदैव चित्त के मण्डल पर, अनेको अनेको समय विचार विनिमय करते रहते हैं। मानो देखो, एक समय जब हम तपस्या में परणित हुए, कि हमारे चित्त के मण्डल में केवल इतनी गति हुई है कि हम चित्त के मण्डल में जब तक मन का मण्डल रहता है जब तक मन बुद्धि रहती है मन और चित्त का अन्तःकरण का चित्त का मण्डल रहता है जब तक मानो चित्त मण्डल बना ही रहता है और जब यह देखो, चित्त के मण्डल का समन्वय जब देखो, आन्तरिक चित्त और बाह्य चित्त दोनो चित्तों का जब समन्वय मानव के शरीर में मानो जन्म जन्मान्तरों के स्मरण शक्ति आ जाएगी वह चित्त का मण्डल उसमें निहित रहता है क्योंकि जब तक मन रहता है प्रकृति का क्षेत्र तन्मात्राओं के रूप में रहता है, तब तक मुनिवरों! देखो, यह चित्त का मण्डल बना रहता है यह चित्त का मण्डल बना रहता है। परन्तु देखो, चित्त के मण्डल को जब हम अग्रणीय आभा में ले जाते हैं, तो मानो देखो, यह बाह्य जगत बाह्य चित्त में ले जाते हैं। बाह्य चित्त में यह सूक्ष्मवाद का यह जगत है इसमें भी मानव के संस्कार

विद्यमान होते हैं मानो देखो, जहाँ मानव के शब्द रहते हैं, शब्दों के साथ मे चित्र रहते हैं, और वह चित्रण होता रहता है तो उसे बाह्य जगत में बेटा! चित्त का मण्डल कहते हैं चित्त के मण्डल का समन्वय मानो प्रभु के ब्रह्माण्ड से होता हुआ, वह प्रभु का जो ब्रह्माण्ड है वह एक अनूठा चित्त कहलाया गया है। वह चित्त का मण्डल मानो जिससे इस मण्डल का मिलान हो जाता है। तो बाह्य जगत क्या मानो देखो, उसका क्षूद्र बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक जब उन्होंने प्रगट किया, तो यह वाक सूक्ष्म विचार थे परन्तु विचार बड़े गम्भीर मार्मिक थे परन्तु देखो, इसके उपलक्ष्य में उन्होंने कहा क्या मेरे जो मेरे यहाँ कैलाश पर्वत पर एक श्वेत्ता भ्राति ऋषि महाराज तपस्या करते थे। जो भारद्वाज गोत्रीय कहलाते थे। जब वह एक समय अनुसन्धान करते रहे, अनुसन्धान करते करते उन्होंने चित्त के मण्डल को जानने की दिशा में अपने को ले गएं तो ऐसा मानो मुझे प्रतीत है उनके कथनानुसार क्या अपने मानो बाईस जन्मों के चित्त के मण्डल को अपना साक्षात्कार किया, और साक्षात्कार करके उसके ऊपर मानो तपस्या में परणित हो गएं तो इसी प्रकार मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार, संस्कारों की निधि, मानव के समीप रहती है।

तो मानो देखो, शिव इतना उच्चारण करते हुए मौन हो गएं मुनिवरों! देखो, रात्रि विश्राम की हो गई, विश्राम में चले गएं प्रातःकाल हुआ, अपनी क्रियाओं से सब निवृत्त हो करके, यज्ञशाला में बेटा! याग हुआ और यज्ञशाला में अग्नि होत्र देव पूजा करने के पश्चात अतिथि गण अपनी अपनी स्थलियों को प्रस्थान किया।

भगवान राम ने मानो प्रातःकालीन मानो यज्ञशाला में वहाँ अपने विधाता ब्रहे सम्भवो ग्रहा मेरे प्यारे! उन्होंने अयोध्या में एक सम्भूति ब्रहो सम्भवा भरत जी को मानो देखो, उन्होंने एक मानो देखो, एक अपनी, आभा, अपनी आशीर्वाद अपनी

प्रतिभा देखो, बड़े विधाता के होने की अब्रहो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने चन्दन का लेपन करके कहा, क्या तुम इस राज्य को अपने में जैसे चन्दन में सुगन्धि आ रही है और ईंगला, पिंगला, सुषुम्णा नाड़ी के मध्य में मानो देखो, इसका तिलक किया जाता है, इसी प्रकार जैसे ईंगला, पिंगला, सुषुम्णा के मानव के शरीर की स्मरण शक्ति नहीं रहती है इनके रहते हुए स्मरण शक्ति जागरूक रहती है, और देखो, जैसे चन्दन में सुगन्ध आती है, अश्वन सुगन्धियों का समूह है, ऐसे ही तुम्हारे जीवन में सुगन्धि हो, राष्ट्र में सुगन्धि हो, और राष्ट्र की सुगन्धि ही मानो देखो, तुम्हारे अयोध्या राष्ट्र को ऊँचा बनाएंगी। यह बेटा! राम ने प्रातःकाल उन्होंने देखो, तिलक करने के पश्चात भगवान राम, महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरूणधती दोनो के चरणों की वन्दना करते हुए उन्होंने कहा मैं बारह वर्ष के लिए तप करने जा रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राम को कोई भी यह नहीं कह सका कि तुम तपस्या करने न जाओ। मेरे प्यारे! महाराजा हनुमान ने यह कहा प्रभु! आप तपस्या करने जा रहे हैं, अब हम क्या करें? उन्होंने कहा अब तुम भी तपस्या करो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, वह महाराज शिव के साथ में देखो, महाराज गणेश जी और देखो, हनुमान जी बाल्य काल में मानो देखो, एक गुरु के आश्रम में अध्ययन करते थे मानो देखो, वह स्मरण शक्ति उन्हे जागरूक रही, वह हिमालय को चले गएं। मेरे प्यारे! देखो, गणेश जी और हनुमान जी समुद्र के तट पर विज्ञानशाला का एक निर्माण हुआ, वह उस विज्ञानशाला में बेटा! देखो, अध्ययन करने लगे, विज्ञान में, और राम देखो, माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि के आश्रम में प्रवेश हो करके, बेटा! वह तपों में परणित हो गएं और अध्ययन करने लगे मुनिवरों! विचार विनिमय होने लगा, उनका दोनो की वार्त्ताएं भी होती रहती थी। मानो जिससे तर्क संगति से, धर्म और मर्यादा में परणित हो करके अपने आत्म ज्ञान को, ज्ञान में सिमट करके, चित्त के मण्डल

को सूक्ष्म बना करके कारण शरीर की आभा के ऊपर चिन्तन करने से, बेटा! मानव के रजोगुणी जो संस्कार होते हैं, वह सब समाप्त हो जाते हैं मानो देखो, वह तपस्या का फल तपस्या तो बहुत प्रियता मानी गई है।

मेरे प्यारे! देखो, जब भगवान राम और वशिष्ठ मुनि के आश्रम में चले गएं तो एक समय बेटा! देखो, मध्य रात्रि का काल था, मध्य रात्रि में माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनो बेटा! अध्ययन कर रहे थे। माता अरूण्धति कह रही थी क्या महाराज! आप तो बड़े तपस्वी ब्रह्मवेत्ता हैं, परन्तु राम को क्या बनाना चाहते हो? उस समय वशिष्ठ मुनि बोले कि हे देवी! राम चाहते क्या हैं? मानो देखो, जो वह चाहते हैं कि मेरे जो रजोगुण के भाव हैं मेरे द्वारा जो कि अपराध मानवता नरसंहार हुआ है, यह नर संहार की जो संस्कार बन गएं हैं चित्त के मण्डल में, वह समाप्त हो जाने चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तो प्रभु! आप नर संहार के चित्त के मण्डल से कैसे संस्कार समाप्त करोगे? उन्होंने कहा देवी! वेदों में अनेका अनके मन्त्र इस प्रकार के आते हैं उन मन्त्रों के अध्ययन करने से और मानव को देखो, मन और प्राण की प्रतिभा में रत्त हो जाना, **क्योंकि मन और प्राण के मध्य में ही तो वह संस्कार निहित रहते हैं**। वे संस्कार तन्मात्राओं के मध्य में रहते हैं उन तन्मात्राओं से पृथक नहीं है। उन तन्मात्राओं को जानना है, उन तन्मात्राओं को कैसे जाना जाएगा प्रभु! मानो देखो, तन्मात्रा को ऐसे जाना जाएगा प्रभु! जैसे अपने को प्रभु को समर्पित करना है यह प्रभु का अनूठा जगत है और प्रभु के अनूठे जगत में जाएं बिना मानव के चित्त के संस्कारों की सूक्ष्मता का समापन नहीं होता। तो इसीलिए प्रभु जो चित्त का आयतन है, मानो उसी में रत्त होना है। मेरे प्यारे! देखो, अरूण्धति उन वाक्यों को जान गई। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे! देखो, मध्य रात्रि से माता पिता के उन शब्दों को राम अपनी पत्नी मानो देखो, आसन पर विद्यमान हो करके,

श्रवण कर रहे थे। वह अपने में विचार कर रहे थे, क्या वशिष्ठ मुनि महाराज मेरा क्या बनाना चाहते हैं? और मैं क्या बनना चाहता हूँ इसके ऊपर विचार विनिमय होने लगा उन्होंने मैं राम हूँ देखो, गुरु को अपने को समर्पित करना चाहता हूँ। वशिष्ठ को समर्पित कर दिया और मानो देखो, वह शिक्षा देते रहे, वह अध्ययन करते रहे, सत्संग की बेला में परणित हो गएं और एक एक वाक को निर्णय देते रहे, मेरे प्यारे! देखो, वह तपस्या में परणित हुए, एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके राम प्रातःकालीन मानो देखो, ब्रह्मयाग में परणित हो जाते, ब्रह्म का चिन्तन करते करते दूरी चला जाना। तो मुनिवरों! देखो, उनका क्रियाकलाप बन गया है।

आज का हमारा विचार क्या कह रहा है। मेरे प्यारे! देखो, हमें बहुत गम्भीर इस संसार और मानव के जीवन के ऊपर अध्ययन करना है, मानव का जीवन एक बड़ा विचित्र है, इसके ऊपर अध्ययन करते करते बेटा! नाना ऋषियों ने बहुत अध्ययन किया, अध्ययनशाला में परणित रहे हैं, मेरे प्यारे! देखो, माताओं ने बड़ा सहयोग दिया, मुनिवरों! देखो, राम वशिष्ठ आश्रम में तपस्या कर रहे हैं, सीता अपने एकान्त स्थली में अयोध्या में गायत्री माँ की गोद में जा रही है। वह मानो अपने में तपस्या में परणित हो गई। क्योंकि मैंने रावण की बड़ी यातनाएं सही है, मेरा सदैव चिन्तन देखो, इतना अशुद्ध, अशुभ रहा है मानो देखो, उसको मैं नष्ट करना चाहती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरा मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरा एक दूसरें मे सहयोगी बन करके, जीवन की धारा की उपलब्धियों में परणित हो रहे हैं, विज्ञान आत्म विज्ञान में प्रवेश कर गएं हैं बेटा! आत्म विज्ञान पञ्चतनमात्राओं में निहित रहता है, पञ्च तन्मात्राओं में भौतिकवाद है, पञ्च तन्मात्रा जहाँ समापन हुई, प्राण का विज्ञान प्रारम्भ हुआ, साथ में आध्यात्मिकवाद की धारा का जन्म हुआ, वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर गएं हैं तो मेरे प्यारे! देखो, तपस्या की चर्चा तो

मैं इससे पूर्व काल में प्रगट करूंगा, आज का वाक हमारा यह कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानो अपने चित्त के मण्डल को जानने के लिए, सदैव तत्पर रहें, और जब तक चित्त के मण्डल को नहीं जाना जाएगा, मानो देखो, चित्त के मण्डल को त्याग करके, जैसे जीवात्मा स्थूल शरीर को त्याग देता है, इसी प्रकार देखो, चित्त के मण्डल को चित्त को सूक्ष्म शरीर को त्याग करके कारण में प्रवेश हो जाता है कारण में प्राण और मन दोनो मानो देखो, एक दूसरें में समावेश हो जाते हैं और वह आत्मा उसमें साम्यता में मानो देखो, स्थिर हो जाती है .... शेष अनुपलब्ध।

21 ०५ ०३ १९८५ भौतिक विज्ञान

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का, पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वो मेरा देव अनन्तमयी माना गया है, जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का गुणवादन और उसकी महानता का वर्णन, प्रत्येक वेदमन्त्र मानो उसका वर्णन करता रहता है, क्योंकि प्रत्येक शब्द में, उस महान मेरे देव की महती अथवा उसकी रचना का वर्णन है।

मानव स्वभाव

हमारे आचार्यों ने, परम्परागतों से ही, बेटा! उसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया, क्योंकि मानव का यह स्वभाव है, कि वह अपने से ऊर्ध्वा में जाना चाहता है, और उसके मनां की यह मनोनीतता कहलाती है, कि हम उस परमपिता परमात्मा

की महानता अथवा उसका वर्णन, हमारे समीप आना चाहिए। तो इसीलिए प्रत्येक वेदमन्त्र क्या, परमपरामतों से ऋषि मुनि, उसके ऊपर अपना अन्वेषण करते रहते हैं, अथवा विचार विनिमय करते रहते हैं, और विचारते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान हमारे समीप आना चाहिए, प्रत्येक मानव के हृदय में, यह आकांक्षा लगी रहती है, कि मेरा जो प्रभु, ज्ञानमयी, विज्ञानमयी है मानो उसको जान करके, हम मृत्यु से पार हो जाए, प्रत्येक मानव के हृदय में, मृत्यु की आकांक्षा लगी रहती है, और विचारता रहता है कि जितना भी मैं यागां भवि व्रत देवाः मानो जितना भी हमारा क्रियाकलाप है यह मृत्यु से अथवा अन्धकार से रहित होना चाहिए। यह प्रत्येक मानव के हृदय में ये विचारधाराएं और वह अपने में बेटा! इसके ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और मृत्यु के ऊपर अपना चिन्तन करते रहते थे और विचारते रहते कि हमारी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, ममतव को धारण करने वाली, मेरी माताएं मानो अपने में बेटा! चिन्तनीय अपने जीवन को बना करके बाल्य बालिकाएं मानो उनको मृत्युञ्जय बनाने अपने हृदय की एक महानता और विचित्रता उनके हृदय में सदैव नृत्त करती रहती है।

माता मल्दालसा और प्रवाहण

जब मुझे बेटा! महात्मां मल्दालसां ब्रहे व्रणा स्तस्ततं वाचन प्रव्हाणां भवि व्रत्तं देवाः जब प्रवाहण और माता मल्दालसा का जीवन स्मरण आता रहता है तो प्रायः माता ने अपने पुत्र को यह उपदेश दिया कि हे बालक! तू मृत्युञ्जय बन, क्योंकि मृत्युञ्जय बनना ही, एक मानवीयता कहलाती है। मानो एक यज्ञमान याग करता है, उसके हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है, कि मैं मृत्युञ्जय बनना चाहता हूँ, और इस याग

के द्वारा, मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ।

याग से मृत्युञ्जय

तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में उद्दालक गोत्र में विश्वश्रवा एक समय बेटा! भ्रमण करते हुए, वह महर्षि वैशम्पायन ब्रीहिवाचक ऋषि के द्वार पर पहुँचे, तो उनके हृदय में यह आकांक्षा लगी रही कि मृत्यु से पार होना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! उन्होंने महर्षि विभाण्डक मुनि इत्यादियों से यह विवेचना प्रगट की, कि भगवन! मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ, और मैं याग के द्वारा मृत्यु से पार और मृत्यु को उल्लांघना चाहता हूँ, जिससे मेरा अन्धकार मानो नष्ट हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक ऋषियों ने श्रवण किया, तो उद्दालक गोत्र के ऋषि, महर्षि वैशम्पायन और वह सब वेचक ऋषि महाराज के आश्रम में विद्यमान हो गये। तो मुनिवरों! देखो, वैशम्पायन ऋषि से यह प्रश्न किया गया कि महाराज! आप नाना प्रकार के यागों को जानते हैं, क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चलन अथवा उसका क्रियाकलाप होता रहा है। कहीं मानो देखो, अश्वमेध याग है, कहीं वाजपेयी और अग्निष्टोम यागां का वर्णन है कहीं गो मेघ और विष्णु यागों का वर्णन है, कहीं रुद्र और ब्रह्मयागों का वर्णन आता रहता है। तो मानो उन्होंने यह कहा कि प्रभु! आप बहुत प्रकार के यागों के क्रियाकलाप को जानते हैं, परन्तु हम यह चाहते हैं हम आपके मुखारबिन्द से क्या, मानव यागों के द्वारा मृत्यु से कैसे पार होता है, यह जो भिन्न भिन्न प्रकार के याग, जैसे ब्रह्मयाग है, क्योंकि ब्रह्मयागी भी यह चाहता है कि मेरी मृत्यु न हो, मैं ब्रह्म को प्राप्त होना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये वाक अपनी वृत्तियों में बेटा! धारण किया, तो वेद का ऋषि वैशम्पायन कहता है कि वेदां अमृतां चित्रं रथं ब्रह्मवाचो, सम्भवी देवाः हे प्रभु! इस वाक को तो मैं आपको अच्छी प्रकार निर्णय नहीं करा सकता, परन्तु वैशम्पायन ने एक वाक यह तो कहा था,

कि वास्तव में वेद का मन्त्र तो यही कहता है यज्ञं भविता मनं व्रतं ब्रह्मे मृत्यु वेद का वाक यह कहता है कि वास्तव में याज्ञिक को मृत्यु नहीं होनी चाहिए, अब भगवन! इसको मैं स्पष्टीकरण नहीं कर सकता, कि मृत्यु कैसे नहीं होती? परन्तु यह नहीं जानता कि कैसे मृत्यु नहीं होती।

मेरे प्यारे! वैशम्पायन ऋषि महाराज से महर्षि विभाण्डक ने कहा कि महाराज! ये ऋषिवर तो स्पष्टीकरण चाहते हैं। उन्होंने कहा कि महाराज! मेरे विचार में यह आता है चलो, हम विचारकों का एक समूह ऋषि मुनियों क द्वार पर चलता है, क्योंकि महर्षि गाड़वान रेवक ऋषि महाराज, अपने आश्रम में अपने में महान तपस्वी हैं जिनको एक सौ पांच वर्ष हो गएं हैं साधना करते हुए, अनुष्ठान करते हुए वह मृत्यु से पार होने के लिए उन्होंने कई अनुष्ठान किए। मेरे प्यारे! देखा,ें सब ऋषिवर महर्षि विभाण्डक, विश्वश्रवा पुलकेत्वर ऋषि महाराज, मेरे पुत्रों! महर्षि विभाण्डक इत्यादि मुनियों ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! वह कजली वनों से ऊर्ध्वा में, वहाँ ऋषिवर तपस्या करते, तो बेटा! महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने अपने में हर्षध्वनि की, क्या यह तो महान ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मनिष्ठ, कुछ ब्रह्मचारी है, परन्तु उनका आगमन मेरे द्वार पर हुआ है, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने सब ऋषि मुनियों की वन्दना की, आइये भगवन! पधारिए, मेरे प्यारे! वह विराजमान हो गये, उनका अतिथि किया, अतिथि करने के पश्चात ऋषि ने कहा कहो ऋषियों! आज तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! हम इसलिए आए हैं क्या हमारे वैदिक साहित्य में, वैदिक मन्त्रार्थ में यह आया है कि याज्ञिक पुरुष मृत्यु से पार होता है। तो हम भगवन! इसलिए आए है, कि मृत्यु हमारे समीप नहीं आना चाहिए, मृत्युञ्जय बनना चाहते हैं प्रभु! हमारी मृत्यु नहीं आनी चाहिए, तो ऐसी हम कामना ले करके, आपके समीप आए हैं, कोई न

कोई हमें ऐसा वाक उद्धृत कीजिए, जिससे हमारा अन्तर्ब्रह्मा सम्भवो लोकाम् हम वास्तव में उस लोक की कामना करें।

समष्टि से व्यष्टि में याग

तो मेरे प्यारे! सब ऋषि मुनि विद्यमान हो गये, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार के वाक्यों के ऊपर अपना क्त्तव्य दिया, सबसे प्रथम उन्होंने कहा कि यह जो याग है, इसको समष्टि और व्यष्टि में लाना चाहिए। मानो समष्टि कहते जो सम्भवा ब्रीहि व्राताः मानो देखो, जो सब स्थलियों में, मानव प्रत्येक क्रियाकलाप में याग को अपने को दृष्टिपात कर रहा है। एक मानव देखो, समष्टि में परणित हो जाना ही मानव को याज्ञिक बनना है, और मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा मानो व्यष्टि को समष्टि में प्रवेश करना ही एक याग कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा भगवन! हमारा अन्तर्हृदय इससे संतुष्ट नहीं हुआ है, उन्होंने कहा तो प्रभु! मेरे विचार में यह है कि प्रत्येक मानव अपनी इन्द्रियों को मानो सजातीय बनाता रहे, प्रत्येक मानव देखो, इन्द्रियों में हमारे में अज्ञान नहीं रहना चाहिए। समष्टि में परणित हो जाना चाहिए। जैसे हमारे उद्धृत किए हुए शब्द, मानो अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाते हैं और यह अन्तरिक्ष अपने में धारण कर लेता है, वायु उन्हीं चित्रों को गति देता रहता है, तो मानो देखो, एक चित्रण ब्रहीत बन जाता है। वह एक सृष्टया सम्भूति बन जाता है, जिसको अपने में हम धारण करके, अपने में यह अनुभव करते हैं कि वास्तव में यह वाक और देखो, यह यागां भविते यहाँ प्रत्येक मानव का जो क्रियाकलाप है वह याज्ञिक माना गया है।

अन्धकार में मृत्यु

तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्हें इसमें भी, अपने में सन्तुष्टि नहीं हुई मानो देखो, इतने में कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि प्रवाहण जी आ पहुँचे शिलक और दालभ्य भी उसी के आंगन में आ पहुँचे तो शिलक और दालभ्य ने कहा कि महाराज!

आप मृत्यु के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य क्यों नहीं दे रहे हैं। उन्होंने कहा मेरे विचार में मृत्यु जब शब्द है ही नहीं तो मैं उसके ऊपर विचार दे भी क्या सकता हूँ। उन्होंने कहा तो यह शब्द वेदों में क्यों आया? क्या हम याग के द्वारा मृत्यु से पार होना चाहते हैं? मृत्यु को उलाङ्घना चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, इसमें गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने पुनः से कहा कि वेद का वाक तो यथार्थ है। परन्तु यह जो मृत्यु शब्द है, यह अन्धकार में परणित रहने वाला है, अज्ञान में है, अज्ञान जहाँ समाप्त हो जाता है, वहीं तो मानव की मृत्यु का मानो देखो, अमृत्यु में परिवर्तित हो जाता है। समष्टि और व्यष्टि में रत्त हो करके ही तो अपने जीवन को महान बनाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने यह कहा तो इसमें कुछ मौनता प्राप्त हो गई। जब वह मौन हो गये, मौन हो जाने के पश्चात मेरे प्यारे! ऋषि मुनियों की सन्तुष्टि नहीं हुई, उन्होंने कहा तो भगवन! अब हम यहाँ से गमन करते हैं, भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि हम महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में गमन करेंगे।

मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता में मानो ऋषि मुनियों का समाज जिसमें महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, ब्रह्मचारी व्रेतकेतु, यज्ञदत्ता, महर्षि विश्वश्रवा और मुनिवरों! देखो, महर्षि विभाण्डक और सोमकेतु इत्यादि मुनियों ने बेटा! वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मानो देखो, वह कजली वनों में पहुँच गाड़ीवानं ब्रह्मे, गाड़ीवान को ऋषि ने दृष्टिपात किया तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु आदि ऋषियों ने बेटा! उन ऋषियों का स्वागत किया। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा कि हे भगवन! मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न युक्त है, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं भगवन! क्या ब्रह्मे वाचप्पव्हे लोकाम् क्या

भगवन! आज मानो आपका आगमन कैसे हुआ?

जब भारद्वाज ने यह कहा कि आगमन कैसे हुआ तो उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे दर्शनार्थ, हमने श्रवण किया है कि तुम्हारे यहाँ याग होता रहता है, हम उस याग की प्रतिक्रिया को दृष्टिपात करना चाहते हैं ऐसा हमारा मनोनीत एक विचार है। जब मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि के समीप गाड़ीवान रेवक मुनि इत्यादि ऋषियों ने बेटा! यह वाक प्रगट किया, तो उस समय गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से भारद्वाज ने पुनः से यह कहा कि महाराज! आपको एक समय निमत्रिंत करने के लिए पहुँचा था, तब मैंने यहाँ एक चित्रावली याग किया था। मैंने अपने पूर्वजों के चित्रों को दृष्टिपात करने का अपना मानो एक याग किया था। तो उस समय मैंने आपको निमन्त्रित किया था, आपने यह कहा था कि मैं इस समय अनुष्ठान में लगा हुआ हूँ, क्या भगवन! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है, क्या मानो देखो, तुम्हारे अभ्योदय ब्रह्मवाचं ब्रह्म लोकं हिरण्यं रथाः क्या भगवन! आज आपका आगमन हुआ, तो यह मेरा कितना सौभाग्य है, आज मैं कितना अपने में हर्ष ध्वनि कर रहा हूँ। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह वाक कहा तो देखो, गाड़ीवान रेवकां भविते शान्त हो गये, मेरे प्यारे! उन्होंने कहा हे भारद्वाज! मेरी इच्छा थी कि मैं आप के इस मानो देखो, वैज्ञानिक आश्रम को दृष्टिपात करूँ, कुछ ऋषि मुनियों का एक समूह मेरे समीप आया और उन्होंने यह सम्भवा दिव्यं गतं ब्रह्मवाचां हिरण्यं रथा मानो देखो, हम उस यन्त्रशाला को दृष्टिपात करना चाहते हैं, जिस यन्त्र शाला में नाना ऋषि मुनियों के चित्र आते रहते हैं।

अग्नि की धाराओं पर शब्द

यह वाक प्रगट किया, प्रगट करने मात्र से, तो उन्होंने कहा। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब यह वाक प्रगट किया, उन्होंने कहा कि महाराज! मेरे यहाँ एक यज्ञशाला का निर्माण है, यहाँ ब्रह्मचारी नित्यप्रति याग करते है हम सब याग करते

हैं, प्रभु! हमारे आश्रम का नियम है, कि हमारे यहाँ एक याग की आभा में मन्त्रों उच्चारण करो। तो मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और इत्यादियों ने बेटा! अपनी यज्ञशाला में, कवन्धी ले गएं और ऋषि मुनि मानो देखो, याग करने लगे, जब मुनिवरों! देखो, उसमें से कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यज्ञमान बना, कोई होता बन करके बेटा! याग का प्रारम्भ किया। जब याग का प्रारम्भ होने लगा, तो मेरे पुत्रों! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ ऐसे ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, क्या जिन यन्त्रों में मानो यज्ञ में जैसे स्वाहा उच्चारण किया, उसी आधार पर देखो, यन्त्रों में मानो देखो, उसकी चित्रावलियों में दृष्टिपात होती थी। क्योंकि हमारे यहाँ विज्ञान यह कहता है क्या, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द गति करता है और वह वायुमण्डल में मानो देखो, प्राण वृत्तियों में रत्त हो जाता है। अन्तरिक्ष में मानो वह ओत प्रोत हो जाता है इसीलिए शब्द सदैव नित्य कहलाता है। यह ऋषि भारद्वाज मुनि महाराज ने सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि महाराज! देखो, तुम्हारा यह याग हो रहा है यह मानो देखो, शुद्ध, पवित्र शब्दों का मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे, स्वाहा कर रहे थे तो मानो देखो, उनका चित्र बन करके द्यौ लोक में प्रवेश हो रहा था। द्यौ लोक में उनकी मानो स्थिरता ऋषियों को दृष्टिपात आने लगी। उन्होंने गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से कहा कि हे भगवन! आपका यह जो चित्र, आपकी जो मन्त्रों की एक माला बन करके मानो वह द्यौ लोक में प्रवेश कर रही है, द्यौ लोक में मानो देखो, परमाणुओं का, अणुओं का समूह रहता है, भगवन! और उसी परमाणुओं से मानो सूर्य अपना प्रकाश देता रहता है सूर्य मानो देखो, द्यौ से ही तो प्रकाश लेता है और द्यौ से प्रकाश ले करके वही प्रकाश मानो देखो, इस पृथ्वी मण्डल पर छायमान हो जाता है, प्राणी मात्र का वही पोषक बन जाता है अथवा प्रकाशक बन जाता है तो इसलिए हमारा वाक यह कह रहा है सम्भवा दिव्यं ब्रह्म वाचा

आओ, तुम यज्ञ में यह दृष्टिपात करो।

मेरे प्यारे! जैसे वे स्वाहा उच्चारण करते मानो देखो, साकल्य अग्नि में अग्न्याधान करते, उसी समय देखो, उनका चित्र बन करके, शब्दों के साथ में चित्र मेरे प्यारे! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा, उन्होंने कहा धन्य है, हे भगवन! हम यह तो जान गएं कि हमारे चित्र और शब्द अन्तरिक्ष में जा रहे हैं, परन्तु मृत्यु से कैसे पार होंगे, हम यह जानना चाहते हैं। तो भारद्वाज मुनि महाराज ने उसमें अपना वक्तव्य प्रगट किया, उन्होंने कहा हमने इस यन्त्र का निर्माण किया, इस वेदमन्त्र को ले करके, कि मानव मृत्यु को कैसे पार होता है, तो मानो हमने देखो, यन्त्रशाला का निर्माण किया, और एक एक शब्द के साथ में, वह जो यन्त्र हमारे अन्तरिक्ष में गतियाँ करते रहते है, वे क्रियाकलाप भी मानो इसके साथ में गति कर रहा है, तो हमें मृत्यु से पार होना है, तो हमारे शब्दों में मानो देखो, वेद रूपी प्रकाश होना चाहिए और वह प्रकाश मानो अन्तरिक्ष में, वह अग्नि की धाराओं पर, तंरगों पर विद्यमान होकर के वह अन्तरिक्ष में लय हो जाना चाहिए।

शरीर रूपी यज्ञशाला

अब देखो, वह जो व्यष्टि से समष्टि में मानो देखो, साकल्य प्राप्त हो गया है। व्यष्टि से समष्टि को वह प्रवेश कर गया है। परन्तु देखो, इसी प्रकार मानव का जो जीवन है, जब सृष्टि के पिता ने, इस ब्रह्माण्ड की रचना की, रचना के पश्चात मानो देखो, यह नाना प्रकार के व्यंजनों वाली सृष्टि उद्बुद्ध हुई मानो देखो, उसी में एक सन्निधान मात्र प्रभु का मानो प्रकृति का स्वभाव अपने में जागरुक हो गया, जब अपने में यह स्वभाव जागरुक हो गया, उसी स्वभाव ने मानो देखो, अप्रत्यां ब्रह्म वाचा हिरण्यं ब्रह्मा चित्त लोकां वाचन्नमा ब्रह्मे मानो देखो, नाना प्रकार की जो यह चारों प्रकार की, जो सृष्टि की रचना है, इस रचना में, उस महान देव ने, इस मानव शरीर की रचना की, उसी मेरे देव ने, इस मानव शरीर की एक रचना

की है जो मानो देखो, देवत्तत्व कहलाता है। इसी में मानव मृत्युञ्जय बनता है, और वह मानो देखो, यह भी है। जब मानव शरीर की रचना की तो उन्होंने यह घोषणा की कि यह जो मानव का शरीर है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, यहाँ प्रत्येक मानव याग कर रहा है, प्रत्येक वाणी से मानो देखो, अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा सुद्दष्टिपान करना, सु में आना मानो देखो, इन्द्रियों से याग कर रहा है। यह मानव शरीर रूपी एक प्रकार की यज्ञशाला है और इस यज्ञशाला में, मेरे प्यारे! पञ्च महाभूत, इस याग में, स्वाहा कह रहे हैं, अहा! देखो, वह आहुति दे रहे हैं, और वही मेरे पुत्रों! देखो, तरंगे बन करके, इन्द्रियों में साकल्य बन करके बेटा! वह मानव मोक्ष की प्रतिभा को प्राप्त हो रहा है। अन्धकार को त्यागा जा रहा है प्रकाश को लाया जा रहा है प्रकाश में रत्त होने के लिए तत्पर हो रहा है।

मानव की पवित्रता

तो मानो देखो, यह जो शरीर रूपी यज्ञशाला है और बाह्य जगत में जो मानो देखो, सृष्टि याग हो रहा है, इन दोनों का समन्वय करना है और समन्वय करके मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात मानव को यह अनुभव होता है, प्रतीत होता है, क्या मैं मृत्यु से पार हो गया हूँ। क्योंकि अन्धकार नहीं रह पाता और जब यह अन्धकार नहीं रह पाता तो, मुनिवरों! देखो, शारीरिक याग आध्यात्मिक याग और मुनिवरों! भौतिक याग दोनों का परस्पर समन्वय हो जाता है और वही समन्वय मानव को महान बना देता है, अथवा पवित्र बना देता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल संक्षिप्त सा परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है, परिचय केवल यह है कि हम अपने में मानो देखो, याग को, याज्ञिक विज्ञान को जानते हुए, इस सागर से पार हो जाए, जैसा महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने ऋषि मुनियों का एक निराकरण किया, उन्होंने कहा कि यह यन्त्र है मेरा मानो जो

शब्द के साथ में, जो याग की मानो देखो, आकारमयी यह जा रहा है और यह वायु में प्रतिष्ठित हो जाता है और वह अन्तरिक्ष में लय हो जाता है, मानो देखो, वह क्रियाकलाप मुझे दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! उन्होंने वैज्ञानिक यन्त्रों का मानो देखो, निर्माण किया, उन्हीं वैज्ञानिक यन्त्रों से मानवीयतव और मानवीय मानो बाह्य और आन्तरिक दोनों की प्रतीति होने लगती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, यह प्रसंग मानो ऋषि मुनियों का था कि मानव मृत्यु से कैसे पार हो? तो बेटा! वह मानवीय शरीर रूपी यज्ञशाला और बाह्य जगत की यज्ञशाला दोनों को जान करके मानो दोनों का समावेश करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वह मृत्युञ्जय बन जाता है, वह ब्रह्म की आभा को, ब्रह्म का यह जो सृष्टि चक्र है, अथवा जो यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आ रहा है, इसको जान करके बेटा! वह पार हो जा रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने वाक प्रगट करते हुए कहा प्रभु! यह तो मेरी यज्ञशाला है, तुमने याग किया है, और देखो, यागों के चित्र तुम्हारे मानो देखो, शब्दों के चित्र मेरे इस मानो देखो, यन्त्रों में प्रवेश हो रहे हैं। यन्त्र में तुम्हें दृष्टिपात आ रहें हैं। आओ, भगवन! अब मैं तुम्हें अपनी विज्ञानशाला अपने मानो विद्यालय में तुम्हें भ्रमण कराना चाहता हूँ।

मन्त्र में विज्ञान

मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज और मुनिवरों! देखो, आदि ऋषिवर मानो देखो, सब उनके साथ भ्रमण करने लगे। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इत्यादि को उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि, प्रभु! यह मेरी विज्ञानशाला है, और इस विज्ञानशाला में मैं विद्यमान हो करके और ब्रह्मचारियों को शिक्षा देता रहता हूँ। और स्वतः मैं कुछ न कुछ जानकारी करता रहता हूँ, कि प्रभु का यह जो ब्रह्माण्ड है, यह कितना अनन्तमयी है, एक समय मैं अपने आश्रम में विद्यमान हो

करके, एक वेदमन्त्र का अध्ययन कर रहा था, और वह वेदमन्त्र यह कह रहा था सम्भवा ब्र्व्हे व्राणा अस्सुतं बिन्दु भवा सम्भवे मात्राणि गच्छतं शिशु रजप्रव्हा वेद का मन्त्र भगवन! यह आख्यिका मुझे स्मरण आई और आख्यिका यह कह रही थी सम्भवा दिव्यं ब्रह्मा मानो देखो, माता के गर्भ स्थल में, एक शिशु है, और शिशु के साथ में एक बिन्दु है और बिन्दु के प्रवेश होते ही माता के गर्भ स्थल में, बिन्दु से कैसी रचना होती है। मानो देखो, इस आभा में हम लग गये।

एक समय ब्रह्मचारी कवन्धी और राजा रावण के विधाता कुम्भकरण और ब्रह्मचारिणी शबरी मानो हम सब परस्पर इस बात पर विचार विनिमय करने लगे, इतने में कहीं से भ्रमण करते हुए, महर्षि बटुक मुनि महाराज आ पहुँचे, और महर्षि बटुक मुनि महाराज से हमने यह प्रश्न किया कि महाराज! यह वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है, वेद के मन्त्र में हमें यह भाव प्रतीत होता है, हम उस बिन्दु को जानना चाहते हैं, तो महात्मा बटुक मुनि महाराज ने, न्यौदा में से इस मन्त्र को ले करके, न्यौदा की प्रतिभा मानो देखो, उन्होंने प्रतिभाषित की। और उन्होंने कहा बहुत प्रियतम, विचार विनिमय करो, तो बेटा! करते हुए यह सिद्ध हुआ कि हम मानो एक बिन्दु में जो चित्र है, उसे दृष्टिपात करना चाहते हैं।

बिन्दु में मानव रचना

तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि ब्रह्मचारी सुकेता और शबरी और देखो, कुम्भकरण इत्यादि विद्यमान हो करके, हिमालय की कन्दराओं में इस वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करने लगे, जब वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन चलता रहा, मानो क्रियाकलाप होता रहा, तो एक वर्ष के पश्चात हम यह जान पाए, कि मानव के एक ही बिन्दु में नहीं है, मानो एक एक रक्त के बिन्दु में, एक एक चित्र उस मानव का विद्यमान है। मानो देखो, उसके ऊपर हमने यन्त्रों का निर्माण किया और जो यन्त्र तुम्हें दृष्टिपात आ

रहा है भगवन! इस यन्त्र को हमने जाना, तो मानो देखो, उस यन्त्र में, एक रक्त का बिन्दु, हमने प्रवेश किया और एक रक्त के बिन्दु प्रवेश करने से, जिस मानव का रक्त का बिन्दु था, उस मानव का साक्षात्कार यन्त्र में चित्र, हमें दृष्टिपात अपने लगा। तो मानो इससे हमें यह सिद्ध हो गया क्या, एक बिन्दु में, मानव की रचना विद्यमान है, इतना परमाणुवाद विद्यमान है, जिससे मानव की रचना हो जाए। मानव के शरीर के आकार की प्रतिभा, प्रायः दृष्टिपात आती रहती है।

महर्षि भारद्वाज के यन्त्र

तो मानो देखो, इस प्रकार जब मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यन्त्रों को दृष्टिपात कराया, तो मानो देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने, अपना एक रक्त का बिन्दु, उस यन्त्र में प्रवेश किया और यन्त्र में जैसे ही रक्त का बिन्दु पहुँचा, तो मुनिवरों! देखो, उसी रक्त के बिन्दु से, एक गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज का चित्र मानो देखो, उस रक्त के बिन्दु से मानो देखो, उन्हें दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा कि महाराज! एक तुम्हारा ही रक्त का बिन्दु नहीं, परन्तु यहाँ जो एक एक बारह बारह वर्षों तक देखो, वस्त्र पर लगा हुआ, रक्त का बिन्दु है, चाहे वह संसार में नहीं है प्राणी, चाहे सौ वर्ष क्या, मानो देखो, परम्परा का एक बिन्दु क्यों न हो, उस बिन्दु का भी चित्र, उस मेरे यन्त्र में दृष्टिपात आएगा। मैं तुम्हें दृष्टिपात कराऊँगा भगवन! मेरे प्यारे! देखो, कहीं भारद्वाज मुनि महाराज देखो, बटुक मुनि महाराज इत्यादियों ने इस वाक के ऊपर बहुत गम्भीरता से मनन और चिन्तन किया तो महर्षि बटुक मुनि महाराज ने जब इस वेदमन्त्र की न्यौदा में से वर्णन कराया तो मानो देखो, वह भ्रमण अब्रहे मानो उनके कहीं पितामह और पितामह के भी महपिता मानो देखो, ऐसा कहीं उन्होंने दृष्टिपात कराया। क्या मानो ब्रह्मवाच ब्रहे लोकाम् मेरे जो अस्सीवें महापिता, अस्सीवें मानो देखो, अस्सी वंशलज समाप्त

हो गएं और उनका कहीं एक मानो देखो, पितर और उनके देखो, वहाँ उनके गृहां वाचनालय में क्या, मुनिवरों! देखो, उनकी मानो प्रीति असुतो में मुनिवरों! देखो, उनके कहीं वस्त्र विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, उस वस्त्र पर उनके अस्सीवें महापिता सोमवृत्तिका एक ऋषि हुए थे और वे अध्ययन करते थे और मनन करते थे मानो देखो, वह भ्रमण करते हुए सम्भू ब्रह्मा मानो देखो, उनका वस्त्र कहीं रक्त के बिन्दु से, कहीं व्रथित हो गया, मानो उसी रक्त के बिन्दु, से वह वस्त्र जो विद्यमान था तो मुनिवरों! देखो, महर्षि बटुक मुनि महाराज ने उस रक्त के बिन्दु वाला वस्त्र, मेरे समीप लाए मानो देखो, जिस वस्त्र का आयु मानो देखो, लगभग दो सौ पिच्चासी वर्ष का आयु वाला वस्त्र था। जो मानो देखो, उनके वाचनालय में, उनके पिता महापिताओं के जहाँ संग्रहालय में मानो वह वस्त्र था, उस वस्त्र पर रक्त का बिन्दु लगा हुआ था, तो जैसे यन्त्र में, वह वस्त्र मानो ओत प्रोत कराया तो मानो देखो, उसमें उनके अस्सीवें महापिता का चित्र मुनिवरों! देखो, यन्त्र में दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने कहा कि मुझे एक समय महर्षि बटुक मुनि महाराज ने मुझे मानो देखो, ला करके यह वस्त्र मेरे संग्रहालय में नियुक्त कर दिया तो मैं यहाँ इस यन्त्र को मानो दृष्टिपात उसमें देखो, उनके चित्र दृष्टिपात कराता रहता हूँ।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा कि इसी प्रकार मेरे याज्ञिक यत्रों को जान करके, परमाणुवाद को जान करके मानो मैंने यन्त्रों का निर्माण किया है। एक मानव है, उस मानव के शब्दों की प्रतिभा मानो अन्तरिक्ष में विद्यमान है और वह आश्रम में, जिस स्थली पर रहता है, वहाँ भी वह विद्यमान रहती है परन्तु देखो, जब भी किसी भी काल में देखो, उस मानव की मृत्यु हो जाए, तब उस मानव का प्रस्थान हो जाए, तो उनके विचारों के चित्रों को मानो मेरे यहाँ एक यत्र है, उनके विचारों के साथ, उनके चित्र लिए जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब गाड़ीवान रेवक

इत्यादि मुनियों को वैशम्पायन इत्यादि मुनियों को जब मुनिवरों! देखो, उन्होंने वैज्ञानिक यंत्रालय में उन्हें भ्रमण कराया उनकी विशेषता को प्रगट किया तो उन्होंने कहा कि तुमने यत्र दृष्टिपात किया।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, वह, यन्त्रशाला में ले गये, जहाँ वाहनशाला थी। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा मेरे यहाँ एक यह यन्त्र है। यन्त्र को मानो दृष्टिपात, इसमें मानो देखो, इनके चित्र दृष्टिपात कराता रहता हूँ।

तो विचार विनिमय में क्या, मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा क्या इसी प्रकार मैंने याज्ञिक यन्त्रों को जान करके परमाणुवाद को जान करके मानो मैंने इन यन्त्रों का निर्माण किया है एक मानव है उस मानव के शब्दों की प्रतिभा मानो अन्तरिक्ष में विद्यमान है, पर वह आश्रम में, जिस स्थिली पर रहता है वहाँ भी तो विद्यमान रहती है परन्तु देखो, जब भी हम किसी भी काल में देखो, उस मानव की मृत्यु हो जाए, या उस मानव का प्रस्थान हो जाए तो उनके विचारों के चित्रों को मानो मेरे यहाँ एक यन्त्र है उनके विचारों के साथ उनके चित्र लिए जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब गाड़ीवान रेवक इत्यादि मुनियों को वैशम्पायन इत्यादि मुनियों को जब मुनिवरों! देखो, उन्होंने वैज्ञानिक यंत्रालय में उन्हें भ्रमण कराया, तो उनकी विशेषता को प्रगट किया। उन्होंने कहा क्या अब तक यही तुमने दृष्टिपात किया। मेरे प्यारे! वह उसे यत्र शब्दों में ले गएं जहाँ वाहनशाला थी। मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने कहा कि मेरे यहाँ ये शेष अनुप्लब्ध। ५/३/८५ स्थान अज्ञात

22 १२ ०३ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस

पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। मानो याग ही उसका आयतन माना गया है, जो उसका गृह है, मानो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा, यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है, प्रत्येक मानव इस यज्ञशाला के निकटतम विद्यमान है, और अपने सुविचारों की, सुसङ्कल्पों की बेटा! एक अपने में आहुति दे रहा है, अथवा वह याग कर रहा है। मेरी प्यारी माता भी याग कर रही है, क्योंकि प्रत्येक आभा में, उस याग का प्रदर्शन ही दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि हमारा वेदमन्त्र, परम्परागतों से ही, उस मानवीयता का दिग्दर्शन कराता रहता है, जहाँ मानव यागों के द्वारा नाना प्रकार के लोकों में गति करता रहा है। अथवा उसकी वाणी द्यौ लोक में प्रवेश करती रही है, ऐसा अनुपम मानो वह मानवीय, विचार माना गया है जिस चिन्तन को करता हुआ मानव, अपने मनस्तव को प्राप्त हो जाता है वह अपने को ही प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमारा वह अनुपम विचार इतना प्रिय होना चाहिए, जो मानो हमें प्राप्त होना है, वह स्वतः हमें ही प्राप्त होता हुआ, संसार सागर से पार हो जाएं। आज मैं विशेष विवेचना देने नही आया हूँ।

आज का हमारा प्रत्येक शब्द, मानो उस याग के सम्बन्ध में, कुछ विवेचना कर रहा है, वह जो ब्रह्म है, जो हमारा कल्याण करने वाला है, वह मानो नाना रूपों में रत्त रहने वाला है, वह सतों में रहने वाला है सत्यमयी विष्णु है हमारे यहाँ विष्णु नाम यागों का वर्णन आता रहता है। विष्णु याग की विवेचनाएं होती रहती हैं, हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियां, नाना प्रकार के निहित एक अपनी आभा में निहित होते रहते हैं, मेरे प्यारे! महानन्द जी! नाना प्रकार की प्रेरणाएं देते रहते हैं, हमारे यहाँ, परम्परागतों में नाना प्रकार की उपाधियों में मानव सुसज्जित रहा है, राष्ट्रवाद की उपाधियों के

ऊपर सुसज्जित रहा है, हमारे यहाँ इन्द्र और ब्रह्मा विष्णु इत्यादि उनकी चर्चाए आती रहती है और भी नाना ऋषियों का विचार उनका क्रियाकलाप भी हमारे समीप होता रहा है।

हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियों से, यह समाज अपने में सुसज्जित रहा है, जैसे शिव की उपाधि को प्राप्त करना है, तो मानो वह राष्ट्रवाद में विज्ञान में इतना कुशल होना चाहिए, वह इतना उदासीन होना चाहिए, अपनी प्रजा को महानता की वेदी पर ले जाए, और वह शिव कल्याण कर्ता परमपिता परमात्मा का नामोकरण भी है परन्तु राजा का नाम भी शिव कहलाता है। हमारे यहाँ शिव नाम नाना रूपों में बेटा! शिव सूर्य को भी कहते हैं। जो अपने में बेटा! विष को अपने में धारण करता है। मानो पृथ्वी को हमारे यहां, शक्ति रूपों में परणित की गई है मानो वह विष उगलती है, तो सूर्य अपने में पान कर लेता है, और विज्ञानां भविते देवाम् जो विज्ञान है, तो शिव उसके ऊपर आरूढ़ हो जाते हैं।

इसी प्रकार जो विष्णु के पर्यायवाची शब्द हैं, विष्णु वास्तव में माता को कहा जाता है विष्णु परमात्मा है, विष्णु आत्मा है, विष्णु सूर्य है, ये नाना रूपों में विष्णु पर्यायवाची शब्द है परन्तु उपाधियां भी बनी हुई हैं, उस राजा का नाम विष्णु कहलाता है, जो चतुर्भुज वाला नियमों का पालन करने वाला है और राजा के राष्ट्र में महानता का प्रदर्शन होता है। तो उस राजा का नाम विष्णु कहलाता है, तो विष्णु की उपाधियां मानी जाती हैं। जो मानो देखो, सत्य को ले करके, रजोगुण, तमोगुण में परणित न होने वाला राजा होता है, वह विष्णु कहलाता है, विष्णु है, मानो वह विष्णु कहलाता है।

इसीलिए हमारे यहाँ मैंने ब्रह्म उपाधि को इससे पूर्व कालों में प्रगट किया है। ब्रह्मा जो उत्पति के मूल में लगा हुआ है, ब्रह्मा वेद के पठन पाठन और वेद की प्रतिभा में जो रत्त रहने वाला हो उसका नामोकरण हमारे यहाँ ब्रह्मा कहा

जाता है। जो चतुर्भुज कहलाता है जो मानो चतुर्मुखी कहलाता है। चतुर्मुखी का अभिप्राय यह है क्या चारों वेदों को अङ्गों उपांगो से जानने वाला हो। जो चारों वेदों को अङ्गों उपांगों से जानने वाला हो, उसका नाम ब्रह्मा कहलाता है मानो देखो, विष्णु तो सत्य में ही रहता है और वह उत्पति के नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाला है, वास्तव में ब्रह्मा नाम परमपिता परमात्मा का है। जो ब्रह्मा वाचप्र्हे लोकाम् मानो वह ब्रह्म है। वही मानो वेदा अमृत का पान करने वाला है, वह प्रकाश में रत्त कराने वाला है, परन्तु इसी प्रकार हमारे यहां वशिष्ठ की उपाधियों से, यह विज्ञान आध्यात्मिकवाद मानो इससे सुशोभित रहा है। जैसे हमारे यहाँ पुत्रेष्टि याग और वृष्टि याग मे जो महान पारायण हो, वह श्रृङ्गी की उपाधि को प्राप्त होता रहा है परन्तु जो ब्रह्मवेत्ता हो, ब्रह्मनिष्ठ हो मानो उसके ऊपर उसका अधिपथ्य रहता है तो वह वशिष्ठ कहलाता है। तो यह जो भिन्न प्रकार की उपाधियों का जो वर्णन हमारे यहाँ प्रायः आता रहता है हमारे यहाँ और भी जैसे विश्वा रूपों में मानो देखो, एक उपाधि कही जाती है, जैसे इन्द्र है, एक सौ एक अश्वमेध याग करने के पश्चात, वह इन्द्र की उपाधि को प्राप्त है। इससे वह सुशोभित होता है, परन्तु देखो, यहां नाना प्रकार की उपाधियों में यह परणित होने वाला समाज यह परणित होने वाला राष्ट्रवाद, अपने में महान और पवित्रता का दिग्दर्शन करता रहा है तो इसीलिए मैं आज उपाधियों के सम्बन्ध में, विशेष चर्चा, अपनी देना नहीं चाहता हूँ, मेरे प्यारे! महानन्द जी! भी दो शब्द उच्चारण करेंगे, परन्तु आज का अभिप्राय हमारा क्या है, कि यह आयु का जितना भेदन है, हमारे यहाँ अनुष्ठानों की पद्धतियाँ, परम्परागतों से चला करती हैं। हमारे यहाँ साधको में परम्परागतों से ऐसा माना गया है पुत्रों! क्या हमारे यहाँ अनुष्ठान की प्रवृत्तियां होती चली आई। जैसे कागभुषुण्ड जी के जीवन में, और माता अरूण्धति और वशिष्ठ के जीवन में, माता पार्वती और शिव के जीवन में ब्रह्मा

और मानो देखो, सरस्वती के सम्बन्ध में, विष्णु और लक्ष्मी के सम्बन्ध में, यह मानो देखो, अनुष्ठानित कहलाए गए हैं हमारे यहाँ विष्णु भी अनुष्ठान करते रहे हैं अनुष्ठान किसे कहा जाता है मैं जो आयु की दीर्घता के लिए अनुष्ठान करते हैं, बारह बारह वर्षों तक, यागों का चयन करना, साकल्य को एकत्रित करना, और उसमें मानो देखो, वायु से आहार का सेवन करना, या आपो से आहार का समन्वय करना अपने में धारण करना और इससे मानो देखो, प्राण की प्रतिक्रियाओं में निश्चित हो जाना, यह इससे मानव का आयु दीर्घ हो जाता है।

जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें निर्णय देते हुए महाराज च्यवन ऋषि के सम्बन्ध में कहा था महर्षि च्यवन ऋषि के सम्बन्ध में जो प्रायः अनुष्ठान करते रहते थे मानो देखो, लगभग कागभुषुण्ड जी ने निन्यानवे अनुष्ठान किए और वह अनुष्ठान कैसे होते हैं? मानो देखो, याग में आहुति दे रहे हैं मानो देखो, आहार मानो देखो, शीतली प्राणायाम और खेचरी मुद्रा से वह अपने जीवन के निर्वाह के लिए, परमाणुओं को वायुमण्डल से सिंचन करते रहते थे, तो वह जब सिंचन करते, तो उसके प्राण को एक दूसरे में निरोध करना प्राण को एक दूसरें में निरोध करते रहते थे याग करना प्राणों का निरोध करना और निरोध करके ही मानो उनकी आयु में दीर्घता बलवती हो जाती है। तो ऐसा वाक वैदिक साहित्य में क्या, क्रियाकलापों में प्रायः दृष्टिपात आता रहा है। प्राणों के निदान की चर्चाएं, हमने बहुत पुरातन काल में, हमने विवेचनाएं की, क्या हमारे शरीर में दस प्राण हैं जो आयु को दीर्घता में चाहता है, तो मानो देखो, सबसे प्रथम वह नाग प्राण से प्रारम्भ होती है, उसकी प्रतिक्रिया नाग प्राण को देवदत में मानो समन्वय करता है और देवदत को धनञ्जय में तत्पर कर देता है, और धनञ्जय को कृकल में और कृकल को कुरू में मानो यह पांच प्राण उप कहलाते हैं, इनका एक दूसरें से मिलान हो गया, मानो इसी को ले करके चुरू को, हम समान में और समान

को व्यान में और व्यान को अपान में और अपान को उदान में मानो उदान में ले जा करके, वह दस प्राणो का एक समूह बन गया एक प्राण के दस भाग हैं, यह सृष्टि के मानो देखो, रूप में यह प्राण मानो इस ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है, जैसे शरीर का सूत्र है, इसी प्रकार अपने में मानो देखो, रत्त होना और जीवन की धारा को बलवती बनाना, यह हमारा एक नृत्त बन जाता है, मैंने पुरातन काल में भी इनकी चर्चाएं की है, आज भी मैं तुम्हे परिचय करा रहा हूँ, तो मानो देखो, उसको निरोध करना, अनुष्ठान करना, तो इस प्रकार के निन्यानवें बारह बारह वर्ष के अनुष्ठान कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि ने किए थे मानो उनका आयु दीर्घ हो गया उनका आयु कई सौं वर्षों का बन गया परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विवेचना नही, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! अपने दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् शमी वर्णनं ब्रह्मा गायन्त्वा रथप्रजाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, बहुत ऊँचे विज्ञान की चर्चा कर रहे थे, बहुत ऊँचे अनुष्ठान की चर्चा कर रहे थे, जब हम पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान होते, तो यह प्रायः हमें इस प्रकार के अनुष्ठान कराते रहे हैं, अब उन अनुष्ठानों में मानव की बुद्धि का जो मूल है, मानो जो नृतिका हो रही है, उसको वह स्पष्टीकरण हो जाता है, उसका स्पष्टीकरण जहाँ हुआ, बुद्धि के तन्तु में सूक्ष्मवाद में प्रवेश कर जाता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी बहुत ऊर्ध्वा में वार्ता प्रगट कर रहे थे, परन्तु जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहाँ यह मैं अपने दृष्टिपात कर रहा था, एक याग का आयोजन याग को सम्पन्न किया गया, यह भी अनुष्ठान है, यह भी सुगन्ध के लिए अनुष्ठान है, परन्तु मैं सदैव यज्ञमान के साथ रहता हूँ, मैं परम्परागतों से यह उच्चारण करता चला आ रहा हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तो जीवन तेरे जीवन की धारा पवित्र बन जाए तेरा जीवन एक अमृता में

परणित होता हुआ अपने में सुखद को अनुभव करता रह ऐसा मानव सदैव एक मन्तव्य रहता है। मेरी एक मानो कामना रहती है, एक समय था जब पूज्यपाद गुरुदेव जैसे महापुरूषों को कजली वनों से लाया जाता, और कजली वनों से ला करके यज्ञशाला में प्रवेश कराया जाता, परन्तु वह समय दूरी चला गया, आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में तो कोई वाक उच्चारण करने वाला नही परन्तु यह कि हे यज्ञमान! तेरे गृह का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, जहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है, वह माता है, वह माता बन करके मानव के समीप आती है, परन्तु वह शरीर बन करके समीप आती है, इसीलिए याग हमारे यहाँ एक मानो देखो, अनुष्ठान ही नही है, यह नाना रूपों में इसका चलन, वैदिक साहित्य में रहा है। हमारे लिए क्रियात्मक रहा है, परन्तु मध्यकालीन कुछ ऐसा काल हुआ जिस काल में यागों को अभ्रष्टता हो गई, यागों को यह जान करके ही यह समाज नाना प्रकार की रूढ़ियों में परणित हो गया, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई, परन्तु याग किन्ही किन्हीं रूपों में, यह समाज में रहा है। महाभारत काल के पश्चात, याग को केवल यही स्वीकार कर लिया, कि बाल्य इसका जन्म हुआ, तो याग करो। उसका शुद्धिकरण हो जाएगा, गृह का शुद्धिकरण होना, यह यागों की प्रथम परम्परा मानी गई हैं परन्तु महाभारत काल के पश्चात, एक मार्ग हुआ, एक सम्प्रदाय हुआ जिसका नाम मानो जिसका नामोकरण वाममार्ग के नाम से परणित हुआ, यह माँस को भक्षण करने वाला समाज, वह सुरा और सुन्दरी में अपना विश्वसनीय बन गया, परन्तु याग को वह मुख्य स्वीकार करते हुए, याग में मानो देखो, माँसों की आहुति देना, गो मेध याग में गऊ की आहुति, अजा मेध में बकरी की आहुति, अश्वमेध याग में घोड़े की आहुति, परन्तु उसमें इसी प्रकार देखो, नरमेध में नर की आहुति, भिन्न भिन्न प्रकार के माँसों का चलन हुआ, परन्तु यह नही विचारा कि यह तुम क्या

कर रहे हो। जब मैं वह काल, उनका क्रियाकलाप स्मरण आता है तो हृदय दुःखित होता है। और आधुनिक काल में वर्तमान में भी वह पर्वतीय क्षेत्रों में कही कही प्राप्त हो जाता है। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ क्या यह समाज क्या बन गया? वाममार्ग ने यह विचारा, क्या अग्नि में माँसों की आहुति देने से, दो वेदी बनाने का चलन हुआ, वाममार्ग की काल की प्रवृत्तियों का चलन हुआ एक याग हो रहा है एक वेदी में देवताओं का पूजन हो रहा है और देवताओं का पूजन देवपूजा तो मानो सर्वत्र देव पूजा मानी गई है। परन्तु उसमें मानो देखो, देवताओं का आह्वान करना और उसमें देवताओं के देव को मानो अर्पित करना, मानो देखो, उसको पाण्डितव बुद्धिमान ने रह करके याग को और देवपूजा को स्वीकार कर लिया। परन्तु देखो, यह कितना एक मानो समाज के लिए, अज्ञानता का एक प्रदर्शन हुआ, परन्तु देखो, वह एक वेदी की दो वेदी थी, क्या यह अहिंसा में है, और यह हिंसा में है। हिंसा में अग्न्याधान में आहुति देना, पशु बलि देना, परन्तु देखो, यह देवताओं का पूजन है, अरे, भोले प्राणियों! परन्तु देखो, इस प्रकार का चलन, जब हुआ, तो यह समय समय पर आ करके देखो, परमपिता परमात्मा ने अपनी सत्ता अपनी ऊर्ज्वा के द्वार मानो देखो, महान पुरूषों को बुलाते रहें वह महापुरूष आ आ करके अपना कर्म कर जाते हैं अपनी क्रियाओं में रत्त हो जाते हैं मानो देखो, यागों का पुनः से उत्थान हो जाता है। पुनः से यागों का जन्म हो जाता है, उस जन्म की प्रतिभा जैसी प्रत्येक गृह में वह चलन देखो, पूर्व काल से ही पुरातन काल से मानो वह चला आ रहा है, मध्य काल में उसकी प्रतिक्रियाएं, अपभ्रंश हो गई।

परिणाम यह कि मेरे वाक्यों को उच्चारण करने का अभिप्राय यह है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई काल में, यह परिचय कराया आज भी मैं यह परिचय करा रहा हूँ, क्या यह समाज मानो देखो, किस प्रकार मध्य काल बना,

महाभारत काल के पश्चात राष्ट्रीय पद्धति और देखो, रूढ़िवाद इन्ही वाक्यों से वाममार्ग से रूढ़ियों का निकास हो गया, एक रूढ़ि तो मानो बौद्ध के रूप में परणित हो गई, एक रूढ़ि महावीर के रूप में प्रकट हो गई और मानो देखो, उसके पश्चात और नाना प्रकार की अज्ञानता में रूढ़ि पनपती रही, जो रूढ़ि बनी वही मानो राष्ट्र के लिए मानो घातक बन गई, वही रूढ़ि राष्ट्र के लिए मानो घातक बन गई, इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता हूँ, वाक उच्चारण करता रहता हूँ, क्या रूढ़ि नही होनी चाहिए। राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता, तो रूढ़ियाँ नही होनी चाहिए, यह रूढ़ि राष्ट्र के लिए घातक बन करके रहती है। मानो धर्म के नामों पर रूढ़ि हैं, धर्म एकोकी वचन हैं, और धर्म के नामों पर रूढ़ि हैं केवल देखो, वह राष्ट्रवाद को नष्ट करने के लिए, मानव के जीवन का अस्त व्यस्त करने के लिए, इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा है, कि यह रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिएं, यह धर्म के नामों पर जो रूढ़ियाँ हैं, एक ही धर्म है उसको स्वीकार करो। मानो देखो, उसको अपने में शास्त्रार्थ से शास्त्रीय दृष्टि से उसको अपने में ग्रहण करने का प्रयास करो। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैंने कई काल में वर्णन कराया। क्या यह समाज बहुत दूरी चला गया है, धर्म से, परन्तु जब मैं रूढ़िवाद की चर्चा करता हूँ, तो मानो उसमें मानव प्रतियों में परणित हो जाता है एक रूढ़ि, दो वेदियों का निर्माण होना, यह एक हिंसा में और अहिंसा में परणित हुई, वाममार्ग ने यह क्रियाकलाप किया।

देवानुष्ठान

इससे पूर्व काल में, जब याग ही, जब याग ही इस संसार मे देवपूजा कहलाती है, जैसे एक समय प्रातःकाल में, माता अरूण्धति याग कर रही थी, तो महर्षि श्वेतकेतु वहाँ पंहुचे, तो श्वेतकेतु ने कहा, मातेश्वरी क्या कर रही हो? उन्होंने कहा देव पूजा कर रही हूँ। ब्रह्मचारियों के समीप, देवपूजा हो

रही है, विद्यालयों में प्रातःकालीन, जब अग्न्याधान होता है, तो आचार्य ब्रह्मचारी मिल करके देव पूजा कर रहे हैं देवताओं को प्रसन्न कर रहे हैं, क्योंकि देवता बाह्य जगत आन्तरिक जगत में, यह देवताओं की ही गृह माना गया है, उस गृह को पवित्र बना रहे हैं, जहाँ देवता हमारी रक्षा करें, मानो देखो, इसी प्रकार यह देवपूजा के रूप में, यह अनुष्ठान कहलाता है। यह देवानुष्ठान कहलाता है। सङ्कल्प हमारे यहाँ बड़ा विचित्र रहा है समाज में बहुत सी विद्याएं तो लुप्त हो गई हैं, जिन विद्याओं आधुनिक काल के वर्तमान के प्राणी को प्रतीत भी नहीं है, कि यह विद्याएं थी। हमारे यहाँ सङ्कल्पोंमयी एक विद्या थी सङ्कल्प से आयु का भी बंटवारा किया जाता है। आयु को भी मानो देखो, विभाजन किया जाता है, आयु को हम एक दूसरें में एक दूसरे को प्रदान करते रहे हैं वह विद्याएं वह सङ्कल्प हमारे हृदयों मे हमारे मानो तपों में रहा है वह तपो में रह करके ऋषियों ने अपने में सब क्रिया में लाने का ऋषियों ने प्रयास किया। मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने निर्णय कराया पूज्यपाद गुरुदेव मानो मेरे वाक को स्वीकार भी करते रहें हैं। क्या आधुनिक वर्तमान का जो काल है बड़ा विचित्र चल रहा है परन्तु महाराभारत काल के पश्चात यह अज्ञान आया अज्ञान जब समाप्त होगा जब महापुरुष होते हैं, बुद्धिमान प्राणी होते हैं मानो देखो, सुन्दरता वहां आती है जिस काल में राजा यह विचारता है कि मेरा राष्ट्र धर्म के मर्म को जानने वाला हो मेरे राष्ट्र में दार्शनिक होने चाहिए, मेरे राष्ट्र में योगी होने चाहिए। और मेरे राष्ट्र में देखो, राष्ट्र का निर्माण करने वाले देखो, महापुरुष होने चाहिए। जिस राजा के राष्ट्र में मैंने कई काल में वर्णन कराया जिस राजा के जिस काल में मानो देखो, एक बुद्धिमान और एक मानो बुद्धिहीन दोनों का एक ही मानो देखो, समानता में राष्ट्र अपने में राष्ट्र को गति देना चाहता है वह गति आ नही वाती वह गति छिन्न भिन्न हो जाती है मानो देखो, यहाँ बुद्धिमानो से राष्ट्रों का मानो राष्ट्र

का निर्माण होना चाहिए और देखो, वशिष्ठ का निर्माण होना चाहिए जब यहाँ मानो देखो, अरे, हे भोले मानव! देखो, मूर्खों को चुनौती देने वाला तो राजा मानो मूर्ख ही होगा वह कदापि बुद्धिमान नहीं हो सकता क्योंकि बुद्धिमानो का चुनौती दिया हुआ तपों में जो राजा होता है राजा राष्ट्र को सम्पन्न बनाता है वह राष्ट्र को प्राण देता है, जैसे सशक्त धुन्नी है, जल उसे अमृत का पान करा देता है, और जल अपने में अपनी ऊर्ज्वा को देकर उसकी स्थिति को महान बना देता है इसी प्रकार जो राजा पवित्र होता है सुचरित्र होता है, महान होता है, निर्भय होता है, उसे मानो किसी का भय नहीं होता वे परमपिता परमात्मा की छत्र छाया में अपने को स्वीकार करता है तो वह राजा राष्ट्र के लिए सुखद राष्ट्र के लिए आनन्द की वृष्टि करा सकता है मैंने बहुत पुरातन काल में कहा कि यह रूढियां समाप्त यहाँ कही मोहम्मद के मानने वाले हैं, कही ईसा के मानने वाले हैं, और भी नाना देखो, रूढ़ियाँ पनप रही है, वह रूढ़िया मानो वैदिकता के आगे वेद की आभा में आ जानी चाहिए रूढ़िवाद अज्ञान समाप्त होना चाहिए और वह रूढ़ि जब तक, जीवित रहेंगी, मानो देखो, राष्ट्र के हृदय मे शान्ति की स्थापना नही हो सकती, वह राष्ट्र अपने में अधूरेपन में परणित रहा है। आज से नही, सदियों समाप्त हो गई हैं। बहुत सा काल समाप्त हो गया है, इसी नृत्त को, यह नृत्त ही होता रहा है। परन्तु मैं विशेष चर्चा देना नही चाहता हूँ, मैं केवल अपने पूज्यपाद गुरूदेव को अपना व्यक्तव्य क्या अपना विचार जो मेरे हृदय में जो पनपते रहते हैं उन विचारों को मैं उद्गीत गाता रहता हूँ मेरा स्वभाव बन गया है मेरा स्वभाव ही नही बना सत्य उच्चारण करने का मेरा नृत्त बन गया है परन्तु देखो, विचार क्या है, राष्ट्र को ऊँचा बनाना यागों का चलन करना जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का यह भोला भोला अमृतो ब्रह्मवाचा शरीराणां अप्रति लोकां वचेकृतां यागां सने अस्तु श्रद्धां वह यागों में संस्कारों का एक तारतम्य चला आ रहा है और वह

तारतम्य देखो, अपने में अद्भुत है, अनुपम है, अद्वितीय है, इसके ऊपर मैं कोई टिप्पणी नही कर सकता परन्तु विचार विनिमय यह है कि प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना, और यागों का चलन करना मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कही मानो देखो, विष्णु की व्याख्या, कही ब्रह्म की व्याख्या, कही शिव की व्याख्या, करते रहते हैं आधुनिक काल के जगत में इनको भी नाना रूपों में परणित करना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु जो जिस प्रकार जैसा है उसको ज्ञान और विवेक से उसी प्रकार दृष्टिपात करना, यह ज्ञान की कुञ्जी कहलाती है। परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई विशेष चर्चा आज प्रगट करने नही आया हूँ, विचार यह देने के लिए कि याग होने चाहिए, देव पूजा होनी चाहिए, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरे हृदय की यह कामना है। मैं सदैव अपने हृदय से यह उद्गार देता रहता हूँ, कि मानो तेरे जीवन की मानो सुविचार सुआभाओं में रत्त में होता हुआ, तू मानो इस सागर से पार होने का प्रयास कर। यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह है, क्या यह रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिए। हे राजन! तू अपने राष्ट्र से रूढ़ियों को समाप्त कर, मानवता का प्रसार हो, मानवीय विचारों की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, यह विचार और प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए, जिससे राष्ट्रीय सुगन्धि हो जाएं, राष्ट्र सुगन्धित बन करके मानो राष्ट्र एक महान बन करके शिव राज बन जाएं। वही इन्द्र राज बन करके, वह विष्णु राष्ट्र बन करके और राष्ट्रीयता का प्रसार होना चाहिए। यह मेरा विचार मानो सदैव बना रहता है, और रूढ़ियों में रूढ़ियाँ मानो अग्नि में परणित हो जानी चाहिए। और एकोकी धर्म जो मानवीय धर्म है, जो अन्तरात्मा को जो भावना देता है, जो वेद का मन्त्र कहता है, उसको ले करके मानो अपने वैदिकता के ऊपर मानो अपना व्यक्तव्य देना राष्ट्र को उनके ऊपर अपने जीवन को क्रियाकलाप में लाना यह उस राष्ट्र का कर्तव्य है।

मानो देखो, अब मैं विशेष चर्चाएं देने नही आया हूँ, यह बड़ा सौभाग्य का एक विषय है, क्या यज्ञमान का गृह और द्रव्य मानो देखो, उसका सदुपयोग होना यह मैं अपने में मानो हर्ष ध्वनि करता रहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन की सौभाग्य अखण्डता सदैव बनी रहे अब मानो इन वाक्यों को मैं अपना विराम दे रहा हूँ। मेरे पूज्यपाद को मैंने यह संक्षिप्त परिचय दिया है, अब शेष चर्चाएं मानो समय समय पर आती रहेंगी अब मैं आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! महानन्द जी ने अपने विचार प्रगट किए इनके विचारों में एक दाह है, इनके विचारों में एक विडम्बनामयी है, यह विडम्बनित रहते हैं, राष्ट्र के लिए समाज के लिए मानो इनका हृदय कितना उद्गारता में परणित हो रहा था आज हमारा यह वाक क्या कह रहा है कि हम नाना रूपों में अपने जीवन को लाने का प्रयास करें, हम जितना तप करेंगे, उतना वह हमारे यहाँ उपाधियों का चलन होगा तपों से उपाधि बनती है। नामों से उपाधि नही बनती, नामोकरण नही कहलाता, परन्तु आज का विचार यह कि महानन्द जी ने जब यज्ञमान को अपनी शुभकामना प्रगट की। हम भी अपनी शुभकामना प्रगट करें, हे यज्ञमान! तेरे जीवन की धारा पवित्र बनी रहे, यह आज का वाक्, अब समाप्त होने जा रहा है। शेष चर्चाएं उपाधियों के सम्बन्ध में इससे पूर्व काल में प्रगट करेंगे। आज का वाक समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं आभ्यां ऋषि मां ब्रीहि वाचन्नः न गतौ मा ना। ओ३म् शनु गाया मां ऋषि ग्राहाणां त्वा। ओ३म् यज्ञनं ब्रह्मा व्यापकं रथा वायु गताः। ओ३म् सर्वं भद्रा मां ब्रह्माः अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनांक १२ ०३ १९८५।

23 १३ ०३ १९८५ महर्षि वशिष्ठ

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से,

जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, मानो वह मेरा देव, दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि जिस भी मानव की आभा, परमपिता परमात्मा की महती से परणित हो जाती है, मानो उसके जीवन में एक अनुपम प्रकाश और मानवीयता का दिग्दर्शन, वह करने लगता है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा उसका वर्णन कर रहा है, क्योंकि जितनी भी ध्वनियाँ हैं, चाहे वह अन्तरिक्ष में परमाणुवादी के रूपों में, क्योंकि अन्तरिक्ष में भी एक ध्वनि होती है, जो परमाणुओं के संघर्ष के द्वारा, मानो ध्वनि की उद्बुद्धता होती रहती है जैसे मानव अपने में ध्वनित होता रहता है, परन्तु वह ध्वनि मानो अपने नौ द्वारों को शान्त करके भी ध्वनि, अपने में नतमस्तिष्क में क्या, ब्रह्मरन्ध्र में क्या, जहाँ भी वह दृष्टिपात करता है, एक ध्वनि हो रही है, और वह अपनी ध्वनि में ध्वनित हो रहा है।

सृष्टि

मेरा वह प्यारा प्रभु कितना विज्ञानमयी है क्योंकि उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितांत माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, नाना वैज्ञानिक हुए हैं, परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। मुझे स्मरण आता रहता है, हमारे यहाँ जैसे ही एक ध्वनि, एक दूसरे में ध्वनित होती रहती है, क्योंकि जितना भी यह ब्रह्माण्ड है इसका कोई सूत्र बना हुआ है। जैसे माला में, माला का रूप अपने में माला कुछ नहीं होती, अपने में माला का कोई अस्तित्व नहीं होता, क्योंकि समन्वय होते ही दो वस्तुओं के वह तृतीय शब्द की उत्पत्ति हो जाती है। जैसे हम, नाना प्रकार की माला में परणित

होते रहते हैं, मानो जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया और जब चेतना और जड़वत दोनों का समन्वय हुआ, तो एक तीसरे शब्द की उत्पत्ति हो गई, उसका नाम सृष्टि कहलाता है। सृष्टि अपने में कोई वस्तु नहीं है, परन्तु वह केवल जड़ और चेतन के समन्वय से एक मानो एक सृष्टिरूपी शब्द का जन्म हो जाता है।

ध्वनि

इसी प्रकार जैसे माला है, माला अपने में माला नहीं है, सूत्र और मनके दोनों का जहाँ समन्वय हुआ, वह मनके सूत्र में पिरोएं गएं तो बेटा! माला का जन्म हो गया। माला अपने में माला नहीं है, इसी प्रकार यह जो प्रणव ध्वनि हो रही है, अपने में मानो देखो, दो वस्तुओं के समन्वय से, एक ध्वनि का जन्म हो जाता है। जैसे हमारे इस मानव शरीर में मानो देखो, ध्वनित हो रही है, वह ध्वनि एक एक आभा से उसका जन्म हो रहा है, जिस भी काल में तुम पहुँचो, अथवा जिस भी स्थली पर अपने विचारों को ले जाओ, वहीं तुम्हें एक मानो ध्वनि प्रतीत होगी, जैसा हमारा वेद का मन्त्र है, वेदों के मन्त्र क्या शब्दों की मानो एक झड़ी लगी हुई है और वह शब्द एक सूत्र में पिरोया हुआ है। बेटा! देव भाषा के रूप में मानो वह परणित हो जाता है।

उपाधियां

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उसी ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि बेटा! अपना विचार विनिमय करते रहते थे। अपने विचारों में मानो देखो, वह अपने में तत्पर रहते, तो विचारं ब्रहे तो बेटा! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियों में, यह समाज मानो देखो, उसी में रत्त रहा है। बहुत समय हो गया, बहुत काल हो गया, जब से बेटा! यह उपाधि वाला जगत, नाना प्रकार की उपाधियाँ मनुष्य अपने में मानो देखो, पद्धति बनाता रहता है। परभ्परागतां से बेटा! पद्धतियों की झड़ियाँ लग रही है, एक

पद्धति मानो त्रेता के काल में रही और एक पद्धति सतोयुग के काल में भी रही है और अब तक मानो द्धापर के काल तक मानो उस पद्धति का चलन रहा। मानो देखो, वह हमारे समाज में एक मानो प्रचलित रही है। ब्रह्मवेत्ता नाना मानो जैसे ब्रह्मवेत्ता इन्द्र, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और भी मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की उपाधियाँ हमारे यहाँ मानी गई है जैसे विष्णु वृत्तियाँ है मानो जैसे हमारे यहाँ एक ब्रह्मवेत्ता की उपाधि मानी जाती है। ब्रह्मवेत्ता कौन होता है? जो ब्रह्म को जानता है। मानो साधारण सी वार्ता है, संक्षिप्त परिचय देते हुए ऋषियों ने कहा कि जो ब्रह्म को जानता है, वह मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता बना करता है। वशिष्ठ मुनि महाराज के जीवन में, हमारे यहाँ वशिष्ठ मुनि एक उपाधि मानी गई, क्योंकि वशिष्ठ उपाधि लगभग मानो देखो, सतोयुग के काल से, त्रेता के काल में भी रही, और मानो देखो, वही द्वापर के काल तक मानो वह पद्धति चली आई, अब का तो मुझे वर्तमान का तो प्रतीत नहीं।

मृचि ऋषि

परन्तु यह वशिष्ठ उपाधि चली आई। परन्तु देखो, सबसे प्रथम महर्षि श्वेति हुए हैं। श्वेति के पुत्र का नाम मृचि नामक ऋषि था, तो मृचि ऋषि ने मानो तप किया और तप करने के पश्चात मानो वह तप कैसा, तप उसे कहते हैं जो ब्रह्मवेत्ता मानो देखो, इस भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश कर जाएं। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानो मृचि ऋषि ने तप किया और इतना गम्भीर तप किया मानो बेटा! वह पृथ्वी के गर्भ में पहुँचे, मानो कहीं सूर्य के गर्भ में पहुँचे, कहीं चन्द्रमा के गर्भ में पहुँचे बेटा! पञ्च महाभौतिक जो क्रियाकलाप हो रहा है जड़वत में, उसके मानो गर्भ में जाने का उन्होंने सदैव प्रयास किया वे उसके गर्भ में पहुँचे और गर्भ में जाने के पश्चात्, उनके गुणों को जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! भौतिक विज्ञान को उन्होंने इतना तन्मय होकर के

जाना।

भौतिक विज्ञान

मुनिवरों! मानो देखो, जब तक मानव भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके आध्यात्मिवाद में नहीं जा पाता तब तक बेटा! ऋषि उपाधि उसे प्राप्त नहीं होती। क्योंकि भौतिक विज्ञान किसे कहते हैं? बेटा! अणु और परमाणु में रत्त हो जाता है, जैसे महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ भी रहा है। भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! नाना ऋषिवर मानो देखो, अपने में परमाणुवाद को जानते रहते थे और जानते जानते वे अपने में देखो, आभा में रत्त हो जाते। क्योंकि हमारे मानव शरीर में जैसे पांच ज्ञानेन्द्रियाँ कहलाती हैं और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के विज्ञान को जानना ही भौतिकवाद कहलाता है, यही भौतिकवाद है। क्योंकि इन पाँचों इन्द्रियों में पञ्च महाभूतों के रूप विद्यमान रहते हैं। मानो देखो, वह जो गन्धं ब्रह्मे वाचा देखो, स्वाहा मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि पाँच ज्ञानेन्द्रियों को जानना और पाँच इन्द्रियों के अन्तिम चरण में पहुँच जाना और अन्त में बेटा! मौन हो जाना, इन्हीं इन्द्रियों के विषयों को जानते जानते मानव मौन हो जाता है तो जिस समय मौन हो जाता है तो वहाँ तक मुनिवरों! देखो, भौतिकवाद कहलाता है और जब मौन हो करके, उनका चिन्तन केवल देखो, प्रज्ञा में क्या, मेधा में क्या, मानो देखो, इसकी आभा में रत्त हो करके और वह मौन हो करके अपने में यह चिन्तन करने लगता है, क्या यह जो जगत बड़ा अनन्तमयी है। यह जगत जब अनन्तमयी की घोषणा करता है अपने मुखारबिन्द से, तो उससे बेटा! यह सिद्ध हो गया क्या वह अपने में मानो भौतिकवादी, भौतिकवाद से पार हो गया है भौतिकवाद से उपराम हो गया है, उपराम होते ही मेरे प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर गया।

ब्रह्म का आयतन

तो मुनिवरों! देखो, वह मानव मुनिवरों! ब्रह्मवेत्ता बनता

है। अब ब्रह्म को मुनिवरों! देखो, उन सब तरंगों में तरंगित होता हुआ, अथवा ब्रह्म का, यह ब्रह्माण्ड आयतन माना गया है। हमारे यहाँ जितनी भी विज्ञान की तरंगें हैं जैसे परमाणुवाद है, परमाणु को अपने में ही विभाजन करता रहा है जैसे अग्नि मानो नाना पदार्थों का विभाजन कर देती है, इसी प्रकार मानव के शरीर में, जब प्राण और मन दोनों की ध्वनि मानो एक स्वर हो जाती है। तो बेटा! यह विज्ञान के स्वरूप का बेटा! विभाजन करने लगती है।

सङ्कल्पोमयी समाधि

आओ, मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नहीं आया हूँ। ऐसे वाक्यों में ले गया हूँ मैं वशिष्ठ मुनि महाराज की चर्चा कर रहा था, तो बेटा! मृचि ऋषि महाराज ने इतना भयंकर मानो तप किया, अनुष्ठान किया। इस संसार को जानने के लिए, मैं कई समय से बेटा! अनुष्ठान की चर्चा कर रहा हूँ। अनुष्ठान की विवेचना में हम लगे हुए हैं और यह विचारते रहते हैं कि अनुष्ठान क्या कहलाता है, जैसा बेटा! देखो, हमारे यहाँ, अनुष्ठान में देखो, महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी भी लगे रहते थे मानो उसमें संलग्न रहते। बारह वर्ष का अनुष्ठान किया। मानो देखो, अनुष्ठान कई प्रकार के होते है। याग भी एक अनुष्ठान कहलाता है। परन्तु एक अनुष्ठान वह कहलाता है, जिस अनुष्ठान में लग करके बेटा! सङ्कल्पोमयी जगत को एकत्रित करते हुए वह प्राण सूत्र को, प्राण सूत्र में बेटा! अपने सङ्कल्प को कटिबद्ध कर देते हैं और वह मानो देखो, मन और प्राण दोनों का एक समावेश करके, केवल उसे सङ्कल्पोमयी समाधि कहते हैं।

सङ्कल्पमयी समाधि उसे कहते हैं जो मेरे प्यारे! बारह बारह वर्षों के अनुष्ठान करने लगते हैं। बारह बारह वर्षों के मानो देखो, वह अनुष्ठान क्या, समाधिष्ठ, वह समाधिष्ट हो जाते हैं और समाधिष्ट में परणित हो करके, अपनी आयु को दीर्घ बन लेते हैं। मानो देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या,

मृचि ऋषि ने मेरे प्यारे! देखो, अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा विद्यमान हो करके गुरु का नाम कोलित ऋषि था, और कोलित ऋषि के द्वारा मानो जब वह अध्ययन करते थे, तो मेरे प्यारे! देखो, दर्शनों का अध्ययन, वह सङ्कल्पोमयी समाधि में परणित हो जाते। तो सङ्कल्पमयी, बारह बारह वर्षों के अनुष्ठान किए जाते हैं। सङ्कल्प किए जाते हैं, और मुनिवरों! देखो, वह द्वितीय आ करके, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, क्या इंगला, पिंगला, सुषुम्णा आ करके वह प्रकाश की अव्रहित बन करके मेरे प्यारे! वह एक अनुष्ठान लगा करता है। तो मुनिवरों! देखो, उससे वायु दीर्घ हो जाती है, बलवती हो जाती है। आयु के दीर्घ होने पर, मानव अपने में अनुभव करता रहता है। कि अब मेरी आयु दीर्घ बन गई है।

वशिष्ठ मुनि

मेरे पुत्रों! देखो, यहाँ मृचि की वार्ता चल रही थी तो उन्होंने लगभग मुनिवरों! देखो, एक सौ पाँच वर्ष तक, उन्होंने तप किया और एक सौ पांच वर्ष में उन्होंने लगभग मानो चार अनुष्ठान किए। सङ्कल्पोमयी समाधि के, तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह कण कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करने लगे मानो देखो, ब्रह्म में दृष्टिपात करके स्वयं वह नम्र बन गये, क्योंकि ब्रह्मवेत्ता वह कहलाता है, जो महान, नम्र होता है, जो यह जान लेता है कि मेरी आयु का, मेरे शरीर का भी अनुष्ठान हो गया है। अनुवृत्तियाँ बन गई हैं, तो मानो देखो, वह अपने में नम्र बन करके, जैसे मुनिवरों! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के जीवन में मानो त्रेता के काल में भी वाक आया और मृचि ऋषि महाराज तो मानो देखो, ऋषियों का समाज एकत्रित होता था, मानो उस काल में राजा की उपाधि विष्णु कहलाती थी, तो राजा देखो, विष्णु विद्यमान होते, वेद के श्रोता, वेद के मानो देखो, उच्चारण करने वाले श्रोता भी, और वक्तव्य देने वाले भी सब एकत्रित हो करके बेटा! देखो, उस ब्रह्मवेत्ता का, े ब्रह्मवेत्ता की चुनौती प्रदान की जाती। मानो उसका

निर्वाचन किया जाता। तो निर्वाचन जब हुआ तो मुनिवरों! देखो, उसके ऊपर नाना प्रकार के आक्रमण होते रहते, उन आक्रमणों से, यह जानकारी होती, क्या वास्तव में यह ब्रह्मवेत्ता है तो मुनिवरों! देखो, जब वशिष्ठ मुनि महाराज, जब अपने आंगन में विद्यमान होते, तो मानो उसके शरीरांग में भी नाना प्रकार की परीक्षा का समन्वय होता है। तो उस समय नम्र रहता है, मानो देखो, ब्रह्मचारियों को ब्रह्मवेत्ता बनाता है, और द्वितीय आ करके ब्रह्मचारियों के ऊपर वह आक्रमण करता है, परन्तु वहाँ भी वह मौन रहता है। मौन का अभिप्राय वह मग्न रहता है। तो मन, कर्म, वचन से हिंसा नहीं करता। वह कर्म वचन से भी मानो देखो, अपने हृदय में, अपने शरीर में आवेश नहीं आने देता। तो मुनिवरों! देखो, वह वशिष्ठ मुनि कहलाता है। वह वशिष्ठ कहलाता है।

माता अरुण्धती

विद्यालय में मानो देखो, उनकी पत्नी अरूण्धति बन करके रहती है। अरूण्धति किसे कहा जाता है? बेटा! अरूण्धति हमारे यहाँ पर्यायवाची शब्दों में अरूण्धति नाम मानो देखो, रात्रि को भी कहा जाता है और देखो, यह अरूण्धति नाम जो अरुवश्चितं ब्रह्म लोकाम् अरूण्धति एक मण्डल भी कहलाता है। अरूण्धति मेरे प्यारे! देखो, प्रातः काल को भी अरूण्धति कहते हैं। यहाँ रात्रि का नाम भी अरूण्धति है और अरूण्धति नाम का मण्डल भी है। प्रातः काल का नाम भी अरूण्धति है। मेरे प्यारे! वह ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके, ब्रह्मचारियों के मध्य में, वशिष्ठ आश्रम में मेरे पुत्रों! देखो, जो याग कराने वाली हो, यागां भविते देवाम् ब्रह्मचारियों के मध्य में जो याग की प्रतिभा को लाने वाली हो, मानो देखो, वह माता अरूण्धति कहलाती है। वह वशिष्ठ की पत्नी है, वह वशिष्ठ की पत्नी कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज की पत्नी कौन, अरूण्धति कहलाती है, जो शास्त्रार्थ करती है, जो इतनी

ब्रह्मवेत्ता है, कि उसको संसार का मानो देखो, क्रियाकलाप भी स्मरण नहीं आता परन्तु देखो, चरणों में विद्यमान है, और दर्शनों का अध्ययन हो रहा है। ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ी जा रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि हो, दिवस हो, तो वह वशिष्ठ कहलाता है। तो यह वशिष्ठ की उपाधि कहलाती है मानो देखो, जो भी मानव इस वशिष्ठ की उपाधि को, अपने में लाना चाहता है वह मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता मेरे प्यारे! देखो, जैसा मैने तुम्हें वर्णन कराया, जब महाराज विश्वामित्र ने बेटा! तप किया, जब उन्होंने तप किया तो तपों में रत्त रहने वाले, विश्वामित्र मुनिवरों! जब भी आते तो, वह ब्रह्मवेत्ता उन्हें जहाँ ब्रह्मवेत्ता न कह करके राजर्षि कहते तो वह नाना प्रकार के अशुद्ध और उनके ब्रह्मचारियों को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए तत्पर रहते। मानो कुछ एक ब्रह्मचारी उन्होंने नष्ट भी किया। परन्तु वह नम्र रहे।

मेरे प्यारे! देखो, वह उसकी अवहेलना नहीं करते थे। उनके गुणों की प्रशंसा करते थे। एक समय बेटा! देखो, माता अरूण्धति और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! देखो, अपने आसन पर विद्यमान थे, पूर्णिमा का समय था। परन्तु महाराजा विश्वामित्र ने यह सङ्कल्प कर लिया था, जब उन्हें दिवस के समय में ब्रह्मवेत्ता न कह करके राजर्षि कहा तो वह निश्चय कर लिया कि मैं इस ब्रह्मवेत्ता को आज मृत्यु के मुखारबिन्द में परणित करूँगा। मानो देखो, पूर्णिमा का वह दिवस था, चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त था, तो मुनिवरों! ऐसा स्मरण आता रहता है कि, माता अरूण्धति ने कहा हे भगवन! यह चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है, मानो यह रसोमयी है।

महर्षि विश्वामित्र के तप का प्रकाश

चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश लेता है, और सूर्य द्यौ से प्रकाश लेता है, और द्यौ मानो देखो, अपने में सूर्य रूपेण कहलाती है। जब यह द्यौ से प्रकाश चलता है, वही सूर्य में प्रकाशित

हो जाता है। और सूर्य का प्रकाश ही चन्द्रमा में प्रकाशित हो जाता है। परन्तु देखो, क्रियाकलाप तीनों के भिन्न भिन्न माने गएं हैं। हे प्रभु! यह जो द्यौ है, यह तो स्वतः अपने में तरंगों का एक समूह कहलाता है। परन्तु यह जो सूर्य है यह एक लोक कहलाता है परन्तु देखो, यह सबको प्रकाश देता है। यह नाना प्रकार के रूपों में रत्त रहने वाला, कहीं स्वर्ण का निर्माण कर रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, परन्तु यह अपने में, प्रकाश में नाना प्रकार की ऊर्ज्वा दे करके, संसार को, इस पृथ्वी मण्डल को तो विशेषकर मानो देखो, यह तपों में युक्त करता हुआ, मानो इसको प्रकाशित करता है। इसी प्रकार, इसी का प्रकाश मानो चन्द्रमा में चला जाता है जो चन्द्रमा, भिन्न भिन्न प्रकार के रूपों वाला है, यह अमृत दे रहा है। भूमि के मानो देखो, अन्न में रस पहुँचा रहा है, कहीं वनस्पतियों में रस स्वादन हो रहा है, मानो देखो, कहीं पृथ्वी के गर्भ में, नाना प्रकार के देखो, यह अपने में दे करके, वसुन्धरा को, यह आभा में नियुक्त करा रहा है। यही चन्द्रमा है, माता के गर्भ स्थल में शिशु है, परन्तु उसे अमृत दे रहा है, यही मानो चन्द्रमा है, जो मानो समुद्रों से सोम ले करके, मानो देखो, अन्तरिक्ष में सोम की स्थिरता हो जाती है यही मानो देखो, अन्तरिक्ष में सोम की स्थिरता हो जाती है। यही मानो देखो, चन्द्रमा है जिनका मेघों से समन्वय जब विशेष हो जाता है तो वृष्टि के मूल बन जाते हैं, चन्द्रमा है जो मानो देखो, भगवन! यह आज सम्पन्न कलाओं से युक्त हो करके यह मानो देखो, समुद्रों से सोम को ले करके हम सबको देखो, वृष्टि के रूप में क्या, मानो यह आभा के रूप में हमें नियुक्त करा रहा है। यह चन्द्रमा माता के गर्भ स्थल में, हम जैसे शिशु होते हैं परन्तु वहाँ अमृत दे रहा है, अमृत को बहा रहा है। यह कैसा अमृतमयी है।

भगवन! देखो, यह आज पूर्णिमा का चन्द्रमा कितना प्रकाशमयी है यह कितने गुणों वाला है, कितना प्रकाशवान

है? मानो भगवन! आज हम इसके प्रकाश में प्रकाशित हो रहे हैं, अपना क्रियाकलाप कर रहे हैं। भगवन! यह कैसा तपोमयी है? तो मेरे प्यारे! देखो, जब अरूण्धति ने यह कहा तो वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा देवी! यह जो प्रकाश है मानो यह दूसरों से प्रकाश लेने वाला चन्द्रमा है, सूर्य से ऊर्ज्वा लेता है और ऊर्ज्वा ले करके अमृत को देखो, जहाँ जहाँ इसका समन्वय होता है, यह इतना विशाल विचित्र मण्डल है, क्या सूर्य की किरण जैसे मण्डल पर पहुँची, तो वह शीतल बन जाती है। वह मानो देखो, नाना प्रकार के गुणों को अपने में धारण करने लगती है और वह धारण करके मानो देखो, वही किरणें हैं, वही आभा है, वही मानो देखो, कान्ति बन करके हमें अमृत देती रहती है। परन्तु देखो, यह कोई प्रकाश नहीं है। यह कोई प्रकाश नहीं है चन्द्रमा का हे देवी! जो विश्वामित्र मुनि महाराज के तप का प्रकाश है। वशिष्ठ मुनिमंगला व्राति देवाः वशिष्ठ ने कहा कि जो विश्वामित्र का मानो देखो, उनके तपों का प्रकाश है, यह प्रकाश तो न होने के तुल्य है।

योगी का विशाल प्रकाश

मानो जैसे योगेश्वर मानो देखो, योगेश्वर जब प्रकाश में रत्त हो जाता है तो प्रकाश देता हुआ मानो देखो, जब ब्रह्मरन्ध्र में इसका मानो देखो, समूह, प्राण और मन दोनां का तारतम्य चलता है। जब यह मूलाधार से ले करके, नाभिचक्र सहस्रार जहाँ वायु की गमनों का मानो, व्यवस्थित किया गया है और वही मानो आगे चल करके, हृदय चक्र में मानो हृदय का समन्वय हो करके, वह शून्य बिन्दु का रूप बन जाता है। इसी प्रकार, वहाँ से पुनः उत्थान हो करके जब यह कण्ठ चक्र में, उदान के साथ में मानो उदान का मिलान होते हुए प्राण से और प्राण का अपान से समन्वय होता हुआ, व्यान से और व्यान का समान से मानो देखो, जब यह घ्राण चक्र में प्रवेश करता है तो सहस्रों चन्द्रमा मानो देखो, अमृतमयी देने लगते हैं। जब यही ब्रह्मरन्ध्र में आगे गति करता है, तो सहस्रों सूर्य

मानो अगणित सूर्य प्रकाशित नहीं कर सकते। योगी का इतना विशाल प्रकाश हो जाता है कि उस प्रकाश में वह मानो रत्त हो जाते हैं, और उस प्रकाश में रत्त हो करके, वह योगेश्वर अपनी आभा में रत्त होता हुआ, मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र में ही इंगला, पिंगला, सुषुम्णा नाड़ी की कृतिका बनती है तो उस समय उसके अनुष्ठान का विच्छेद होता है।

महापुरुषों की नियमानवली

तो इसी प्रकार आज मैं तुम्हें योगियों के क्षेत्र में तो नहीं ले जा रहा हूँ परन्तु विचार यह है क्या माता अरूण्धति से वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे देवी! मानो देखो, सम्भवा देवं ब्रह्य मानो देखो, विश्वामित्र का तप है, यह इतना विशाल है, क्या गायत्राणी छन्दों के द्वारा, ब्रह्मरन्ध्र तक इसकी गतियाँ पहुँच गई हैं। मानो देखो, नृत्त कर रही है, हे देवी! देखो, यह चन्द्रमा का प्रकाश, कोई प्रकाश नहीं है। मेरे प्यारे! माता अरूण्धति बोली हे प्रभु! आप तो बड़े विचित्र हैं मानो देखो, आपके एक पुत्र का देखो, निर्धन के रूप में मानो देखो, अमिट कर दिया हे प्रभु! वह मानो देखो, आपको अशुद्ध वाक उच्चारण करते रहते है, आप उसके पश्चात भी उनकी प्रशंसा कर रहे हैं। मानो आप कैसे विचित्र पुरूष हैं? उन्होंने कहा देवत्वं भा ब्रह्म लोकां हिरण्यं रथा वाचन्नमा मानो देखो, हे देवी! धन्य है, तुम्हें, सम्भवा जो तुम उच्चारण कर रही हो, यथार्थ है। परन्तु तुम्हें यह प्रतीत है, कि महापुरूषों की एक ही नियमावली बनी हुई है परम्परागतों से, क्या मानव के गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए और अवगुणों का वहीं दमन कर देना चाहिए। यह हमारे यहाँ, परम्परागतों से है। मानो मैं विश्वामित्र के गुणों की प्रशंसा कर रहा हूँ तुम्हारे समीप वह अवगुण हैं वह जो नम्रता का न आना है वहीं मानो देखो, उनको राज का एक अङ्ग बना रहा है, राष्ट्र का जो अङ्ग है मानो वह अपने में अभिमान है। वह अभिमान को त्याग दे तो मानो देखो, वह

ब्रह्मवेत्ता के समान तो उनका तप बन गया है।

ब्रह्मऋषि विश्वामित्र

तो मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता अरूण्धति अपने वाक्यों को उन्होंने विराम दिया, एक दूसरे में वह जो वाटिका में शान्त विद्यमान थे, विश्वामित्र वह अपने मन ही मन में विचारने लगे यह तो महापुरूष हैं, कैसा विचित्र पुरुष है। मानो अपने अस्त्रों शस्त्रों को त्याग करके और वह नम्र, अश्रुपात करते हुए ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो गये, मानो देखो, उन्होंने कहा हे राजब्ब्रहे आईए, आप तो ब्रह्मर्षि बन गएं हैं। मानो ब्रह्मर्षि की उपाधि प्रदान की, ब्रह्मर्षि की उपाधि वही देता है जो मानो देखो, नम्र, निरभिमानी परमपिता परमात्मा को साक्षी बनाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, महाराज विश्वामित्र ने उनके चरणों को स्पर्श किया आशीर्वाद ले करके उनके चरणों में वह विद्यमान हो गये। उन्होंने कहा प्रभु! आपने मेरे जीवन को महान बना दिया। आपके शब्दों ने मानो आपके तपे हुए शब्दों ने मेरा तप मानो उनमें निहित है। हे प्रभु! धन्य है माता अरूण्धति का और आपका दोनों का जो यह संग है मानो जो लोकों की चर्चा कर रहा है, जो मानो प्रभु का वर्णन कर रहा है। समाज के गुणों का वर्णन कर रहा है। यह प्रभु मुझे ब्रह्मवेत्ता की उपाधि को दिला रहा है। आपको धन्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह असुतं ब्रह्मे उनके चरणों में रहे। परन्तु वशिष्ठ मुनि बोले हे ऋषि! अब तुम चाहते क्या हो? तो उन्होंने कहा प्रभु! मैं कुछ नहीं चाहता, जो मेरा आप बनाना चाहते थे वह मानो मैं बन गया हूँ भगवन! मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तुम्हारी कोई इच्छा हो, उन्होंने कहा मेरी कोई इच्छा नहीं। आपने मुझे, मेरा जीवन धन्य हो गया है। हे प्रभु! मेरा तो स्वर्ण बन गया है।

मानवीयता पर गौरव

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या यह मानो

देखो, वशिष्ठ उपाधि कहलाती है। वह इस प्रकार के गुणों वाला, मानो पुरुष होता है, तपा हुआ होता है जो ब्रह्म को अपने में, और अपने को ब्रह्म में ही निहारता रहता है। वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह उपाधि मैंने पुनः भी कई कालों में वर्णन की है, मैं आज बेटा! इस सम्बन्ध में तो कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ क्या प्रत्येक मानव को अपनी मानवीयता के ऊपर गौरव रहना चाहिए और मानवता के ऊपर चिन्तन करना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभु से समन्वय होता है, प्रभु की एक महानता को मानो देखो, उसके गुणों का वर्णन प्रत्येक मानव करता रहता है। क्योंकि उसी को निहारना हमारा कर्तव्य है, हमारे यहाँ देखो, राष्ट्रीयता में भी उपाधियाँ मानी गई हैं। हमारे यहाँ जैसे इन्द्र और शिव हैं और विष्णु यह उपाधियों के स्रोत कहलाते हैं, जिनकी चर्चाएँ मेरे प्यारे! मैं कल प्रगट करूँगा।

शृङ्गी ऋषि

आज का विचार हमारा क्या कह रहा है उपाधियों के संग हमारे यहाँ देखो, जो याग करने वाले पुरुष होते हैं, जैसे हमारे यहाँ पुत्रेष्टि याग और वृष्टि याग और वाजेपयी याग, देखो, अग्निष्टोम याग जो चार याग कराने वाला हो उसको शृङ्गी की उपाधि प्राप्त होती है। मानो देखो, जो गृतियों में रमण कराने वाला जो राजा मानो देखो, हिमालय के तुल्य जिसके ऊर्ध्वा में विचार रहते हो, ज्ञान और विज्ञान में पारायण रहते हैं और जो मानो स्वतः अपना कला कौशल करके, अपने उदर की पूर्ति करते है और राष्ट्र का क्रियाकलाप करते हैं। मानो देखो, जैसे हिमालय, शिव मानो ऊर्ध्वा में रहता है। ऐसा जो राजा होता है, उसको शिव कहा जाता है। मानो देखो, जो इन्द्र एक सौ एक मानो अश्वमेध याग कर लेता है। एक सौ एक अश्वमेध याग करने वाले को हमारे यहाँ इन्द्र की

उपाधि प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार यह उपाधियाँ मानी गई हैं इन उपाधियों का जो स्रोत है, मानव के और समाज के जीवन से मानो घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है जिसकी चर्चाएं मेरे पुत्रों! मैं कल प्रगट करूँगा।

जिस राजा के राष्ट्र में, चार प्रकार के नियम होते हैं मानो चरित्र और देखो, भाषा कृतियों में रत्त रहने वाली हो, देखो, चरित्र और अनुशासन रूपां ब्रह्मे वाचा मेरे प्यारे! वेद ध्वनि का प्रसार होता हो, मानो अपनी संस्कृति का देखो, उत्थान और देखो, द्वितीय राष्ट्र का जिसकी आभा में रत्त रहने वाले हो, उस राजा का नाम विष्णु कहा जाता है। वह राजा विष्णु है, जो सत्युग के काल में यह मानो उपाधियाँ परम्परागतों से ही, रही है। पुत्रों! विचार क्या, मानो देखो, इसी प्रकार हमारे यहाँ ओर भी नाना प्रकार की उपाधियों की चर्चाएं, हम इससे पूर्व कल प्रगट करेंगे। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए यह जो उपाधियाँ हैं। यह मानव समाज के मानो जीवन से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह चर्चाएँ बेटा! हम तुम्हारे समीप करते रहेंगे। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा, इसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् देवाः ग्राहणां त्वां मानं आ पा रथं ब्रह्मभो वाचाहं म ना ओ३म् तनु गायन्त्वाः आप्यां लोकं सर्वाः ओ३म् यशश्चां गतप्रा वायु रथाः ओ३म् सर्वा गतं ब्रह्मा वांसनमाः अच्छा भगवन्! आज्ञा १३/३/८५ रामप्रस्थ कॉलोनी गाजियाबाद

24 १२ ०४ १९८५

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर

वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जा रहा था। क्योंकि जो ध्वनियों में रत्त रहने वाला है क्योंकि संसार में जितनी भी ध्वनियां हो रही हैं चाहे वह प्रत्यक्ष रुप में हो चाहे वह परोक्ष रुप में हो परन्तु यह जो ध्वनि पर ध्वनि ध्वनित हो रही है वे एक बड़ी विचित्र सी प्रतीत होती है क्योंकि उस ध्वनि के माध्यम से ही मानव अपनी मानवीयता को जानता है उसी ध्वनि को ले करके वैज्ञानिक जन मानो ध्वनियों के रुपों को ले करके उससे नाना प्रकार के प्रायः यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं तो विचार क्या हमे ध्वनि को जानना चाहिए जो मानव एक ध्वनि ध्वनित हो रही है और मानव उसके ऊपर विचार विनिमय कर रहा है आज कोई नवीन वाक नही है परम्परागतों से ही मानव इसके ऊपर अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि जो अन्तरिक्ष में ध्वनियां हो रही हैं अथवा कुछ लोकों में ध्वनियां हो रही हैं हमे उन ध्वनियों को जानना है मानो देखो विज्ञान परम्परागतों से यह विचारता रहा है क्या जो हमारे पूर्वजों के शब्द हैं और वह शब्द अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो रहे हैं वह अन्तरिक्ष में कहीं उन शब्दों को ध्वनियों को जाना जाए। जिससे हम यह जान सके क्या जो प्रभु का विज्ञान है अथवा जो वेदमन्त्र है वह यथार्थ कह रहा है या मिथ्या कह रहा है तो उससे उसका भान होता है तो विचार क्या मुनिवरों! वह जो ध्वनि अपने में ध्वनित हो रही है मानो उसे जानना है एक वैज्ञानिक अपने यन्त्रों का समन्वय करते हुए उसे जान रहा है एक भौतिक विज्ञानवेत्ता न रह करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है और आध्यात्मिकवाद में चिन्तन का उसका एक विषय बन गया है क्या मैं एक ध्वनि में ध्वनित हो जाऊं। जिस ध्वनि में ध्वनित हो करके मानव उस ध्वनि को जान सके जिस ध्वनि में मानव वह ध्वनित होना चाहता है मेरे पुत्रों देखो इस आभा में लगा हुआ प्राणी मानो अपने लघु मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है और भौतिक

विज्ञानवेत्ता भौतिकवाद में रत्त हो जाता है और भौतिकवाद के उस अणु परमाणु में रत्त हो करके अपने को ध्वनित बनाने लगता है मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में ऋषि मुनि एकत्रित हो करके और अपनी अपनी ध्वनियों को अपने में ही अनुभव करते रहे हैं पुरातन काल का एक महापुरुष है उसकी वेदमन्त्र की ध्वनि है और वह ध्वनि में ध्वनित होता हुआ द्यौ लोक में चला गया है परन्तु जब भौतिक विज्ञानवेत्ता जब किसी भी काल में एक परमाणु के ऊपर अन्वेषण करते तो वह ध्वनि उस ध्वनि में वह ध्वनित हो करके वह जानने लगता है अब मुनिवरों! देखो मैं विशेष चर्चाओं में तो तुम्हे नही ले जाऊंगा केवल यह विचार विनिमय करना है कि वह जो ध्वनि है वह मानव के श्रोत्रों में प्रवेश करके वह स्वरुप को धारण कर लेता है परन्तु बाह्य जगत आन्तरिक जगत का दोनों का समन्वय हो गया है दोनों का समन्वय हो करके बेटा! एक ध्वनि को विचित्र एक रुप उसके समीप आ जाता है वह रुप वाला शब्द बन जाता है तो विचार क्या मुनिवरों! मैं तुम्हें वेदमन्त्रों की कुछ आभा में ले जाना चाह रहा था आज बेटा! हम तुम्हे यह निर्णय दे रहे थे कि वेद हमे क्या कहता है वेद हमे किस विज्ञान के मार्ग पर ले जाता है जब वेद के ऊपर मानव अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता है तो बेटा! वेद एक पोथियों के रुप में नही एक प्रकाश के रुप में दृष्टिपात आनने लगता है और वह प्रकाश जिससे प्रकाश में बेटा! संसार का प्राण और पुनरुक्ति बेटा! पुनः सृष्टि का निर्माण हो गया आत्मा मानो चित्त के संस्कारों को ले करके शरीर को त्याग रहा है परन्तु उसी संस्कारों से माता के गर्भ में पुनः प्रविष्ट कर रहा है यह संसार बेटा! पुनरुक्तियों में निहित हो रहा है राजा बना है पुनः राजा बन गया है ऋषि बना है पुनः ऋषि बन जाता है परन्तु वह जो पुनरुक्तियां हैं यही तो मानव को अग्रणीय बनाती हैं जैसे एक साहित्य है और वह साहित्य मानो पुनरुक्तियों में निहित हो गया है हमने यह गाथाएं पुरातन काल में भी श्रवण

की आज भी वर्तमान में भी उन गाथाओं को अपने में अध्ययन कर रहे हैं परन्तु उसका जो आध्यात्मिक स्वरुप है वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है और जो भौतिक विज्ञान है वह भौतिकवाद में प्रवेश कर जाता है परन्तु यही चर्चा हो रही थी इन्द्र की विवेचनाएं यह इन्द्र मानो पुनरुक्तियों में विद्यमान है यह जो इन्द्र है यह संसार का धिपति है मैंने तुम्हे कई कालों में प्रगट किया उनकी तपस्या के बल पर बलवती बन करके मानो देखो अभिमान की भी तो मात्रा आ जाती है राजा होने से मानो वह जो परमपिता परमात्मा इन्द्र है जो संसार का धिपति है वह जो शरीरों में भासने वाला आत्मा है उसका नामोकरण भी मानो यहां सोमं ब्रह वाचप्र्व्हे एकां बेटा! यह अपनी आभा में इन्द्र बन करके रहता है इन्द्र ही मुनिवरों! देखो मानव के कर्मफल और मानव की द्वितीय रुपों में प्रवृत्ति परिवर्तन हो करके अति रुपों में बेटा! इस प्रकृति का स्वभाव बना रहता है परन्तु जब यह विचारा जाता है क्या संसार के वैज्ञानिकों ने पुरातन काल में जब इन्द्र की विवेचना करने लगा था तो इन्द्र मानो इससे परमपिता परमात्मा सिद्ध हुआ जब जड़वत रुपों में उसे अध्ययन करना प्रारम्भ किया तो बेटा! उन वैज्ञानिकों ने इन्द्र की प्रतिभा को जान करके मानो देखो एक विश्शनीय रुप बनाया और देखो उन धातुओं को जानने का प्रयास किया जिन धातुओं में प्रवेश हो करके नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण किया मानो जैसे सृष्टि के पिता ने जब संसार का सृजन किया तो मानो यह एक वेद का प्रकाश एक सौगात के रुप में परिणत किया एक धरोहर के रुप में परिणत कर दिया वेदों का ज्ञान आते ही मानो प्रकाश और बाह्य जगत और व्यापार में मानो यह कुशल बन गया कुशल बनते हुए मानो एक समय यह साधना के रुप में जब विद्यमान हुआ तो साधना में देखा तो तेरा जो प्रत्येक जो परमाणु है वह वायुमण्डल को दूषित बना रहा है जब मैं श्वांस लेता हूं परन्तु संसार के वैज्ञानिको ने इस रुप में भी प्रवेश

किया कि मानो देखो खनिज को जानने का प्रयास किया जिस भी काल में बेटा! पृथ्वी माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! जिस भी काल में वैज्ञानिक ने प्रवेश किया है उसी काल में देखो संसार में अन्धकार छा गया है जिस काल में वैज्ञानिकों ने सूर्य की किरणों के ऊपर अनुसन्धान किया और चन्द्रमा की पुट लगा करके वायु को अवधान करते हुए यन्त्रों का निर्माण किया है तो मानो देखो उस काल में संसार में प्रकाश की उपलब्धि हुई है क्योंकि प्रकाश की उपलब्धि उस काल में होती है जबकि मानव उस परमपिता परमात्मा के उस मानव बिखरे हुए परमाणुओं को एकत्रित करने का प्रयास करता है और वह प्रकाश करता हुआ मानो इस एक एक अणु को प्रकाश में रत्त करता हुआ वह यन्त्रों में यन्त्रित हो जाता है लघु में लघु कृतियों को प्राप्त करने लगता है बेटा! मैं दूरी न चला जाऊं विचार केवल यह चल रहा है कि मानव अपनी धाराओं में रत्त होता हुआ अपने जीवन के उस रहस्यों को जानता हुआ ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहे जिस काल में वैज्ञानिको ने यन्त्र मानो सूर्य की ऊर्ज्वा से मानो गति करने वालो यन्त्रों का निर्माण किया है तो उस काल में अन्धकार और वायुमण्डल में दूषितपना नही आया है परन्तु यह काल एक राजा रावण के राष्ट्र में भी यह काल आया है जो भौतिक वैज्ञानिकों का इतना ऊर्ध्वा में परन्तु जब भी वायुमण्डल दूषित हुआ उसी काल में जो वेदों की एक सौगात जो परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रदान कर दी थी परन्तु उसका अध्ययन करना प्रारम्भ किया उसके जब अध्ययन की शैली में मानो विज्ञान के वांगमय में ले करके और वेद के विज्ञान को विचार करके मानो जब वह गति करने लगा तो मुनिवरों! देखो उन्होंने अजामेध, अश्वमेध अग्निष्टोम यागों का चलन किया परन्तु जब उन यागों में मानो वह परिणत होने लगा तो विचारा की गो घृतां भवि ब्रह्म वाचा मानो घृत को अग्नि में जब प्रवेश किया तो अग्नि में जब उसका विभाजन किया तो एक एक परमाणु तो मुनिवरों!

एक एक सहस्त्र अशुद्धियों को निगलता चला गया परन्तु जब वैज्ञानिकों ने यह विचारा यह तो एक मानो प्रभु मानो एक धरोहर है जिसके ऊपर हम देवता अब्रहे इन्द्र रुपी अग्नि का हम पूजन करें वह जो इन्द्र रुपी अग्नि है उसको विचारना है उसका चिन्तन करना है वह जो मानो इन्द्र रुपी अग्नि है जो वत्रासुर को भी छिन्न भिन्न कर देती है जो मानो देखो वह वकासुर को भी छिन्न भिन्न कर देती है हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार के स्वरुपों में देखो वकासुर और वत्रासुर दोनों दत्यों का वर्णन आता है मुनिवरों! देखो वकासुर तो वह कहलाता है जो गम्भीर वासना में भ्रमण करता है और वत्रासुर उसे कहते हैं जो यागों की प्रतिभा को ले करके अन्तरिक्ष में रत्त रहता है मानो देखो अग्नि जब उसका विभाजन करती हुई और मानो देखो जब वह इन्द्र रुपी आभा उसको मानो छिन्न भिन्न करती है तो वृष्टि के रुप में परिणत हो जाती है तो परिणाम यह हुआ क्या मानो वत्रासुर कोई राक्षस नही बना परन्तु वत्रासुर यहां मेघों का वर्णन आया है वह जो मेघों में मानो जलाशय विद्यमान था उसी का वृष्टि रुप बन गया वृष्टि रुप बन करके पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन गई नाना प्रकार की आभा में रत्त हो गई तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! मैं बहुत दूरी चला गया हूं वेद का मन्त्र यह कहता है कि वैज्ञानिकों को चाहिए क्या वह बिखरे हुए परमाणुओं को तिलांजलि दी थी अन्तरात्मा ने या प्राण सखा ने उसी अन्तरिक्ष ने अन्तरिक्ष में ला करके और उसको प्रयोग में लाना प्रारम्भ किया परन्तु यही जीवन के लिए श्राप बन गया यही तो जीवन के लिए अपश्राप है परन्तु आज मैं बेटा! इस विज्ञान में जाना नही चाहता हूं विचार केवल यह कि हम जहां अन्नाद भूतं ब्रह्म वाचो देवाः जहां हम आत्मा के अनुकूल अपनी आत्मा को पान करना चाहते हैं परन्तु वही वायुमण्डल की वह विज्ञानमयी धारा वायुमण्डल में बिखरी हुई जब प्रत्येक श्वांस की धारा में जब आन्तरिक जगत को प्रभावित करती है तो जब प्रभावित हो

जाता है तो आश्चर्य चकित हो जाता है तो बेटा! आज मैं विशेषता में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं मैं तुम्हे उसी वांगमय में ले जाना चाहता हूं जहां मैं इन्द्र की चर्चा कर रहा था कि वह जो इन्द्र है वह इन्द्र हमारा सखा है जहां इन्द्र के मानो पर्यायवाची शब्द यहां विद्युत का नाम इन्द्र माना गया है मेरे प्यारे! वही तो इन्द्र है जब यज्ञमान स्वाहाः कहता है तो मानो उसकी ध्वनि को ले करके द्यौ मण्डल में प्रवेश करा देता है वह द्यौ में प्रवेश कर जाता है यह वही इन्द्र नाम की अग्नि है मानो देखो जो मानव के शब्दों को ले करके देखो इसमें हूत करा देती है वही शब्द मानो देखो क्रियाकलाप और चित्रों के साथ में मुनिवरों! अन्तरिक्ष में ओत प्रोत क्या वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाते हैं कुछ अन्तरिक्ष लोक में रत्त हो जाते हैं कुछ द्यौ लोक में चले जाते हैं परन्तु जहां इन वाक्यों के ऊपर विचार विनिमय हम करें परन्तु यह विचारा जाए कि यह जो ध्वनियां हैं मानो आत्म तत्व की आभा में रत्त होने वाला जो शब्द है वह आभायित होता हुआ मानव को प्राप्त होना है तो मुनिवरों! देखो वह जो अग्नि इन्द्र रुपी जो अग्नि है यही तो शब्दों के कलाप में निर्णय करा देती है। मैंने तुम्हे बहुत पुरातन काल में निर्णय कराया था बेटा! महात्मा भुञ्जु मुनि महाराज एक समय बेटा! अपने आश्रम में विद्यमान थे जब महात्मा भुञ्जु के द्वारा मेरे प्यारे! कही से श्वेता श्वेतर आ पंहुचें और महर्षि वैशम्पायन जी भी आ गए। परन्तु देखो जब उनका विचार विनिमय हुआ तो मुनिवरों! देखो जब उनका विचार विनिमय यह होने जा रहा था क्या हम अपने विज्ञान क्या अपने ज्ञान और अपनी यौगिक धाराओं में हम रत्त रहना चाहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो जब यह विचार ऋषि मुनियों के मध्य में आया तो मानो देखो उन्हे समाधिष्ट होने लगे वैसे पदार्थों को पान करके मेरे प्यारे! महर्षि वैशम्पायन ने तो शीतली प्राणायाम करके देखो वायुमण्डल से अपने उदर की पूर्ति की परमाणुवाद को लेते थे, परन्तु ले करके जब उन्हे कोई मार्ग प्राप्त नही हुआ तो

अपने पितरों के दर्शन होने लगे वह जो पितर अन्तरिक्ष में विद्यमान थे तो मानो देखो इन्द्र रुपी अग्नि को उन्होंने जानने का प्रयास किया मेरे प्यारे! महात्मा भुञ्जु ने जब यह विचारा क्या यह तो वास्तव में देखो एक प्रकार का कृति है परन्तु वह महर्षि वैशम्पाय से बोले कि महाराज मैं यह जानना चाहता हूं कि आधुनिक जगत में इस प्रकार का कोई वैज्ञानिक है जो इन मानो मेरे पितरों का मुझे दर्शन करा दे देखो जिनको मैं स्वप्नवत में दृष्टिपात कर रहा हूं मेरे पुत्रों देखो जब उन्होंने ऐसा वाक प्रगट किया तो महात्मा वैशम्पायन ने विचारते विचारते यह विचारा क्या आज हम तीनों ही विद्यमान हो करके क्यों ने इसके ऊपर चिन्तन करें उन्होंने कहा किया जाए तो मेरे प्यारे! चिन्तन करने लगे गम्भीर मुद्रा में परिणित हो गए समाधिष्ट में प्रवेश होने लगे परन्तु देखो बहुत समय हो गया मुनिवरों! देखो कौन महर्षि शिकामकेतु मानो देखो उद्दालक गोत्रीय भ्रमण करते हुए बेटा! उनके द्वार पर आए जब उनके द्वार पर आए महात्मा भुञ्जु ने उनके चरणों की वन्दना की और वह विद्यमान हो गए उन्होंने कहा भगवन हमारा अन्तःकरण में अनुभव जो हो रहा है उसको बाह्य जगत में कैसे लाए जाए तो मुनिवरों! देखो शिकामकेतु ने कहा याग करो अग्नि रुपी इन्द्र की पूजा करो मानो देखो उसमें तुम्हे यह भान होगा मेरे प्यारे! देखो उन्होंने याग प्रारम्भ किया भयंकर वनों से साकल्य लाते और साकल्य लाते इन्द्र रुपी अग्नि को प्रदीप्त करते मानो उसमें दाह कृतियों की समिधाओं को ले करके बेटा! वह याग कर्म करने लगे जब क्रियाकलाप करने लगे उन्हे बारह वर्ष हो गए इस प्रकार याग करते हुए उन्हे मानो कुछ प्राप्त नही हुआ तो शिकामकेतु उनकी पत्नी पुनः से वहां पंहुचें महात्मा भुञ्जु ने कहा महाराज जो आपने हमे युक्ति प्रदान की थी एक वर्ष हो गया है आपने एक वर्ष की हमे आज्ञा दी थी यह हमारा एक वर्ष हो गया उसमें मेरे प्यारे! उसमें चित्रावली आभा में निहित मानो एक रुपों में अपने को धारण करने लगी उन्होंने बेटा!

देखो महात्मा शिकामकेतु ने कहा तुम मेरे यहां से एक यन्त्र है उसे ले आओ,। और उस यन्त्र में मानो इसका चित्रण होता रहेगा तुम मानो प्रगट करो इन्द्र देव तुम्हे इसका उतर दे सकेंगें मेरे प्यारे! उन्होंने उस अग्नि को चेताने का प्रयास किया वह जब इन्द्र नाम की अग्नि जब प्रदीप्त हो गई प्रदीप्त होने के पश्चात उसमें चित्रावली आभा में निहित मानो एक रुद्र रुपों को अपने में धारण करने लगी उन्होंने बेटा! देखो महात्मा शिकामकेतु ने कहा तुम मेरे यहां से एक यन्त्र है उसे ले आओ, और इस यन्त्र में मानो देखो इसका चित्रण होता रहेगा। तो मेरे प्यारे! देखो शिकामकेतु ऋषि महाराज के यहां से मानो देखो यन्त्र को लाया गया और याग उनका अग्नि का और वह इन्द्र नाम की अग्नि का उन्होंने ष्टोम किया और ष्टोम करके बेटा! जो बेटा! याग होने लगा बेटा! उसी यन्त्र में बेटा! वह चित्रों को दृष्टिपात करते अपने चित्र दृष्टिपात हुए तो अपने पूर्वजों के आने लगे उन्होंने मानो छठे पिता महापिताओं के आने लगे, जो संसार में नही थे उनके चित्र भी आने लगे मेरे प्यारे! सङ्कल्पं ब्रह्मा समकला वृत्ति देवाः वह सङ्कल्प मात्र से ही मानो देखो चित्रों का दर्शन होने लगा तो मुनिवरों! देखो, महात्मा भुञ्जु ने अपने मानो देखो अपने इक्कसीवें महा पिता के उस यन्त्र में दर्शन करने लगा और उसमें उन्होंने उसका गान और ध्वनियों में ध्वनित हो गया और अपने में यह अनुभव करने लगा मेरे पितर का दर्शन हो गया है मानो मैं कितना विज्ञान के गर्भ में पंहुच गया हूं तो मुनिवरों! देखो जब विज्ञान के गर्भ में ऋषि मुनि पंहुचें बेटा! वैदिक आचार्य पंहुचे तो मानो देखो तो उनके पिता महापिताओं के शब्दों के साथ में जो चित्रों का परमाणुवाद बन करके जाता है जो मानो देखो वह चित्त की प्रवृत्तियों में रत्त रहने वाला परमाणु है बेटा! उसके आकार में बेटा! भ्रमण कर रहे थे अथवा गतियां हो रही हैं शब्द के साथ में चित्र गति कर रहा है ममतामयी माता का दर्शन कर रहा है पितामयी पिता का दर्शन कर रहा है आचार्यमयी आचार्य का

दर्शन कर रहा है महात्मा भुञ्जु ने कहा यह ब्रह्माण्ड हमारे समीप आ गया है यह कैसा अनुपम ब्रह्माण्ड है जो हमारे समीप आ गया है मेरे प्यारे! देखो वह इन्द्र एक लोक ही नही रह जाता जो इन्द्र मानो देखो विद्युत बन करके रहती है वह इन्द्र नाम की अग्नि बन करके रहती है जो मुनिवरों! मानो देखो मानव के वांगमय में प्रवेश कर जाती है वह इन्द्र नाम की जो इन्द्र है मानो यह जो गन्धर्व है यह इन्द्र में ही तो समाहित रहता है मानो गन्धर्व नाम हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! बुद्धि का वाची है। बुद्धि का वाची होने से इन्द्र में समाहित हो जाता है हमारे यहां इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा को जब स्वीकार करते हैं यज्ञोमयी इन्द्र कहते हैं यज्ञ का नाम भी इन्द्र कहा जाता है परन्तु इन्द्र उसे कहते हैं जो इन्द्रो भवा जो इन्द्रियों को अपने में धारण करने वाला हो परमपिता परमात्मा को इन्द्र कहते हैं अग्नि को इन्द्र कहते हैं जो अग्नि मानव को बेटा! प्रकाश में ले जाती है वह मानो देखो अग्नि इन्द्र है हे इन्द्रो भवा सम्भवा हे राजन्! तू मानो देखो राजाओं का भी धिराज बन गया है मुनिवरों! देखो राजा कौन देवताओं का राजा इन्द्र कहलाता है। जब देवताओं का राजा इन्द्र है तो वह देवता कौन है मेरे प्यारे! जिनका वह धिराज बना हुआ है मुनिवरों! देखो जितना उसका राष्ट्र है उस राष्ट्र में ऐसे ऐसे नियम हैं जो प्रत्येक गृह में याग होता हुआ दृष्टिपात होता हो प्रत्येक गृह में सुगन्धि होती हो प्रत्येक गृह में अशुद्ध परमाणुओं को निगला जा रहा हो सु परमाणु का आदान प्रदान हो रहा हो ऐसा जो राष्ट्र है जिस राजा के राष्ट्र में इस प्रकार का विज्ञान होता हो वह इन्द्र की उपाधि को प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! देखो मैं जब इन्द्र की विवेचना करने लगता हूं इन्द्र नाम बेटा! जहां अग्ननियों को चेताने वाला बेटा! बाह्य जगत आन्तरिक जगत दोनों प्रकार की अग्नियों को मानो वह अपने में चेताता रहता है और कैसे चेताता है बेटा! जैसे हमारे यहां यज्ञमान यज्ञशाला में घृत आहुति देता है श्रद्धामयी वह श्रद्धमयी आहुति देता है और वह

इन्द्र में देखो वह अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों को जागरुक करता है परन्तु देखो अपनी इन्द्रियों को जागरुक अपनी इन्द्रियों का दमन करता हुआ और मुनिवरों! देखो वह मनस्तव इन्द्र को प्रवाह वृत्तियों में लाने का प्रयास करता है और कहता है तू चेत हे अग्नि! तू चैतन्य तू चेत बन करके तू मानो चैतन्य बन करके तू हमे चेतना के मार्ग पर ले चल तू चेतने वाली बन तू यज्ञशाला में चेत बन करके मानो पदार्थों का भेदन कर देती है तू विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो जाती है तू विज्ञान की धाराओं में रत्त हो जाती है मानो देखो यही अग्नि हैं जो मानो वेद की धारा एक वेद के मन्त्र के आश्रित हो करके अग्नि प्रदीप्त हो जाती है बेटा! वही तो इन्द्र नाम की अग्नि है जिस अग्नि को तू चेता करके कह रहा है तू इन्द्र है तू सोम है मानो तू इन्द्र नही सोम बन करके मेरे प्यारे! वह अग्नि का वेश करता है सरस्वती बना करके अहा! अमृत को पान करने लगता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन की धाराएं जब याग में परिणत हो जाती हैं तो मानो द्यौ लोक में तेरी ध्वनियां ध्वनित हो जाती हैं तेरी ध्वनि मानो द्यौ लोक में प्रवेश करके तू अग्नि वह और सूर्य की किरणों के साथ वह अग्नि वही मानो देखो शब्द रुपी अग्नि तेरे जी को प्राप्त हो जाती है तू कितना सौभाग्यशाली बन जाता है तो मेरे प्यारे! मैं तुम्हे आज विचार यह दे रहा हूं क्या इन्द्र नाम मेरे प्यारे! जहां परमपिता परमात्मा का नामोकरण है वहां इन्द्र नाम की वायु है वहां इन्द्र नाम की अग्नि है जिसके आश्रित हो करके मानो याग करता है मेरे पुत्रों देखो उस अग्नि को हमे अपने में जानना चाहिए उस इन्द्र को जानना चाहिए जो इन्द्र धिराज बन करके देवताओं का धिराज बनता है बाह्य जगत में भी देवत्व और आन्तरिक जगत में यह आत्मा इन्द्र बन करके मानो देवत्व को प्राप्त करके यह देखो मनस्तव को ऊंचा बनाते हैं यह मन मेरे प्यारे! देखो वृख बन करके रहता है वही तो इन्द्र पुरी है बेटा! देखो इन्द्रपुरी का वर्णन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने किया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा!

इसका बड़े विशुद्ध रुपों से इसका अन्वेषण अथवा इसका वर्णन किया है जब इन्द्र मानो देखो देवताओं को ले करके जब दैत्यों के द्वारा संग्राम करने लगा संग्राम करते करते देवासुर संग्राम बड़ा विशाल वह देवासुर संग्राम होता रहा जब देवासुर संग्राम बहुत समय तक चलता रहा गति करता रहा तो बेटा! एक समय दैत्यों महाराजा इन्द्र की उस पुरी में इन्द्र मानो देखो इन्द्र की इन्द्र के देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया था वह दैत्य मानो देखो अपनी आभा में आकुञ्चन स्वरूप को उन्होंने धारण कर लिया और देवताओं ने व्यापक रुप को धारण कर लिया मानो देखो उन्हे देवताओं की सभा में नाना रुपों में रत्त करने वाले वह ध्वनि का वह ध्वनि उत्पन्न होने लगी जिस ध्वनि का मानो शब्दार्थ मानो देखो मेरे परमपिता परमात्मा सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में किसी काल में उत्पन्न किया था और वह जब उत्पन्न किया था तो मानो देखो वही ध्वनि पुनः से मानो ध्वनित होने लगी जब वह शब्द ध्वनित होने लगा तो मानो देखो वह ध्वनित वाला वह शब्द मेरे प्यारे! वह ध्वनि महाराजा वृख को प्रदान कर दी थी वही वृख मेरे प्यारे! देखो वह वृख जब उसे मानो अपनी आभा में परिणत करने लगा तो संसार देवतम् मानो देवपुरी को धारण करने लगा जब यह संसार देवपुरी बन गया देवपुरी बनने लगा मानो देखो बलवती देवताओं की विशेष बन गई तो बेटा! एक समय देखो दैत्यों ने पुनः से सभा का आयोजन किया और उस सभा में मुनिवरों! देखो महाराज विरोचन को सभापति बनाया और विरोचन से कहा कि महाराज देखो यह देवताओं की सभा है देवताओं ने हमे विजय कर लिया है और देवता मानो देखो अपनी ध्वनि में ध्वनित हो रहे हैं हम दैत्यों का क्या बनेगा जब देवताओं का यह बल मानो बलवती होता जा रहा है मानो इन्द्र की गणना विशेष होती चली जा रही है मेरे पुत्रों महारजा विरोचन ने कहा जिसके माध्यम से ध्वनि का प्रसारण हो रहा है उस मानो देखो प्रसारण केन्द्र को तुम अपने में केन्द्रित कर लो मानो देखो

इसकी जानकारी की जा सकती है मेरे प्यारे! देखो वह जहां से वह ध्वनि का प्रसारण हो रहा था उस मानो देखो वृख को वृख रुपी यन्त्र को मानो देखो दैत्यों ने अपने में धारण कर लिया दैत्य कौन थे शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज मानो तीनो दैत्यों ने उसे अपने में धारण कर लिया धारण करने के पश्चात मानो देखो उसका निरीक्षण हुआ तो उसमे वृख ने उस ध्वनि को उस देवताओं की धरोहर को मेरे प्यारे! रेणुका में समाहित कर दिया वह तो रेणुका में प्रवेश कर गई और जब विरोचन ने मङ्गलम् ब्रहे जब वृख का मन्थन किया तो बेटा! वृख में वह ध्वनि नही थी जिससे यह देवताओं का समाज बनता चला जा रहा था उन्होंने निर्णय दिया हे दैत्यों! इसमें वह ध्वनि नही है जिससे यह संसार ध्वनित हो रहा था वह तो ध्वनि रहित हो गया है तो उन्होंने कहा तो महाराज वह ध्वनि कहां चली गई उन्होंने कहा वह ध्वनि तो रेणुका में प्रवेश कर गई है बेटा! देखो, रेणुका कौन है वह रेणुका कौन है मानो देखो वृख के ऊंची प्रतिभा का नाम ही तो रेणुका कहा जाता है रेणुका को वैदिक साहित्य में जब चिन्तन किया जाता है तो बड़े पर्यायवाची शब्द प्राप्त हो जाते हैं परन्तु देखो मैं तुम्हे संक्षिप्त परिचय देने आया हूं बेटा! रेणुका पर जा करके बेटा! मध्य रात्रि में उन्होंने एक विशाल आक्रमण किया और आक्रमण करके मुनिवरों! देखो वह रेणुका छली गई रेणुका को यह ज्ञान हो गया कि अब तू छली जाएगी तो मुनिवरों! देको प्रजापति वह इन्द्र के यहां जो याग हो रहा था अग्निष्टोम मेरे प्यारे! देखो उस याग में वह ध्वनि प्रवेश कर गई रेणुका की अब मेरे प्यारे! रेणुका ने उस ध्वनि को देवताओं की सभा में देवताओं को प्रदान कर दी और अब बेटा! वह रेणुका छली गई महाराजा विरोचन जब उसका मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नही रही उन्होंने कहा वह ध्वनि कहां गई ब्रहे वह तो यज्ञ के पात्रों में प्रवेश कर गई है। उसे वह प्राप्त नही कर सकते मेरे प्यारे! उन्होंने कहा हे दैत्यराजों! तुम उसे निकाल नही सकोगे मेरे प्यारे! वह अब

दैत्यराजों ने विचारा कि महारज वह यज्ञ के दस पात्र क्या हैं। उन्होंने कहअ यह इन्द्र से ही प्राप्त करो क्योंकि इन्द्र ही जानता है इस याग को उन्होंने कहा प्रभु आप तो जानते होंगे क्योंकि आपने वर्णन किया है जब महाराज मानो शुम्भ निशुम्भ रक्त बीज ने तीनों दैत्यों ने जब यह प्रार्थना की तो उस समय कहा विरोचन ने क्या वह मानो देखो इन्द्र और मैंने दोनों ने एक समय प्रजापति के यहां जा करके शिक्षा को धारण किया था महाराजा प्रजापति ने जब मुझे इस शिक्षा को प्रदान किया था तो उन्होंने मानो मैं तो इसमें रह गया क्या यह शरीर जो है यही इसी में आनन्द लेने का नाम ही मानो देखो मोक्ष और परमपिता परमात्मा का यह जगत है परन्तु इन्द्र ने उस अध्ययन के रुप में गम्भीरता में प्रवेश कर गए थे इसको मैं नही जानता मेरे प्यारे! देखो विचारा गया अब इन्द्रो भवा सम्भवा मेरे प्यारे! देखो चिन्तन करने से प्रतीत हुआ क्या वह जो यज्ञ के दस पात्र है जिसमें वह देवताओं की धरोहर विद्यमान रहती है मानो देखो वह यज्ञ के दस पात्र बेटा! इस मानव शरीर के मान शरीर रुपी यज्ञशाला का जब सृष्टि के पिता ने बेटा! निर्माण किया था किसी काल में तो मानो एक यज्ञवेदी के रुप में इस यज्ञवेदी की रचना की मानव शरीर की रचना यज्ञवेदी के रुप में रची और रचने के पश्चात इसके दस पात्र हैं वह दस पात्र क्या हैं बेटा! वह पांच ज्ञानेन्द्रियां व पांच कर्मेन्द्रियां है वह यज्ञ के दस पात्र बने हुए हैं मानो यज्ञ के दस पात्रों से ही तो आहुति दी जा रही हैं मानो देखो पञ्च होता बन करके कोई रुपी साकल्य को ला रहा है कोई प्रेम रुपी साकल्य को ला रहा है कोई सुगन्धि रुपी साकल्य को ला रहा है कोई मानो देखो कोई अप्रतो मानो देखो शब्द अब्रहे दिशाओं में रत्त होने वाला साकल्य को रसों को ला रहा है परन्तु देखो उनका साकल्य बन करके उनका साकल्य बना है और साकल्य बन करके बेटा! वही हृदय रुपी यज्ञशाला में याग हो रहा है बेटा! वह प्रिय याग हो रहा है वह यज्ञ मानो ब्रह्मवाचा देवाः पांच अप्रहा

उस इन्द्रियों में मानो धर्म और वह कौन सा वह शब्द है वह ध्वनि है वह क्या है वेद का ऋषि कहता है वह धर्म रुपी ध्वनि है जो धर्म रुपी ध्वनि मानो प्रत्येक मानव की इन्द्रियों में समाहित रहने वाला धर्म है जिसको मानो जो इस धर्म के स्वरुप में प्रवेश कर जाता है वह बेटा! धार्मिक कहलाता है वह धर्म के मर्म को जानता है धर्म के मर्म को कौन जानता है जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान करके उनका साकल्य बनाना जानता है और जो मानो देखो उदासीन हो करके जो विवेकी बन करके मानो देखो विवेक में उन्हे ला करके मुनिवरों! देखो वह जो ज्ञान रुपी अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसे वह साकल्य आहुत कर रहा है तो मेरे प्यारे! मैं कहां चला गया हूं विचार क्या मानो वही तो इन्द्र पुरी कहलाती है जहां इन्द्र देवता बन करके बेटा! देवताओं का धिराज बना हुआ है वह मानो देखो धर्म की प्रतिभा को जानता है यह आध्यात्मिक एक स्वरुप बन गया है बेटा! जो आत्मा मानो देखो आत्मा रुपी जो इन्द्र है वही तो प्रजापति के द्वार पर जाता है जो प्रजा का सृजन करने वाला है जो प्रजा को रची के रुप में परिणत कर देता है तो मेरे प्यारे! मैं कहा चला गया दूरी चला गया सोमकेतु और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का यह संवाद प्रारम्भ हुआ यह संवाद मानो गतिशील होता रहा महाराजा सोमकेतु मानो इसको श्रवण करता रहा और महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने ऋषि ने बेटा! इसका वर्णन किया विज्ञान के वांगमय में और बेटा! मानो धर्म के वांगमय में बेटा! इन्द्र की प्रतिष्ठा कहलाती है वह इन्द्र है जो राजा बन करके धर्म की स्थापना कर देता है वह इन्द्र है जो मानव को कर्तव्यवादी बना देता है वह इन्द्र है जो विज्ञान की धाराओं में रत्त रह करके मानो देखो विज्ञान को पृथ्वी से ले करके लोक लोकान्तरों की उड़ान में मानो उड़ित हो जाता है वह ध्वनियों में ध्वनित होने वाला वह धर्म है जिस धर्म को अपना करके बेटा! मानव धर्म की प्रतिभा में रत्त होता हुआ बेटा! वही तो धर्म है बेटा! जो इन्द्रियों में समाहित हो

रहा है। वही तो धर्म है जो मानो सु में समाहित हो रहा है वही तो धर्म कहलाता है तो मेरे प्यारे! देखो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने इन्द्र की इस प्रकार जब विवेचना की इन्द्र की जब सभा की चर्चाएं की तो बेटा! देखो महाराजा सोमकेतु मौन हो गया और सोमकेतु ने कहा प्रभु आपको धन्य है आपने तो मेरे ब्रह्माण्ड के स्पष्टीकरण किया है मैं इस ब्रह्माण्ड में पुनः पुनः जाता रहता हूं परन्तु आज भी मैं चला गया हूं तो मुझे आश्चर्य हो रहा है तो हे भगवन! मैं आपको नमस्कार करता हूं मेरे प्यारे! सोमकेतु ने उनको नमस्कार किया परन्तु महात्मा वशिष्ठ ने कहा नही ऐसा मत कहो ऋषिवर मानो देखो नमस्कार करना तो मुझे है आपको नही है क्योंकि नमस्कार इसीलिए मत करो क्योंकि तुम्हारा मैं समाधान अभी नही कर सका अभी तुम्हारा समाधान रह रहा है परन्तु जो तुम्हारे मन में है उसको उद्धृत करो मैं आगे उसका प्रयत्न करुंगा तो मेरे प्यारे! देखो आगे इन्द्र की व्याख्या पान करते हुए उन्होंने बेटा! जब यन्त्रों में मानो शब्दों में शब्दित होता हुआ वायु इन्द्र के लिए मानो याचना करता हुआ मानो शब्दों के आकारों को दृष्टिपात कर रहा है बेटा! देखो वही विज्ञान है वही धारा है जिसको अपनाने के पश्चात मानव के जीवन में क प्रतिभाषितता हो जाती है आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विशेष चर्चाएं न करता हुआ केवल मैं यह उच्चारण करने जा रहा हूं बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने इस शरीर रुपी यज्ञशाला का निर्माण किया इस यज्ञशाला के तट पर आ करके मानव बेटा! नाना प्रकार के यागों का आयोजन करता है नाना प्रकार के यागों को रचित बना लेता है क्योंकि उसकी बुद्धि मानो उसकी मेधा में वार्ता आती रहती है क्योंकि यह जो शरीर रुपी जिस रुप में मानव का निर्माण हुआ वह रुप उसके समीप आते रहते हैं माता पिता की जैसी भावना के आधार पर मानव का मानो देखो मानव का परमाणुवाद शिशु के रुपों में उद्धृत हुआ है वह मानो देखो संस्कार उसके ज्यों के त्यों

बने रहते हैं वही संस्कार हैं जो मानव के नाना प्रकार की रचनात्मक क्रियाकलापों में वह परिणत होता रहता है मेरे प्यारे! देखो वही तो विचार आयेंगें वही तो रचना आयेगी मेरे प्यारे! देखो वही रचना साकार रुप बन करके मानव के समीप मानो एक यागों की रचना का वह निर्माण करता है वह यज्ञशाला का निर्माण कर रहा है जैसे बेटा! एक मानव चन्द्र लोक में जाना चाहता है चन्द्रलोक में जाने की भावना का उसे जन्म हुआ है परन्तु वह जन्म कहां से हुआ है वह जन्म उसी रुपों में हुआ है क्योंकि चन्द्रमा में जाने वाली तरंगे उसके अन्तर्हृदय में लघु मस्तिष्क में विद्यमान हैं यदि चन्द्रमा की लघु मस्तिष्क में नही होती तो चन्द्रमा का भान उसे कदापि नही हो सकता था तो मेरे प्यारे! इसी प्रकार एक मानव सूर्य लोक में जाना चाहता है मेरे प्यारे! मुझे एक वाक स्मरण आ गया है एक समय बेटा! महात्मा भुञ्जु के महात्मा भुञ्जु के महा सातवे महापिता थे बेटा! सोमकेतु वाचक कृतिका भुञ्जु मनिवरों देखो वह सातवे पिता थे एक समय वह दण्डक वनों में विद्यमान हो करके मानो देखो एक समय वह अध्ययन करते करते अपने स्वतः अपने मानवीय दर्शन का अध्ययन कर रहे थे अध्ययन करते करते उनके हृदय में यह वाक आया क्या मैं सूर्य की किरणों के साथ में मैं मानो सूर्य लोक में जाना चाहत हूं जब यह वाक मानो उसके हृदय में आया हृदय में समाहित हो करके बेटा! उसी वाक को ले करके की बेटा! यह मेरे हृदय में आया क्यों है इसका मूल कारण क्या है तो बेटा! भ्रमण करते हुए वह चाक्राणी गार्गी के समीप पंहुचें उस समय चाक्राणी गार्गी बारह वर्ष का अनुष्ठान कर रही थी वेद का अध्ययन कर रही थी मानो देखो वायुमण्डल से वह पोषक तत्वों को प्राप्त करती थी और मानो देखो वेद का जब गान गाती थी अहिंसा परमोधर्म में परिणत होती हुई सर्पराज मानो देखो उसके चरणों कि वन्दना कर रहा है श्रवण करने वाले मानो कौन हैं बेटा! प्राणी सिंहराज हैं मृगराज है जो ध्वनि को ध्वनित कर रहा है

जो अपने में श्रवण कर रहा है पिता की मानो प्रसन्नता को अपने में ग्रहण करने वाला हो सिंहराज के हृदय में आत्मा विद्यमान है मेरे प्यारे! देखो जब ऋषिवर उसके द्वार पर पंहुचे तो उन्होंने उनके चरणों की वन्दना की और यह कहा कि मातेश्वरी यह मेरे हृदय में भाव क्यों आया कि मैं सूर्य की किरणों के साथ गमन करूं मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा हे देवत! हे ऋषिवर! यह तो मानव के शरीर का जब निर्माण होता है परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में सृष्टि के पिता ने जब यज्ञशाला का निर्माण किया था तो इस यज्ञशाला का मानो देखो देवता उद्धृत होने वाला सूर्य कहलाता है इसका देवता ही सूर्य है यह सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो यह आभा बन गई थी और यह आभा मानो सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके सृष्टि के अन्तिम चरण तक मानव का यह जो यज्ञशाला बनी हुई है इसमें मानव वह भावना वह अङ्कुर सूर्य के ज्यों के त्यों विद्यमान रहते हैं मेरे प्यारे! देखो जब चाक्राणी ने यह वर्णन कराया क्या वह तुम्हारे हृदय में सूर्य के कण हैं सूर्य के परमाणु हैं और सूर्य की किरणों के परमाणु होने से वह परमाणु तुझे बाध्य कर रहे है जब तू देखो साधना कर रहा है जब साधना की गई साधना जब होने लगी तो अन्तर्हृदय से वह मानो भावनाओं ने जन्म ले लिया और वह भावना जब जन्म लेने लगी तो मानो देखो वह जो अङ्कुर थे सूर्य के किरणों के हृदय में यज्ञशाला में मानो देखो उसका विभाजन हो गया जब उसका विभाजन हो गया तो उसमें से अरबों खरबों तरंगों का जन्म हो करके मानो तेरे जीवन को उसने बाध्य कर दिया है इसीलिए तेरे हृदय की प्रबल इच्छा बन गई है क्या तू सूर्य की किरणों के साथ में तू गमन कर तो मेरे प्यारे! देखो इसका भाव क्या है वेद का वाक कहता है सूर्याणि गच्छतम् यज्ञो भविते देवां वेद का वाक कहता है क्या वह देखो जो सूर्य की मानो भावना मानो किरणे हैं परमाणु है वह तेरे हृदय में पुनः से विद्यमान हैं उनको जागरुक करना केवल साधना के माध्यम

से है तुझे साधना करनी होगी और साधना के द्वारा ही तुम मानो उन परमाणुओं को जागरुक करके मानो यन्त्रों के द्वारा नही यन्त्रों का भान भी तुम्हे उसी काल में आता है जबकि मानो देखो जब तू सर्य की आभा में रत्त रहना चाहता है बेटा! देखो वही महात्मा भुञ्जु के मानो देखो सातवे महापिता चाक्राणी के संरक्षण में रह करके उन्होंने बारह वर्ष का अनुष्ठान उन्होंने भी किया और वह सूर्य की किरणों के साथ में सूर्य लोक में जाने वाले यातायात मानो देखो मनों से नही शरीराणां भविते देवां मानो देखो क्रियाओं से जाना प्रारम्भ कर दिया तो मेरे प्यारे! यह कैसा अनुपम यह ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर मानो देखो चर्चा करने लगे हैं यह तो बड़ी विचित्र एक चर्चाएं हैं जब मैं वेद की उस आभा में रत्त होने के लिए हम तत्पर होते हैं तो हमे यह दृष्टिपात होता है क्या यह वेद अनुपम प्रकाश है जिस प्रकाश के लिए मानव सदैव प्रयास करता रहता है उसी के प्रकाश में रत्त रहता है मानो देखो उसी का प्रकाश इसी के समीप आ करके मानो इस क्रियाकलाप के लिए बाध्य कर देता है तो मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हे देने नही आया हूं परन्तु देखो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने सोमकेतु को बेटा! नाना प्रकार के उदाहरण उद्धृत करके बेटा! उन्हे देखो मौन कर दिया और वह मौन हो गए उन्होंने कहा हे भगवन! पुनः जब उन्होंने देखो भुञ्जु की गाथा प्रगट की और वह विज्ञान उसके समीप आया तो वह नमस्कार करने लगे उन्होंने कहा ऋषिवर मैं नमस्कार लेने के लिए अभी सुयोग्य नही हूं क्योंकि मैं तुम्हारे प्रश्नों का पूर्ण रुपेण तुम्हे उत्तर नही दे सका मैं अन्तिम चरण पर नही जा सका हूं तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय हमारा क्या चल रहा था क्या मुनिवरों! देखो वह जो इन्द्र है हम इन्द्र की उपासना करते चले जाएं इन्द्र ही तो देवासुर संग्राम बना हुआ है इन्द्र ही तो मेरे प्यारे! वही तो उपाधि धिराज बन करके मानो प्रत्येक प्राणी मात्र के हृदयों में समाहित हो रही है वही इन्द्र परमात्मा बन करके बेटा! देखो संसार रुपी यज्ञशाला का

निर्माण करता है मेरे प्यारे! देखो मैं आगे की शेष चर्चा तो कल ही प्रगट करुंगा बेटा! आज मुझे समय इतना आज्ञा नही दे रहा है जो मैं अपने विचारों को अग्रणीय बनाऊं परन्तु विचार केवल यह है क्या आज हम मुनिवरों! देखो यागाम् भविते देवां हम जब घृत के द्वारा श्रद्धामयी घृतोमयी श्रद्धा जब अग्नि में प्रवेश करते हैं तो अग्नि विभक्त करती हुई इन्द्र बन करके बेट यह वत्रासुर में प्रवेश कर जाती है मानो अशुभ परमाणुओं को अपने में निगलती चली जाती है और वत्रासुर बन करके बेटा! वही वृष्टि के मूल में प्रवेश हो करके यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है तो मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए देव की आभा में रत्त रहते हुए बेटा! हम मुनिवरों! देखो अपने में मानो विज्ञान भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का समन्वय करते चले जाएं क्योंकि दोनों के समन्वय होते ही मेरे प्यारे! राष्ट्र और समाज बेटा! पवित्र बनते हैं और जब एक केवल देखो भौतिकवाद रह जाता है उसमें आध्यात्मिकवाद की पुट नही होती तो राजा का राष्ट्र नग्न बन जाता है समाज की प्रवृत्तिया नग्न रह जाती है और वह प्रवृत्ति जब नग्न बन जाती है तो वही प्रवृत्ति मानव के नष्ट होने का एक मूल कारण बना करती है मेरे प्यारे! वही इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हे निर्णय दिया था क्या हमारे ऋषि मुनियों का जो विचार विनिमय करने का एक माध्यम रहा है वह दोनों प्रकार के विज्ञान का रहा है आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद जब दोनों का समन्वय होता है तो समाज में महानता छाती चली जाती है और राष्ट्र पवित्र बनता चला जाता है परन्तु देखो जब केवल भौतिक विज्ञान और वह भी नग्न रह जाता है तो मुनिवरों! देखो नग्न क्या करता है नग्न भौतिक विज्ञान मेरे प्यारे! आध्यात्मिकवाद नही होता तो नग्न भौतिक विज्ञान माया बलवती हो करके माया के क्षेत्र में प्राणी अपने को मानो देखो समाप्त कर लेता है और मुनिवरों! देखो

विज्ञान उसकी मृत्यु का मूल कारण बन जाता है यह है बेटा! आज का वाक मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं मैं कोई व्याख्याता नही हूं पुत्रों केवल सूक्ष्म सा परिचय देने चला आता हूं और वह परिचय क्या है क्या मुनिवरों! देखो ऋषि मुनियों के विचार विनिमय उनका क्रियाकलाप कितना विचित्र रहा है समय मिलेगा तो बेटा! मैं सोमकेतु की चर्चा कल प्रगट करुंगा आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए परमपिता परमात्मा के मूल रुप को जान करके बेटा! यज्ञ रुपी जो यज्ञशाला है इसे पवित्र बनाते चले जाएं इसको पवित्र बनाना ही हमारा कर्तव्य है यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं यह आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। दिनांक १२ ०४ १९८५।

25 ३० ०८ १९८५ रात्रि संसार एक याग

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, ऋषि मुनि परमपिता परमात्मा की प्रतिभा के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ानें उड़ते रहे हैं। भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं में वह रत्त रहे हैं, जिसके ऊपर परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण होता रहता है। अथवा विचार विनिमय होता रहता

है, क्या यह संसार क्या है तो बेटा! इस संसार के सम्बन्ध में हमारे दार्शनिकों ने और ऋषि मुनियों ने बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ी हैं मानो जैसे इस संसार को नाना प्रकार के रूपान्तर देते हुए आचार्यों ने कहा है कि यह संसार तो एक विचारशाला है, यहाँ प्रत्येक मानव विचार विनिमय करने के लिए आता है और विचारता रहता है अपने में अन्वेषण करता रहता है। परन्तु वह कहीं विज्ञान के वांगमय में उड़ान उड़ता है कही मानो वह महानता की ज्योति में अपने में ज्योतिवान स्वीकार करके ज्योति में लिंगोमयी प्रवेश होता रहता है परन्तु हमारे यहाँ यह विचारा गया है क्या यह संसार एक कल्पवृक्ष की भान्ति भी कहा गया है, आचार्यों ने कहा कल्पना मात्र है यह संसार और जैसी भी मानव अपने में कल्पना करना प्रारम्भ करता है मनों में जैसी अपनी धरणा बना लेता है अथवा कल्पना करने लगता है बेटा! वैसा ही यह जगत उसे प्रायः दृष्टिपात आने लगता है, विचारता रहता है कि यह संसार मानो कल्पवृक्ष की भान्ति है यहाँ कल्पना की और मानव की कल्पना की पूर्ति हो जाती है अथवा उसमें वह सङ्कलीन हो जाता है तो मेरे प्यारे! आचार्यों ने जब इस संसार के सम्बन्ध में एक मानो कल्पना मात्र कहा है, इन्ही आचार्यों ने कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है मानो यहाँ प्रत्येक मानव याग करने के लिए आया है यह यज्ञशाला है प्रत्येक मानव भिन्न भिन्न प्रकार के यागों में लगा हुआ है मानो देखो, यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक बना हुआ है मुनिवरों! देखो, जब याज्ञिक प्रसंग आता है यागाम् ब्रह्मे लोकाम् यागाः क्योंकि परमपिता परमात्मा ने यह जो संसार रूपी जगत का निर्माण किया है यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में ही दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि यहाँ मेरे प्यारे! यज्ञशाला के चौबीस खम्ब माने गएं हैं मानो देखो, इसमें जैसे मानव के शरीर में मानो चौबीस प्रकार की वृत्तियां कहलाती हैं। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड के रूपों में जब विचार विनिमय करने लगते हैं, तो यह भी बेटा! इसी

प्रकार हमें चौबीस आभा वाला यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है और वह मानो एक माला है चौबीस मनकों की और मुनिवरों! देखो, उसमें एक सूत्र पिरोया हुआ है, जो माला बन करके उसे अपने में धारण करता है तो मेरे प्यारे! आचार्यों ने अपना अपना मन्तव्य दिया क्या यह संसार यज्ञशाला है, सृष्टि के पिता ने जब इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया तो मेरे प्यारे! उस सयम आत्मा यज्ञमान बना परमपिता परमात्मा उसके ब्रह्मा बने और यह पञ्च महाभूत जो दृष्टिपात आते हैं यह बेटा! इनमें से कोई उद्गाता बना कोई अध्वर्यु बना कोई मानो ऋतवज बन करके याग प्रारम्भ हो गया मेरे पुत्रों! देखो, परमपिता परमात्मा का यह है जो याग है यह याग सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानो देखो, प्रदीप्त हो रहा है मानो प्रायः याग हो रहा है आत्मा यज्ञमान बना हुआ है कही माता के रूप में विद्यमान है माता अपने गर्भस्थल में शिशु का पालन कर रही है, तो याग हो रहा है राजा अपने राष्ट्र में अपनी प्रजा को सुखद और आनन्द की और ज्ञान की वृद्धि करा रहा है वह भी एक याग कर रहा है मेरे प्यारे! विद्यालयों में ब्रह्मचारी और आचार्य परस्पर विद्यमान हो करके क्या मुनिवरों! देखो, अपने अपनी आभा में रत्त हो जाते हैं ज्ञान और विज्ञान की आभा में निहित हो जाते है तो मेरे प्यारे! एक प्रिय याग हो रहा है आत्मा परमात्मा की चर्चा हो रही है कही मानो देखो, ज्ञान कर्म और उपासना के स्वरूप में वेदों का गान उभर करके हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है तो मेरे पुत्रों! एक प्रकार का एक प्रिय याग हो रहा है यागाम् तन्तम् ब्रह्मे लोकां मेरे पुत्रों! देखो, यह संसार याग के रूप में विद्यमान है परन्तु देखो, जहाँ अयाग की प्रवृत्तियाएं मानव के हृदय में जागरूक हो रही है वहीं मुनिवरों! देखो, अन्धकार छा गया है तो इसीलिए वेद के आचार्यों ने यह कहा है कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है यहाँ याग करना ही प्रत्येक मानव का कर्तव्य है मेरे प्यारे! देखो, पुत्रेष्टि याग है पुत्र उत्पन्न करने का नाम भी एक याग माना

गया है मेरे प्यारे! माता याग कर रही है पितर याग कर रहा है सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है और सांयकाल को अस्ताचल को चला जाता है तो बेटा! वह प्रकाश का याग कर रहा है ऊर्ज्वा दे रहा है मानो प्रकाश में रत्त हो रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ अमृतमयी याग हो रहा है यहाँ मुनिवरों! देखो, अग्नि अपने में उष्ण बना रही है और वायु प्राण सत्ता दे करके मेरे पुत्रों! देखो, एक प्रिय याग का प्रतीक बना हुआ है आओ, पुत्रों! मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ वेद का मन्त्र क्या कह रहा है वेद का मन्त्र यही कह रहा है क्या इस संसार को अपनी अपनी आभा के अनुसार मानव ने बेटा! इसको मापना प्रारम्भ किया है मैं इसको मापने तो नही आया हूँ, केवल विचार देने के लिए आया हूँ और वह विचार क्या है मुनिवरों! देखो, यह संसार अपने में पूर्णता को प्राप्त होता रहता है। जो भी तुम कल्पना करोगे जो भी विचारोगे इस संसार के सम्बन्ध में वही बेटा! तुम्हें अनन्तता दृष्टिपात आने लगेगी तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का विचार विनिमय हमारा क्या कह रहा है वेद का मन्त्र बेटा! जहाँ इस प्रकार की कल्पना कर रहा है विचार दे रहा है यागाम् ब्रह्मे लोकाम् मेरे प्यारे! यह प्रिय याग हो रहा है यहाँ कही देवासुर संग्राम हो रहा है, कही देवता मानो याज्ञिक बन करके मुनिवरों! देखो, विचित्रता की धारा में परणित हो जाते हैं तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ विचार क्या इसी विचार को ले करके मार्कण्डेय की वह चर्चाए मुझे पुनः स्मरण आ रही हैं मेरे पुत्रों! जैसा इससे पूर्व काल में महर्षि मार्कण्डेय जी के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की कल्पनाएं भिन्न भिन्न प्रकार का विचार हमारे समीप आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है क्या महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज जहाँ आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता थे वहाँ मुनिवरों! देखो, वह भौतिकवाद में भी उनकी उतनी गति रहती थी भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिकवाद में दोनो में वह विशेषज्ञ माने जाते थे तो मेरे

प्यारे! देखो, यही प्रसंग महाराज दिलीप जी ने और महाराज हनुमान जी ने यही प्रश्न किया था उन्होंने कहा हे प्रभु! आज हम वेदों का कुछ अध्ययन कर रहे थे और वेद के मन्त्र में यह आ रहा था कि यह संसार भिन्न भिन्न प्रकार के रूपों में मानो इसका निरूपण किया गया है। हम उस निरूपण को जानना चाहते हैं, आप इस संसार के सम्बन्ध में क्या चिन्तन करते हैं क्या मनन करते हैं क्योंकि आपका आध्यात्मिक विज्ञान भी बड़ा विशेषज्ञ माना गया है आज का मानो देखो, भौतिक वाद भी मानो ऊर्ध्वा शिखर पर गति करता रहता है। तो हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं क्या यह संसार के सम्बन्ध में मानो कुछ अपना परिचय दीजिए क्या यह संसार क्या संसार को मैं क्या स्वीकार करता हूँ, मेरे प्यारे! महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा क्या यह तुम क्यों जानना चाहते हो उन्होंने कहा प्रभु! हम इसीलिए जानना चाहते हैं क्योंकि हम विज्ञान में लगे हुए हैं विज्ञान के अणु और परमाणुवाद में हमारी विशेष वशिष्ठ गति होती रहती है परन्तु देखो, उसी आधार पर हम यह जानना चाहते हैं कि क्या आप संसार को क्या स्वीकार करते हैं महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा कि तुम क्या स्वीकार करते हो उन्होंने कहा प्रभु! यह हमारा प्रसंग नही है, आप हमें उत्तर दीजिए आप हमसे ही मानो ऊर्ध्वा में आप प्रश्न करने लगे हैं यह आपको शोभा नही देता तो महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा क्या मैं तो इस संसार को एक प्रकार की मानो विज्ञानशाला और यज्ञशाला के रूप में स्वीकार करता रहता हूँ उन्होंने कहा हे भगवन! आप इसको मृत लोकी और मृत्युञ्जय आभा में इसको स्वीकार नही करते हैं, उन्होंने कहा नही मैं इस संसार को जहाँ तक मैंने मापा है मानो इसको आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनो से इस संसार को मापने का प्रयास किया है और देखो, एक दूसरे का यह सहयोग है याग का अभिप्राय यह है याग कहते हैं कि एक दूसरे में कटिबद्ध रहता है, याग का अभिप्राय है जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान याग कर रहा है और याग करता

हुआ मानो देखो, उसका समन्वय उसके विचारों से कटिबद्ध रहता है और उसका जो विचार है वह सुगन्ध से रहता है और वह जो सुगन्ध है वही मानो वायुमण्डल से रहता है और वायुमण्डल का जो समन्वय है वह मानो देखो, द्यौ लोक से रहता है और द्यौ लोक का लो समन्वय है मानो देखो, एक एक परमाणुवाद से होता है और वह जो परमाणुवाद है वह एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है एक दूसरों में अभ्योदय हो रहा है मानो देखो, वही तो एक आभा में परणित होने वाला परमाणुवाद है जो परमाणुओं को जागरूक करता हुआ एक दूसरे परमाणु को कही निगलता भी रहता है कही उन्ही परमाणुओं का विशाल और ऊर्ध्वा में उड़ान भी उड़ने लगते हैं मानो देखो, उन्ही विचारों के परमाणुओं का समन्वय पञ्च महाभूतों से होता है और पञ्च महाभूतों का समन्वय मानव के पिण्ड से होता है और मानव का जो पिण्डम् ब्रहे पिण्डो ब्रह्माण्डं ब्रहे वही पिण्ड ब्रह्माण्ड की कल्पना करके आध्यात्मिक और योगा के मानो देखो, योग से उसके प्रति याग से प्रतिभाषित रहने लगता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वेद का ऋषि कहता है क्या यह याग आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनो को जागरूक करता रहता है इसीलिए वह जागरूक रहना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह अपना मन्तव्य प्रगट किया उन्होंने कहा हमारे यहाँ जब भी विज्ञान किसी काल में ऊभर करके आया है ऊर्ध्वा में आया है, तो परमाणुवाद के ऊपर गुरूतव के ऊपर मानव ने अनुसन्धान किया है और वह गुरूतव को ले जो करके ही मानो देखो, वह सूक्ष्मवाद में गुरूतव को तरलता में और तरल पदार्थों को ही मानो देखो, मानो देखो, पय में और उसी को तेजों में और तेजो को गति में और गति को समावेश में ले जा करके मानो विज्ञान की धाराएं मानव के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती हैं इसी प्रकार मेरे प्यारे! जब मार्कण्डेय जी ने कहा इसीलिए मेरा तो यह सदैव मन्तव्य रहा है विचार रहा है कि

हम अपने में वैज्ञानिक बने जैसा हमारा हम याज्ञिक बने जैसे महाराजा शिव के यहाँ देखो, प्रातःकालीन याग होता है माता ब्रहे त्रि याग करती है महाराजा शिव भी याग कर रहे हैं मानो देखो, वह याग की प्रतिभा सूर्य की भी हैं क्योंकि सूर्य को शिव कहते हैं हमारे यहाँ शिव नाम परमपिता परमात्मा का है। उसी आभा को ले करके उन्होंने मेरे पुत्रों! दर्शनों में होने वाला जो अनुपम प्रकाश है अनुपम दिव्यता है वह मानव के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने अपना यह मन्तव्य दिया उन्होंने कहा और भी हमें स्वरूप दृष्टिपात आता है मानो देखो, जब यज्ञशाला में याग हो रहा है सुगन्धि आ रही है उस परमाणुओं का समन्वय मानो देखो, भूः से रहता है और भू का सम्बन्ध भुवः से भुवः का सम्बन्ध स्वः से रहता है जब भू र्भुवः स्वः से रहता है तो मानो देखो, उनका समन्वय जितने प्राणी मात्र हैं मानव के सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है प्रत्येक प्राणी एक दूसरे से कटिबद्ध रहता है जैसे मुनिवरों! देखो, कृषक एक कृषक मानो देखो, कृषि करने वाला है कितने प्राणियों की उससे सुगठिता रहती है गऊं के बछड़े से भी रहती है, गऊ से भी रहती है और भी नाना प्राणियों से मानव को पय दे रहा है कोई उसे अपने में आनन्दवत बना रहा है मेरे प्यारे! कोई परिश्रम कर रहा है कोई मानो देखो, अपने में बलि को प्रदान कर रहा है मेरे पुत्रों! देखो, मानव से उस मानव प्राणी मात्र का मुनिवरों! देखो, एक दूसरे से समन्वय रहता है तो यह याग नही तो और क्या है बेटा! यह याग हो रहा है याग का अभिप्राय यह है क्या जो एक दूसरे से कटिबद्ध रहता है एक दूसरे से समन्वय की प्रतिभा उसमें प्रतिभाषित होती रहती है तो मेरे प्यारे! देखो, इस वाक को पान करते हुए मुनिवरों! देखो, मार्कण्डेय जी ने यह पुनः यह और वाक कहा क्या जैसे हम विज्ञान के युग में प्रवेश होना चाहते हैं तो विज्ञान के युग में भी एक दूसरे से हम सहयोग प्राप्त करते रहते हैं नाना प्रकार के पृथ्वी के जब गृह में प्रवेश

करते हैं। तो नाना प्रकार का खनिज हमारे समीप आता है नाना प्रकार का खाद्यान्न आता है उस खनिज के द्वारा हम नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं और यन्त्रों का निर्माण करके मानो देखो, इसको जानते रहते हैं कोई यन्त्र सूर्य की किरणों के साथ गति कर रहा हैं कोई मानो चन्द्रमा की आभा में गति कर रहा है तो इसीलिए देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते ही बेटा! देखो, हम नाना प्रकार की धाराओं में रत्त हो करके बेटा! वह भी एक याग रूप माना गया है जब हम पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते हैं तो मानो नाना प्रकार के मानो खनिजों के द्वारा नाना रश्मि इत्यादियों की धाराएं हमें प्राप्त होती रहती हैं परमाणुवाद में हमारे जीवन का धनिष्ट समन्वय रहता है तो वही तो बेटा! विज्ञान के वांगमय में ले जाता है मेरे प्यारे! देखो, इसी आभा को ले करके मैंने कई काल में बेटा! यह वाक प्रगट किया तो महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा क्या हमारे वंशलज में नाना आचार्य इस प्रकार के हुए हैं जो मानो देखो, याग के सम्बन्ध में बहुत ही घनिष्ट और सूक्ष्म अपने विचारों को वह व्यक्त करते रहते थे उन्होंने कहा महाराज! वह कौन ऋषि हैं उन्होंने कहा कि एक हमारे यहाँ सम्भूनिक ऋषि हुए है सम्भूनिक ऋषि महाराज अपने में अनुसन्धान करते थे और याग में परणित रहते थे प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर वह अन्वेषण करते थे कुछ ऐसा स्मरण मुझे आ रहा है हमारे पितरों का जो कथन है वह बड़ा विचित्र रहा है परन्तु देखो, मैंने यह वाक पूर्व काल में भी देखो, उद्दालक गोत्रीय चर्चाओं में उद्दालक गोत्र में भी यह चर्चाएं हुई हैं उनमें भी जानकारी की बड़ी विशिष्ठता रही है परन्तु हमारे यहाँ साम्भूनिक जो ऋषि थे हमारे मानो देखो, पूर्वज रहे हैं कई प्रणालियों में कई वंशलजों में हमारे उससे आगे आ गएं हैं परन्तु देखो, उसका कुछ साहित्य मुझे स्मरण है वह साहित्य वह अपनी लेखनीबद्ध करके चले गएं मानो साम्भूनि जो मेरे पितर महा पितर थे वह मानो सत्रहवें महापितर कहलाते थे वे सत्रवहें महापितर मानो देखो,

उनके अब्रहों में वह भयंकर वनों में अपने में अनुसन्धान करते रहते थे जब अनुसन्धान करते रहते थे तो याग का प्रारम्भ किया मानो देखो, मेरी महामाता भी उनके साथ में अनुसन्धान करती रहती थी जब अनुसन्धान करने लगे तो उन्होंने देखो, याग के माध्यम से अपने सूक्ष्म परमाणुओं से वायुमण्डल में अपने चित्रों को दृष्टिपात करने लगे क्योंकि वह याग करने लगे याग के पश्चात योगाभ्यास में परणित हो जाते थे प्राणायाम की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो जाते थे ऐसा मुझे स्मरण है मेरे साहित्य के आधार पर जो मेरे महापितर ने मुझे वर्णन और मुझे साहित्य में लेखनियाँ बद्ध करते हुए मैंने उसका अध्ययन किया है तो वह जब याग करते रहते थे तो याग में उनके हृदय में एक समय यह विचार आया कि मैं एक यन्त्र का निर्माण करूं मानो देखो, उन्होंने परमाणुवाद को लाने के लिए अपने में मानो परमाणुवाद को एकत्रित किया उनसे एक यन्त्र का निर्माण किया और यन्त्र का निर्माण करके उसमें जैसे वह याग करते थे तो याग में जो भी स्वाहाः के शब्द के साथ में चित्रों रथम् मानो इस प्रकार की आभा वैदिक साहित्य में आती है उसको जानने के लिए वह अन्वेषण करने लगे मानो कुछ समय के पश्चात उस यन्त्र में स्वाहा के साथ में जो मानो देखो, चित्र बनते थे वह दृष्टिपात आने लगे ऐसा बेटा! मुझे स्मरणं ब्रहे मार्कण्डेय जी ने यह कहा है क्या मुझे ऐस स्मरण है सम्भवा ब्रह्मे लोकां वाचप्रव्हा वेद की आख्यिका को ले करके उन्होंने याग के और विज्ञान के माध्यम से अपने में मानो देखो, उस महान कोटि में ले गएं जहाँ योगी को और मानो देखो, वैज्ञानिक दोनो की सीमा बद्ध होती है मेरे प्यारे! देखो, जब वह अनुसन्धान करते रहे आगे चल करके उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण और किया मानो उस यन्त्र में यज्ञशाला का जितना उनका आकार बना हुआ था उनके आकार वाला एक रथ उन्हें दृष्टिपात आने लगा मुनिवरों! देखो, रथ क्या शब्दों की धाराओं पर विद्यमान हो करके उतने आकार का बेटा! देखो, एक चित्र

दृष्टिपात आने लगा ऐसा मुझे मेरे प्यारे! ऋषियों ने वर्णन कराया क्या मार्कण्डेय जी ने अपने महापिताओं की यह चर्चा करते हुए कहा क्या उन्होंने सम्भवा ब्रह्मे वाचप्रव्हा लोकां हिरण्यम् रथा मानो देखो, अपने महापिताओं के दर्शन होने लगे तो मेरे पितर ने यहाँ तक अपना निर्णय दिया है, क्या मुनिवरों! देखो, लगभग उनके बीसवें महापिता का उस यन्त्रों में दृष्टिपात आने वाले मानो देखो, चित्रों का दर्शन होने लगा तो मेरे प्यारे! देखो, मार्कण्डेय जी ने यह कहा है क्या वजनं ब्रहे कातक प्रहा मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा पचासवें महापिता के दर्शन उन्हें हुए उन्होंने अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं। उन लेखनियों का मैं प्रायः अध्ययन करता रहता हूँ, क्योंकि अग्नि जब यज्ञशाला में प्रदीप्त होती है और अग्नि भिन्न भिन्न प्रकार की अग्नियां कहलाती हैं जब वह अग्नि का अग्न्याधान होता है अग्नि में चयन होता है तो मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अपने में प्रतिभाषित कहलाती है, अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके वह द्यौ लोक में चला जाता है। द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है मेरे प्यारे! देखो, उन्हीं शब्दों के साथ जो क्रियाकलाप है अथवा चित्र है उन चित्रों का दर्शन भी प्रायः हम करते रहते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, योग के माध्यम से भी चित्रों का प्रायः दर्शन होता रहा है और विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करने वाले बेटा! देखो, चित्रों का दर्शन करते रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो, उस समय मेरे महापिता ने देखो, अपने नाना असंख्य महापिताओं का दर्शन किया है उनके चित्रों का क्रियाकलाप बेटा! जो अन्तरिक्ष में द्यौ में प्रवेश हो रहा था उसका साकार रूप बन करके यन्त्रों के द्वारा बेटा! प्रायः दृष्टिपात करने वालो विज्ञानवेत्ता हमारे समीप आता रहा है तो मुनिवरों! देखो, महर्षि मार्कण्डेय जी ने यह अपना वर्णन करते हुए कहा क्या हमारे यहाँ विज्ञान के वांगमय में यज्ञशाला के मानो विचारों को ले करके याग की प्रतिभा का जन्म होता है और विज्ञान की तरंगो का जन्म होने लगता है वही विज्ञान

बेटा! साकार रूप बन करके मानव के समीप आने लगता है।

तो विचार विनिमय क्या आज बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ विचार य देने के लिए आया हूँ जो महर्षि मार्कण्डेय जी ने अपना मन्तव्य प्रगट किया है उन्होंने कहा है कि हमारे वंशलज में परम्परागतों से मानो नाना प्रकार का विज्ञान पनपता रहा है वह विज्ञान याग के माध्यम से पनपता रहा है क्योंकि याग ही हम आध्यात्मिकवाद में ले जाते हैं तो आध्यात्मिकवाद में हमें ज्ञान का प्रकाश होता है तरंगो में जो वेद की ध्वनियां मानो अन्तरिक्ष में प्रवेश करती हैं उद्गाता के चित्र मानो उसमें दृष्टिपात आते रहते हैं तो वायुमण्डल जितना पवित्र होता है उतना ही हमारा आध्यात्मिकवाद पनपता रहता है और जब हमारा यह ब्रह्माण्ड अथवा यह जो हमें दृष्टिपात आने वाला जगत है वायुमण्डल यदि पवित्र नही होगा तो हमारा जीवन भी पवित्र नही बन सकेगा मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्रवाद हो, चाहे विज्ञानवाद हो, चाहे वह यौगिकवाद क्यों न हो परन्तु यह पनपता ही जब है जब कि वायुमण्डल में पवित्रवाद और विज्ञान के वांगमय में वैज्ञानिक जन अपनी उड़ाने उड़ने लगते हैं।

तो मेरे प्यारे! आज मैं विशेष तो चर्चा देने नही आया हूँ विचार यह प्रगट करने के लिए आया हूँ कि महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य दिया है महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा कि हमारे जो पूर्वज हैं हमारे पूर्वजों का जो साहित्य है वह याग से और विज्ञान से मानो देखो, ओत प्रोत माना गया उनके विचारो में याग ही मानो यह परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है याग का एक ही मन्तव्य है क्या वह एक दूसरे में सहायक बना हुआ है एक दूसरे की सहायता कर रहा है एक दूसरे में पिरोया हुआ है जहाँ बेटा! देखो, गणना समाप्त हो जाती है महर्षि ने यह वर्णन किया क्या जिस भी काल में विज्ञान पनपा है उन्होंने पृथ्वी के ऊपर गुरूतव परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण किया है वही गुरूतव मानो देखो, आगे चल

करके वह तेजामेयी परिवर्तित हो गया है एक दूसरे में तेजोमयी मानो वह लय होने में वह परिवर्तित हो गया है वही मुनिवरों! देखो, पिण्ड के रूप में वही मुनिवरों! देखो, आभा के रूप में प्रायः दृष्टिपात होता रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, मैं यह विचार देने के लिए आया हूँ कि उस परमात्मा का अमूल्य जगत है, एक दूसरे में पिरोया हुआ है बेटा! यह माला है और माला को ही मानव धारण करना चाहता है और मानव को माला है इसको ही बनाना चाहता है गृह आश्रम में प्रवेश होता है तो वहाँ भी एक माला बनाता रहता है मेरे प्यारे! अपने कुटुम्ब को एकत्रित करता है वह माला बन जाती है परन्तु वह माला बेटा! समय समय पर बेटा! उस माला के मनके विकृत हो जाते हैं परिणाम यह माला बन नही पाती परन्तु परमात्मा की जो अनुपम माला है वह बड़ी विचित्र है क्योंकि वह सैद्धान्तिक और यौगिकवाद में परणित होती रही है। परन्तु यदि देखो, मानव अपनी माला को बनाना चाहता है तो माला को बेटा! देखो, एक दूसरे प्राण सूत्र में यह मानो देखो, अप्रतो को मनको को पिरोने के लिए तत्पर हो जाएं परन्तु वह संसार के बिखरे हुए ज्ञान के अन्धकार के रूप में माला को बनाना चाहता है वह माला विकृत हो जाती है मेरे प्यारे! देखो, जब वह संसार में आ करके वह माला को याग के रूप में बनाना चाहता है निर्माणित करना चाहता है तो बेटा! वह निर्माण पवित्र बन सकता है जैसे बेटा! देखो, योगेश्वर जब योगी अपने योगाभ्यास में प्रवेश करता है तो माला को बनाता है। मेरे प्यारे! वह मन को प्राण में प्रवेश करता है और मुनिवरों! देखो, प्राण में जैसे मनके बिखरे हुए इन्द्रियों का स्वरूप बना हुआ है पांच ज्ञानेन्द्रियाँ पांच कर्मेन्द्रियों के रूप में मन बिखरा हुआ है मेरे प्यारे! मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार के रूप में यह मन बिखरा हुआ है यह प्रकृति अपने मे प्रव्हावृत्ति हो रही है मेरे प्यारे! जब प्राण सूत्र में इन बिखरे हुए मानो मनकों को यह एकोकी मनका बन करके बेटा! यह मानो देखो, यह प्राण सूत्र में पिरो

दिया जाता है मानो जैसे प्राण अपान में और अपान उदान में और उदान समान में और समान व्यान में मेरे प्यारे! देखो, व्यान नाग में नाग देवदत में देवदत धनञ्जय में, धनञ्जय कुरु में और कुरु कृकल में यह दसों प्राण एक ही सूत्र में बेटा! देखो, मन के रूप को अपने में धारण कर लेता है। एकोकी प्रणव बन करके मेरे पुत्रों! देखो, वह मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार को उसमें समावेश करके मेरे प्यारे! आत्मा के तीनो लिंग है उनको जब यह जान लेता है तो बेटा! एक माला बन जाती है उसे हमारे यहाँ यौगिक माला कहते हैं उस माला को जो धारण करता है वह मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त हो जाता है। परन्तु यह माला कैसी बनाता है यह संसार मार्कण्डेय जी ने कहा हे हनुमान! यह संसार कैसी माला बनाना चाहता है मानो देखो, यह पुत्र को मनका बनाता है, कही पुत्री को मनका बनाता है, कही मानो देखो, उसकी ममता के सूत्र को पिरो देता है वह मनके वाब्रहे वह अन्धकार का एक सूत्र बन गया है परन्तु उसमें मानव यह विचारने लगे कि यह पुत्र माता के गर्भ से इसने जन्म लिया है यह हमारा कर्तव्य है याग के रूप में मानो यदि उसको याग स्वीकार करके और वह मानो ब्रह्मे निर्मोही के रूप में परणित हो करके कर्तव्यवाद एक चेतना में परणित हो जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, वह सूत्र वह जो माला को बनाना चाहता है वह माला उस रूप में बनेगी जहाँ मानव का कल्याण हो सकेगा मेरे प्यारे! देखो, अज्ञान की माला नही बन सकती तो इसीलिए मानव को अपने में ज्ञान और विवेक की माला उस सूत्रों वह मानो देखो, ज्ञान और विवेक के मनके बना करके इस परमपिता परमात्मा का जो यज्ञोमयी जो स्वरूप है। यज्ञोमयी यह जो ब्रह्माण्ड है याग का अभिप्राय यह है क्या एक दूसरें में पिरोना है, एक दूसरे में सहायक बन करके मेरे पुत्रों! देखो, अपने को मानो देखो, अब्रहो अवस्तम् ब्रह्मा वाचप्रही लोकां मेरे प्यारे! देखो, वे परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी देखो, जो तीन लिंग आत्मा के कहलाते है, सबसे

प्रथम मानो स्थूल दूसरा सूक्ष्म और तीसरा मेरे प्यारे! देखो, लिंगमयी शरीर माना गया है हमारे यहाँ तीनो आत्मा के जो शरीर हैं यह प्रकृति का आभा में निहित रहते हैं परन्तु जब लिंगमयी ज्योति बन करके मेरे पुत्रों! परमात्मा के मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त कर लेता है। तो परमपिता परमात्मा के इस संसार रूपी यज्ञशाला में वह मानव अपने में सफल हो जाता है और महानता में प्रवेश कर जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज बेटा! मैंने तुम्हे कुछ मनकों की चर्चाएं की हैं मानो देखो, इस आभा में मैंने कुछ मानवतव की चर्चाएं की हैं, आज का विचार विनिमय क्या है बेटा! आज मैं कोई तुम्हें विशेष चर्चाएं प्रगट करने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल परिचय देने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय क्या है हम बेटा! इस संसार को यज्ञमयी स्वरूप स्वीकार करके बेटा! अपने जीवन को व्यतीत करें और स्वतः हम यज्ञशाला का मानो देखो, एक प्रतिनिधि अपने को स्वीकार करें क्योंकि आत्मा ब्रह्मे आत्मा तो ब्रह्म के समीप रहना चाहता है वह याग हो रहा है सृष्टि के प्रारम्भ में जब परमपिता परमात्मा ने संसार की रचना की तो बेटा! रचना वैसे ही थोड़े हुई वैसे ही रचना नहीं हो जाती है रचना जब होती है जब रचना को माने कोई उस रचना का भोक्ता बनता है, तो मेरे प्यारे! आत्मा रचना का भोक्ता है रचाने वाला प्रभु है और प्रकृति अपने स्वरूप में रचित्त हो जाती है तो मेरे प्यारे! देखो, अपने रूप में जब रचित्त हो जाती है। तो आत्मा मानो देखो, इसको भोक्ता अपने को स्वीकार करके हैं मेरे प्यारे! इसको यज्ञ के रूप में भोगने वाला बन इसको यज्ञ के रूप में ही स्वीकार करने वाला बने मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चलन साहित्यकारों ने बेटा! वर्णन किया है परन्तु मार्कण्डेय जी ने जो अपना मन्तव्य प्रगट किया है क्या मैं इस संसार को यज्ञ के रूप में स्वीकार करता हूँ, उसी में आध्यात्मिकवाद है उसी में भौतिकवाद है उसी में परमाणुवाद

है मेरे प्यारे! देखो, यह इन्होंने अपना निर्णय दिया है और निर्णय दे करके उन्होंने कहा जैसे मानो देखो, याग सहायक रूपों से जैसे हमारे यहाँ मानो देखो, जब विकृता आती है तो इसी रूप में आ जाती है मेरे प्यारे! उन्होंने एक आख्यिका प्रगट की जो आख्यिका मैंने पूर्व काल में भी प्रगट की है, आज भी मुझे स्मरण आ रही है मेरे प्यारे! देखो, एक समय ऐसा कृत बना अप्रतं सूर्याणि गच्छत मेरे प्यारे! देखो, यह जो सूर्य है, यह ऊर्ज्वा देता है और ऊर्ज्वा जब इन समुद्रों में मानो देखो, ऊर्ज्वा प्रवेश करती है उसे परमाणु क्या मानो जलों का उत्थान होता है, और जलों का उत्थान हो करके उस जल के रूप मे मेरे पुत्रों! देखो, वत्रासुर का जन्म हो जाता है, जब वत्रासुर का जन्म होता है तो इन्द्र और वत्रासुर का दोनो का संग्राम होता है, देवासुर संग्राम हुआ और उससे मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक ही वज्र से मानो देखो, प्रणति वज्र से इन्द्र ने वत्रासुर को नष्ट कर दिया मेरे प्यारे! देखो, वह छलने लगा ऐसा वर्णन आता है, परन्तु इसका वास्तविक स्वरूप में जब हम प्रवेश करते हैं तो विचार क्या क्या यह जो सूर्य की किरणें हैं मेरे प्यारे! तेजोमयी बन करके समुद्रों से मिलान करती हैं और समुद्रो से जलों का उत्थान होता है जल से मेघमण्डल बनते हैं और मेघमण्डलों को दूसरे रूप में वत्रासुर कहा जाता है और इन्द्र नाम हमारे यहाँ वायु को कहा गया है जब वायु का वेग मानो देखो, उसी विद्युत के रूप में परिवर्तित होती रहती है। मानो देखो, जब वह तेजोमयी विद्युत का इन्द्र का जब संग्राम होता है, मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण रूपी वज्र से उससे तेजोमयी का क्रुत होता है तो वत्रासुर मेरे प्यारे! धीमी धीमी वृष्टि में परणित हो जाता है, वृष्टि में उसका परिवर्तन हो जाता है मेरे प्यारे! यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाली बनती हैं कही मानो देखो, नाना प्रकार का अन्नाद इससे उत्पन्न होना प्रारम्भ होता है खनिज भी इसी के द्वारा से उत्पन्न होता है मेरे प्यारे! देखो, एक आख्यिका ऐसी मानो देखो, आलांकारिक

मानो देखो, ऊर्ध्वा में लाने का प्रयास किया मेरे प्यारे! देखो, विचार यह आता है कि यदि मानव अपने में ऊर्ध्वा गति को नही लाएगा अपने में विचारक नही बनेगा तो मानो देखो, यहाँ कर्म की बड़ी विशिष्ठता मानी गई हैं, कर्म का बड़ा एक विचित्र एक नृत्त होता रहता है मेरे प्यारे! देखो, वह नृत्त कैसा है ऐसा बेटा! आख्यिकाकारों ने एक आलांकारिक वार्ता प्रगट की उन्होंने कहा एक समय मानो समय समय पर वृष्टि होती रहती है एक समय बिना समय के मानो अति वृष्टि हो गई जब अति वृष्टि हुई तो मुनिवरों! देखो, देवा ब्रह्मा प्रजा का ह्रास हो गया सब प्रजा ने मेरे प्यारे! अपना एक संगठन किया और प्रजा ने विचारा कि बिना समय के वृष्टि हुई है इसके मूल को हम नही जान पाए हैं मेरे प्यारे! देखो, प्रजाओं ने अपने में संगठित करके चलो हम प्रजापति के द्वार पर चलेंगे मेरे प्यारे! अपने को सब प्रजा संगठित हो करके प्रजापति के द्वार पर पंहुची और प्रजापति ने प्रजा का स्वागत किया प्रजाओं से बोले कहो प्रजाओं! तुम्हारा कैसा आगमन हुआ है उन्होंने कहा महाराज! देखो, बिना समय के वृष्टि हो गई है, और हमारा सर्वत्र विनाश हो गया है मानो हम तुम्हारे समीप आयें हैं उन्होंने कहा यह वृष्टि कहाँ से हुई उन्होंने कहा वृष्टि मेघों से हुई है तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने मेघ मण्डलों को निमन्त्रित किया और प्रजापति ने मेघों से कहा हे मेघों! तुमने बिना समय के वृटि क्यों की है उन्होंने कहा प्रभु! इसमें हमारा कोई दोषारोपण नही है हमसे तो सूर्य ने कहा था मुनिवरों! देखो, सम्भवा लोकं ब्रह्मे सम्भवा सुप्रति समुद्राणि गच्छतं उन्होंने यह कहा कि महाराज! हमसें तो समुद्रो ने कहा था अब प्रजापति ने बेटा! समुद्र को निमन्त्रित किया और समुद्र से कहा तुमने यह बिना समय के वृष्टि की इच्छा क्यों की उन्होंने कहा इसमें मेरा कोई दोष नही मुझे तो आदित्य सूर्य ने कहा था मेरे प्यारे! देखो, सूर्य को उन्होंने निमन्त्रित किया और सूर्य ने कहा कहो भगवन! क्या आज्ञा है देखो, तुमने बिना समय के देखो, समुद्रो को तेजोमयी प्रकाश

क्यों दिया उन्होंने कहा प्रभु! इसमें मेरा कोई दोष नही हैं मेरे से तो मानो देखो, इस पृथ्वी ने कहा था अब मुनिवरों! देखो, जब पृथ्वी को निमन्त्रित किया और पृथ्वी से कहा हे पृथ्वी! तुमने बिना समय के आज्ञा क्यों दी मानो देखो, यह सूर्य से प्रार्थना क्यों की सूर्य ने अपना तेज समुद्रों को दिया है ब्रह्म वाचप्प्रव्हा तो पृथ्वी ने कहा प्रभु! इसमें मेरा कोई दोष नही है भगवन! उन्होंने कहा क्यों क्योंकि यह प्रजा मेरे ऊपर पाप कर्म करती है जब यह प्रजा पाप करने लगती है पापों में तल्लीन मैं मानो देखो, पापों में रत्त हो जाती हूँ उस समय मेरी तली अव्रतं ब्रह्मा मानो वह मेरी धीमी वाणी मानो धीमी तरंगे मानो देखो, समुद्रों में प्रवेश करती है और सूर्य ..... शेष अनुपलब्ध।

दिनांक ३० ०८ १९८५।